हिन्दी समिति ग्रन्थमाला-संख्या—१३३

भारत का भाषा-सर्वेक्षण

[भाग ६]

संकलनकर्त्ता तथा सम्पादक

सर जॉर्ज अब्राहम ग्रियर्सन

अनुवादक

डा० रामेश्वरप्रसाद अग्रवाल

एम० ए०, पी-एच० डी०

हिन्दी समिति

सूचना विभाग, उत्तर प्रदेश

लखनऊ

प्रथम संस्करण
१९६७

मूल्य
चार रुपया
४ ००

मुद्रक
वीरेन्द्रनाथ घोष
माया प्रेस प्राइवेट लिमिटेड,

प्रकाशकीय

प्रसिद्ध भाषाशास्त्री ग्रियर्सन ने भारतीय भाषाओ के सम्बन्ध मे सर्वेक्षण करके उनकी उत्पत्ति, विकास, बोलनेवालो की सख्या, वाक्य-रचना, नाम एव क्रिया-पद आदि का जो अध्ययन प्रस्तुत किया है उससे भारतीय भाषाओ की जानकारी प्राप्त होती है। भारतीय भाषाओ की खोज के सम्बन्ध मे ग्रियर्सन का यह सर्वेक्षण सदैव सन्दर्भ के रूप मे काम देता रहेगा। उनका यह महान् कार्य कई भागो मे उपलब्ध है। छठवें भाग मे भारतीय आर्य परिवार की मध्यवर्त्ती शाखा का उल्लेख है। इसमे पूर्वी हिन्दी आती है जो कई बोलियो—अवधी, बघेली तथा छत्तीसगढी—का समुदाय है। उत्तर से दक्षिण ७५० मील लम्बे तथा पूर्व से पश्चिम २५० मील चौड़े, १,८७,५०० वर्गमील क्षेत्र के विस्तृत भू-भाग के निवासी इसे बोलते है। यह प्राकृत भाषा अर्द्धमागधी से उत्पन्न हुई है। स्वय अवधी, बघेली और छत्तीसगढी मे स्थान-स्थान पर भिन्नताएँ पायी जाती हैं। इन भिन्नताओ का परिचय ग्रियर्सन के भाषा-सर्वेक्षण के इस छठवे भाग से मिलता है। इनसे सम्बन्धित तथा इनकी सीमाओ पर बोली जाने वाली कुछ दूसरी बिखरी हुई बोलियाँ जैसे तिरहारी, गहोरा, जूडर, बनाफरी, गोण्डवानी, मरारी, पवारी , ओझी, कुम्भारी, खल्टाही, सरगुजिया, सद्रीकोरवा, बैगानी आदि पर भी इस छठवे भाग मे अच्छा प्रकाश डाला गया है। इन सभी बोलियो के मूल उदाहरणो के साथ उनके हिन्दी रूपान्तर देने से यह ग्रन्थ और अधिक उपयोगी बन गया है।

आशा है कि ग्रियर्सन के उपर्युक्त ग्रन्थ के प्रस्तुत हिन्दी रूपान्तर से भाषा विज्ञान के छात्रो के अतिरिक्त वे सभी लोग समान रूप से लाभ उठा सकेंगे जिन्हे भारत की विभिन्न बोलियो से परिचित होने की जिज्ञासा है।

रमेशचन्द्र पंत
सचिव, हिन्दी समिति

विषय-सूची

विषय	पृष्ठ संख्या

स्वर-संकेत सूची

अ	मारव
अँ	मारँवे'
आ	मारव
इ	
ई	
उ	
ऊ	
ए (ॆ)	मारिहेंस
ए	
ओ (ो)	छोटका
ओ	मारँवो
ऐं (ॅ)	कै
औं (ौ)	औंर

पूर्वी हिन्दी

मध्यवर्त्ती शाखा

भारतीय आर्य भाषाओं की यह मध्यवर्त्ती शाखा, भाषाओं का नहीं वरन् बोलियों का एक समुदाय है। इसके अन्तर्गत केवल एक भाषा पूर्वी हिन्दी आती है।

भौगोलिक सीमाएँ—यह भाषा, जिसके अन्तर्गत प्रमुख तीन बोलियाँ हैं—अवधी, बघेली एवं छत्तीसगढ़ी गिनायी गयी हैं। ये छ प्रदेशों-अवध, पश्चिमोत्तर प्रदेश, बघेलखण्ड, बुन्देलखण्ड तथा मध्य प्रदेश को अधिकृत किये हुये हैं। सम्पूर्ण हरदोई जिला तथा फैजाबाद जिले के कुछ अंश को छोड़कर इसका विस्तार समस्त अवध में है। पश्चिमोत्तर प्रदेश में यह मोटे तौर से बनारस से लेकर बुन्देलखण्ड में हमीरपुर तक फैली हुई है। इसके अन्तर्गत समस्त बघेलखण्ड, पश्चिमोत्तर[1] बुन्देलखण्ड, मिर्ज़ापुर जिले के दक्षिणस्थ सोन नदी की पट्टी, चंदभकार, सरगुजा एवं कोरिया रियासतें तथा छोटा नागपुर के जशपुर का कुछ भू-भाग आता है। मध्यप्रदेश में यह जबलपुर तथा मॉडला जिलों में और सामन्ती रियासतों सहित छत्तीसगढ़ के अधिकांश भागों में फैली हुई है।

क्षेत्रीय बोलियाँ—पूर्वी हिन्दी की तीनों बोलियाँ एक दूसरे से बहुत अधिक मिलती-जुलती हैं। वस्तुतः बघेली और अवधी में इतना कम अन्तर है कि यदि स्वतंत्र बोली के रूप में बघेली का अस्तित्व जनता द्वारा स्वीकृत न होता, तो मैं इसे अवधी की ही एक बोली मानता। पड़ोस में पायी जाने वाली मराठी एवं उड़िया के प्रभाव के कारण छत्तीसगढ़ी में यद्यपि अवधी से पर्याप्त अन्तर दिखायी दे रहा है, फिर भी, दोनों का निकट सम्बन्ध नितान्त स्पष्ट है। इस प्रकार अवधी-बघेली विभाषा के अन्तर्गत पश्चिमोत्तर प्रान्त (तत्कालीन आगरा प्रान्त-अनुवादक) का समस्त पूर्वी हिन्दी क्षेत्र तथा अवध, बुन्देलखण्ड, बघेलखण्ड, चंदभकार, जबलपुर एवं मॉडला जिलों का भू प्रदेश आ जाता है। यह मध्यप्रदेश के उत्तर पूर्वी जिलों में बिखरे हुए कुछ कबीलों द्वारा भी बोली जाती है। यदि हम अवधी और बघेली की सीमा का निर्धारण

---

१. ग्रियर्सन द्वारा North-West of Bundelkhand लिखा गया है पर अवधी क्षेत्र के अन्तर्गत North-East बुन्देलखण्ड ही आना चाहिए।

करना चाहे, तो फतेहपुर एवं बाँदा के बीच यमुना नदी एवं उसके आगे इलाहाबाद जिले की दक्षिण-सीमा-रेखा होगी। यह सीमा परिशुद्ध नहीं है क्योंकि यमुना के उत्तरी किनारे पर फतेहपुर मे बोली जाने वाली तिरहारी बोली ऐसी अनेक विशेषताएँ रखती है जो उसे बघेली के अन्तर्गत परिगणित कराने मे समर्थ है तथा इलाहाबाद के दक्षिण पूर्व की भाषा, जिसे स्थानीय जनता बघेली मानती है, किन्तु मैंने उसे अवधी के अन्तर्गत रखा है, दोनो बोलियो का सम्मिश्रण प्रस्तुत करती है। यह सीमा अनिश्चित ही मानी जानी चाहिए क्योंकि यहाँ कोई भी ऐसी भाषागत विशेषता न मिल सकेगी जिसे निर्णायक मानदण्ड के रूप मे स्वीकार किया जा सके। पूर्वी हिन्दी के शेष भाग मे छत्तीसगढी का प्रसार है अर्थात् यह उदयपुर, कोरिया, सरगुजा की रियासतो, जशपुर (छोटा नागपुर) के एक छोटे हिस्से तथा छत्तीसगढ़ के अधिकाश भू-भाग मे बोली जाती है।

जैसा कि ऊपर कहा जा चुका है, पूर्वी हिन्दी देश के एक विषम-आयताकार भू-भाग मे फैली हुई है जो नेपाल से प्रारम्भ होकर (पर इस प्रदेश को सम्मिलित न करते हुए) मध्यप्रदेश की बस्तर रियासत तक चला जाता है। इस प्रकार यह पूर्व से पश्चिम की अपेक्षा उत्तर से दक्षिण की ओर अधिक विस्तृत है। मोटे तौर पर इस भू-भाग की औसत लम्बाई ७५० मील तथा चौडाई २५० मील है और क्षेत्रफल १,८७,५०० वर्गमील है। प्रत्येक बोली के बोलने वालो की सख्या अनुमानत निम्न प्रकार है

अवधी[1]	१,६०,००,०००
बघेली[2]	४६,१२,७५६
छत्तीसगढी[3]	३७,५५,३६३
योग[4]	२,४३,६८,११९

उपर्युक्त आँकडो के सन्दर्भ मे यह भी स्पष्ट कर देना होगा कि सभवत. लखनऊ दरबार की भाषा का गौरव वहन करने के कारण अवधी केवल उपरि निर्धारित क्षेत्र की ही बोल-चाल की भाषा नही है, अपितु पश्चिमोत्तर प्रदेश (आगरा प्रान्त—

---

१. तुलना कीजिए, हगरी की जनसंख्या १,७४,६३,७९१
२. „ पुर्तगाल „ ५०,४९,७३०
३. „ बल्गेरिया „ ३३,१०,७१३
४. अर्थात् आस्ट्रिया की जनसख्या २,३८,९५,४१३ से पर्याप्त अधिक।

अनुवादक) के पूर्वार्द्ध तथा विहार (जहाँ की प्रमुख भाषा विहारी है) के अधिकांश भागो मे वसे हुए मुसलमानो की भाषा हो गयी है। आगामी पृष्ठो मे मैंने अवधी भाषा-भाषी इन मुसलमानो की संख्या ९,१३,८१३ अनुमानित की है और इसे ऊपर दी हुई अवधी वोलने वालों की सख्या मे सम्मिलित कर लिया है। इसी प्रकार जहाँ तक छत्तीसगढी का प्रश्न है, ऊपर की सख्या मे न केवल उन वोलने वालो को परिगणित किया गया है जो इसी वोली के क्षेत्र के है, अपितु ३४,०९५ छत्तीसगढी वोलने वालों को भी जो समीपस्थ छत्तीसगढ तथा उडीसा को सामन्ती रियासतो मे वसे हुए है, सम्मिलित कर लिया गया है, जव कि यह निश्चित है कि उन रियासतो की भाषा उडिया है। दोनो ही दशाओ मे अवधी अथवा छत्तीसगढी वोलने वाले उस क्षेत्र के स्थायी निवासी हैं, जहाँ वे पाये गये है। इस प्रकार ऊपर दिये हुए पूर्वी हिन्दी के योग मे अन्य स्थानो मे गये हुए लोग भी सम्मिलित हो जाते हैं।

'पूर्वी हिन्दी' वोलने वालो की सख्या—पूर्वी हिन्दी वोलने वालो की एक वहुत वडी सख्या उत्तर भारत के विभिन्न क्षेत्रो मे विखरी पडी है। यदि इस क्षेत्र के उन निवासियो को, जो नौकरी की खोज मे विदेश गये हुए हैं, छोड दिया जाय, तो भी ये लोग प्रदेश की हमारी हिन्दुस्तानी सेना मे एक वडी सख्या मे भर्ती है। आगे पृष्ठ मे गिनाये हुए कारणो के आधार पर कहा जा सकता है कि उन अवधी भाषा-भाषियो की सख्या का अनुमानित निर्धारण भी समव नही है, जो अपने-अपने घरो से वाहर गये हुए हैं। जो कुछ निश्चय किया जा सका है, वह यह है कि वगाल के दक्षिणवर्त्ती क्षेत्रो तथा असम मे पाये जाने वाले अवधी भाषा-भाषियो की सख्या इस प्रकार है

अवधी वोलने वालो की अनुमानित सख्या

असम	३२,२९०
वगाल (दक्षिणी भाग)	१,११,२५८
योग	१,४३,५४८

पूर्वी हिन्दी की उत्पत्ति—जैसा कि भूमिका मे पूर्वी शाखा के सम्वन्ध मे स्पष्ट किया जा चुका है, ईस्वी सन् की प्रारंभिक शताब्दियो मे गगा तथा यमुना की तराइयो मे वोली जाने वाली दो प्रधान भाषाएँ अर्थात् प्राकृतें थी। इनमे शौरसेनी पश्चिम मे वोली जाती थी जिसका केन्द्र उत्तरी दोआव था तथा पूर्व मे मागधी वोली जाती थी जिसका केन्द्र वर्तमान पटना नगर के दक्षिण मे था। दोनो के मध्य एक विवादग्रस्त क्षेत्र था जिसकी सीमाएँ मोटे तौर पर अवध के वर्तमान सूवे मे मिल जाती हैं। इस क्षेत्र की भाषा मिश्रित थी, जिसे अर्धमागधी—आधी मागधी, कुछ शौरसेनी और कुछ मागधी की विशेषताओं को ग्रहण करने वाली—भाषा कहा गया है। हम अन्यत्र देख चुके हैं

कि पूर्वी शाखा की भाषाएँ मागधी–प्राकृत से विकसित हैं और आगे हम स्पष्ट करेंगे कि पर्याप्त मिली-जुली बोलियो का एक समुदाय जिसका प्रतिनिधित्व 'पश्चिमी हिन्दी' करती है, सीधा शौरसेनी से ऐतिहासिक सम्बन्ध रखता है। अब यह स्पष्ट करना शेष रह जाता है कि यह मिश्रित भाषा—अर्धमागधी वर्तमान पूर्वी हिन्दी की पूर्वजा है।

सीमा-वर्तिनी भाषाएँ—पूर्वी हिन्दी, उत्तर मे नेपाल की पहाडियो मे बोली जाने वाली आर्य भाषाओ तथा पश्चिम मे, पश्चिमी हिन्दी की विभिन्न बोलियो से जिनमे कन्नौजी और बुन्देलखण्डी प्रधान हैं, घिरी हुई है। ये सभी शौरसेनी अथवा उससे सम्बन्धित प्राकृत बोलियो से उत्पन्न हुई है। इसके पूर्व मे, बिहारी की पश्चिमी भोजपुरी तथा नगपुरिया बोलियो एव उड़िया-भाषा का क्षेत्र है। दक्षिण मे, यह मराठी की क्षेत्रीय बोलियो से जाकर मिल जाती है। बिहारी और उड़िया भाषाएँ मागधी प्राकृत से विकसित है। इस प्रकार पूर्वी हिन्दी दो ओर से शौरसेनी प्रसूत तथा एक ओर से मागधी-प्रसूत भाषाओ से घिरी हुई है। तदनुसार यह अनुमान लगाया जा सकता है कि यह—पूर्वी हिन्दी—अर्धमागधी का वर्तमान रूप है और उसी प्रकार यह दोनो पूर्वजा भाषाओ की भाषा-प्रवृत्तियाँ ग्रहण किये हुए है।

भाषा-नामकरण—हिन्दी नाम सामान्यत उन सभी आर्यभाषाओ के लिए प्रयोग मे आ रहा है, जो पश्चिम मे पजाब से लेकर पूर्व मे महानन्दा नदी तक तथा उत्तर मे हिमालय की पहाडियो से लेकर दक्षिण मे नर्मदा नदी तक फैली हुई हैं। इनमे से बिहारी को, जो बिहार तथा उत्तरप्रदेश के सुदूर पूर्वी जिलों मे बोली जाती है, पहिले ही अलग किया जा चुका है। राजपूताना की भाषाओ को भी हमे इनमे से निकालना होगा। इस प्रकार बची हुई बोलियो को, जो गगा-यमुना के कछार मे अर्थात् पजाब के सरहिन्द से लेकर बनारस तक, फैली हुई हैं, हिन्दी कहा जा सकता है। यह स्वयं ही एक-दूसरे से पर्याप्त भिन्न दो वर्गो मे विभक्त है जिन्हे 'पश्चिमी और पूर्वी हिन्दी' कहते हैं। पश्चिमी के अन्तर्गत अन्यान्य क्षेत्रीय रूपान्तरो के अतिरिक्त बुन्देली, कन्नौजी, ब्रज भाषा तथा भारत के एक बडे भू-भाग की राष्ट्रभाषा—(Lingua-franca) परिनिष्ठित हिन्दुस्तानी है। एक ही भाषा के इन विविध रूपो को ही मैं 'पश्चिमी हिन्दी' की सज्ञा दे रहा हूँ। पूर्वी के अन्तर्गत तीन बोलियो का समुदाय मेरे द्वारा 'पूर्वी हिन्दी' कहा गया है। यह स्पष्टीकरण इसलिए आवश्यक है कि अब तक किसी के द्वारा इन दो भाषाओ के नामकरण का प्रयास नही किया गया है क्योकि इनका अस्तित्व ही सदिग्ध रहा है।[1]

---

१. पाठको का ध्यान आकर्षित किया जाता है कि डॉ० हार्नले के 'गौडियन व्याकरण' को 'पूर्वी हिन्दी' भाषा के लिए यह नाम नहीं दिया गया है। वह 'पूर्वी हिन्दी'

मध्यवर्त्ती शाखा की 'पूर्वी' शाखा से तुलना—मध्यशाखा की बोलियाँ पूर्वी वर्ग की भाषाओं की तुलना में प्रधानतः क्रिया-पद-रचना में भिन्न हैं।

उच्चारण—जहाँ तक ध्वनियों के उच्चारण का प्रश्न है, पूर्वी शाखा की भाषाएँ स्वतः एक-दूसरे से पर्याप्त भिन्नता रखती हैं। सुदूर पूर्व की तीनों भाषाओं—असमी, बँगला, उड़िया—की एक विशिष्ट प्रवृत्ति यह है कि वर्ण 'अ' का उच्चारण अंग्रेजी शब्द हॉट (Hot) में पाये जाने वाले वर्ण 'ओ' की तरह है। बिहारी में, जैसे-जैसे हम पश्चिम की ओर बढ़ते जाते हैं, यह ध्वनि क्रमशः चौरस (Flat) होती जाती है। यहाँ तक कि पश्चिमी भोजपुरी में अंग्रेजी नट (Nut) में पाये जाने वाली 'उ' (U) ध्वनि का रूप प्राप्त कर लेती है। उक्त स्वर का यही उच्चारण पूर्वी हिन्दी में भी मिल रहा है।

नाम-पद-रचना—संज्ञा एवं सर्वनाम पद-रचना में पूर्वी हिन्दी पश्चिमी भोजपुरी में पर्याप्त समानता रखती है, यह भी, 'ए' में अन्त होने वाला विकारी-रूप प्रयोग में लाती है। इस सम्बन्ध में, यह कहना अधिक तथ्यपूर्ण है कि पश्चिमी भोजपुरी ने इस प्रवृत्ति को पूर्वी हिन्दी से ग्रहण किया है, क्योंकि पूर्वी शाखा की अन्यान्य भाषाओं में यह विकारी-रूप—'आ' में अन्त होने वाला मिलता है। संज्ञाओं में जुड़ने वाले परसर्ग अधिकांशतः वे ही हैं, जो बिहारी में उपलब्ध हैं। उल्लेखनीय अपवाद कर्म-सम्प्रदान का है जिसका परसर्ग पूर्वी हिन्दी में 'का' या 'काँ' है, जबकि पूर्वी शाखा की भाषाओं में यह 'के' या 'कें' मिलता है। साथ ही यह भी जोड़ा जा सकता है कि इसमें अधिकरण कारकीय परसर्ग 'मा' या 'माँ' है, जब कि बिहारी में यह सामान्यतः 'में' है और पूर्वी भाषाओं में इसका नितान्त अभाव है। ये दो परसर्ग रूप—'का' एवं 'मा'—मध्य उपशाखा के निजी रूप कहे जाएँगे।

सर्वनाम—पूर्वी हिन्दी की सर्वनाम-पद-रचना पूर्वी शाखा की भाषाओं से पर्याप्त साम्य रखती है। एक महत्त्वपूर्ण मानदण्ड में, यह, पश्चिमी से पर्याप्त वैभिन्न्य रखती हुई, पूर्वी शाखा का ही अनुकरण करती है। पश्चिमी में पुरुषवाचक सर्वनाम के सम्बन्धकारक एक वचन-रूप का धातु स्वर –'ए'– है, जब कि पूर्वी में यह–'ओ'—मिलता है, यथा, पश्चिमी हिन्दी 'मेरा' के लिए बंगाली तथा बिहारी शब्द 'मोर' है। इस सम्बन्ध में पूर्वी हिन्दी पूर्वी शाखा का अनुकरण कर रही है।

क्रिया-पद-रचना—जहाँ तक क्रिया-रूपों का प्रश्न है, अन्य शब्द-वर्गों की तुलना में अन्तर के लिए यहाँ अधिक गुंजायश है। पूर्वी हिन्दी में सहायक क्रिया 'अहेउँ'

तो 'बिहारी' है। डॉ० हार्नले ने स्वयं उसके लिए 'बिहारी' नाम को छोड़ दिया है और 'बिहारी' अपना लिया है।

अथवा 'आहेउँ'=मैं हूँ, है परन्तु अवध के पूर्वी भागो मे 'वाटेउँ' मिलता है। इसे पश्चिमी भोजपुरी का 'वाटा' ही समझिए। समापिका क्रिया-रूपो मे तीन प्रमुख कालो का व्यतिरेक मिलता है—वर्तमान सभावनार्थ, भूत तथा भविष्यत् काल। इनमे से वर्तमान सभावनार्थ जो सस्कृत के वर्तमान निश्चयार्थ से विकसित है, सामान्यत वही है जो प्रत्येक भारतीय आर्य-भाषा मे उपलब्ध हो रहा है। इसलिए तुलना करने से कोई लाभ न होगा।

भूतकाल—दूसरी ओर, भूतकाल महत्त्वपूर्ण अन्तर प्रस्तुत करता है। सभी आर्य भाषाओ मे यह काल मूलत कर्मवाच्य का भूत कृदन्त था। इस प्रकार, यदि हम हिन्दुस्तानी को लें तो 'मारा' शब्द का, जो सस्कृत के कर्मवाचीय भूत कृदन्त 'मारित.' से विकसित है, शाब्दिक अर्थ 'उसने मारा' या 'मैंने मारा' नही वल्कि 'उसके द्वारा या मेरे द्वारा मारा गया' है और इसी तरह और भी। इसी तरह 'चलित' से विकसित 'चला', शाब्दिक रूप मे 'वह गया' नही वल्कि 'वह गया हुआ है' है। इस पर ध्यान देना उचित होगा कि ऊपर उद्धृत किये गये सस्कृत के कर्मवाचीय कृदन्त उपान्त्य अक्षर मे ध्वनि 'इ' का प्रयोग रखते है। अधिकाश सस्कृत कर्मवाचीय कृदन्तो के सम्बन्ध मे यह एक तथ्य है और इस पर ध्यान देना आवश्यक है। क्योकि यह 'इ' शौरसेनी प्राकृत से विकसित वोलियो मे सुरक्षित है। इस प्रकार सस्कृत 'मारित.' से, व्युत्पन्न हुआ शौरसेनी 'मारिदो' और इसके वाद यह 'मारिओ' मे विकृत हुआ, जिससे व्रजभाषा का 'मार्यौ' निकला, जिसका य सस्कृत एव प्राकृत के मूल 'इ' का प्रतिनिधित्व करता है। 'इ' का 'य' मे परिवर्तन उच्चारण के कारण नही वल्कि लिखने के कारण है। इसलिए हम कह सकते हैं कि यह 'इ' या 'य', शौरसेनी प्राकृत से विकसित होने वाले वोली-वर्गो के भूतकाल की एक विशिष्टता है।

अव मागधी प्राकृत से प्रसूत भाषाओ की ओर ध्यान देते हुए हम एक नितान्त भिन्न परिस्थिति पाते हैं। शौरसेनी भाषाओ मे 'मारित' और 'चलित' का 'त', पहिले 'द' मे मृदु (=सघोष) हुआ और तव फिर यह पूरी तौर से विलुप्त हो गया। मागधी भाषाओ मे हम इसके स्थान पर ध्वनि 'ल' को पाते हैं। इस प्रकार, 'मारा' वगाली मे 'मारिल' है और विहारी मे 'मारल'। इन सभी भाषाओ की एक विशेषता है कि ये भूत-कृदन्त का प्रयोग अकेले रूप मे करने से इनकार करती है, उदाहरण के लिए जैसा कि हिन्दुस्तानी मे किया जाता है। इनके पास वहुत-से 'मेरे द्वारा', 'तुम्हारे द्वारा' और इसी प्रकार के अर्थ वाले परसर्गीय सर्वनाम है जिन्हे ये भूत कृदन्त मे इस प्रकार जोड़ देते है कि पूरा रूप एक शब्द वन जाता है। इस प्रकार, जव एक वगाली 'मैं-ने मारा' कहना चाहता है, तव वह "मारिल" (=मारा), 'अम' (=मेरे द्वारा)" कहता है, और इस पूरे को एक शब्द-वत् कर देता है अर्थात्—

'मारिलाम'। इसी प्रकार, वगाली 'चलिताम' का मूलत अर्थ है—'मेरे द्वारा जाया गया था' और तव फिर 'मैं गया'। कालान्तर मे, जिस क्रम से यह शब्द वना, विस्मृत हो गया और अव वगाली मे भूतकाल की रूप-रचना एक सामान्य कर्तृवाचीय क्रिया की तरह होती है। विशेप परसर्गीय सर्वनाम जो कि मागवी-प्रसूत भाषाओ मे प्रयुक्त हो रहे हैं, शक्ल मे वोली-वोली पर भिन्नता रखते है, और पूर्वी हिन्दी से तुलना करने के अभिप्राय से, यह सुविवाजनक होगा कि विहारी की भोजपुरी वोली मे प्रयुक्त होने वालो पर ही ध्यान दिया जाये।

पूर्वी हिन्दी शौरसेनी तथा मागवी भापाओ की विशिष्टताओ का सम्मिश्रण करती है। इसके भूतकाल की विशिष्ट ध्वनि मागवी की 'ल' नही, वल्कि शौरसेनी की 'इ' या 'य' है। दूसरी ओर, भूतकृदन्त अकेले ही प्रयुक्त नही हो सकता, और वहाँ परसर्गीय सर्वनाम लिये हुए है जो भोजपुरी मे प्रयुक्त हो रहे है। इसको स्पष्ट रूप से समझाने के लिए पूर्वी हिन्दी और भोजपुरी के भूतकाल के पुल्लिग एकवचन के रूप यहाँ पास-पास दिये जा रहे है। प्रत्येक मे वातु, काल-विशिष्टता तथा परसर्गीय सर्वनाम, समास-चिह्न अलग-अलग कर दिये गये हैं। पूर्वी हिन्दी-रूपो को पढते समय यह ध्यान रखना चाहिये कि इस भापा मे 'य' ऍ, तथा 'इ' सचमुच मे एक दूसरे का स्थान ले लेते है, पर कुछ क्षेत्र एक वर्तनी को और कुछ दूसरी को पसन्द करते हैं। वर्तनी, जो कि नीचे दी जा रही, अववी वोली की है.

परिनिष्ठित हिन्दी	पूर्वी हिन्दी	भोजपुरी
मैं—ने मारा	मार-ऍ—उँ	मार्-ॲल्-ओँ
तू-ने मारा	मार-इ-स्	मार्-ॲल्-अस्
उस-ने मारा	मार-इ-स्	मार्-ॲल्-अस्

यदि हम पूर्वी हिन्दी-शब्दो को नीचे दी हुई रीति से लिखें, जैसा अक्सर किया जाता है, हम, एक ओर, शौरसेनी वोलियो से और दूसरी ओर, भोजपुरी से, कहीं इससे भी अविक स्पष्ट रूप से, यह सम्वन्ध देख लेते हैं —

मार्-य्-औँ
मार्-य्-अस्
मार्-य्-अस्

ये मूलभूत रूप है, 'इ' तथा 'ऍ' वाले रूप इनके विकारी है।

यह भूतकाल तृतीय पुरुष एकवचन के, स्थानीय वर्तनी के अनुसार, इस्,-ऍस्, या -यस् मे अन्त होने वाले रूपो के साथ, पूर्वी हिन्दी के वोलने वाले का सविशेष रूप मे पहिचान कराने वाली विशिष्टता है। वातचीत मे क्रिया का यह रूप स्वभावत क्षिप्र आवृत्ति के साथ प्रयुक्त होता है, और इसी कारण से निरन्तर रूप मे सुना जाता है।

अवध से आये हुए अवधी भाषा-भाषी समूचे उत्तर-भारत मे फैले हुए हैं, क्योंकि वे नौकरी की तलाश मे बहुत बडे घुमक्कड है और, यहाँ तक कि, कलकत्ता मे एक यूरोपीय को, एक अन्तर्देशीय सईस के 'कहिस'=कहा, या 'मारिस'=मारा, ऐसे शब्दो को कहते हुए सुनने की अपेक्षा अधिक सामान्य बात और कुछ नही है। प्रत्येक एंग्लो-इण्डियन का ऐसे कथनो से परिचित होना आवश्यक था, और अधिकांश व्यक्ति यह सुनकर आश्चर्यान्वित होगे कि वे व्यक्ति ही शौरसेनी तथा मागधी प्राकृत के मिश्रण के अवशेष चिह्न थे।

इसी काल मे, शौरसेनी-वर्ग की बोलियो से पूर्वी हिन्दी की समानता का एक और भी सबल प्रमाण है। मैं पहिले ही कह चुका हूँ कि मागधी भाषाओ मे इस तथ्य की स्मृति समाप्त हो चुकी है कि ये भूतकाल वास्तविक रूप मे कर्मवाचीय प्रकृति के है। परसर्गीय सर्वनामो के प्रत्ययीकरण ने इस काल को एक कर्तृवाचीय क्रिया के साधारण भूतकाल की शक्ल मे बदल दिया है। पूर्वी हिन्दी मे, हम विस्मृति की इस प्रक्रिया को वास्तविक रूप मे गतिशील देखते है। इस काल की कर्मवाचीय प्रकृति की स्मृति अंशत इस कारण से सुरक्षित है कि यह भाषा अपना एक साहित्य रखती है। मलिक मुहम्मद जायसी और तुलसीदास की पुरानी कविता मे यह तथ्य कि काल कर्म-वाचीय है, बहुत कम भुलाया गया है। कर्त्ता, एजेण्टिव (Agentive) कारक मे प्रयुक्त होता है जो इस बोली मे 'ने' मे अन्त होने वाला नही है बल्कि वैसा ही है जैसा कि सामान्य विकारी रूप और क्रिया-लिंग तथा वचन मे कर्त्ता का नही अपितु कर्म का अनुसरण करती है। इस नियम के अनुसार क्रिया अब भी भूतकालो मे स्त्रीलिंग रूप रखती है, और जैसे ही हम पश्चिम की ओर बढते हैं, जहाँ पर पडोसी शौरसेनी की बोलियो के प्रभाव ने स्मृति को सजीव रखने मे मदद पहुँचायी है, सकर्मक क्रियाओ के उन कालों का कर्त्ता अब भी एजेण्टिव कारक मे है। इस प्रकार, पूर्वी अवध मे 'उसने मारा' के लिए 'ऊ मारिस' है जिसमे 'ऊ' कर्त्ताकारक मे है और उसका अर्थ है—वह, लेकिन पश्चिमी अवध के उन्नाव-क्षेत्र मे यह कथन 'उइ मारिस' प्रयुक्त होता है जिसमे 'उइ' विकारी रूप मे है और जिसका अर्थ 'उसके द्वारा' है। 'उइ' के कर्ता एकवचन का रूप 'वो' है।

भविष्यत् काल—भविष्यत् काल की बात भी इसी प्रकार की है, लेकिन इससे अधिक जटिल। संस्कृत मे 'वह जायेगा' कहने के दो रास्ते हैं। यह कर्तृवाच्य अथवा कर्मवाच्य दोनो ही प्रकार से कहा जा सकता है, अर्थात् हम या तो प्रत्यक्ष-शैली मे 'वह जायेगा' कह सकते है, और या हम 'उसके द्वारा जाया-जाना है' कहते हैं। प्रथम के लिए संस्कृत मे 'चलिष्यति' है और दूसरा 'चलितव्यम्' अकर्तृक-रूप मे प्रयुक्त होता है। हम पहिले, आधुनिक भाषाओ मे, प्रथम का विकास खोजेंगे। शौरसेनी मे, पहिले

यह 'चलिस्सइ' हुआ, 'त' के वैसे ही लोप से जिसकी ओर हम भूत कृदन्त के सन्दर्भ मे ध्यान दे चुके है। इसके वाद दोनो 'स्स' 'ह' मे परिवर्तित हुए और हम 'चलिहइ' पाते है। यह रूप आज दिन तक जीवित है और व्रजभाषा तथा अन्य शौरसेनी से विकसित वोलियो मे 'वह जायेगा'[1] का अर्थ स्पष्ट करता है। इस काल के पूरे रूप व्रजभाषा मे इस प्रकार हैं —

	एक०	वहु०
१	मारि हौं = मैं मारूँगा	मारिहैं
२	मारिहै	मारिहौ
३	मारिहै	मारिहैं

हम, इस प्रकार, कहने के अधिकारी हैं कि शौरसेनी-वर्ग की वोलियो मे भविष्यत् काल की विशिष्टता 'इह्' अक्षर है।

मागधी-वर्ग की वोलियाँ अर्थात् वे, जिनके अन्तर्गत आधुनिक आर्यभाषाओ की पूर्वी शाखा आती है, इसके विपरीत, अपना भविष्यत् अकर्तृक कर्मवाचीय भविष्यत् कृदन्त के आधार पर वनाना पसन्द करती हैं, जिसका उदाहरण है—संस्कृत-शब्द 'चलितव्यम्' = जाया-जाना है, जो कि अर्थ मे लैटिन 'यून्डुम' (Eundum) के समान है। इस कृदन्त की अकर्तृक प्रकृति पर ध्यान देना चाहिए। किसको जाना है, यह नही वतलाता। यह इस अभिव्यक्ति को सर्वनाम-द्वारा पूरा किये जाने के लिए छोड देता है। संस्कृत 'चलितव्यम्' दोनो प्राकृतो मे 'चलिदव्व' हो जाता है और इसके वाद, 'चलिअव्व', और तुलसीदास की पूर्वी हिन्दी के शब्द 'चलव' मे हम विकास का अगला चरण प्राप्त करते है। यह यहाँ विशुद्ध भविष्यत्-रूप मे प्रयुक्त होता है और न तो पुरुष और न वचन के आधार पर परिवर्तित होता है। 'चलव' का अर्थ है—मैं, तू, वह, हम, तुम, वे चलेंगे। यह व्याख्या संस्कृत मे मूलभूत अर्थ मे है। क्योकि उस भाषा मे शब्द का शाब्दिक अर्थ 'जाया-जाना है'। 'वह कौन है, जिसे जाना है' यह सर्वनाम की सहायता से स्पष्ट किये जाने के लिए छोड दिया जाता है। यही कारण है कि क्रिया का रूप अपरिवर्तित वना रहता है।

अव आज के युग मे आइये। भाषाओ की पूर्वी शाखा के उदाहरण के लिए हम वगाली को ले सकते हैं। असमी और उडिया इसका अक्षरश अनुसरण करती है। जैसा कि भूतकाल के लिए भूत कृदन्त के सम्वन्ध मे है, वैसे ही वगाली भविष्यत् कृदन्त का प्रयोग भी अकेले नही कर सकती। इसमे उसे परसर्गीय सर्वनाम जोडने आवश्यक

---

१. किताबी हिन्दुस्तानी मे भविष्यत् काल के लिए जो 'चलूँगा' मिलता है, उसकी व्युत्पन्नता सर्वथा भिन्न है।

हैं। इसका भविष्यत् कृदन्त 'इव्' मे अन्त पाता है। अर्थात्, प्राकृत 'चलिअव्वं' 'चलिव' हो जाता है। इसी प्रकार, सस्कृत 'मारितव्यम्'=मारा-जाना है, प्राकृत मे 'मारिअव्व' हो जाता है और तव वगाली मे 'मारिव'। इसमे परसर्गीय सर्वनाम जुड़ता है। जव एक वगाली कहना चाहता है—'मैं मारूँगा', वह कहता है—'मारिव' =मारा-जाना है, और तव इसके वाद 'ओ' (जिसे वह 'अ' लिखता है)=मेरे द्वारा, अर्थात् मारिव+अ। इस प्रकार वगाली का भविष्यत् काल नीचे दी हुई रीति-से रूप-रचना रखता है —

	एक०	वहु०
१	मार्-इव्-अ=मैं मारूँगा	मार्-इव्-अ
२	मार्-इव्-इ	मार्-इव्-ए
३	मार्-इव्-ए	मार्-इव्-एन्

अवशिष्ट पूर्वी-भाषा—'विहारी' भविष्यत् के प्रथम दो पुरुषो की रूप-रचना मे उसी नियम का दृढता से पालन करती है। कहने का तात्पर्य यह है कि यह 'व'-युक्त आधार को मजवूती से अपनाये हुए है, इस उदाहरण मे मारव्–को। यह, फिर भी, तृतीय पुरुष के सम्वन्ध मे अपना निश्चय करने मे असमर्थ है। मैथिली और मगही मे—यह कुछ वेढगे तौर से भविष्यत् के इस पुरुष के लिए वर्तमान कृदन्त का प्रयोग करती है, परन्तु भोजपुरी मे इसने इह-भविष्यत् का सहारा लिया है जिससे हम अभी शौरसेनी वोलियो के सन्दर्भ मे मिल चुके हैं। इस प्रकार हम भविष्यत् का एक विचित्र दृश्य पा रहे है जिसके प्रथम दो पुरुष वस्तुत अकर्तृक कर्मवाचीय हैं जव कि तीसरा कर्तृवाचीय है। जैसा कि भूतकाल के सम्वन्ध मे है, प्रथम दो पुरुषो की कर्मवाचीय उत्पत्ति की पूरी की पूरी स्मृति विलुप्त हो चुकी है। इस प्रकार भोजपुरी भविष्यत् नीचे दिये हुए प्रकार का है —

	एक०	वहु०
१.	मार्-अॅव्-ओं=मैं मारूँगा	मार्-अव्
२	मार्-अॅव्–ए	मार्-अव्-अँह्
३	मारिहे	मारिहेन

प्रथम दो पुरुषो मे, विभक्ति-प्रत्यय 'मेरे द्वारा', 'तेरे द्वारा' आदि अर्थ-वाले परसर्गीय सर्वनाम-रूप हैं। तृतीय पुरुष मे, एक वचन के लिए ऊपर दिया हुआ रूप आजकल वहुवचन मे प्रयुक्त होने वाला रूप है। इस समय एकवचन मे प्रयुक्त रूप 'मारी' इस प्रकार घिस गया है कि यह अपनी उत्पत्ति के चिह्न स्पष्ट रूप से दिखलाने मे असमर्थ है।

पूर्वी हिन्दी इसी दिशा मे इससे भी आगे बढ जाती है। अवधी बोली भोजपुरी से अत्यधिक समानता रखती है। इसका भविष्यत् रूप है -

	एक०	बहु०
१	मार्–अॅव्–ऊँ = मैं मारूँगा	मार्–अव्
२	मार्–अॅव्–अस्	मार्–अॅव्–ओ
३	मारिहै	मारिहैं

फिर भी, जैसे ही हम पश्चिम की ओर बढते हैं, हमे अवधी बोलने वाले उन्नाव ज़िले मे नीचे दिये हुए रूप मिल रहे है —

	एक०	बहु०
१	मारिहौं = मैं मारूँगा	मारिहैं
२	मारिहै	मारिहौ
३	मारिहै	मारिहैं

यह विशुद्ध—इह भविष्यत् है और ब्रजभाषा के लिए ऊपर दिये हुए रूपो से अभिन्न है।

बघेली बोली, डॉ० कैलाग के अनुसार, इन दोनो चरम सीमाओ के बीच की स्थिति स्वीकार करती है। ध्यान दिया जाना चाहिए, उत्तम पुरुष एक वचन 'मारव्ये–उँ' रूप प्राकृत के 'मारिअव्व' रूप के इतने अधिक निकट है जितने कि किसी दूसरी बोली मे नही।

	एक०	बहु०
१.	मार्–अॅव्ये–उँ = मैं मारूँगा	मार्–अव्
२.	मार्–इव्–अस् या मारिहेस्	मार्–इव्–आ
३	मारी	मारिहैं

फिर भी, यह निरूपित किया जाना चाहिए कि इस सर्वेक्षण के लिए बघेली-क्षेत्र से सगृहीत नमूने ठीक उन्नाव की ही तरह रूप-रचना रखने वाले इह-भविष्यत् की सत्ता स्वीकार करते हैं।

छत्तीसगढी का भविष्यत् इन दोनो प्रकार के रूपो का एक दूसरा मिश्रण प्रदर्शित करता है। यह इस प्रकार है —

	एक०	बहु०
१	मरिहौं = मैं मारूँगा	मार्–अव् या मरिहन्
२	मर्–अॅव्–ए	मरिहौ
३	मरिहै	मरिहैं

हम, इस प्रकार, देख रहे हैं कि पूर्वी हिन्दी का भविष्यत् काल भूतकाल की ही तरह पूरब की मागधी भाषाओ तथा पश्चिम की शौरसेनी भाषाओ के बीच मे पायी जाने वाली स्थिति को स्वीकार करती है ।

सामान्य निष्कर्ष—अब हम यह कहने के अधिकारी हैं कि पूर्वी हिन्दी भाषा अथवा दूसरे शब्दो मे, भारतीय आर्य-कथ्य भाषाओ की मध्यवर्त्ती शाखा, जहाँ तक सज्ञा एव सर्वनाम रूप-रचना का प्रश्न है, मागधी अथवा कथ्य भाषाओ की पूर्वी शाखा का सामान्यत. अनुसरण करती है, लेकिन क्रिया-रचना मे यह इस शाखा तथा निकटतम पश्चिम मे स्थित शौरसेनी शाखा के बीच की स्थिति स्वीकार करती है । यह प्राचीन अर्धमागधी प्राकृत का वर्तमान स्वरूप है।

अधिकारी वर्ग—बोलियो की इस मध्यवर्त्ती शाखा के सम्बन्ध मे आज तक कुछ नही लिखा गया है। वस्तुत यह पहिला ही अवसर है जब कि किसी तरह भी इस शाखा की सत्ता को स्वीकार किया गया है। वे अधिकारी जिन्होने विभिन्न बोलियो का वरण प्रस्तुत किया है, उपयुक्त स्थान पर विस्तार से उद्धृत किये हैं ।

अवधी, कोसली अथवा बैसवाड़ी

अवधी का शाब्दिक अर्थ 'अवध' अथवा 'औध' की भाषा है। इस बोली का विस्तार बहुत-कुछ अंशों में 'अवध' की सीमाओं से मेल खाता है। हरदोई ज़िले को छोड़कर, जिसकी क्षेत्रीय बोली कन्नौजी है, तथा फैज़ाबाद ज़िले के सुदूर-पूर्व को छोड़कर, जहाँ पश्चिमी भोजपुरी बोली जाती है, अवधी सम्पूर्ण अवध में प्रचलित है। गंगा के उत्तर में यह, जौनपुर ज़िले के पश्चिमी भाग में तथा मिर्ज़ापुर के गंगा-पार वाले उत्तर-स्थित उस भू-भाग में जो कि बनारस-राज्य के अन्तर्गत और इलाहाबाद ज़िले की गंगा के उत्तरी भू-प्रदेश में, बोली जाती है। इसके अतिरिक्त यह गंगा के दूसरी पार भी फैल गई है और गंगा के दक्षिण में स्थित इलाहाबाद के भू-प्रदेश की भाषा बन गयी है। साथ ही, यह यमुना के तटवर्त्ती उस प्रदेश को छोड़कर जिसमें बुन्देली एवं बघेली का मिश्रण मिल रहा है, सम्पूर्ण फतेहपुर ज़िले में बोली जाती है।

क्षेत्र—इस समूचे क्षेत्र में भाषा का व्याकरणिक ढाँचा प्रायः समान है। यद्यपि कतिपय स्थानीय विभिन्नताएँ उपलब्ध हो रही हैं, पर उनका उल्लेख यथास्थान किया जायेगा। सीमावर्त्ती ज़िलों में यह (=अवधी) समीपस्थ भाषाओं से भी प्रभावित होती है, जैसे, सीतापुर एवं खीरी में कन्नौजी से, फतेहपुर में कन्नौजी एवं बुन्देलखण्डी से तथा इलाहाबाद ज़िले के दक्षिणी-पूर्वी भाग में पश्चिमी भोजपुरी एवं बघेली से मिश्रित है। परन्तु यदि समूचे क्षेत्र को व्याकरणिक दृष्टिकोण से देखा जाये, तो अवधी अद्वितीय रूप में एकनिष्ठ (Homogeneous) भाषा कही जाएगी, जिसमें स्थानीय अन्तर नहीं के बराबर है। वस्तुतः यह तथ्य इसके साहित्य में भी ज्ञात होता है, क्योंकि इसके स्वरूप में सोलहवीं शताब्दि के मध्य से लेकर अब तक कुछ भी परिवर्तन नहीं हुआ है। शब्द-भाण्डार की दृष्टि से भी यह अत्यधिक एकनिष्ठ है, अपवाद केवल फतेहपुर की स्थानीय बोली है, जो द्वाब (अन्तर्वेद) में फैली होने के कारण शब्द-भाण्डार में द्वाब-क्षेत्र की भाषा के निकट है।

कोसली और बैसवाड़ी—इस भाषा को कोसली तथा बैसवाड़ी भी कहा गया है। 'कोशल' अवध का प्राचीन नाम है अतएव यह नाम तो 'अवधी' का पर्याय ही कहा जायगा। 'बैसवारी' या 'बैसवाडी' का अर्थ 'बैसवाडे की भाषा' है, बैसवाडा अर्थात् बैसवाड (बैस) राजपूतों का देश। अवध में इनकी संख्या बहुत अधिक है। कुछ लोगों के अनुसार बैसवाडी बोली लखनऊ, उन्नाव, रायबरेली और फतेहपुर तक ही सीमित है किन्तु उनका यह कथन तथ्यों पर आधारित नहीं है। जहाँ तक

व्याकरणिक गठन का प्रश्न है (और भाषाओ के वर्गीकरण मे यही सुनिश्चित एव सर्वमान्य आधार है) इन जिलो की बोली शेष अवध मे बोली जाने वाली भाषा के ठीक समान है। इस सम्बन्ध मे केवल इतना ही कहा जा सकता है कि क्रियाओ के एक प्रकार के रूप पूर्वी अवध मे तथा दूसरी प्रकार के पश्चिमी अवध में सामान्यत प्रचलित हैं, यद्यपि जो रूप पूर्व द्वारा स्वीकृत है, वे पश्चिम मे और पश्चिम के रूप पूर्व मे भी प्रयुक्त हो जाते है।

अवधी, ऊपर बतलाये हुए अपने क्षेत्र के अतिरिक्त, मुसलमानो द्वारा देशी भाषा के रूप मे उस व्यापक क्षेत्र मे भी बहुलता से बोली जाती है जहाँ की अधिकाश जनता 'बिहारी' का प्रयोग करती है। यह द्वि-भाषी क्षेत्र पूर्व मे मुज़फ्फरपुर ज़िले तक चला जाता है। अवधी का यह मुसलमानी रूप लखनऊ के पूर्ववर्त्ती मुसलमानी दरबार मे प्रयुक्त होने वाली भाषा का आकर्षक अवशेष है। बिहार मे यह यदा-कदा यूरोपियनो के मुख से भी सुनने को मिलता है क्योकि यह उस क्षेत्र की अशिक्षित मुसलमान-इतर जनता द्वारा शिष्ट भाषा के रूप मे प्रयुक्त होता है, ठीक उसी प्रकार जिस प्रकार शिक्षितो द्वारा उर्दू।

'पूर्वी'—कतिपय विद्वान 'अवधी' के लिए 'पूर्वी' नाम का प्रयोग करते हैं। डॉक्टर कैलॉग भी अपनी सुप्रसिद्ध पुस्तक 'हिन्दी व्याकरण' मे अवधी शब्द का प्रयोग भाषा के वर्तमान रूप के लिए करते हुए (जो सर्वथा उपयुक्त है) महाकवि तुलसीदास द्वारा प्रयुक्त उसके (अवधी) पूर्ववर्त्ती रूप के लिए 'प्राचीन पूर्वी' की सज्ञा देते हैं। 'पूर्वी' का शाब्दिक अर्थ 'पूर्व की भाषा' है परन्तु इस शब्द का प्रयोग बिना किसी वास्तविक तथ्य का उल्लंघन किए किसी भी व्यक्ति के द्वारा अपने से पूर्व की भाषा के लिए किया जा सकता है। साथ ही, इसका प्रयोग इसलिए भी अनुपयुक्त है कि यह शब्द आजमगढ तथा आसपास के ज़िलो मे बोली जाने वाली पश्चिमी भोजपुरी के लिए प्रमुखत प्रयुक्त होता है। इसलिए यदि अवधी के लिए इस शब्द का प्रयोग किया जाय, तो यह ऐसे दो पर्याप्त भिन्न बोली-रूपो के लिए हो जायगा, जो भारतीय आर्य-भाषाओ के एक वर्ग के भी अन्तर्गत परिगणित नही होते।

बोलने वालो की सख्या—ब्रिटिश भारत मे अवधी भाषा-भाषियो की अनुमानित सख्या निम्न सारिणी मे प्रदर्शित की जा रही है .

ज़िलो के नाम	अनुमानित सख्या
फैज़ाबाद	९,२५,०००[१]

---

१. यह सख्या पहले ११,७५,००० लिखकर आयी थी पर निश्चित किए जाने पर उनमे से २,५०,००० व्यक्ति पश्चिमी भोजपुरी बोलने वाले निकले ।

सुल्तानपुर	१०,१५,७५०
गोण्डा	१४,५३,०००
बहराइच	९,३४,०००
प्रतापगढ	९,१०,०००
रायबरेली	१०,१५,६००
उन्नाव	९,०३,०००
लखनऊ	६,८५,०००
बाराबकी	१०,३५,५००
सीतापुर	१०,७१,०००
खीरी	८,८५,०००[1]
फतेहपुर	४,८८,६००
इलाहाबाद	१४,८५,८००
उत्तरी मिर्ज़ापुर	२,५२,०००
जौनपुर	११,११,५००
योग	१,४१,७०,७५०

इन आँकडो मे वे मुसलमान सम्मिलित नही है जो विहारी-बोली-क्षेत्र मे रहकर अवधी बोलते है। ये लोग अनुमानत. ९,१३,८१३ होगे। नेपाल की तराई मे रहने वाले अवधी भाषा-भाषी भी इनमे सम्मिलित नही हैं। इनके सम्बन्ध मे कोई भी आँकडे प्राप्त नही है फिर भी यह सख्या कम से कम दस लाख ही मानी जा सकती है। इस प्रकार हमारा यह कथन सही कहा जायगा कि देशी भाषा के रूप मे अवधी बोलने वालो की सख्या कमसे कम १,६०,००,००० है।

दुर्भाग्य से यह बतला सकना असभव है कि मान्य अवधी-क्षेत्र के बाहर ऐसे कितने व्यक्ति है जो अवधी बोलते है। सन् १८९१ की जनगणना मे अन्यान्य भाषाओ के साथ अवधी भी 'हिन्दुस्तानी' शीर्षक के अन्तर्गत परिगणित की गयी थी। ऐसी स्थिति मे हम अब उनकी सख्याओ का अलग-अलग निर्धारण नही कर सकते। लोअर बगाल तथा असम प्रान्तो मे, अवध मे आये हुए लोगो की सख्या तथा विविध-रूपा हिन्दुस्तानी बोलने वाले उन व्यक्तियो की सामूहिक सख्या की जानकारी जो भारत के विभिन्न भागो से आये हुए हैं, जनगणना के लेखो से सभव है। प्राप्त आँकडो की सहायता से हम इन

---

१. इसके अन्तर्गत विकृत अवधी बोलने वाले ३,०००थारू लोग भी सम्मिलित हैं।

दो सूबों के हिन्दी[1] बोलने वालों की सख्या को आनुपातिक रूप से दो भागों—अवधी तथा हिन्दुस्तानी—मे विभक्त कर सकते हैं और परिणामस्वरूप इन प्रान्तों के प्रत्येक ज़िले मे अवधी बोलने वालों की सख्या का अनुमान लग जाता है। निष्कर्ष स्वभावतः सही न कहकर निकटवर्ती कहा जायगा। इस सम्बन्ध मे केवल इतना ही कहा जा सकता है कि आँकड़ों के अभाव मे यह सख्या ही यथेष्ट है। उपयुक्त आँकड़े नीचे ज्यों के त्यों दिये जा रहे हैं —

अवधी क्षेत्र के बाहर तथा लोअर बगाल मे अवधी बोलने वालों की अनुमानित सख्या की द्योतक सारिणी

जिले का नाम	बोलने वालों की सख्या
वर्दवान	४,०००
बकुरा	६००
वीरभूमि	२,५००
मिदिनापुर	९,८००
हुगली	१,६००
हावड़ा	८,३००
चौबीस परगना	११,०००
कलकत्ता	२५,७००
नदिया	१,४००
जैसोर	५००
मुर्शिदाबाद	११,०००
खुलना	४००
दीनाजपुर	१,५००
राजशाही	२,४००
रगपुर	७००
बोगरा	२,९००
पबना	३,८००
दार्जिलिंग	७००
जलपाईगुडी	२,०००

---

१. इन दो प्रान्तों से सबधित जनगणना के आँकड़ो मे विविध रूपा भाषा का नाम हिन्दुस्तानी नहीं बल्कि हिन्दी दिया गया है। शब्द कोई भी प्रयुक्त किया जाय, जनगणना रिपोर्ट मे अर्थ एक ही है।

कूच विहार (रियासत)	७५०
ढाका	४,२००
फरीदपुर	६००
वाकरगज	३००
मेमनसिंह	९,२००
चटगाँव	४००
नोआखाली	६४
टिपरी	५००
भागलपुर	३,२१४
कटक	२२०
पुरी	२८०
वालासोर	७३०
योग (अ)	१,११,२५८

असम प्रात मे अवधी बोलने वालो की अनुमानित सख्या-सम्बन्धी सारिणी

जिले का नाम	बोलने वालो की सख्या
कछार के मैदान	८,२००
सिलहट	१३,८५०
गोलपारा	१,२००
कामरूप	५००
दरॉग	१,१००
नौगाँव	६५०
शिवसागर	२,५००
लखीमपुर	४,०००
नागा पहाडियाँ	५०
खासी और जयन्तिया पहाडियाँ	२००
लुशाई पहाडियाँ	४०
योग (अ)	३२,२९०

हम भारतवर्ष के अन्य प्रान्तो के लिए भी इस प्रकार के आँकडे देने मे असमर्थ है क्योंकि उनके जनगणना-लेखो मे उन व्यक्तियो की सामूहिक सख्या के आँकडे उपलब्ध नही है, जो हिन्दुस्तानी कही जाने वाली भाषाओ के प्रदेशो से आ गए हैं। उदाहरणत

इन लेखो मे 'विहारी' 'हिन्दुस्तानी' के अन्तर्गत परिगणित है, पर विहार मे उत्पन्न एव किसी अन्य प्रान्त मे वसे हुए विहारियो की सख्या के आँकडे कही भी प्राप्त नही होते।

अतएव हमे लोअर वगाल तथा असम प्रान्तो के लिए दिए गए निम्न आँकडो से ही सन्तोष कर लेना चाहिए और भारत के अन्य प्रान्तो मे अवधी वोलने वालो की सख्या का प्रश्न, न हल हो सकने वाली समस्या समझ कर, छोड़ देना चाहिए —

अवध क्षेत्र के अवधी वोलने वालो की कुल सख्या	१,६०,००,०००
लोअर वगाल के अन्यान्य क्षेत्रो मे अवधी वोलने वालो की अनुमानित सख्या	१,११,२५८
असम प्रान्त के अन्यान्य क्षेत्रो मे अवधी वोलने वालो की अनुमानित सख्या	३२,२९०
योग	१,६१,४३,५४८

साहित्य—अवध प्राचीन काल से ही साहित्यिक जागरूकता का केन्द्र रहा है, अतएव इस प्रदेश के साहित्य की रूपरेखा प्रस्तुत करने के प्रयास मे हमे भारतीय साहित्य—सस्कृत तथा अर्वाचीन भाषाओ, दोनो के महत्त्वपूर्ण अगो के विस्तृत इतिहास की भूमिका स्पष्ट करनी पड जायगी। इस प्रकार का प्रयत्न इस कार्य के लिए विषयान्तर कहा जायगा।

यहाँ यह स्मरणीय है कि भारतीय नायक, रामचन्द्र इस प्रान्त की प्राचीन राजधानी अयोध्या के राजकुमार थे अतएव यह तथ्य स्वभावत. यहाँ के कवियो द्वारा अपनी कृतियो मे उतारा जाता रहा। महान कवि तुलसीदास ने, जिन्होने इस भाषा मे रामायण की रचना की, अवधी के भाग्य पर एक मोहर लगा दी। उनके समय से लेकर हिन्दुस्तान के किसी भी भाग मे रहने वाले (इसके अन्तर्गत विहार-प्रान्त का सुदूर-पूर्व का प्रदेश भी सम्मिलित है) भारतीय साहित्यकार के लिए अवधी भाषा का प्रयोग, न केवल अवध के योद्धा राजकुमारो की वीर-गाथाओ के वर्णन के लिए अपितु ओजपूर्ण शैली मे लिखी किसी कविता के लिए अनिवार्य-सा हो गया।

इस प्रकार अवधी उत्तरी भारत मे महाकाव्यो के उपयुक्त भाषा वन गयी और इस दायित्व का भार भी उसने पर्याप्त सफलता के साथ वहन किया। तुलसीदास की कृतियो को ध्यान मे रखते हुए एक ओर हमे ऐसी प्रतिभा मिलती है, जो निस्सन्देह कवि को एक दिन सर्वसम्मति से विश्व के महान कवियो मे स्थान दिलायेगी और दूसरी ओर, हम भाषा मे ऐसा समृद्ध शब्द-भाण्डार पाते हैं जो उच्चारण मे अत्यधिक मधुर है तथा हिन्दुस्तान की ओजपूर्ण शैली के छन्द—दोहे और चौपाइयो—की लय

के साथ सगति विठलाये हुए है। इस प्रकार यह शब्द-भाण्डार साधारण साहित्यकार को भी पर्याप्त सफलता दिलाने मे समर्थ है।

तुलसीदास की मृत्यु सन् १६२४ मे हुई और वे शेक्सपियर के समकालीन थे, फिर भी, वे इस भाषा के प्रथम प्रसिद्ध गन्थकार नही कहे जा सकते। उनके पूर्व मुसलमान कवि मलिक मुहम्मद जायसी हो चुके थे जिनका प्रशसनीय 'पद्मावती' महाकाव्य अवधी की पहली महत्त्वपूर्ण रचना है। वे शाहशाह शेरशाह के राजत्वकाल मे प्रकाश मे आये और उन्होने अपना काव्य सन् १५४० ई० मे प्रारम्भ किया। यह काव्य चित्तौड़ के राजा रतनसिंह के साहसिक कार्यो तथा अलाउद्दीन खिलजी द्वारा चित्तौड़ पर घेरा डालने और नगर को ध्वस्त किये जाने वाली गाथा को लेकर चला है। यह अवधी साहित्य मे अभिरुचि रखने वालो को गभीर अध्ययन के लिए प्रेरित करता है।

तुलसीदास के समय से लेकर अब तक अवधी साहित्य मे सैकडो साहित्यकार हो चुके हैं। सस्कृत का सपूर्ण महाभारत भी अवधी मे रूपान्तरित हो चुका है और उसका यह अनुवाद सारे हिन्दुस्तान मे देशी भाषा का परिनिष्ठित रूप प्रस्तुत करता है। सन् १८८९ मे बगाल की एशियाटिक सोसायटी से प्रकाशित लेखक की 'मॉडर्न वर्नाक्यूलर लिट्रेचर ऑव हिन्दुस्तान' (Modern Vernacular Literature of Hinduostan) नामक पुस्तक इन विभिन्न साहित्यकारों का पूर्ण विवरण प्रस्तुत करती।है।

अधिकारी वर्ग—अवधी भाषा के सम्बन्ध मे खासतौर से बहुत कम लिखा गया है। 'गार्सी दि तासी' (Garcin de Tassy) की कृतियो मे तथा श्री बीम्स एवं डॉ० हार्नले (Dr. Hoernle) के 'तुलनात्मक व्याकरणो' मे इसका उल्लेख है तथा इसके उदाहरण दिये गये है। मेरी जानकारी मे केवल ऐसी दो ही कृतियाँ हैं जो इसके व्याकरण को विस्तार. से प्रस्तुत करती है। ये नीचे दी जा रही हैं :—

रेवरेण्ड एस० एच० केलाग (Rev S H. Kellogg)—'ए ग्रामर ऑव दि हिन्दी लैंग्वेज' (A Grammar of the Hindi Language =हिन्दी भाषा का व्याकरण) . इसमे उच्च हिन्दी, ब्रज तथा तुलसीदास-कृत रामायण की पूर्वी हिन्दी साथ ही, अवध की स्थानीय बोलियो इत्यादि के अध्ययन पर्याप्त भाषा-वैज्ञानिक टिप्पणियो के साथ प्रस्तुत किये गये है। द्वितीय सस्करण, सशोधित एव परिवर्धित, लदन, १८९३। इसमे वर्तमान अवधी, साथ ही तुलसीदास की प्राचीन अवधी, जिसे लेखक ने प्राचीन बैसवाडी कहा है, दोनो का व्याकरणिक अध्ययन सम्मिलित है। प्रथम सस्करण मे अन्तिम को 'प्राचीन पूर्वी' की सज्ञा दी गयी है।

रेवरेण्ड ई० ग्रीव्ज़ (Rev E Greaves)—'नोट्स ऑन दि ग्रामर ऑव दि रामायण ऑव तुलसीदास' (तुलसीदास-कृत रामायण के व्याकरण पर टिप्पणियाँ), बनारस, १८९५।

अवधी का कोई भी शब्दकोश अब तक नहीं बना, लेकिन श्री बेट्स-कृत 'हिन्दी शब्दकोश' (Hindi Dictionary) में अवधी के बहुमूल्यक शब्द तथा रामायण में प्रयुक्त विशिष्ट शब्दों का पूर्ण संग्रह मिल जायगा।

'माडर्न वर्नाक्यूलर लिटरेचर ऑव हिन्दुस्तान' (हिन्दुस्तान की आधुनिक देश्य भाषाओं का साहित्य), कलकत्ता, १८८९, के अतिरिक्त लेखक की नीचे दी हुई कृतियाँ मलिक मुहम्मद जायसी तथा तुलसीदास का अध्ययन विशेष रूप से प्रस्तुत कर रही हैं—

'ए स्पेसीमेन ऑव दि पद्मावती' (पद्मावती का एक नमूना)—'जनरल ऑव दि एशियाटिक सोसायटी ऑव बंगाल' (Journal of the Asiatic Society of Bengal) जिल्द ६२, भाग १, १८९३, पृष्ठ १२७ तथा आगे।

'दि पद्मावती ऑव मलिक मुहम्मद जायसी' (मलिक मुहम्मद जायसी की पद्मावती)—व्याख्या, अनुवाद तथा आलोचनात्मक टिप्पणियों सहित सम्पादित लेखक, जी० ए० ग्रियर्सन एवं महामहोपाध्याय पण्डित सुधाकर द्विवेदी, एफ० ए० यू०। 'एशियाटिक सोसायटी ऑव बंगाल' द्वारा इसके कुछ भाग प्रकाशित किये गये हैं।

'नोट्स ऑव तुलसीदास' (तुलसीदास पर टिप्पणियाँ)—'इण्डियन एण्टीक्वेरी' (Indian Antiquary), जिल्द २२, १८९३, पृष्ठ ८९, १२२, १९७, २२५ तथा २५३ । अलग से भी पुनर्मुद्रित, लंदन, लूज़ेक । साथ ही देखिये—'एशियाटिक सोसायटी ऑव बंगाल' की १८९८ की कार्यवाही, पृष्ठ ११३ तथा १४७।

और भी देखिये—

रेवरेण्ड ई० ग्रीव्ज़ (Rev E Greaves) 'गुसाँई तुलसीदास का जीवन-चरित', नागरी-प्रचारिणी पत्रिका (Journal of the Nagari-pracharini Sabha), जिल्द ३, पृष्ठ ५३ तथा आगे, बनारस १८९८।

लिपि—अवधी लिखने में देवनागरी तथा कैथी, दोनों लिपियों का प्रयोग होता है। इनकी चर्चा 'बिहारी' शीर्षक के अन्तर्गत पूरी तौर से की जा चुकी है। देखिये पृष्ठ २३ तथा आगे, जिल्द ५, भाग २। यदा-कदा फारसी लिपि का प्रयोग भी मिलता है। 'पद्मावती' की प्राचीनतम पाण्डुलिपियाँ या तो फारसी या कैथी में लिखी हुई मिलती हैं। रामायण की पाण्डुलिपि, जो परम्परा से लेखक के हाथ द्वारा लिखी हुई मानी जाती है, देवनागरी में है। 'पंच निर्णय' का एक दस्तावेज भी है जो

स्वय तुलसीदास ने लिखा था। इसके प्रारभिक छद अवधी मे हैं और देवनागरी मे लिखे गये हैं। दस्तावेज का मुख्य भाग फारसी भाषा और लिपि मे है तथा कुछ हस्ताक्षर देवनागरी, कुछ कैथी और कुछ फारसी लिपियो में हैं।

बिहारी की तरह, इस भाषा में भी ह्रस्व के साथ ही, दीर्घ 'ए', और ह्रस्व एवं दीर्घ 'ओ' मिलते हैं। ह्रस्व 'ऐ' तथा ह्रस्व 'औ' भी उपलब्ध हैं। देवनागरी लिपि की छपाई मे ये ध्वनियाँ क्रमश 'ए', 'ओ', 'ऐ' तथा 'औ' रूप मे अकित हैं।

अवधी मे ह्रस्व 'ए' अधिकाशत. 'य' तथा ह्रस्व 'ओ' अधिकाशत. 'व' रूप मे लिखे जाते हैं और उसी प्रकार उच्चरित होते हैं। ठीक इसी प्रकार दीर्घ 'ए' तथा दीर्घ 'ओ' भी क्रमशः 'या' तथा 'वा' लिखे जाते हैं और उच्चरित होते हैं।

एक ही शब्द के इन दो वैकल्पिक रूपों के उदाहरण इस प्रकार हैं —

सामान्य रूप	वैकल्पिक रूप
तें हि	त्यहि
मों हि	म्वहि
एक देस	याक दयास
मोहि	म्वाहि

उपान्त्य-पूर्व (Antepenultimate) स्वर के ह्रस्वीकरण का वही नियम जो बिहारी मे मिल रहा है, हम यहाँ भी पाते हैं, देखिये—पृष्ठ २९ और आगे, जिल्द ५, भाग २।

अवधी-व्याकरण—अवधी-व्याकरण के प्रमुख नियमो की सक्षिप्त रूपरेखा नीचे दी जा रही है। केवल एक तथ्य यहाँ आवश्यक है कि भूतकाल अन्यपुरुष का क्रिया-रूप एकवचन मे–'इस' या–'ए' मे तथा बहुवचन मे–'इन' या–'एँ' में अन्त होता है। ये दोनो वैकल्पिक रूप सम्पूर्ण अवध-क्षेत्र मे प्रयुक्त होते हैं, किन्तु प्राप्त नमूनों से ज्ञात होता है कि–'इस' तथा–'इन' वाले रूप प्रधानत. पूर्वी में और जो–'ए' तथा–'एँ' वाले रूप हैं, वे विशेषत पश्चिमी ज़िलो मे प्रचलित हैं अर्थात् उन ज़िलो मे जहाँ बैसवाडी, जो कुछ लोगो के अनुसार अवधी से भिन्न है, बोली जाती है।

हम इस पर भी ध्यान दे सकते हैं कि लिंग-भेद पूर्वी ज़िलो की अपेक्षा पश्चिमी ज़िलो मे अधिक स्पष्ट है।

एक अन्य महत्त्वपूर्ण तथ्य भी ध्यान देने योग्य है। प्राचीन अवधी मे भूतकाल की सकर्मक क्रिया के रूप कर्मवाचीय होते थे अर्थात् क्रिया कर्म के लिंग तथा वचन का अनुसरण करती थी और कर्त्ता के लिए जो अभिकर्त्ता (Agentive) कारक बनकर आता है और जिसका कारक-चिह्न 'ने' इस बोली मे नही मिलता, सज्ञा का सामान्य विकारी रूप ही प्रयुक्त हो जाया करता है। यह प्रवृत्ति उन्नाव ऐसे

पश्चिमी जिलो मे अब भी सुरक्षित है जहाँ, 'उइ मारिस', शाब्दिक अर्थ—उसके द्वारा मारा गया, मे सर्वनाम 'उइ' विकारी रूप है जिसका कर्त्ता कारकीय रूप 'वो' है। ध्यान दीजिये, क्रिया कर्म के पुरुष का नही, अपितु कर्त्ता के पुरुष का अनुसरण करती है। यह अवधी की अपनी निजी विशेषता है जो मलिक मुहम्मद जायसी तथा तुलसीदास की कविता मे स्थान-स्थान पर मिल जायगी। 'मारिस' का 'स' एक प्राचीन परसर्गीय सर्वनाम-रूप का अवशेष है जिसका अर्थ 'वह' नही, अपितु 'उसके द्वारा' है और इस प्रकार सम्पूर्ण वाक्याश का शाब्दिक अर्थ होगा–'उसके द्वारा मारा–गया–उसके–द्वारा। पूर्वी अवध मे यह भुला दिया गया है कि सकर्मक क्रियाओं का भूतकाल का रूप कर्मवाचीय होता है, और अब यह सम्पूर्ण काल ठीक बगाली तथा बिहारी की तरह कर्तृवाचीय बनकर व्यवहृत होता है।

वर्तमान० मैं हूँ, आदि

	रूप—१				रूप—२			
	एक०		बहु०		एक०		बहु०	
	पु०	स्त्री०	पु०	स्त्री०	पु०	स्त्री०	पु०	स्त्री०
१.	बाटयेउँ	बाटिउँ	बाटी	बाटिन	अहेउँ	अहिउँ	अही	अहिन
२.	बाटे, बाटस बाटेस, बाट	बाटिस	बाटेव बाट्यो बाटये	बाटिव	अहे अहस, अहसि अहेस	अहिस	अहेव अह्यों, अह अहें	अहिव
३	बाटै	बाटई	बाटैं	बाटीं	आ, अहै, है, आय	अहई	अहीं अहइँ	अहइँ

मूत०, मैं था, आदि

१.	देखेउँ	देखिउँ	देखा, देखन, देखेन	देखीं	देखेंउँ	देखेंतिउँ	देखित	देखित
२.	देखेस देखिस	देखिस देखिसि	देखेउ देखा	देखीं	देखेंतेस देखेंतिस	देखेंतिस	देखेंतेहु देखेंतेउ	देखेंतिन
३	देखेस देखिस, देखिसि देखैं	देखी देखिसि	देखेन देखिन देखें, देखैं	देखीं देखिनि	देखत	देखित	देखेंतेन देखेंतिन	देखेंतिन

वर्त०, मैं देखता हूं, आदि, देखत अहेउँ, आदि, अपूर्ण०, मैं देख रहा था, देखत रहेउँ, आदि ।

पूर्ण काल, मैं-ने देखा है, आदि

	एक०		बहु०	
	पु०	स्त्री०	पु०	स्त्री०
१	देखेउँ-हौं	देखिउँ-हौं	देखे-अही	देखे-अहीं
२	देखेस-है देखिस-है	देखिस-है देखिसि-है	देखेउ-हैं	देखिउ-हैं
३	देखेस-है देखिस-है	देखी-है देखिसि-है	देखेन-हैं देखिन-हैं	देखिनि है

अकर्मक क्रियाओ के सदर्भ मे भूतकाल की रचना 'रहेउँ' की तरह होती है ।

अनियमित क्रियाएँ—'जाव' का भूत कृ० है—ग, गा, गै, या गय (स्त्री० गै) या गवा (स्त्री० गई) । और 'होव'=होना, का है—भ, भा, भय, या भै (स्त्री० भै), या भवा (स्त्री० भई) । और 'करब'=करना, , 'देब'=देना, 'लेब'=लेना आदि के क्रमश इस प्रकार हैं—कीन्ह, दीन्ह, लीन्ह । इन क्रियाओ के भूतकालिक रूप क्रमश किहिस=किया, दिहिस=दिया, लिहिस=लिया, भी हो सकते हैं ।

वे क्रियाएँ जिनकी धातुएँ स्वर मे अन्त होने वाली हैं, सामान्यत श्रुति-रूप मे य् नही बल्कि व् लेती हैं । इस प्रकार बनावा, बनाया नही, 'आव'=होना का अपना भूत०रूप आय=आया, है, । वे क्रियाएँ जिनकी धातुएँ-आ मे अन्त होती हैं, प्राय अपना भूतकालिक रूप - न मे बनाती हैं, जैसे दयान=दया की, रिसान=क्रोध किया, मे ।

अन्य बातो मे इसका व्याकरण परिनिष्ठित हिन्दी का निकट से अनुकरण करता है ।

बघेली, बघेलखंडी या रिँवाई

क्षेत्र—जैसा कि नाम से स्पष्ट है, बघेली बघेलो की भाषा है । कहने का तात्पर्य यह है कि बघेलखण्ड मे बोली जाने वाली 'बोली'। यह भू-प्रदेश आज की 'बघेलखण्ड एजेन्सी' के अन्दर आने वाले क्षेत्र से लगभग पूरी तौर से समानता रखता है। यह बोली इस 'एजेन्सी' की प्रतिनिधि रियासत 'रीवा' (Rewa), विशुद्ध उच्चारण'रीवाँ' के आधार तर 'रिँवाई' के नाम से भी जानी जाती है। यह चदभकार की छोटा नागपुर रियासत मे और रीवा के दक्षिण मे स्थित ब्रिटिश जिले माँडला मे भी पर्याप्त शुद्धि के साथ बोली जाती है और कुछ कम शुद्धि के साथ मिर्जापुर ज़िले के दक्षिण-सोन भाग मे एव जबलपुर मे, जहाँ यह धीरे-धीरे क्रमश विहारी तथा बुन्देली मे विलीन होती जाती है । इसी प्रकार फतेहपुर, बाँदा तथा हमीरपुर जिले मे भी बघेली का एक वह रूप बोला जाता है, जो कम-अधिक-मात्रा मे बुन्देली भाषा से मिश्रित है। बघेली, माँडला के दक्षिण तथा दक्षिण-पश्चिम मे बोली जाने वाली कतिपय विशृंखलित बोलियो का मूलाधार भी जान पडती है ।

बाँदा ज़िला बुन्देलखण्ड का एक हिस्सा है और इसमे बोली जाने वाली भाषा अब तक सदैव 'बुन्देली' मानी जाती रही है। बाँदा की भाषा और बघेली के बीच पायी जाने वाली समानता, यद्यपि पहचान ली गयी थी और इसी कारण बहुत पहिले ही गलत ढग मे स्वीकार कर लिया गया कि बुन्देली और बघेली, दोनो एक ही भाषा के विभिन्न नाम है। इससे अधिक सच्चाई से दूर, और कुछ नही है। इस सर्वेक्षण द्वारा अब ये दोनो भाषाएँ बुनियादी तौर से भिन्न दिखला दी गयी हैं और सच्चाई यह है कि यद्यपि बाँदा ज़िला बुन्देलखण्ड मे है किन्तु इसकी सीमाओ के अन्तर्गत बोली जाने वाली भाषा बुन्देली नही, बघेली है ।

सीमाएँ—यह उत्तर की ओर से बघेली, दक्षिण-पूर्व इलाहाबाद को मिश्रित अवधी से तथा केन्द्रीय मिर्जापुर मे बोली जाने वाली पश्चिमी भोजपुरी से घिरी हुई है । पूरब मे यह छोटा नागपुर की करद रियासतो की तथा बिलासपुर की छत्तीसगढी भाषा मे घिरी है। दक्षिण मे यह भाषाओ तथा बोलियो के मिश्र-रूपो से मिल जाती है जिनमे बालाघाट मे बाली जाने वाली मराठी प्रमुख है। दक्षिण एव दक्षिण-पश्चिम मे यह बुन्देली से सम्बद्ध है।

बोलने वालों की सख्या—निम्न तालिका से उस क्षेत्र के बघेली बोलने वालो की अनुमानित सख्या ज्ञात होती है, जिसमे यह देशी भाषा है

वघेलखण्ड एजेन्सी	२६,८०,०००
चदभकार	१८,५२६
माँडला	२,४९,०००
दक्षिण मिर्जापुर	४९,५००
जबलपुर	६,१५,१००
योग	३६,१२,१२६

इसके अतिरिक्त और भी हैं, जिन्हे मैं पश्चिम तथा दक्षिण की विशृखलित बोलियाँ मानता हूँ। पश्चिम वाली, फतेहपुर, बाँदा एव हमीरपुर जिलो मे और उन देशी रियासतो के हिस्सो मे जो बुन्देलखण्ड एजेन्सी के उत्तर तथा पूर्व का गठन करती है, बोली जाती हैं। इन स्थानो की भाषा यद्यपि बघेली पर आधारित है किन्तु अधिकाधिक मात्रा मे बुन्देली से मिश्रित है । हम जैसे ही पश्चिम की ओर बढते हैं, यहाँ तक कि जालौन जिले तक, हमे एक मिश्रित बोली मिलती है जो निभट्टा कही जाती है और जिसमे बुन्देली हावी है। इसके लिए हम कह सकते है कि यह बघेली से मिश्रित बुन्देली का एक रूप है। निम्न तालिका पश्चिम की इन विशृखलित बोलियो के बोलने वालो की सख्या तथा उनका स्थान जहाँ वे बोली जा रही है अवगत कराती है।

विशृखलित बोली का नाम	स्थान	बोलनेवालो की सख्या	
तिरहारी	फतेहपुर	१,९७,७००	
	बाँदा	२५,०००	
	हमीरपुर	३,०००	
			२,२५,७००
तथाकथित बुन्देली	बाँदा		२,३६,२००
गहोरा	,,		२,४३,४००
जूडर	,,		१,१४,५००
बनाफरो	हमीरपुर		५,०००
		योग	८,२४,८००

दक्षिण की विशृखल बोलियाँ माँडला जिले तथा सटे हुए दूसरे जिलो मे बहुत से कबीलो द्वारा बोली जाती हैं। वे भी बघेली पर आधारित हैं किन्तु वे न्यूनाधिक

मात्रा मे मराठी तथा बुन्देली से मिश्रित है। ये पश्चिम की विश्रृखल बोलियो से इस बात मे भिन्न हैं कि इनका कोई निश्चित क्षेत्र नही है। इसके विपरीत ये उन कबीलो की निजी सम्पत्ति है जो इनको बोलते हैं, जब कि उस क्षेत्र की अधिकाश जनता, जहाँ ये कबीले रहते हैं, एक नितान्त भिन्न भाषा का प्रयोग करती है। निम्न तालिका से दक्षिण की इन विश्रृखल बोलियो के बोलने वालो की सख्या तथा प्रत्येक बोली के स्थान का द्योतन होता है —

विश्रृखल बोली का नाम	जिला जहाँ बोली जा रही है		बोलने वालो की सख्या
मरारी	मॉडला		५२,७००
पोवारी	बालाघाट	४१,३००	
	भन्दरा	१,७००	
			४३,०००
कुम्भारी	,,		३०
ओझी	छिंदवाडा		१००
	योग		९५,८३०

उन्ही कारणो से जो अवधी के सन्दर्भ मे दिये जा चुके है, उस क्षेत्र के बाहर जिसमे कि बोली देशी भाषा है किसी दूसरे स्थान के बघेली बोलने वालो की सख्या का अनुमान लगाना असभव है। इसलिए केवल निम्नलिखित आँकडे ही उपलब्ध है —

निजी क्षेत्र मे बघेली बोलने वालो की सख्या	३६,९२,१२६
पश्चिम की विश्रृखल बोलियो को बोलने वालो की सख्या	८,२४,८००
दक्षिण की विश्रृखल बोलियो को बोलने वालो की सख्या	९५,८३०
योग	४६,१२,७५६

साहित्य—बघेलखण्ड किसी बडे साहित्यकार के लिए प्रसिद्ध नही रहा है, यद्यपि रीवाँ के महराजे साहित्य के प्रति अपनी उदारता के लिए बहुत पहले से ही प्रसिद्ध रहे हैं। महाराजा रामचद का दरबार एक समय विख्यात गायक एव कवि तानसेन से सुशोभित था, बाद मे वह सन् १५६३ ई० मे सम्राट् अकबर की राजधानी मे बुला लिया गया था। कहा जाता है कि महाराजा नेजराम ने कवि हरिनाथ को, जो १५८७ मे अपने वैभव पर थे, केवल एक छन्द पर एक लाख रुपया दिया था। महाराजा विश्वनाथ सिंह ने, जिन्होने १८१३ से १८३४ तक राज्य किया, न केवल अपने कुटुम्ब की परम्परागत उदारता का पालन किया बल्कि वे स्वय एक लेखक थे। उन्होने 'सिंह बघेला' उपनाम से लिखा है। उनकी रचनाओ मे 'रघुनन्दन' नामक

एक नाटक तथा तुलसीदास की 'विनयपत्रिका' की एक सम्मानित टीका उल्लेखनीय है। उनके उत्तराधिकारी महाराजा सर रघुराज सिंह जी० सी० एस० आई० भी जो १८५४ मे गद्दी पर बैठे और १८८० मे मरे, एक परिश्रमी साहित्यकार थे । उन्होने 'आनन्दाम्बुधि' नाम से भागवत-पुराण का एक बहु प्रशंसित अनुवाद किया तथा 'सुन्दर सतक' शीर्षक से हनुमान की गाथा, 'रुक्मिणी परिणय', 'भक्तिविलास' तथा अन्य रचनाओ का सृजन किया।

अधिकारी-वर्ग—एकमात्र पुस्तक, जो किसी भी रूप मे हो, बघेली का विवरण प्रस्तुत करती है, वह नीचे उद्धृत किया गया डॉ० कैलाग का व्याकरण है। डॉ० कैरे नें 'न्यू टेस्टामेट' का अनुवाद इसी बोली मे किया था।

होली बाइबिल—बघेलखण्ड भाषा मे मूल से अनूदित ओल्ड तथा न्यू टेस्टामेट सहित अनुवाद सेरामपुर मिशनरीज़, जिल्द ५ जिसमे न्यू रैस्टामेंट है, सेरामपुर से १८२१ मे प्रकाशित हुआ। अन्य जिल्दें भी प्रकाशित हुई होगी पर मेरे देखने मे नही आयी ।

कैलाग, रेव० एस० एच० डी० डी०, एल-एल०-डी०—ए ग्रामर ऑव हिन्दी लैंग्वेज, जिसमे उच्च हिन्दी · रीवा की लोक-भाषाएँ भी आदि भरपूर भाषा शास्त्रीय टिप्पणियो सहित प्रस्तुत की गयी है। द्वितीय सस्करण सशोधित एव सम्वर्धित, लदन १८९३ ।

लिपि—जैसा कि अवधी मे है, बघेली लिखने मे भी देवनागरी तथा कैथी दोनो लिपियाँ प्रयुक्त होती है। इसी प्रकार हमे वर्तनी मे भी वे ही भिन्नताएँ मिल रही है जिन्हे हम उस बोली के सन्दर्भ मे देख चुके हैं। ह्रस्व 'ए' प्राय 'च' लिखा और पढा जाता है और ह्रस्व 'ओ' 'व'। दीर्घ 'ए' अक्सर 'या' लिखा और पढा जाता है और दीर्घ 'ओ', 'वा' ।

बघेली व्याकरण—जैसा कि अन्यत्र कहा जा चुका है, कि बघेली अवधी से भिन्न एक स्वतत्र बोली के रूप मे वर्गीकृत होने के योग्य शायद ही है। व्यावहारिक दृष्टि से दोनो एक है। मात्र दो महत्त्वपूर्ण तथ्य जिनमे बघेली अन्तर रखती है, इस प्रकार है कि यह क्रियाओ के भूतकाल मे परसर्गीय 'ते' अथवा 'तै' जोडने की आदी है और इसने अक्षर 'व' को, जो अवधी के भविष्यत् काल के प्रथम एव द्वितीय पुरुष का विशिष्ट तत्त्व है, छोड दिया है और इसके स्थान पर 'ह' को ले लिया है। इस प्रकार जब अवधी मे 'देखबौं' देखूंगा, है, बघेली मे 'देखिहौं' है।

डॉ० कैलॉग द्वारा 'रिवाई' व्याकरण के विभिन्न रूप प्रस्तुत किये गये हैं। वे निम्नाकित व्याकरणिक ढाँचे मे ज्यो-के-त्यो दिये जा रहे हैं। ये रूप इलाहाबाद की सीमा के निकट रींवा के उत्तरी भाग से प्राप्त किये गये होने चाहिए, जहाँ की भाषा,

जैसा कि ऊपर निर्देश किया जा चुका है, यद्यपि बघेली कही जाती है, परन्तु वास्तव मे अवधी है। इसीलिए व्याकरण के इस ढाँचे मे बघेली के एक विशिष्ट चिह्न का अभाव है। भविष्यत् के विशिष्ट वर्ण दोनो ही है, 'व' या 'ब' तथा 'ह'। पूरा का पूरा, वस्तुत, मात्र पुराने ढग की अवधी मे लिखा गया है। पुरुषवाचक सर्वनामो की ओर ध्यान खीचा जा सकता है जिसमे 'ओं' के लिए 'व' तथा 'ओ' के लिए 'वा' लिखा गया है। यह मात्र वर्तनी का वैभिन्न्य नही है। यह वास्तविक उच्चारण का प्रतिनिधित्व करता है।

नमूनो से मैं जो कुछ एकत्र कर सकता हूँ, वह है—सकर्मक क्रियाओ के भूतकाल कर्तृ वाच्य मे गठित होते है। अर्थात् उद्देश्य (Subject) ऐसे स्थानो पर, कर्त्ता-कारक में रखा जाता है, न कि कर्त्ता के अभिकर्ता कारक (Agentive Case) मे। फिर भी, यह दिखलायी देगा कि इस सम्बन्ध मे विशृखल वोलियो मे अत्यधिक अव्यवस्था है।

पूर्व-उपान्त्य-स्वर के ह्रस्वीकरण का सामान्य नियम बघेली मे मिल रहा है।

छत्तीसगढ़ी, लरिआ या खल्टाही

नाम—यह बोली ऊपर दिये हुए तीन नामो मे से आमतौर से पहले, छत्तीसगढी अर्थात् छत्तीसगढ की भाषा, के नाम से जानी जाती है। विलासपुर जिला इस क्षेत्र का एक हिस्सा है और यह पडोसी वालाघाट ज़िले मे 'खलोटी' के नाम से प्रसिद्ध है। छत्तीसगढी, इस परवर्ती ज़िले के एक हिस्से मे भी बोली जाती है और वहाँ यह (छत्तीसगढी) 'खलोटी' क्षेत्र की भाषा, अर्थात् 'खल्टाहीं' के नाम से जानी जाती है। छत्तीसगढ-मैदान के पूरब की ओर पूर्वी सम्वलपुर का उड़िया प्रान्त तथा उड़िया की सामन्तीय रियासते पडती हैं। उन क्षेत्रो मे रहने वालो के वीच, उनके पश्चिम मे स्थित छत्तीसगढ प्रदेश 'लरिया प्रदेश' के नाम से प्रसिद्ध है, और इसीलिए उनके यहाँ छत्तीसगढी को 'लरिआ' कहा जाता है।

क्षेत्र—छत्तीसगढी का प्रमुख केन्द्र मध्यप्रदेश के दो व्रिटिश ज़िले, रायपुर तथा विलासपुर हैं। यहाँ तथा सम्वलपुर ज़िले के पश्चिमी हिस्से मे, यह भाषा अपने असली रूप मे वोली जाती है। फिर भी, रायपुर के दक्षिण-पश्चिम की स्थानीय भाषा उडिया का ही एक रूप है। छत्तीसगढी उपर्युक्त दोनो प्रमुख ज़िलो के दक्षिण एव पश्चिम मे स्थित सामन्तीय रियासतो मे अर्थात् काकेर, नदगाँव, खैरागढ, चुइ-खदान एव कवर्धा मे, चाँदा ज़िले के पूर्वोत्तर मे तथा वालाघाट जिले के पूर्वी हिस्से मे भी जहाँ, जैसा कि कहा जा चुका है, यह 'खल्टाही' के नाम से जानी जाती है, पर्याप्त शुद्धि के साथ बोली जाती है। विलासपुर के पूरव मे, यह सामन्तीय रियासत-शक्ति मे तथा रायगढ एव सारनगढ के हिस्सो मे वोली जाती है। इन अन्तिम ज़िलो के उत्तर तथा पूरव मे कोरिआ, सरगुजा, उदयपुर तथा जशपुर की करद रियासते पडती है। प्रथम तीन की, आर्य भाषा, छत्तीसगढी की ही एक उपवोली है जो 'सरगुजिआ' कहलाती है और यह अन्तिम रियासत के पश्चिमी हिस्से मे भी बोली जाती है।

वोलने वालों की सख्या—निम्नतालिका छत्तीसगढी वोलने वालो की अनुमानित सख्या वतला रही है :—

स्थान	वोलने वालो की सख्या
चाँदा	३१,३००

			प्रथम रूप		द्वितीय रूप	
	एक०	बहु०	एक०	बहु०	एक०	बहु०
१.	हूँ, आँ	है	रहेउँ, रहय	रहेन		तैं
२	हे	हो, अहेन	रहा, रहे	रहेन	ते	तैं
३.	है, आ	हैं, अहेन, अहैं, आँ	रहा	रहेन	ते, तो, ता	तैं

	२ वर्त० सभाव्य, आदि (अगर) मैं होता, आदि		भविष्यत्, मैं होऊँगा आदि		भूत० मैं हुआ, आदि	
	एक०	बहु०	एक०	बहु०	एक०	बहु०
१	होऊँ	होन	होयेऊँ	होव, होवै	भयों	भयेन
२	ह्वास	ह्वाव	होइहेस	होवा	भयेस	भयेन
३	ह्वाय	ह्वांय	होई	होंयिहें	भ	भयेन

सतो में
ली है,
कि यहाँ
का बहुत
नीचे दिये

रायपुर	१२,००,०००
विलासपुर	११,४६,०००
सम्वलपुर	१,४७,०००
वालाघाट	८८,०००
कांकेर	३६,०००
नन्दगॉव	१,७४,०००
खैरागढ	१,५९,४९४
चुइखदान	३२,९७९
कवर्धा	८८,०००
शक्ति	२३,१७४
रायगढ	१,२७,०००
सारनगढ	४८,४३३[1]
योग	३३,०१,३८०

इसके अतिरिक्त, छत्तीसगढी, पडोस मे स्थित उडिया-भाषी रियासतो मे और बस्तर रियासत मे भी जहाँ की प्रमुख आर्य भाषा मराठी की हलबी बोली है, उन व्यक्तियो द्वारा बोली जाती है, जो छत्तीसगढी प्रदेश, या जैसा कि यहाँ कहा जाता है—'लरिया' से आकर बस गये है बम्रा मे, रियासत के पश्चिम का बहुत वडा भाग पूरी तौर से उन लोगो के द्वारा घिरा हुआ है। अनुमानित आँकड़े नीचे दिये जा रहे हैं :—

बस्तर	१३,१४१
बम्रा	३,९००
रैराखोल	४३
सोनपुर	२,१००
पटना	५,७५०
कलहंडी	७,८५०
उडीसा की करद रियासतें	१,३११
योग	३४,०९५

१. संशोधित आँकड़े

अन्त मे सरगुजिया उप-बोली के आँकडे निम्न प्रकार है :—

कोरिआ	३६,१७४
सरगुजा	२,९३,१६४
उदयपुर	३५,२०८
जशपुर	२०,०००
योग	३,८४,५४६

ऊपर दिये हुए के अतिरिक्त, छै विश्रृंखलित बोलियाँ जिनके नाम नीचे दिये जा रहे हैं, छत्तीसगढ तथा पडोस मे स्थित सामन्तीय रियासतो मे उन आदिवासियो द्वारा बोली जाती हैं, जिन्होने अपनी पैतृक भाषाएँ छोड दी हैं और जो अपने पडोसी आर्यभाषा-भाषियो की बोली अपनाने का प्रयत्न करते हैं। ये वस्तुतः बोलियो की अपेक्षा जारगन (Jargons) है, और यह समझा जायेगा कि छत्तीसगढी की शुद्धि बहुत कछ प्रत्येक बोलने वाले के वैयक्तिक समीकरण पर आश्रित है। ये विश्रृंखलित बोलियाँ निम्न प्रकार हैं —

बोली का नाम	बोले जाने का स्थान	बोलने वालो की सख्या
सद्री कोरवा	जशपुर	४,०००
बैंगानी	बालाघाट, रायपुर, बिलासपुर, सम्बलपुर, कवर्धा रियासत	७,१००
बिझवारी	रायपुर, रायगढ-रियासतें, सारनगढ, पटना	९,६६२
कलगा	पटना रियासत	६००
भूलिया	सोनपुर-रियासतें, पटना	१३,५६०
	योग	३४,९२२

ऊपर के निर्देश क कारण यह स्पष्ट करना आवश्यक हो जाता है कि 'सद्री' शब्द भारत के इस हिस्से मे आर्य भाषा के उस रूप की अभिव्यक्ति के लिए प्रयुक्त होता है, जो उसे एक आदिवासी के मुख से व्यवहृत होने पर प्राप्त हो जाया करता है। इस प्रकार, सद्री कोरवा का अर्थ है—स्थानीय आर्य भाषा (इस सन्दर्भ मे सरगुजिआ) का एक कोरवा द्वारा प्रयुक्त रूप । इसी प्रकार, बम्रा के 'सद्री कोल'

का अर्थ है—आर्य, भाषा (इस सन्दर्भ मे मगही की उपबोली कुडमाली) का एक कोल द्वारा प्रयुक्त रूप ।

उपर्युक्त सूची मे दो बोलियाँ और प्रविष्ट की गई हैं जो अब तक छत्तीसगढी के अन्तर्गत परिगणित नही हुई हैं, वे हैं—कलगा और मूलिआ । वे आज तक उडिया की बोलियो के रूप मे वर्गीकृत हुई हैं। वे स्पष्टत दोनो ही छत्तीसगढी के रूप हैं। कलगा और मूलिआ जब कभी लिखी जाती हैं, उडिया लिपि मे लिखी जाती हैं। चार बोलियाँ, जो प्रथमत छत्तीसगढी के रूप गिनाई गई हैं, इस सूची से अलग कर दी गई है । वे है—हलबी, बस्तरी, भुजिया तथा सद्री कोल। हलबी के नमूनो का परीक्षण बतलाता है कि यह वस्तुत छत्तीसगढी, उडिया तथा मराठी का एक मिश्रित रूप है और अधिक औचित्य के साथ यह अन्तिम-निर्दिष्ट भाषा के साथ अध्ययन की जा सकती है। बस्तरी और भुजिया तो केवल हलबी के ही दूसरे नाम हैं । दूसरी ओर, सद्री कोल जो केवल बम्रा रियासत से उल्लिखित हुई है, आदिवासी कबीलो द्वारा प्रयुक्त बिहारी का एक रूप है । यह मानभूमि जिले मे बोली जाने वाली मगही की उपबोली कुडमाली से अभिन्न है । यह उडिया बोलने वाली आबादी के बीच मे बिहारी का एक विलक्षण छोटा-सा टापू है ।

भारत के अन्य भागो मे छत्तीसगढी बोलने वालो की सख्या के सम्बन्ध मे कोई सूचना प्राप्त नही है। जहाँ यह देशी भाषा है उस क्षेत्र के बोलने वालो की सख्या नीचे दी जा रही है—

निजी इलाके मे बोलने वाली छत्तीसगढी	३३,०१,७८०
पडोसी उडिया रियासतो मे	३४,०९५
सरगुजिआ	३,८४,५४६
विश्रृंखलित बोलियाँ	३४,९२२
योग	३७,५५,३४३

साहित्य—जहाँ तक मुझे मालूम है, छत्तीसगढी मे साहित्य नही है । भारत के अन्य स्थानो की तरह, घुमक्कड भाट गीतो और कहानियो का खजाना रखते हैं, जिन्हे वे जब बुलाये जाते है, सुनाते हैं । इनमे से बहुत-से श्री हीरालाल काव्योपाध्याय द्वारा नीचे निर्दिष्ट किये गये व्याकरण मे प्रकाशित किये गये है।

अधिकारी-वर्ग—

हीरालाल काव्योपाध्याय—'ए ग्रामर ऑव दि डाइलेक्ट ऑव छत्तीसगढ इन दि सेन्ट्रल प्रोविन्सिज', श्री हीरालाल काव्योपाध्याय द्वारा हिन्दी मे लिखित, जॉर्ज

ए० ग्रियर्सन, ऐस्क्वायर, सी० एस०, द्वारा अनूदित एव सम्पादित, 'जनरल ऑव दि एशियाटिक सोसायटी ऑव बगाल' जिल्द ५९, १८९० ई०, भाग १, पृष्ठ १ तथा १०१, स्वतत्र रूप से पुनर्मुद्रित, कलकत्ता, १८९० ।

व्याकरण—पूर्वी हिन्दी के सामान्य ध्वनि-नियम जो पूर्व-उपान्त्य स्वर के ह्रस्वीकरण से सम्बन्धित हैं, छत्तीसगढी पर भी लागू होते हैं और यहाँ उनके दुहराने की आवश्यकता नही है ।

एक अजनबी को, जो कि केवल अवध की विशुद्ध पूर्वी हिन्दी से परिचित है, जो रूप खटक जाते है, वे है—सम्प्रदान-कर्म का चिह्न जो बहुधा 'ला' है, यहाँ तक कि कर्म मे भी, और बहुवचन प्रत्यय 'मन' जिसकी तुलना उडिया के 'माने' से की जा सकती है। विश्वास किया जाता है कि नीचे दिया हुआ छत्तीसगढी व्याकरण का ढाँचा वह सब-कुछ रख रहा है जो परवर्ती पृष्ठो पर दिये हुए नमूनो को समझने के लिए आवश्यक है ।

अवधी

अवधी बोली का प्रथम नमूना 'उडाऊ पूत कथा' का एक रूपान्तर है जो महामहोपाध्याय पडित सुधाकर द्विवेदी ने कृपा करके मेरे लिए तैयार किया है। यह आजकल की अवधी मे नही, अपितु उस बोली मे है जिसे कवि मलिक जायसी ने अपने प्रसिद्ध महाकाव्य 'पदुमावती या पद्मावती' मे अपनाया है । यह ग्रथ १५४० ई० मे सम्राट् शेरशाह के राजत्व काल मे लिखा गया था । प्रस्तुत रूपान्तर भी कविता मे है और उसी छन्द मे है जिसका प्रयोग मुहम्मद ने किया है । यद्यपि यह छान्दिक रूपान्तर है, तथापि बहुत कुछ शाब्दिक है । प्राचीन कवि की शैली मे ही यत्रतत्र कुछ वाक्य तथा भर्ती के शब्द जोडे गये हैं और ये लघु कोष्ठको के अन्तर्गत रख कर पाठ मे निर्दिष्ट कर दिये गये हैं । अन्तिम पक्तियाँ बतलाती है कि यह रूपान्तर मेरी प्रार्थना पर किया गया है और इसकी रचना की तिथि विक्रम सवत् १९५५, फाल्गुन शुक्ल छठ अर्थात् शुक्रवार, १७ मार्च, सन् १८९९ है ।

यद्यपि नमूने की भाषा को प्राचीनता का रूप दिया गया है तथापि, पूर्वोक्त व्याकरणिक रूप-रेखा से अन्तर यत्किंचित मात्रा मे ही मिलेगा । यह ध्यान रखना चाहिये कि कविता मे अन्तिम 'अ' तथा शब्द मध्य का अर्धोच्चरित 'अ', दोनो ही पूरी तरह से उच्चरित होते हैं और इसीलिए प्रतिलेखन मे पूरे लिखे गए हैं । इस प्रकार, बालक, बालक् नही; लुचपन, लुचपन् (Luchapan) नही ।

(न० १)

भारत—आर्य परिवार मध्यवर्त्ती शाखा

पूर्वी हिन्दी

अवधी बोली

(महामहोपाध्याय पंडित सुधाकर द्विवेदी, १८९९)

चौपाई

केहुँ पुरुखहि दुइ बालक अहे । तिन्ह महँ छोट बाप सउँ कहे ॥
धन-महँ बाप मोर जो भागा । सो मोहिं देहु (न दारिअ बागा) ॥
तब वह तिन्हहिं बाँटि धन दएऊ । बहुत न दिन बीतेउ (अस भएऊ) ॥

सब किछु छोट एक ठाँ करि-के । दूर देस चलि गा सब हरि-के ॥
बितवत दिन लुचपन-महँ (भाई) । सो आपन धन दएउ उडाई ॥
जब सो सब उड़ाइ धन दएऊ । तब ओहि देस काल बड परेऊ ॥
होइ भिखारि सो (घर घर जाई । ताहि देस सब जन-पहँ धाई) ॥
लागेउ रहन एक घर-माँही । जो अपने खेतन्ह-महँ ताही ॥

दोहा

भेजेऊ (मन-महँ करि मया) सुअर चरावन काजु ।
जेहि छीमिन्ह-के खात-हे सुअर तिन्हहिं सउँ (आजु) ॥१॥

चउपाई

चाहेउ भरन पेट सो (भाई) । केहु नहिं ताहि देइ किछु जाई ॥
तब ओहि चेत भएउ अउ कहई । मोरे बाप घर बहुतइ अहई ॥
रोटी बहुत मजूर अघाहीं । तऊ तहाँ बहुतइ बचि जाहीं ॥
अउ मइ मरउँ भूख-सउँ यहवाँ । मइँ उठि जाब बाप घर तहवाँ ॥
अउ ओहि कहब कि तुम्हरहि आगे । दइउ बिरोधि पाप किअ (जागे) ॥
पूत तुम्हार कहावन जोगू । अहउँ न मइँ फिरि (करहुन सोगू) ॥
अपने घर मजूर जो (देखिअ) । ता महँ एक सरिस मोहिं लेखिअ ॥
यह गुनि मन सो बाप ढिग चला । पइ सो रहेउ दूर दुरबला ॥

दोहा

देखि बाप ओहि ता-कर मया कीन्ह अउ धाय ।
ओहि-सउँ गर लपटाएऊ चूमेउ ओहि (सुख पाय ।) ॥२॥

चउपाई

ओहि सउँ पूत कहेउ पितु (मानिअ) । दइउ बिरोधि पाप (मन आनिअ) ॥
तुम्हारे सउँह किएउँ बहु घोरा । जोग न पूत कहावन तोरा ॥
पइ हँकारि दासन्ह-महँ केही । कहेउ बाप पहिरावहु एही ॥
सब-से नकि जे कापर बनहीं । हाथन्ह मुँदरी पायँन पनहीं ॥
अउ हम जेवँहिं करहिं अनदा । (हुलसि दरहिं बिछुरन दुख दंदा) ॥
बार मोर यह मरि फिरि जिएऊ । नसट होइ फिरि (बिधि बस) मिलेऊ ॥
अस कहि वेइ दोउ हुलसन लागे । (सब दुख भगे सकल सुख जागे ॥
अस सुख जग पावइ सब कोई । अस वेइ पाए सब दुख धोई) ॥

दोहा

ता-कर जेठरा पूत जो अहा खेत बिच (आजु) ।
आवत घर ढिग जब सुनेउ बाजन नाचन साजु ॥३॥

चौपाई

एक हँकारि सेवकन्ह माहीँ। अपने ढिग पूँछेउ का आहीँ ॥
सो ओहि कहेउ तुम्हारहि भाई। आएउ तुम्ह पितु नीक जेवाँई ॥
पाएउ ताहि न किं अउ सुभरा। (कुसल खेम लखि हुलसेउ हिअरा) ॥
सुनि रिसाइँ घर जान न चहा। पितु बहराइ मनावइ कहा ॥
ऊतर दएउ बाप-कहँ सोई। एतनक बरस जो सेवा जोई ॥
अगिआँ एक तुम्हार न टारेउँ। तऊ कबहुँ मेमना ना धारेउँ ॥
लेइ जो मीत सँग भोगनेउँ भोगा। (सुख पउनेउँ दरि सब दुख रोगा)॥
पइ यह पूत पतुरिआ-गामी। धन उड़ाइ फूँकेउ तुम्ह सामी॥

दोहा

सो जइसइ आएउ घरे तइसइ तविन मीठ।
(रुचि रुचि सउँ) सिझवाएऊ (अति परेम सउँ डीठ) ॥४॥

चउपाई

ता-सउँ बाप कहेउ तब बाता। पूत मेरे सँग तुम्ह (सुख-दाता) ॥
नित-ही अहउ सो जो किछु मोरा। कहउँ (भाउ सति) सब सो तोरा॥
पइ हुलसब हरखब (एइ बेरा)। इइ पर जो तोर भाई (हेरा) ॥
यह हा मरा जिएउ फिरि (भाई)। नसट अहा फिरि मिलेउ सो (भाई) ॥
वा। [अहा हेराय मिला फिरि (आई)] ॥
नसट-पूत कइ कथा सोहाई। मीत ग्रिअरसन अगिआँ पाई॥
भाखा ठेंठ जइस हइ गाई। महमद पदुमावति-महँ (भाई) ॥
तेहि अनुहारि सुधाकर लिखेऊ। मीत ग्रिअरसन जस किछु सिखेऊ॥
हउँ पँडितन्ह-सन बिनती करऊँ। टूट मेरावहु मइँ पाँ परऊँ॥

दोहा

उनइस सइ पचपन अहे बिकरम सवत मान।
फागुन सुदि—छठ सुक लिखेउ राम रूप धरि ध्यान॥५॥

हिन्दी प्रतिरूप

चउपाई

किसी पुरुष के दो लड़के थे; उन-मे-से छोटे-ने पिता-से कहा।
'धन-में, पिता! मेरा जो हिस्सा; वह मुझ-को दो, (न टालिये लगाम[1]) ।'

---

१. बागा=वात < सं० वाक्; 'कहत न बागहीं'—तुलसी, रामचरितमानस।
बागा < सं० वल्गा, सन्दर्भ मे यह, अर्थ उपयुक्त नहीं। अनु०

तब उस–ने उन–को बाँट धन दिया; बहुत नहीं दिन बीते (ऐसा हुआ)।
सब कुछ छोटे–ने एक–स्थान पर कर–के; दूर देश चला–गया सब ले–कर।
बिताते–हुए दिन लुच्चेपन–में, (ओ भाई); उस–ने अपना धन बरबाद कर दिया।
जब उस–ने सब उड़ा–धन–दिया; तब उस देश–मे अकाल बड़ा पड़ा।
हो–कर भिखारी वह (घर–घर जा–कर); उस देश–के सब मनुष्यो–के–
पास दौड़ा।

लगा रहने एक (–के) घर– मे; जो अपने खेतो–में उस–को।

दोहा

भेजा (मन–में कर दया), सुअर चराने–के–लिए;
जिस भूसी–को खाते थे, सुअर, उन्हीं–से (आज)

चउपाई

चाहा भरना पेट वह,(भाई!); किसी–ने नहीं दिया कुछ जा–कर।
तब उस–को होश आया और कहा; 'मेरे बाप–के घर बहुत है
रोटी, बहुत मजदूर अघाते हैं; तो भी वहाँ बहुत बच जाता है।
और मैं मरत–हूँ भूख–से यहाँ; मै उठ–कर जाऊँगा बाप–के घर वहाँ।
और उस–से कहूँगा कि "तुम्हारे–ही आगे; ईश–विरुद्ध पाप किया
(जान–कर)।
पुत्र तुम्हारा कहलाने योग्य; हूँ नहीं मै फिर, (करो न शोक)।
अपने घर–पर मजदूर जो दिखाई देते हैं; उन–में एक समान मुझे जानिये।"
यह विचार–कर मन–मे वह पिता–के घर चला; पर वह था दूर, दुर्बल
(–वह)।

दोहा

देखकर पिता–ने उसे, उस–पर, दया की और दौड़–कर;
उस–से गले–से लिपट–गया, चूमा उसे (सुख पा–कर)।

चउपाई

उस–से पुत्र–ने कहा, 'पिता! विश्वास कीजिये; ईश–विरुद्ध (मेरा) पाप,
(मन–मे–लाइये)
तुम्हारे आगे किया बहुत भयकर (–पाप); योग्य नहीं हूँ पुत्र कहलाने–के,
तुम्हारा।
परन्तु बुला-कर दासो–मे किसी–को; कहा पिता ने, पहिनाओ इसे।
सब–से अच्छा जो कपडा बने–हैं; हाथो–में अँगूठी, पैरों–मे जूते।
और हम दावत-खायें, करें–आनद; प्रसन्न होकर दलें बिछुड़ने–का दुख–दंद।

बालक मेरा यह मर–कर फिर जिया है; खो–कर फिर किध–वश मिला है।'
ऐसा कह–कर वे दोनो आनन्द–करने लगे; (सब दुख भागे, सब सुख जागे।
ऐसा सुख जग–मे पा सब कोई; जैसे उन्हो–ने पाये, सब दुख धो–कर)।

दोहा

उसका जेठा पुत्र जो; था खेतो मे (आज)।
आते–हुए घर–के निकट जब सुनी, बजने–नाचने की साज।

चउपाई

एक–को बुला–कर नौकरो–मे–से; अपने पास, पूछा '(ये) क्या हैं?'
तब उस–ने कहा, 'तुम्हारा भाई; आया, तुम्हारे पिता–ने अच्छी दावत–दी।
पाया उसे अच्छा और स्वस्थ; (कुसल–क्षेम देख–कर आनदित–हुआ हृदय)।
सुन–कर गुस्सा–होकर घर नहीं जाना चाहा; पिता–ने बाहर–आकर मनाते हुए कहा।
उत्तर दिया बाप–को उस–ने; इतने वर्ष जो सेवा–की, देखिए।
आज्ञा एक तुम्हारी नहीं टाली; तब–भी कभी बकरी–का–बच्चा नहीं पाया।
ले–कर जो मित्रो के सग मनाता आनद; (सुख पाता दल–कर सब दुख–रोग)।
पर यह पुत्र वेश्या–गामी; धन उड़ा–फूँका तुम्हारा, हे स्वामी!।

दोहा

वह जैसे–ही आया घर–मे, तैसे–ही खाना मीठा;
(ध्यान–दे–देकर) बनवाया, (अत्यत प्रेम-से देख–कर)।'

चउपाई

उस–से पिता–ने कही तब बात; 'पुत्र मेरे साथ तुम (सुख देने–वाले)।
नित्य–ही हो, इसलिए जो कुछ मेरा; कहता हूँ (सच्चाई–से) सब वह तेरा।
पर आनन्द–मनाना, प्रसन्न–होना (इस समय); है उचित क्यो–कि तेरा भाई दिखाई दिया।
यह था मरा, जिया–है फिर (हे भाई!); खोया–था फिर मिला है, वह आ–कर।

या

था खोया, मिला फिर आकर।'

नष्ट पुत्र–की कथा सुन्दर–है, मित्र ग्रियर्सन–की आज्ञा पा–कर।
भाषा ठेठ जैसी है—गाई; मुहम्मद ने 'पद्मावत' मे (हे भाई!)।

उस–के अनुसार सुधाकर–ने लिखा है; मित्र ग्रियर्सन–ने जैसा–कुछ सिखाया है।

मैं पडितो–से विनती करता हूँ; भूल मिला लें; मैं पैर पड़ता हूँ।

दोहा

उन्नीस-सौ पचपन था, विक्रम संवत–को मान–कर;
फागुन सुदी छठ शुक्र–को लिखा, राम-रूप का धर–कर ध्यान॥

फ़ैज़ाबाद की अवधी

नीचे दिये हुए दो नमूने फैज़ाबाद ज़िले से सम्बन्धित है और ये उस भाषा मे हैं जिसका व्याकरणिक ढाँचा ऊपर दिया जा चुका है। 'उडाऊ पूत कथा' का रूपान्तर फैज़ाबाद-ज़िले के केन्द्र भाग से तथा लोक-कहानी ज़िले के पश्चिमी क्षेत्र से प्राप्त किये गये है। यहाँ ध्यान देने योग्य यह है कि जैसे-जैसे हम पश्चिम की ओर बढ़ते जाते है, वैसे-वैसे लिंग-सम्बन्धी धारणा सवल होती जाती है। विशेषण के स्त्रीलिंग-प्रयोग कथा मे कुछ ही हैं पर लोक-कहानी मे इसके उदाहरण अनेक हैं। सम्बन्ध-कारक का परसर्ग-रूप 'कर' अथवा 'के' है जिसका विकारी रूप 'के' है। इसका स्त्रीलिंग रूप 'कै' है। यथा, चित्तौर-कै रानी—चित्तौर की रानी; इसका अपना विकारी–रूप 'की' है। जैसे, मजूर की नाईं=मजदूर की तरह।

सार्वनामिक विशेषणो के, स्त्रीलिंग-प्रयोग सामान्य रूप मे मिल रहे हैं। कभी ये 'इ' मे और कभी 'ई' मे अन्त होते हैं। 'इ' वाले रूप उपान्त्य-पूर्व स्वर को ह्रस्वीकृत नही करते जब कि 'ई' वालो मे यह प्रवृत्ति मिल रही है। उदाहरण हैं—आपनि आँखि=उनकी अपनी आँख; ऐसि लडाई=ऐसी लडाई; हमारि गीति=मेरा गीत; ओकँरी गटई महँ=उसकी गर्दन मे। सभावना यह है कि 'ई' वाले रूप 'विकारी' हैं।

हम निम्नाकित दो कारक–परसर्गो पर ध्यान दे सकते हैं—'कहँ', कर्म तथा सम्प्रदान का चिह्न; महँ, अधिकरण का चिह्न, अर्थ—मे।

क्रियाओ मे हम आज्ञार्थक रूपो पर ध्यान दे सकते हैं—जाह=जाओ, गौतेह=गाओ, दिहेह=दो; साथ ही अन्य रूप, किहेह=तुमने बनाया; जानँथिन=वह (शिष्ट प्रयोग) जानता है, तथा देथिन=वे देते हैं।

सुलतानपुर ज़िले की बोली फैज़ाबाद की बोली से पर्याप्त समानता रखती है, अतएव इसके अन्य उदाहरण देना अनावश्यक होगा।

(स० २)

भारत–आर्य परिवार मध्यवर्त्ती शाखा

पूर्वी हिन्दी

अवधी बोली (जिला फैज़ाबाद)

नमूना—१

एक मनई– के दुइ बेटवे रहिन। ओह्-माँ–से लहुरा अपने बाप–से कहिस दादा धन–माँ जवन हमार बखरा लागत–होय तवन हम–का दै–द अउर वै आपन धन उन–का बाँट–दिहिन। आउर ढेर दिन नाहीं बीता की लहुरा बेटवा सब धन बटोर–के परदेस चला–गय अउर उहाँ आपन धन कुचाल–माँ लुटाय पडाय दिहिस। अउर जब सम्मँ गँवाय डारिस ओह् देस–माँ बड़ा काल पड़–गा । वै बनाय दलिद्र होय–गा। तव वै ओ–ई देस–के एक भल–मनई के पाछे लाग गै। तब वै ओ–का अपने खेतन–माँ सूअर चरावैं–का पठै–दिहिस। अउर ऊ चाहत–रहा की जवन फोकलाई सूअर खात-रहिन तवने–से आपन पेट भरी। अउर केऊ ओ–का नाहीं देत–रहा। तब ओ–का चेत भै की हमरे बाप–के कितिक मजूर–के खाय–पी के उबर जात है अउर हम भूखन मरित–है। हम उठ–कै अपने बाप–के लग जाब अउर उन–से कहब की हे बाप हम दइउ–के अउर तोहरे आगे अपराध किहिन अउर हम एकरे लायक नाहीं की अब तोहार बेटवा कहाई। अब हम–का अपने मजूर की नाइँ जान। तब व उठ–कै अपने बाप–के लगे गै। मुला जब वैं लामेन रहिन तबै ओ–कर बाप ओ–का देखिस अउर दया लाग अउर धाय–के आपन गटई–माँ छपटाय लिहिस अउर चूम लिहिस। अउर बेटवा बाबू–से कहिस की हे दादा हम दइउ–के आगे अउर तोहरे हजूरे अपराध किहिन। अउर अब हम एकरे लायक नाहीं बाटी की तोहार बेटवा कहाई। मुला बाप अपने चकरन–से कहिस की भल न क कपड़ा लै आवा अउर ओ–का पहिराय दिया ओ–के हाथ–माँ मुनरी अउर गोड़े–माँ पनहीं पहिराय दिया। अउर हम सब जने खाँय अउर खुसी करी। एहि बरे क ई हमार बेटवा मरा रहा अउर फुनि जी ग। ऊ हेरान रहा अउर मिल ग। अउर उन्हन खुसी करैं लागे।

ओई जून ओ–कर जेठ बेटवा खेते–माँ रहा। अउर जब ऊ आच अउर घर नगचाच गै नाचब गाउब सुनि परा। अपने चकरन–माँ–से एकठे–काँ बोलाय–के पूछिस की काव आटै। वै ओ–से कहिस की तोहार भाई आच–बाटे अउर तोहार बाप नेवता किहिस एकरे बरे की ऊ कुसल–छेम–से आय। अउर ऊ रिसिहा होय गा। भीतर जावै न करै। एहि बरे ओ–कर बाप बाहर आए अउर ओ–का मनाइस। अउर

ऊ अपने बाप–का जवाब दिहिस कं देखा की बरसन–से हम तोहार सेवा किहेन कहियो तोहार कहा टारेन नाहीं अउर तेहू–पर तूँ कहियो हम–का एकठे छेगड़ी–के बच्चो न दिहा की हम अपने सघिन–के साथे खुसी मनाई। मुला जइसे तोहार ई बेटवा आय जे तोहार धन पतुरियन–के साथे लील–गै ओ–कर नेवता किहा। तब ऊ ओ–से कहिस का बेटा तूँ हमरे संग हमेंसा बाट। जवन कुछ हमार आय तवन तोहारै आय। मुला हम पच–का खुसो ह.वै चाही काहे–से ई तोहार भाई मरा रहिन और फुनि जी उठेन अउर हेरान रहा अउर मिल गय।

हिन्दी प्रतिरूप

एक मनुष्य के दो लडके थे। उनमे–से–छोटे–ने अपने बाप-से कहा, 'बाप! धन–मे जो हमारा हिस्सा होता-हो वह हम–को दे दो।' और उस–ने अपना धन उन–को बाँट दिया। और अधिक दिन नही बीते कि छोटा लडका सब धन बटोर कर विदेश को चला गया और वहाँ अपना धन बुरे–कार्यो–मे लुटा–दिया। और जब सभी नष्ट कर दिया, उस देश मे अकाल पड गया। वह बिल्कुल गरीब हो गया। तब वह उसी देश-के एक भले आदमी के पीछे लग गया (नौकर हो-गया)। तब उसने उसको अपने खेतो मे सुअर चराने के लिए भेज दिया। और वह चाहता था कि जो भूसा सुअर खाते हैं, उसी से अपना पेट भरे।' और कोई उस-को (वह भी) नही देता था। तब उसे होश आया, कि 'हमारे पिता–के कितने मजदूर खा–पी कर निकल–जाते–है और मैं भूखो मरता–हूँ। मैं उठ–कर अपने पिता–के यहाँ जाऊँगा और उससे कहूँगा कि, "ओ पिता! मैं–ने ईश्वर–के और तुम्हारे आगे पाप किया–है और मैं इस लायक नहीं–हूँ कि अब तुम्हारा लड़का कहलाऊँ। अब, मुझ–को अपने मजदूरो–की तरह समझिये।" तब वह उठ–कर अपने पिता–के निकट गया। लेकिन, जब वह दूर–ही था, तभी उस–के पिता–ने उस–को देखा और (उसे) दया आई, और दौड-कर (उसे) अपने गले-से लिपटा लिया, और चूम लिया। और लडके–ने पिता–से कहा, कि 'ओ पिता! मैं–ने ईश्वर–के आगे और आपकी उपस्थिति–मे पाप किया–है और अब मैं इस लायक नही हूँ कि आपका बेटा कहलाऊँ।' लेकिन पिता–ने अपने नौकरो–से कहा कि, 'बहुत अच्छे कपडे ले–आओ और उस–को पहिना–दो, उसके हाथ–मे अँगूठी, और पैर–मे जूते पहिना–दो और हम सब लोग खाये और खुशी मनायें; इसलिए कि यह मेरा लडका मरा था और फिर जी गया; वह खो गया था और मिल गया।' और वे आनन्द मनाने लगे।

उसी समय उस–का बडा लडका खेत–मे था। और जब वह आया और घर निकट-हुआ, नाचना गाना सुन-पडा। अपने नौकरो–मे–से एक–को बुला–कर पूछा, कि, 'यह क्या है?' उस–ने उस–से कहा, कि 'तुम्हारा भाई आया–है और तुम्हारे पिता–ने दावत दी–है, इसलिए कि वह कुशल-पूर्वक आया–है।' और वह गुस्सा हो गया। भीतर जाना नही कर–रहा–था। इस–के लिए उस–का पिता बाहर आया और उस–को मनाया। और उस–ने अपने पिता–को उत्तर दिया, कि, 'देखिये, कि वर्षों–से मैं–ने तुम्हारी सेवा की–है, कभी–भी तुम्हारा कहना टाला नही, और उस–पर–भी तुम–ने' कभी–भी मुझ–को एक–भी बकरी–का बच्चा नही दिया कि मैं अपने मित्रो के साथ खुशी मनाता। लेकिन, जैसे-ही तुम्हारा यह लडका आया, जिसने तुम्हारा धन वेश्याओ के साथ खा–डाला, उस–की दावत दी।' तब उस–ने उस–से कहा, कि, 'बेटे! तू मेरे साथ हमेशा-से रहा, जो कुछ मेरा है वह तुम्हारा–अपना है, लेकिन हम लोगो को प्रसन्न होना चाहिये, क्योकि यह तुम्हारा भाई मरा था, और फिर जी उठा, और खोया था और मिल गया।'

(न० ३)

भारत–आर्य परिवार मध्यवर्ती शाखा

पूर्वी हिन्दी

अवधी बोली (जिला फैजाबाद)

नमूना—२

अब हम एक किहिनीं कहत–अही। तौनी–कहँ सब केऊ आपन आपन कान धै वै सुनत–जाह। अकब्बर साह बीरबल फैजी और सम्मिनि लाव लसिकर साथे लै–कै सिकार खेलै बरे चलिन। सिकार उकार तौ कुछु मिलबै न कीन्ह। जेठ–के महीना–महँ घामें–के मारे एक–ठीं बडा–कँ बरगदे–के तरे सब केऊ छहाँइ लागिन। तौ बास्साह कहिन, कि, फैजी कुछु गौतेह। तौ फैजी एस नीक कै गाइन कि बन–भरे–कर सौजा, जैसें, हुन्ना, खरहा, सिआर उआर, सब आपनि आँखि मूँदि मूँदि घियान धै–कै सुनै लागिन कि बनाइ सुधि ब्रुद्धि बिसरि गै। तौ प्रक–हीं हुन्ना जौन फैजी–के लगे आपन मुँह किहीं ठाढ रहै, ओकरी गटई–महँ वै आपनि तसबीह डारि–दिहन। तौ–धिक गावै कर घियान तौ छूटि ग औ सब बने कर रहवै यै आपनि आपनि राह लिहिन।

जब अकब्बर आने दिन दरबार कै–करै बैठिन तौ फैजी न आइन, काहे–से कि, ओन– का बड़ा जर होइ ग–रहै। बीरबल कहिन कि, ए बास्साह फैजी सनाइ–ग–अहँ कि हमरी नाँईं आन केउ गवैया नाँहीं अहै तौने–से न आइन। अउ न अइहै। बास्साह कहिन, कि, आन केऊ गवैया नाँहीं न। बीरबल कहिन, कहा तौ

हम विरजू बावरा–कहँ बोलाइ लै आई। कहिन, जा बोलाइ लै आवह। तौ वीरवल विरजू बावरा–कहँ लै—आइन। फुनि लागिन विरजू बावरे गावै। तउ सब वने–कर सौजा गीति सुनि–कै दरबार महँ आइ, वैसे पहिले–की नाँई सुनै लागिन। तौ ऊ हरिनवाँ जौने–की गटैचा–माँ तसविहिया परी–रहै ठाढ़ रहै। बीरवल तसबिहिया निकारि–कै फैजी–के आगे फेकि–दिहिन। बिरजू बावरा कहिन, कि, हमार बखान काहे–क किहेह, तानसेन हमहूँ–लै नीक गावै जानथिन। तानसेन बोलवावा गै। दीपक गावै लागिन दिया अपुऔं बरिगै। अउ तानसेन–उँ जरि–कै मरिगै। मूल पहिले तानसेन कहे–रहिन कि जौ हम मरि जाई तौ हमारि लोथि चित्तौर–गढ़–की खधके–महँ चोराइ–कै धरवाइ दिहेह। अउ मनई–उ ओह पर सवँजि दिहेह कि जवने कवनउँ जन्तु हमारि देह खाइ न पावै। जब चित्तौर–कै कमला–रानी अपने मन्सेघू–कै आरती सावन–की पँचमी–के दिन करत–कै मलार–राग गैहैं, तौ हम सुनि–कै ज। उठव।

बास्साह वैसे किहिन। जव रानी गावै लागीं तब तानसेन ताल बजावै लागिन। ताल सुनि–कै रानी जानि गईं कि हमारि गीति तानसेन सुनि–लिहिन। तौ–धिक–भर–माँ तानसेन भागिन औ बास्साह–के लगे चला आइन। बास्साह कहिन कि कमला–कै गीति सुनै–क चाही। चित्तौर–गढ़–पर चढ़ाई किहिन औ एसि लड़ाई भै कि ब्राह्मण क्षत्री–कर साढ़े चौहत्तरि मन जनेउ–क ढेर होइ–गा–है। उहै ७४॥–क अंक मनई चिट्ठिन–के उप्पर लिखि देथिन कै–कि जवने से केऊ केहू–कै चिट्ठी न खोलैं।

जव चित्तौर कर राजा जूझि–गै औ ओन–कै फौद हारि–गइ तव बास्साह कमला–देवी–कहँ कैदि कै–कै पालकी–पर चढ़ाइ, अपने सहरहि लयाइन औ हुकुम दिहिन कि विहान भिनसारे दरवार–महँ कमला–देवी– कै गीति सुनै–क होए। रानी एक तान पूरा लै–कै जौ श्री राग घींचीं तौ ओन–कर जिव खोपड़ाई फोरि–कै वैकुठहि चला गा। औ सब सुनवै यै आपन आपन मुँह बाइ–कै ठावहिं रहि–गै।

हिन्दी प्रतिरूप

अव मैं एक कहानी कह–रहा–हूँ। उस–को सव–कोई अपने अपने कान देकर सुनें। अकवर वादशाह, वीरवल, फैजी और सभी फौज-फाटे–को साथ ले–कर शिकार खेलने-के लिए चला। सिकार–इकार तो कुछ मिलना नही– हुआ। जेठ–के महीने मे घाम–के मारे एक–स्थान–मे एक–वडे वरगद–के नीचे सव कोई छाया–मे (–आराम) (लेने)–लगे। तव वादशाह–ने कहा, कि, 'फैजी! कुछ गाओ।' तव फैजी–ने–ऐसी अच्छी–तरह गाया कि जगल–भर–के जानवर,–जैसे—हिरन, खरगोश,

सिआर आदि, सब अपनी अपनी आँखे बन्द–कर–के ध्यान–रख–के सुनने लगे कि बिल्कुल सुध-बुध भूल गये। तब एक हिरन जो फैजी–के निकट अपना मुँह किये खडा था, उस–की गर्दन–मे उन्हो–ने (उस–ने) अपनी कण्ठी डाल–दी। उसी–समय गाने–का ध्यान, तो, छूट–गया और सब जगल–के रहने वालो–ने अपना अपना रास्ता लिया।

जब अकबर दूसरे दिन दरबार कर–के बैठा, तब फैजी नही आये, क्योकि उन को बडा ज्वर हो–गया–था। बीरबल–ने कहा कि, 'ओ ! बादशाह !! फैजी घमड–मे–आ–गये–हैं, कि "मेरी तरह अन्य कोई गाने–वाला नही है।" इसी–से नही आये, और न आयेगे।' बादशाह–ने कहा, कि, 'अन्य कोई गाने–वाला नही है–न?' बीरबल ने कहा, 'कहो, तो हम बिरजू बावरा–को बुला ले–आये।' (बादशाह–ने) कहा, 'जाओ, बुला ले–आओ।' तब बीरबल बिरजू बावरा–को ले–आये। तब लगे बिरजू बावरा गाने। तो सब जगल–के जानवर गाना सुन–कर दरबार–मे आ–कर, वैसे–ही पहिले–की तरह सुनने लगे। तो वह हिरन जिस–के गले–मे कण्ठी पडी–थी, खडा–था। बीरबल ने कण्ठी निकाल कर फैजी के आगे फेक–दी। बिरजू बावरा–ने कहा, कि, 'मेरी प्रशसा किस–लिए की? तानसेन हम–से–भी अच्छा गाना जानता–है।' तानसेन बुलाया–गया। (वह) 'दीपक'[1] गानें लगा। दिये आप–ही जल उठे, और तानसेन भी जल–कर मर–गये। लेकिन पहिले–ही तानसेन–ने कह–दिया–था, कि, 'यदि हम मर–जायें तो हमारी लाश चित्तौड–गढ–के खदक मे चुरा–कर रखवा–देना और आदमी–भी उस–पर (रखवाली–के लिए) बिठला–देना, कि जो–कोई जानवर हमारी देह खा न पावे। जब चित्तौर–की कमला–रानी अपने पति–की आरती[2] सावन–की पचमी–के दिन करते–हुये 'मल्हार'–राग गायेंगी, तब हम सुन कर जी उठेंगे।'

बादशाह–ने वैसा–ही किया। जब रानी गाने लगी तब तानसेन ताल–बजाने लगे। ताल सुन–कर रानी जान–गई, कि, 'हमारा गाना तानसेन–ने सुन–लिया है।' उस–ही–देर–मे तानसेन भागे और बादशाह–के निकट चले–आए। बादशाह ने कहा,

---

१. दीपक—प्रकाश देने वाला, एक राग अथवा गीत का नाम है, जो सध्या–समय गाया जाता है। ऐसा विश्वास किया जाता है कि यदि यह समुचित रीति से गाया जाये, तो कमरे के दीप अपने–आप जलने लगते हैं। यहाँ, गीत का समुचित प्रभाव ही नहीं दिखायी दिया अपितु तानसेन स्वय उस आग मे जल गया।
२. आरती, पाँच बत्तियो वाले जलते हुए दीप, आटा तथा धूप से सजोई हुई परात को देवता की मूर्ति के सामने चक्राकार घुमाने वाली एक आचार-विधि का नाम

कि, 'कमला–का गाना सुनना चाहिए ।' चित्तौर–गढ–पर चढाई–की, और ऐसी लडाई हुई कि ब्राह्मण–क्षत्रियो के साढे चौहत्तर मन जनेऊ–का ढेर लग–गया ।[1] वही साढे–चौहत्तर–का अक लोग चिट्ठियो–के ऊपर लिख–देते है, क्योकि जिन्न–से कोई किसी–की चिट्ठी न खोले।

जव चित्तौर–का राजा लडाई–मे–मर–गया और उन–की फौज हार–गयी, तव वादशाह कमला–देवी–को कैद–कर–के पालकी पर चढा–कर अपने शहर–को ले–आया और हुक्म दिया कि कल सवेरे दरवार–मे कमला–देवी–का गाना सुनने–को है। रानी–ने एक तानपूरा ले–कर जो 'श्री राग'[2] खीँचा, तो उन–का प्राण खोपडी फोड–कर वैकुण्ठ–को चला गया और सव सुनने–वाले अपना अपना मुँह खोले वही वैठे रह–गये।

है। पत्नियाँ भी अपने पति का सम्मान इसी रीति से करती हैं । दुलहिन के दरवाजे पर पहुँचने पर दुलहे के सामने भी इसी विधि का पालन हाता है। तानसेन जेठ के महीने मे मरा था, जो ग्रीष्म ऋतु का ठीक मध्य–भाग पडता है। सावन, वर्षा के मध्य मे, दो महीने वाद आता है। सावन की पाँचवीं तिथि नागाओ–सर्प–देवताओ–के त्योहार का दिन है। इस त्योहार पर, जो स्त्रियो का है, पत्नियाँ अपने पतिओ की आरती उतारती है और साथ मे गाती भी हैं। 'मल्लार' हिन्दू–सगीत के प्रधान छै रागो अर्थात् विधियो मे से एक है। यह वर्षा ऋतु मे गाया जाता है और अत्यन्त करुणा उत्पन्न करने वाला वतलाया गया है।

१. अकवर के चित्तौर के घेरे का विवरण टाड कृत राजस्थान मे 'मेवाड़ का इतिहास' शीर्षक अध्याय—१० में दिया गया है । 'इस अनर्थ की स्मृति को अमर रखने के लिए ७४॥ की सख्या अकित की जाती है । राजस्थान मे साहूकार के पत्र पर अकित इस अंक को सभी प्रकार की मोहरो से भी प्रमुखता दी गई है; क्योकि इस गूढ़ सख्या से सुरक्षित पत्र को यदि कोई अनधिकारी खोलेगा, तो उसे "चित्तौर के कत्ले आम का पाप" लगेगा।'

२. श्री राग अथवा समृद्धि–गीत, हिन्दी–संगीत की छै प्रमुख विधियो अर्थात् रागों में से एक।

फैज़ाबाद से 'घाघरा' नदी पार करने पर हमे गोडा और बहराइच ज़िले मिलते हैं। इन दोनो ज़िलो की भाषा भी अवधी है और यह फैज़ाबाद की अवधी से पर्याप्त साम्य रखती है। यहाँ केवल एक नमूना—उडाऊ–पूत–कथा का रूपान्तर, जो गोडा से प्राप्त हुआ है, देना ही पर्याप्त होगा। ज़िले के शिक्षित–समाज मे प्रचलित हस्तलेख का उदाहरण प्रस्तुत करने के लिए यह रूपान्तर देशी लिपि मे, जो देवनागरी तथा कैथी का एक मिश्रित–रूप है, ज्यो का त्यो—छपवा दिया गया है।

बोली की निम्नलिखित विशेषताएँ ध्यान देने योग्य हैं। विभक्ति 'अन' जो पश्चिमोत्तर–प्रान्त के पूर्वी ज़िलो मे साधारणत करण–कारक के लिए, यथा, भूखन भूख–से, प्रयुक्त होती है, यहाँ विकारी कारक की विभक्ति बनकर प्रयोग मे आती है, जैसे, मारे भूखन–के=भूख–से। विकारी की अन्य विभक्ति 'ए' है, जैसे, खेते–माँ=खेत–मे, प्रतॅना–दिने–से=इतने दिन–से। सम्बन्ध कारक के पुल्लिग की मूल विभक्ति जब–तब 'कै' मिलती है, यथा, परमेश्वर–कै=ईश्वर का, व–कै बाप=उसका पिता।

हमे अन्य पुरुष सर्वनाम के लिए व–का, उस–को, व–कै=उस–का, तथा आदरार्थ एक वचन के लिए कर्त्ता बहुवचन 'वै' रूपो पर ध्यान देना चाहिए। सम्बन्ध-कारक का विकारी–रूप सामान्य विकारी के रूप मे प्रयुक्त होता है जो निकट मे स्थित पश्चिमी भोजपुरी के प्रभाव के कारण है। इस प्रकार, व–करे, उस–को तथा उस–का, दोनो अर्थों के लिए प्रयुक्त होता है।

क्रिया–रूपो मे, ध्यान दीजिए —लाग=(वह) लगा, किहौं है=(मैं–ने) किया–है, तथा 'कोन्ह' के लिए 'कीन'=(मैं–ने) किया। 'आ' मे अन्त होने वाली धातुओ मे लगने वाली अवधी की विशिष्ट भूतकालिक विभक्ति 'आन' भी ध्यान देने योग्य है, यह हमे नगचान=(वह) निकट–आया, शब्द मे मिल रही है।

(न० ४)

भारत–आर्य परिवार — मध्यवर्त्ती शाखा

पूर्वी हिन्दी

अवधी बोली — (गोडा जिला)

\ एक जने–के दुइ बेटवा रहे। उन–मॉ–से छोट का बेटवा अपने बाप–से कहिस कि हे बाप हम–कॉ जवन बखरा पहुँचै तवन बाँटि देव। तौ ऊ आपन पूंजी उन–का बाँटि दिहिस। कुछ दिन–के पाछे छोटका बेटवा सब लै–दै–के परदेस चला–गा औ हुआँ सब जजाति बेकार कार–माँ उडाइ–दिहिस। जब सब फूंक–चुका तौ वहि देश–माँ बडा झूरा परा। तब तौ भूखन मरै लागे। तब ऊ वहि देस–के एक मनई–के

लगे-गा। ऊ व-कॉ सूअरि चरावै-के खातिर खेत-माँ पठइस। ऊ आपन पेट-कना[1] भूसी-से जवन सुअरि खात-रहे बहुत खुशी-से भरि-लेत, मुला वही केउ नाहीं देत-रहा। जव वकरे सुधि भै तव कहै लगा कि, 'हमरे वाप-के वहुत नोकरहन-काँ खए-काँ मिलत-है, वरुक वचि जात है, औ मैं मारे भूखन-के मरत-हों। लाओ, मैं उठौं अवर अपने वाप-के लगे चलौं और उन-से कहौं कि, हे वाप, मैं परमेश्वर-कै औ तोहार गुनह-गार हौं, औ तोहार वेटवा कहवावै-के लायक नहीं हौं। मो-काँ अपने चकरन-मॉ कै लेव। ऊ उठा औ अपने वाप-के लगे आवा। मुल जव ऊ वहुत दूरि रहा व-कै वाप व-का देखि-लिहिस। तौ वकरे देखि दया लागि औ दौरि कै गटई पकिर-के चूमि-लिहिस। तव वेटौना वोला कि, हे वाप, मैं परमेसुर-के आगे औ तोहरे आगे पाप-किहौं-है, अवर तोहार पूत कहावै लायक नहि-न। तव वाप अपने चकरन-से कहिस कि, सव-से नीक कपड़ा लाओ औ ए-काँ पहिराओ। औ एक मुँदरी पहिराओ, औ घोड़े-माँ पनहीं पहिराओ, और आओ सव-केऊ खाई-पीई, औ खुसी मनाई। काहे-से-कि हमार ई वेटवा मरि गा-रहा, फिरि-से जीआ-है; हेराय गा-रहा-है, फिर मिला-है; और वै सव खुशी मनावै लागे।

वड़का वेटवा खेते-माँ रहा। जव ऊ आवा और वखरी नगचान तौ नाच-रग सुनि-परा। एक नोकरहा-का गोहरय-के हवाल पूँछिस। ऊ वताइस कि, तोहार भाई आवा -है, तवन तोहार वाप नेवता किहिस-है कि, वै खेम-कुसल-से आये-गे। ई सुनि-कै ऊ वहुत रिसिहा भा और वखरी-माँ न गा। तौ व-कै वाप आवा औ चिरौरी किहिस। ऊ जवाव किहिस कि येतना दिने-से हम तोहार काम-काज करित -है और कवहूँ तोहरे कहे-के सेवाय दूसरि वात नहीं कीन, मुल तू हम-का कव-हूँ एक छेगरी-कै वचौ न दिहौ कि अपने सघिन-माँ सौख करित, मुला जव तोहार ऊ वेटवा आवा जे समुल-लै जजाति वेड़निन[2] -माँ वीलवाइस तौ तू नेवता किहेउ। तौ वाप कहिस, कि हे वेटा तुहनि हमेसा हमरेन साथे रहत-हौ और जवन-कुछ हमरे-रहे तौन तोहरे-होय। ई चाही रहा कि हम सव खुसी मनाई काहे-से कि तोहार भाई मरा रहा फिर जीआ-है; और हेराय गा-रहा फिर मिला-है।

---

१ जब चावल कूट जाते हैं; भूसा साथ ही चावल के कण, साबित दानो से अलग कर लिए जाते हैं। चावल के इन कणो को 'कना' कहा गया है और ये जानवरो के खिलाने के काम मे आते हैं।

२. नट-जाति की लड़कियाँ जो स्वय रति-व्यापार भी करती हैं।

हिन्दी प्रतिरूप

एक आदमी के दो लडके थे । उन–मे–से छोटे लडके–ने अपने पिता–से कहा, कि, 'ओ पिता ! हम–को जो हिस्सा पहुँचे, वह बाँट–कर दे–दो।' तब उस–ने अपनी पूंजी उस–को बाँट–कर दे–दी। कुछ दिनों–के बाद छोटा लडका सब –ले–देकर विदेश–को चला–गया और वहाँ सब जायदाद बुरे कामो–मे उडा–डाली। जब सब फूंक–चुका, तब उस देश–मे बडा अकाल पड़ा। तब तो (वह) भूखो मरने लगा। तब वह उस देश–के एक मनुष्य–के निकट गया। उस–ने उस–को सुअर चराने–के लिए खेतो–मे भेजा । वह अपना पेट कनूकों (तथा)–भूसी–से जो सुअर खाते– थे बहुत खुशी–से भर–लेता, लेकिन वह–भी कोई–भी नही देता था । जब उस–को होश आया तब कहने लगा कि, 'हमरे बाप–के बहुत–से नौकरो–को खाने–को मिलता है, और–भी बच जाता है, और मैं मारे भूख–के मर–रहा हूँ। लो, मैं उठूँ और अपने पिता–के निकट चलूं और उन–से कहूँ, कि, "ओ पिता ! मैं परमेश्वर–का और तुम्हारा अपराधी हूँ और तुम्हारा बेटा कहलाने–के लायक नही हूँ। मुझ–को अपने नौकरो–मे कर–के ले–लो।" वह उठा और अपने पिता–के निकट आया। लेकिन जब वह बहुत दूर था, उस–के पिता–ने उस–को देख–लिया। तब उस–को देख–कर दया आयी और दौड कर गला–पकड–कर (उसे) चूम–लिया। तब लडका बोला, कि, 'ओ पिता ! मैं–ने परमेश्वर–के आगे और तुम्हारे–आगे पाप किया–है और तुम्हारा पुत्र कहलाने–के लायक नही हूँ।' तब पिता–ने अपने नौकरो से कहा, कि 'सब–से अच्छे कपडे लाओ और इस–को पहिनाओ। और एक अँगूठी पहिनाओ, और पैरो–मे जूते पहिनाओ और आओ, सब–कोई खायें–पियें, और खुशी मनायें, क्यो–कि मेरा यह लडका मर–गया–था, फिर–से जीवित–हुआ–है, खो गया–था, फिर मिला–है।' और वे सब खुशी मनाने लगे।

बडा लडका खेत–मे था । जब वह आया, और घर निकट–आ पहुँचा तो नाच–रग सुन–पडा। एक नौकर–को बुला–कर हाल पूछा। उस–ने बतलाया, कि, 'तुम्हारा भाई आया–है, उस–कारण–से तुम्हारे पिता–ने दावत दी–है कि वह कुशल–पूर्वक आ–गया–है।' यह सुन कर वह बहुत गुस्सा हुआ और घर–मे नही गया। तब उस–का पिता आया, और विनती की। उसने जवाब दिया कि, 'इतने दिनो–से हम तुम्हारा काम–काज कर–रहे है और कभी–भी तुम्हारे कहने–के अतिरिक्त दूसरी बात नही की, लेकिन तुम–ने हम–को कभी–भी एक बकरी–का बच्चा–भी न दिया कि (मैं) अपने साथियो मे आनन्द मनाता, लेकिन जब तुम्हारा वह लडका आया जिस–ने जड–से जायदाद वैश्याओ–मे गँवा–दी, तो तुम–ने दावत दी–है।' तब पिता–ने

कहा, कि, 'ओ बेटे ! तू हमेशा मेरे–साथ रहता–है। और जो–कुछ मेरा–था, वह तुम्हारा–ही है। यह चाहिए था कि हम सब खुशी मनाते, क्यों–कि तुम्हारा भाई मरा–था, फिर जी–उठा–है, और खो गया–था, फिर मिला है।'

लखनऊ तथा बाराबंकी

नीचे दिये हुए दो नमूने लखनऊ ज़िले से लिये गये है। उन्नाव तथा रायबरेली ज़िलो के सीमावर्त्ती सुदूर-दक्षिण को छोडकर, जहाँ की भाषा थोडी-बहुत भिन्न है, ये नमूने ज़िले की सम्पूर्ण ग्राम्य–क्षेत्र की बोली का उदाहरण प्रस्तुत कर रहे हैं। लखनऊ नगर की भाषा, निस्सदेह, प्रधानतया उर्दू है। प्राप्त किये गये नमूने फारसी लिपि मे थे। यह उस क्षेत्र की मूल लिपि नही है, जिसमे स्थानीय बोली लिखी जाया करती है, इसलिए मैंने उन नमूनो का अंग्रेजी रूपान्तर देकर ही सतोष कर लिया है। पहिला नमूना 'उड़ाऊ पूत–कथा' का रूपान्तरण है और दूसरे मे, 'गाँव के एक विवाह मे क्या हुआ' उसका विवरण है। ये बाराबकी जिले मे बोली जाने वाली भाषा के नमूनो के रूप मे भी स्वीकार किये जा सकते हैं।

अवधी-भाषा-भाषी क्षेत्र मे जैसे ही हम पश्चिम की ओर बढते है, बोली का नाम, अवधी के स्थान पर 'बैसवाडी' लिये जाने की प्रवृत्ति मिलती है। यद्यपि नाम का अन्तर है, फिर भी, शायद ही यह भाषा के अन्तर का द्योतक हो। व्यवहार मे दोनो बोलियाँ एक ही ठहरती है। अन्तर रखने वाले उल्लेखनीय तथ्य इस प्रकार हैं—पश्चिम का झुकाव 'इन' या 'इन' की अपेक्षा 'एँ' या 'ऐंन' मे अन्त होने वाले अन्य पुरुष बहुवचन क्रिया–रूपो की ओर अधिक है। सम्बन्ध कारक की विभक्तियाँ कुछ और पश्चिम मे स्थित भाषाओं मे पायी जाने वाली इन्ही विभक्तियो के अधिक निकट पहुँच जाती हैं। हम जैसे ही और पश्चिम की ओर बढते हैं, जैसे कि, सीतापुर ऐसे ज़िलो मे, हम यहाँ जो बोली पा रहे हैं, वह है, यद्यपि बैसवाडी या अवधी ही, पर पडोस मे स्थित कनौजी से अधिक प्रभावित है। ये सब, फिर भी, एक भिन्न बोली की सत्ता तक नही पहुँच पाते।

नीचे दिये हुए नमूनो मे, जिनकी ओर ध्यान आकर्षित किया जा सकता है, व्याकरण के प्रमुख तथ्य यहाँ प्रस्तुत किये जा रहे हैं :—

'ए' अक्सर 'या' हो जाता है, जैसा कि 'एक' के लिए 'याक' मे। सज्ञाओ का 'ए' मे अन्त होने वाला विकारी रूप भी मिलता है, जैसे कि 'याक जने–के' एक आदमी–के, 'बडी दूरी–के मुलुक–माँ'=बडी दूर–के देश–मे;

पुल्लिग सम्बन्ध कारक की विभक्ति मूल-रूप मे 'कै' और विकारी मे 'के' है । स्त्रीलिंग की मूल तथा विकारी, दोनो मे, 'की' है। 'नाऊ बाम्हन–कै बोलाय–कै'= एक नाई (और) एक ब्राह्मण को बुलाकर, वाक्याश मे पहिला 'कै' कर्म–कारक का चिह्न जान पडता है । इसी प्रकार वेटँवा–कै देख–कै=वेटे को देखकर, मे भी।

सर्वनामो मे, 'यू'=यह, रूप पर ध्यान दीजिए ।

क्रियाओ मे, पश्चिमी के विशिष्ट रूपो–'रहै'=(वह) था, और 'रहैं'= थे, पर ध्यान दें। 'मैं वहुत पाप किहिन–हैं'=मैं–ने बहुत पाप किये है, वाक्याश मे क्रिया, कर्त्ता के स्थान पर कर्म के पुरुष एव वचन का अनुसरण करती जान पडती है। यदि यह वाक्याश सही लिखा गया है तो इसमे सन्देह नही कि यह लखनऊ नगर की उर्दू के प्रभाव के कारण है। दूसरे नमूने मे हमे जो अरबी, फारसी शब्दो की अधिकता मिल रही है, वह भी इसी प्रभाव के परिणाम-स्वरूप कही जा सकती है।

(नं० ५)

भारत–आर्य परिवार — मध्यवर्त्ती शाखा

पूर्वी हिन्दी

अवधी बोली — (जिला लखनऊ)

नमूना –१

याक जने–के दुइ बेटवा रहैं । सो, छोटका बेटवा बाप–से कहिस, की, 'मोर हींसा बाँटि दे,' तब बाप ओहि–का हींसा बाँटि दिहिस। किछु दिन पाछे ऊ सब रुपया लै–कै बड़ी दूरे–के मुलुक–माँ निसर–गा । और हुआँ आपन रुपया सब कुचाल–माँ उड़ाय–दिहिस। ते पाछे ओहि–के तीरे कुछू नाहीं रहा; और हुआँ बड़ा झोरा पडै लाग और ऊ बनाय तबाह होय लाग । तब याक भल मनई–के तीरे गा और ऊ आपन खेतन–माँ सूअरि चरावै–का नोकर राखिस । तब ओहि–के जी–माँ आवा, 'जौन बोकला–छोकला सूअरि खात–हैं वही पाई तो हम खाई।' काहे–से–की ओहि–का कुछु नाहीं मिलत–रहै। ते पाछे ऊ अपने मन–माँ सोंचिस, की, 'मोरे बाप–के बहुत मजूर लाग रहत–हैं सो अब हम–हूँ उठ–कै हुआँ जाई और कही, कि, "मैं तोरे हियाँ और गुसैयां–के हियां बहुत पाप किहिन–हैं और अब ऐसन नाहीं हौं की तोर बेटवा कहाओं सो जे-माने सब मजूर तोरे हियाँ लाग हैं हम–हूँ का लगाय–ले।" ई सोच–विचार–कै बाप तीरे चला–गा। बाप–का ए बेटवा–कैं दूरे–से देख–कै बहुत सोंच आवा और दौड़–कै गरे–मे लपटाय–लिहिस और बहुत चूमिस–चाटिस । तब बेटवा बोला की 'मैं तोरे हियां और गुसैयाँ–के हियाँ बहुत पाप किहिन–है और ऐसन नाहीं हौंकी फेर

तोर बेटवा कहाआँ।' प्रह पर बाप आपन मजूरन–से कहिस, की, 'भल भल कपड़ा लि–आओ और प्रह–का पहिराओ; और प्रह–का हाथ–माँ मुंदरी और गोड़े–माँ पनही पहिराओ। हम खुसिआली मनाइव की हमार बेटवा मर–कै जिया, और हेराय–कै फेर मिला;' तव ऊ खुसी करै लाग।

वड़का बेटवा कै ओहन–हार–माँ रहै। जव दुआरे आवा तव गीत और वाजा–कै अवाज सुनिस। तव याक नोकर–से पूंछिस की, 'आज यू का है, जौन खुसियाली मनाई जात–है?' नोकर कहिस, की, 'तोहार भाई आवा है सो तोहार वाप एई वड़े खुसिआली किहिन–है।' प्रह पर वड़का बेटवा रिसान और भीतरौं नाहीं गा। तव वाप आपै दुआरे आय–कै ओहि–का मनाइस। ऊ वोला, की, 'मै इतरे दिन–से तोहार सेवा किहौं, कवहूं ऐस ना भा की एको छेगरी–का वच्चौ देतौ की अपने अनोई–परकन–का खिवाइत और खुसिआली करित; और जव यू आवा जिन धन कसबिन–माँ उड़ाय–दिहिस, तव यू खुसिआली मनाइन।' तव वाप वोला, 'हे भैआ[1]। तैं तो मोरे लगे रहै, जौन मोरे तीरे हन सो–अन तोर हन। मुला प्रइ साइत खुसिआली करब जरूर रहै की तोर भाई मरि–कै अव जिआ हन; और हेराय–कै फेर मिला हन।'

हिन्दी प्रतिरूप

एक आदमी–के दो लड़के थे। तव, छोटे लड़के–ने पिता–से कहा कि 'मेरा हिस्सा बाँट–कर (मुझ–को) दे–दो।' तव पिता–ने उस–को हिस्सा बाँट–कर दे–दिया। कुछ दिन पीछे वह सव रुपया ले–कर वडी दूर–के देग–मे चला गया और वहाँ अपना सव रुपया बुरे कामो मे उडा–डाला। उसके पीछे उस–के पास कुछ–भी नही रह–गया; और वहाँ वडा अकाल पडने लगा और वह विल्कुल वरवाद होने लगा। तव एक भले–आदमी–के निकट गया और उस–ने अपने खेतो–मे सुअर चराने–को नौकर रख–लिया, तव उस–के मन–मे आया, 'जो भूसी–आदि सुअर खाते–हैं, (यदि) पाऊँ तो मैं खाऊँ।' क्यो–कि उस–को कुछ नही मिलता–था। उसके वाद उस–ने अपने मन–मे सोचा, कि 'मेरे पिता–के (–यहाँ) वहुत मजदूर लगे रहते हैं, इसलिए अव मैं–भी उठ–कर वहाँ जाऊँ और कहूँ कि, "मैं–ने तुम्हारे निकट और ईश्वर–के निकट वहुत पाप किये–हैं और अव ऐसा नही हूँ कि तुम्हारा वेटा कहलाऊँ। इसलिए जिस–तरह सव मजदूर तुम्हारे यहाँ लगे हैं, हम–को–भी लगा लो।" यह सोच–विचार–कर पिता–के निकट चला गया। पिता–को इस लडके–को दूर–से देख–कर वहुत दया

---

१. प्यार का शब्द जो किसी भी व्यक्ति के लिए प्रयुक्त हो सकता है।

आयी और दौड़–कर गले से लिपटा–लिया और बहुत चूमा–चाटा। तब लडके–ने कहा कि, 'मैं–ने तुम्हारे निकट और ईश्वर–के निकट बहुत पाप किये–है और ऐसा नही हूँ कि फिर तुम्हारा बेटा कहलाऊँ।' इस पर पिता–ने अपने मजदूरो–से कहा, कि, 'अच्छे अच्छे कपडे ले–आओ और इस–को पहिनाओ, और इस–को हाथ–मे अँगूठी और पैर–मे जूते पहिनाओ। हम खुशी मनायेंगे कि हमारा बेटा मर–कर जिया है, और खो–कर फिर मिला।' तब वह खुशी मनाने लगा।

बडा लडका कही–खेतो–मे था। जब दरवाज़े पर आया, तब गाने और बाजे की आवाज सुनायी दी। तब एक नौकर–से पूछा, कि, 'आज यह क्या है जो खुशी मनायी जा–रही है?' नौकर–ने कहा, कि 'तुम्हारा भाई आया है, इसलिए तुम्हारे पिता–ने इसी–कारण–से खुशियाली मनायी है।' इस पर बडा लडका गुस्सा–हुआ और भीतर नही गया। तब पिता–ने स्वय–ही दरवाजे पर आ–कर उस–को मनाया। वह बोला, कि, 'मैं–ने इतने दिनो–से तुम्हारी सेवा की–है, कभी ऐसा नही हुआ कि एक–भी बकरी–का बच्चा–भी (तुम–ने) दिया–होता जिस–से–कि अपने मित्रो–को खिलाता और खुशियाली मनाता, और जब वह आया जिस–ने सब धन वैश्याओ–मे उडा दिया, तब यह खुशियाली–मनायी, तब पिता बोले, 'हे भइया! तू तो मेरे निकट रहता–है, जो मेरे पास है, वह–सब तेरा है। लेकिन, इस समय खुशियाली मनाना जरूरी था क्यो–कि तेरा भाई मर–कर जीवित–हुआ–है, और खो–कर फिर मिला–है।'

(न० ६)

भारत–आर्य परिवार मध्यवर्त्ती शाखा

पूर्वी हिन्दी

अवधी बोली (ज़िला लखनऊ)

नमूना––२

याक गाँव–माँ याक लम्बर–दार–के नान्ह–सारी बिटोवा रहै। जब व–की उमर सतरह बरिस–के भई, वह जून लम्बर–दार–का वह–की बियाह की फिकिर बढी। वह बेरियाँ नाऊ, बाम्हन–[1] कै बोलाय–कै लड़िकवा–का ढूँढै पठइन। थोडे दिनन–माँ याक लडिका मिला। वह–के साथ बिटोवा–कै बनावन्त बना और बाम्हन पूँछा–गवा और बियाह–की तैयारी भई। लड़िकवा–कै बाप आवा औ लेई-देई–के पाछे बत–कहाव होवै लाग। हजार रुपैया बहुत कहे–सुने तै भवा। तब

---

१. सामान्यत. वरशोधक का काम ये ही करते है।

लम्बर-दार राजी-खुसी-से घर गे और बरात-कै दिन बदा-गा। दुलहा-के बाप पन्दरह हजार सवाॅग लै-कै बड़ी धूम-धाम-से दुलहिन-के घरे आवा और द्वारे-चार होवै लाग।[१] होम-दच्छिना-के माँगे-माँ पडित-से तकरार भई, लाठी चलै लाग। बहुत मनई दूनां कैत घायल भइन। तव वरात रिसाय चली। वही समय-माँ गाँव-के भले-मानुस प्रकट्ठा-होइ-कै बरात मनाय-लाइन। चौथे दिन वियाह भवा और भात-वढ़ार खुसी-से खाइन,[२] और विदा होइ-कै अपने घर आइन।

हिन्दी प्रतिरूप

एक गाँव-मे एक लम्बरदार के छोटी लडकी थी। जव उस-की उम्र सोलह-सत्तरह वर्ष-की हुई, उस समय लम्बरदार-को उस-के विवाह-की फिक्र वढी। उसी समय नाई, ब्राह्मण को बुला-कर लडके-को खोजने भेजा। थोडे दिनो-मे एक लडका मिला। उस-के साथ लडकी-की जन्मपत्री मिल-गयी, और ब्राह्मण-से पूछा-गया और विवाह-की तैयारी हुई। लड़के-का पिता आया और लेने-देन-के पीछे वातचीत होने लगी (=वढ गई)। हज़ार रुपया बहुत कहने-सुनने-पर तय हुआ। तव लम्बरदार राजी-खुशी-से घर गये और वारात-का दिन निश्चित-किया गया। दूल्हे-के पिता पन्द्रह हज़ार सम्बन्धी ले-कर वडी धूम-धाम-से दुल्हिन के घर-पर आया और द्वार-का-उत्सव (=तिलक) होने लगा। यज्ञ-की दक्षिणा-के माँगने-मे पंडित-से झगडा हो-गया, लाठी चलने लगी। वहुत आदमी दोनो-ओर-के घायल हुए। तव वारात गुस्सा-हो-कर लौट-चली। उसी-समय-मे गाँव-के प्रतिष्ठित-आदमी इकट्ठा-हो-कर वारात-को मना-लाये। चौथे-दिन विवाह हुआ और चावल, वडा-खाना, खुशी-से खाया, और विदा-हो-कर अपने घर आये।

उन्नाव तथा रायवरेली ज़िलो की सीमा से लगे हुए लखनऊ ज़िले के दक्षिणी भाग की भाषा उपर्युक्त नमूनो की भाषा से थोड़ी भिन्नता रखती है। 'उड़ाऊ पूत-

---

१. इस आचार-विधि में दुलहिन का पिता, बारात के दरवाजे पर पहुँचने पर दूल्हे का स्वागत करता है और उसके पैर पूजता है। इसके पूर्व पुरोहित यज्ञ करता है और जब यह समारोह समाप्त हो जाता है तब पुरोहित को इस कार्य के लिए पारिश्रमिक दिया जाता है।

२. विवाहोत्सव के ठीक वाद उसी दिन शाम को जो भोजन होता है, उसे 'भात-वढ़ार' कहा जाता है। दुलहिन का पिता दूल्हे को कुछ रुपया देता है और उसे तथा उसके सम्बन्धियो को खिलाता है।

कथा' का विम्नाकित रूपान्तर इसी स्थान से प्राप्त किया गया है । नीचे दिये हुए अतिरिक्त व्याकरणिक तथ्यो के साथ ही, यह भी उल्लिखित हो जाना चाहिए कि यह भाषा लखनऊ नगर की उर्दू से पर्याप्त प्रभावित है। इसमे पूरे–के पूरे वाक्याग जैसे, 'उन उन–ने कहा, विशुद्ध उर्दू के हैं। उर्दू का सम्बन्ध कारकीय परसर्ग 'का' भी इसमे खूब मिल रहा है।

हम यहाँ भी 'ए' को 'या' लिखने की वही प्रवृत्ति परिलक्षित करते है, जिसे हमने सीमावर्ती जिलो मे पाया है। 'एक' के लिए दोनो—एकु तथा याक–रूप मिलते हैं। इसी प्रकार हम और भी उद्धृत कर सकते हैं, जैसे, परद्यासैं=विदेश को, ख्यात=खेत, द्याखौ=देखो, तथा स्यावा=सेवा (इसी तरह हम यहाँ 'ओ' भी 'वा' रूप–मे अकित हुआ पाते हैं, जैसे, म्वार=मेरा, ह्वात–है=होता–है। यहाँ यह भी एक सवल प्रवृत्ति है कि सज्ञा एकवचन का रूप 'उ' मे अन्त होता है, इस प्रकार एकु=एक, जौनु=जो, असँबाबु=सामान, इक–ठौरु=एक स्थान पर। इसी तरह और भी। ये सभी विशिष्टताएँ पश्चिम मे बोली जाने वाली कनौजी के प्रभाव के कारण हैं।

सज्ञाएँ अपना एक विकारी–रूप 'ऐ' अथवा 'ए' मे अन्त होने वाला रखती हैं, जैसे, परद्यासैं=विदेश को, बापैं–के=पिता के, हाथे–माँ=हाथ–मे।

सर्वनामो के सम्बन्ध मे ऊपर उद्धृत किये गये, मर्हि–का=मुझ–को; म्वार= मेरा, तथा कोहूँ=कोई, पर ध्यान दें । अन्य पुरुष सर्वनाम के विकारी रूप 'ओहि' को सदैव 'वोहि' ही लिखा जाता है । यह लेखान्तर–मात्र भी हो सकता है।

जहाँ तक क्रियाओ का सम्बन्ध है, वर्तमान कालिक कृदन्त 'ति' मे अन्त होता है, जैसे, करति–हौं=करता हूँ, रहति–हौ=रहते हो, तथा राखति–हैं=रखते हैं। पश्चिमी अवधी के विशिष्ट रूप 'रहै'=था तथा 'रहैं'=थे, ध्यान देने योग्य हैं; और भी, ध्यान दें आइ=है, ह्वात है=होता–है । 'दिहिन' के लिए 'दिहिनि'= दिया (आदर–सूचक), तथा 'दीन्ह' के लिए 'दीन'।

(न ७)

भारत-आर्य परिवार पूर्वी हिन्दी मध्यवर्ती शाखा

अवधी बोली (लखनऊ जिले का दक्षिणी भाग)

एकु मनई-के दुइ बेटवा रहैं । वहि-माँ छोटकवा बेटवा अपने बाप-ते कहिसि

कि दादा तुम्हरी गिरस्ती माँ जौन् हमार हींसा होइ तौनु हम-का बाँटि-देउ । तब उन अपनी गिरस्ती-माँ उन-का बाँटि दिहिन । कुछ दिन बीते छोटकये बेटवै सब असबाबु इकठौरु कै-कै परद्यासै चला-गा औरु हुँवाँ पहुँचि-कै आपन चीज-वस्तु लुचपन-माँ उड़ाइ दिहिस । औरु जब सब दाम चुकि-गे तब वोहि देस माँ बड़ा झूरा परा औ वहाँ गरीबु होइ लाग । तौ हुँवैं एकु जिमीदार-के हियाँ गा नौकरी कै लिहिसि । तब वाँहि वोहि-का अपने ख्यातन-माँ सोरी चरावै-का पठइसि । औ वोहि का मनु रहै कि सोरी-कौ-खाई बूसी-ते आपनु पेटु भरि लेई मुदा वहौ ना वोहि-का कोहूँ दीन । तब सुधि कै-क कहिसि कि बहुति मँजूर तौ हमरे बापै-के हियाँ खाय-कै औरु कुछ बचाइ राखति-हैं औ मैं हियाँ उपासु करति-हौं । अब मैं हियाँ-ते चला जाउँ अपने बाप-के लगे अटौं औ उन-ते कहौं कि दादय मैं तुम्हार औ राम-का गुनही हौं औ अब मैं येहि-तना-का नाहिन कि तुम्हार बेटवा बाजौं । महिं-का अपनी मँजूरी-माँ लगाइ-लेउ । फिरि हुँवाँ-ते चलि-कै अपने बाप-के हियाँ आवा । जब घर नगिच्यान तब वोहि-के बाप वोहि-का पहिले-हे दीख औ देखतै खुस होइ-कै दौरा मारे मया के छपट्याय लिहिसि । तब बेटवा बाप-ते चेरौरी किहिस कि दादा मैं राम-का औ तुम्हार गुनही हौं अब येहि-तना-का नाहिन कि तुम्हार बेटवा बाजौं । मुदौ बाप अपने चकरन-ते कहिसि कि नीकि-नीकि कपरा ल्यावो औ येहि- का पहिराय-देउ । औ मुंदरी हाथे-माँ औ पनहीं पाँयें-माँ पहिराय-देउ । औ सब मनई नेउता खाइनि औ खुस भे कि म्वार बेटवा मरि-कै फिरि जिया औ हेराइ-कै फिरि मिला । औ सब मनई खुसी करै लागि ॥

वोहि बेरिया वोहि-का बड़कवा बेटवा ख्यात-माँ रहै । जब वोहु लौटि-कै घर-के नगीचे आवा तब नाचै गावै-कै हाँक सुनिसि । तब याक चाकर-का बोलाइ-कै पूँछिसि कि येहु का ह्वात है । तब वोहि वोहिं-ते कहा तुम्हारि भाय आवा-है । उन-के खैर-सल्लाह आये-ते तुम्हरे बाप नाचु-रगु किहिस है । वोहु बहुतै रिसान । घर-के भितरै न जात-रहै । येतरे-माँ वोहि-का बापु घर-ते निकरि आवा औ मनावै लाग । वांहि बाप-ते कहिसि कि द्याखौ येतरे दिन-ते तुम्हारि स्यावा करति-हौं औ कबौं तुम्हार कहा नहीं टारा । तौने-उ-पर तुम कबौं हम-का एकु छेगरी-का बच्चौ ना दिह्यौ कि अपने ब्यौहारिन-के साथ खुसी करित । मुदौ जब-ते तुम्हार येहु बेटवा आवा जौने आपन चीज-वस्तु छिनारा-माँ उड़ाइ दिहिसि तौने-माँ तुम उन-के बरे बड़ी खुसी किह्यौ । उन उन-ते कहा कि बच्चा तुम तौ रोजुइ हमरे-लगे रहति हौ । जौनि चीज-वस्तु हमरे है तौनि तुम्हरि-हौ आइ । हम पचन-का यही कि खुसी करी काहे-ते कि तुम्हार भाइ मरि-कै जिया-है औ हेराय-कै फिरि मिला है ।

हिन्दी प्रतिरूप

एक आदमी–के दो लडके थे। उन–मे से छोटे लडके–ने अपने पिता–से कहा कि पिता, आपके धन–मे–से जो मेरा हिस्सा हो वह मुझ–को बाँट–दें। तब उस–ने धन–मे–से उस–का हिस्सा दे–दिया। कुछ दिन बीतने–पर छोटा लडका– सब धन एक स्थान–पर इकट्ठा–कर–के विदेश चला गया और वहाँ पहुँच–कर अपना सब रुपया लुच्चेपन–मे (=कुचालो मे) उडा–डाला। और जब सब पैसा समाप्त–हो-गया तब उस देश–मे बडा सूखा (=अकाल) पडा और वह–भी गरीब होने लगा। तब वहाँ–ही (वह) एक जमीदार–के–यहाँ गया (और) नौकरी कर–ली। तब उस–ने उस–को अपने खेतो–मे सुअर चराने–के लिए भेजा। और उस–का मन होता–था कि सुअर–की खायी–हुई भूसी–से अपना पेट भर–ले, लेकिन वह–भी नही उस–को किसी–ने दी। तब (मन–मे) सोच–करके उस–ने–कहा कि, बहुत मजदूर तो हमारे पिता–के यहाँ खाते है और (वे) कुछ बचा–भी रखते है। और मैं यहाँ उपवास करता–हूँ। अब मैं यहाँ–से चलूँ (और) अपने बाप–के–पास पहुँचूँ। और उन–से कहूँ कि "दादा, मैं तुम्हारा और राम–का गुनहगार हूँ। और अब मैं, इस तरह–का नही रहा कि आप–का बेटा कहलाऊँ। (आप) मुझे अपनी नौकरी–मे रख लीजिए।" फिर वहाँ–से चल–कर अपने बाप–के यहाँ आया। जब घर निकट–मे आया तब उसके बाप–ने उसे पहले–ही देख लिया और देखते–ही खुश होकर दौडा और प्रेम–के कारण उसे छाती–से लगा–लिया। तब बेटा–ने बाप–से प्रार्थना की, कि "दादा, मैं राम का और तुम्हारा गुनहगार हूँ। अब इस तरह–का नही कि तुम्हारा बेटा कहलाऊँ।" लेकिन बाप–ने अपने नौकरो–से कहा कि अच्छे–अच्छे कपडे ले–आओ और इस–को पहिना दो। और अँगूठी हाथ–मे तथा जूते पैर–मे पहिना–दो। और सब लोग दावत–खायें और खुश हो (क्यो) कि मेरा बेटा मर–कर फिर जीवित–हुआ और खो–कर फिर मिल–गया।" और सब लोग खुशियाँ मनाने लगे।

उस समय उस–का बडा बेटा खेत–मे था। जब वह लौट–कर घर–के निकट आया तब उस–ने नाचने–गाने की आवाज सुनी तब (उसने) एक नौकर को बुला कर पूछा कि यह क्या हो–रहा है? तब उस–ने उस–से कहा कि तुम्हारा भाई आया है। उस–के कुशल–पूर्वक आने–से तुम्हारे बाप–ने नाच–गाना कराया है। वह बहुत–ही अप्रसन्न हुआ। घर के भीतर–भी नही जा–रहा था। इतने–में–ही उसका बाप घर–से निकल–कर बाहर आया और (उसे) मनाने लगा। उस–ने बाप–से कहा, "देखिए, इतने दिनो–से (मैं) तुम्हारी सेवा कर रहा हूँ और कभी–भी तुम्हारे कहने–को नही टाला। तिस–पर–भी, तुमने कभी–भी हम–को एक बकरी का बच्चा भी नही दिया कि अपने साथियो के साथ खुशी मनाता। लेकिन जब से तुम्हारा

यह लडका आया, जिस–ने अपना धन लम्पटता मे उड़ा–दिया है, उस–पर–भी तुमने उस–के लिए वडी खुशियाँ मनाईं।" उस–ने उस–से कहा "बेटा! तुम तो रोज–ही हमारे–पास रहते–हो। जो धन हमारा है वह (सब) तुम्हारा–ही है। हम लोगो को चाहिए कि खुशियाँ मनाये क्योकि तुम्हारा भाई मर–कर जीवित–हुआ–है और खो-कर फिर मिला–है।

प्रतापगढ़

प्रतापगढ जिले के मध्य तथा पूर्वी भाग की भाषा अवधी है। जौनपुर जिले के पूर्वी भाग मे बोली जाने वाली पश्चिमी भोजपुरी के निकट-मे होने के कारण यह कुछ विकृत–सी है। आगे दिए हुए नमूने इस जिले के पश्चिम-क्षेत्र की भाषा के भी उदाहरण के रूप मे स्वीकार किये जा सकते हैं। इस सम्बन्ध मे निम्न तथ्य उल्लेखनीय हैं —

प्राप्त नमूनो मे सज्ञा के अतिदीर्घ रूपो के ऐसे अनेक उदाहरण उपलब्ध है जो औना मे अन्त होते हैं, यथा–बेटौना (=पुत्र), बपौना (=पिता)। सकर्मक क्रियाओ के भूतकालिक अन्यपुरुष एकवचन के रूप प्राय –इसके स्थान पर–इसि–मे अन्त होते है, यथा—किहिस, के बजाय, किहिसि (=किया)। हमे–आ मे अन्त होने वाली क्रिया–धातुओ की भूतकालिक विभक्ति–आन के उदाहरण भी उपलब्ध होते हैं, यथा—दयान (=दया आई), रिसिआन (=क्रोधित हुआ)।

पुल्लिग के सम्बन्ध कारकीय प्रत्यय प्राय कै हैं, यथा, दादा–कै मजूर (=पिता के नौकर), दयू–कै नगीच (=ईश्वर के निकट), इसी प्रकार अन्य। व्यजनान्त सज्ञाओ के विकारी रूप–ए अन्त वाले है, यथा–हाथे–माँ (=हाथ मे), घरे–माँ (=घर–मे), इत्यादि। तुहैं (=तुम को) रूप पर भी ध्यान दीजिए। क्रियाओ के अन्यपुरुष बहुवचन वाले रूप–ग्न के स्थान पर–ऍं मे अन्त होते है, इस प्रकार हम 'रहेन' (=वे थे) के स्थान पर 'रहें' पाते हैं। निम्नाकित वे रूप भी जो व्याकरण मे नही दिये जा सके है ध्यान देने योग्य है; यथा—बेचब्या (=क्या आप बेचेंगे?), हम जावा चाहित अहैं (=हम जाना चाहते है।)

(नं० ८) मध्यवर्ती शाखा

पूर्वी हिन्दी

अवधी बोली (प्रतापगढ़ जिले का पूर्वी तथा मध्यवर्ती भाग)

नमूना—१

कौनौं मनई-के दुइ बेटवा रहिन औ उन-माँ-से लहुरवा अपने बाप-से कहिस दादा हो माल-टाल-माँ-से जवन हीसा हमार निकसै तवन हम-का दै द्या। तौ बाप आपन

रिजिक उन–माँ बाँट दिहिस। ओ कछु दिन बीते लहुरका बेटवा आपन माल टाल जोरि कै दूरै परदेसै निकसि गवा औ हुँआँ कुचाली माँ आपन पूँजी गँवाइ दिहिस। औ जब ऊ सरवस उड़ाइ दिहिस हुँआँ एक बड़ा झूरा पड़ा औ ऊ दिक होइ लाग। तौ ऊ वहि देस-के एक मनई से जाइ मेल किहिस। ऊ मनई वहि–का अपने खेतवन–माँ सुअरि चरावै बरे पठै दिहिस। औ ऊ खुसी–से उहै चोकरे–से जौने–का सुअरि खात–रहिन आपन पेट पालत। औ कोऊ वहि का कछु देत–न–रहा। औ जब ऊ आपे-माँ आवा तौ कहिसि हमरे दादा–के कतिक मजूर नीकौ तरह खात पिअत अहैं औ हम भूखन मरत अही। मैं उठिहौं औ दादा-पास अपने जैहौं औ उन–से जाइ कै कहिहौं दादा मैं दयू–कै औ तोहरे नगीच कसूर किहे–अहौं अब तोहार बेटवा कहवावै लाइक नहीं अही। हम–का अपन एक मजूर की नाईं बनवा। औ ऊ उठा औ ऊ अपने बाप–के लगे आवा। मुला बेटौना दूरै अबहीं रहबै कीन कि वहि–कै बाप वहि का देख लिहिस औ दयान औ दौड़ाऔ वहि–से गरे मिला औ चुम्मा लिहिसि। तौ बेटवा वहि–से कहिसि दादा हम दयू–कर औ तोहरे नगीच कसूर किहे अही औ तोहार बेटवा कहवावै लाइक नाहीं अब रहा-अही। मुला बपौना अपने चकरन-से कहिसि निकौ उढ़ना लै आवा औ वहि का पहिरावा। एक मुंद्री हाथे–माँ औ पनहीं गोडे–माँ पहिरावौ औ हम-का खाए औ मौज करै देआ। काहे–से कि मोर ई बेटौना मुआ रहा अब जौ उठा अहै। ऊ हेराइ गवा रहा औ मिला–अहै। औ वै मौज करै लागें।

अबहीं वहि–कै जेठरवा बेटवा खेते–माँ रहा। औ जैसिन ऊ आवा औ घरे नेकचान नाचै गावै–कै अवाज सुनिस। औ ऊ चकरन-माँ-से एक का गुहराइस औ पूँछिस कि ई का उअहै। तौ चकरवा वहि–से कहिसि तोहार भैकरा आवा–अहै औ तोहार दादा खिआवा किही–अहैं काहे–ते कि ऊ वहि–का कुसल छेम–ते पाइस। औ ऊ रिसिआन औ भितरौं जात–न रहा इहि पर वहि-कर बपौना निकसि आवा औ चेरौरी किहिस। औ ऊ दादा से अपने जवाब–माँ कहिस देखा तौ राजू कि हमै तोहार सेवा करत केतना बरस बीता औ कबहूँ तोहार कहा न टारा। औ ओहू–पर तूं हम-का कबहूं एकौ हेलवान न दिहा कि हम अपने गोंइअन-माँ मौज करित। मुला जैसिन तोहार ई बेटवा आवा जौन तोहार रोजी पतुरयन–माँ खाइ लिहिसि तूं ओकरे मुद्दे जलसा किह्या। तौ बपौना वहि–से कहिस बेटवा तैं तौ सदा हमरे साथे रहतै अहसि। औ जौन हमरे अहै तौन तोहारै अहै। हम–काँ खुसी करब वदे रहा औ मौज करब काहे-से कि तोहार ई भैकरा मुआ रहा औ फुनि जौ उठा अहै। औ हेरान रहा फुनि मिला अहै।

हिन्दी प्रतिरूप

किसी मनुष्य–के दो बेटे थे। और उन–मे–से छोटे (लडके–ने) अपने पिता–

ने कहा, 'पिता–जी धन–मे–से जितना हिस्सा मेरा निकले उतना मुझ–को दे–दो। तब पिता–ने अपनी जायदाद उन–मे बाँट दी। और कुछ दिन बीतने पर छोटा लड़का अपनी धन-दौलत इकट्ठी करके दूर विदेश–को चला गया और वहाँ बुरी–आदतो मे अपना धन बरबाद कर दिया। और जब उस–ने सब–कुछ उडा–दिया, वहाँ एक बडा अकाल पडा और वह परेशान होने लगा । तब वह उसी स्थान–के एक मनुष्य–से, जाकर मिला। उस मनुष्य–ने उस–को अपने खेतो–मे सुअर चराने–के लिए भेज दिया। और वह खुशी–से उसी भूसी–से जिसको सुअर खाते–थे, अपना पेट पालता था, और, कोई भी उस–को कुछ नही देता था। और जब उस–ने अपने–आप सोचा, तब कहा, "मेरे पिता–के–यहाँ कितने मजदूर अच्छी तरह खाते–पीते हैं और मैं भूख–से मर–रहा हूँ। मैं उठूँगा, और पिता–के–पास अपने जाऊँगा और उन–से जा–कर कहूँगा, 'दादा ! मैं–ने ईश्वर–के और तेरे निकट अपराध किया–है, अब तेरा लड़का कहलाने लायक नही रहा। मुझ–को अपने एक मजदूर–की–तरह रख लो।" और वह उठा और अपने पिता–के–पास आया। लेकिन बेटा अभी दूर–ही था कि उस–के पिता–ने उसे देख लिया और (उसे) दया–आई, और दौडा और उस–से गले मिला और (उसे) चूमा। तब लडके–ने उस–से कहा, "दादा ! मैं–ने ईश्वर–के और तेरे निकट अपराध किए–है और तेरा लडका कहलाने लायक अब नही रहा"। लेकिन पिता–ने अपने नौकरो–से कहा, 'अच्छे कपडे ले आओ और उस–को पहिनाओ। एक अँगूठी हाथ–मे और जूते पैरो–मे पहिनाओ और हम–लोग खाएँ और आनन्द मनाएँ, क्योंकि मेरा यह लडका मरे (के समान) था और अब जी उठा–है, वह खो गया–था और (अब) मिला–है।" और वे आनन्द मनाने लगे।

इस–समय उस–का-जेठा लडका खेत–मे था। और जैसे–ही वह आया और घर–के निकट पहुँचा, (उसने) नाचने–गाने की आवाज सुनी। और उस–ने नौकरो–मे–से एक–को पुकारा और पूछा कि यह क्या है। तब नौकर–ने उस–से कहा (कि) "तुम्हारा भाई आया–है और तुम्हारे पिता–ने दावत–दी–है, क्योकि उन्हों–ने उसे सकुशल पा–लिया–है।" तब वह क्रोधित हुआ और भीतर नही जा–रहा–था। इसी पर उस–का पिता निकल आया और उस–ने (लडके–को) मनाया। तब उसने पिता से अपने उत्तर–मे कहा, 'देखिए तो पिता–जी, मुझे आपकी सेवा करते हुए कितने साल बीत–गए और कभी–आपका कहना नहीं टाला। और उस–पर–भी आपने मुझ–को कभी एक–भी बकरी का बच्चा नही दिया कि मैं अपने साथियों–के साथ आनन्द मनाता, लेकिन जैसे–ही आपका यह लडका आया जिस–ने आपकी जायदाद वेश्याओ–मे उडा–डाली, आप–ने उस–के लिए दावत–दी। तब पिता–ने उस–से कहा, बेटा तू तो हमारे–साथ ही रहता है। और जो हमारा है, वह तुम्हारा–

ही है। हमको खुशी मनाना (हमारे) भाग्य–मे था और आनन्द–करना (भी) क्योकि तुम्हारा यह भाई मरा था और फिर जी उठा है और खो गया–था (अब) फिर मिला–है।

(न० ९)

भारतीय आर्य परिवार — मध्यवर्त्ती शाखा

पूर्वी हिन्दी

अवधी बोली — (जिला प्रतापगढ का पूर्वी तथा मध्यवर्त्ती क्षेत्र)

नमूना—२

एक अहीर–के घरे–माँ चार मनई लरिका सास पतोहू और बाप रहत रहें। मुला चार्‌यू बहिर रहें। बेटौना एक दिन खेते माँ हर जोतत–रहा औ ओहि ओरी–से दुई राही चला–आवत–रहें। वै बेटौना–से गुहराइ–कै पूँछिन कि हम रामनगर–का जावा चाहित–अहै कौनी डगर–से जाई। तौ ऊ अहिरवा जानिस कि हमरे बरधवन–का पूंछत अहैं कि बेचब्या औ गोहराइ–कै कहिस कि बरधवन–का हम न बेचबै। यहि पर रस्ता गीरै गुहराइ कै कहिन कि हम–का बैल न चाही–रह्या जौ जानत हुआ तौ लखाइ द्या। तौ ऊ जानिस कि सौ रुपैया बरधवन–कै लगावत–अहैं। औ गुहराइस कि राजू सौ रुपैया काव जौ दुयू सौ देत्यो तबहूँ हम आपन बरधवन तुहें न देइत। कछुक बेर–माँ ओहू–कै महतारी रोटी वहि–के बरे लौई। रुट्या खाती बेरा बेटौना बोला माई हो आज दुइ मनई बरधवन–कै सौ रुपैया देत रहें। मुला हम कहा कि दुइ सौ–का हम न देबै। सौ रुपैया कौन चीज आटै। महतर्‌या बोली कि हाँ बच्चा हम–हूँ जानित–है कि सागे-माँ लोन आज सेंवाइ हुइ गवा अहै। मुला जौन कुछ होइ तनी तुनी ऐसिन खाइ ल्या। लौट–कै जब घरे आइ तौ पतोहिया–से कहिस कि लोन सागे–माँ अस सेंवाइ–कै दिहे कि बेटौना से रोटी नाहीं खाइ–गै। तौ ऊ कहिस कि बासन दै–कै मैं मिठाई कब लिह्याँ–रहा। दादा जौन दुआरे–पर बैठत–रहत–हैं चला तिन–से–हजुराइ देई। दूनौ झगरत–झगरत जौ दुआरै–पर आयीं तौ पतोहिया ससुर–से बोली कि क–हो तूँ हमै बासन–दै–कै मिठाई लेत कब देखे रह्या। तौ ससुरवा बोला कि गोरू चरावै तौ तूँ जा औ लाठी हम–से पुँछब्या।

हिन्दी प्रतिरूप

एक अहीर–के घर–मे चार आदमी–लडका, सास, वहू और वाप–रह ते–थे। लेकिन चारो–ही वहिरे थे। लडका एक दिन खेत–मे हल जोत–रहा–था कि उस ओर–से दो रास्तागीर चले–आ–रहे थे। उन्होने लडके–से वुला–कर पूछा कि हम

रामनगर जाना चाहते–हैं, किस रास्ते–से जाये। तव उस अहीर–ने जाना कि हमारे वैलो–के (सवव–मे) पूछते है कि वेचोगे? और चिल्लाकर कहा कि वैलो–को हम नही वेचेंगे। इस–पर रास्तागीरो–ने–भी चिल्ला–कर कहा कि हम–को वैल नही चाहिए–थे, यदि जानते हो तो (रास्ता) दिखला दो। तव उस–ने समझा कि सौ रुपया वैलो–के (मोल) लगा–रहे–है। और उस–ने चिल्लाया कि महाशय, सौ रुपया क्या जो दो सौ–भी देते तव–भी हम अपने वैल तुम्हे न देते। थोडी देर–मे उसकी माँ रोटी उस–के लिए लाई। रोटी खाते समय लडके–ने कहा, ओ माँ! आज दो आदमी वैलों–के सौ रुपया देते–थे। लेकिन हम–ने कहा कि दो सौ–मे हम न देंगे। सौ रुपया क्या चीज हैं। माँ वोली कि हाँ वेटा! हमे–भी मालूम है कि साग–मे आज नमक अविक हो–गया–है। लेकिन जैसी कुछ–भी हो ऐसी–ही खा–ले। लौट–कर जव (वह) घर आयी तो वहू–से वोली, कि नमक साग–मे आज (ऐसा) अविक कर दिया कि वेटे–से रोटी नही खाई गयी। तव उस–ने कहा कि वर्तन दे–कर मैं–ने मिठाई कव ली। दादा जो दरवाजे पर वैठे रहते–हैं, चलो, उन–से पुछवा–दें। दोनो झगड़ते–झगडते जव दरवाजे पर पहुँची तो वहू–ने ससुर–से कहा कि ओ (ससुरजी)! आप–ने हम–को वर्तन दे–कर मिठाई लेते–हुए कव देखा–था? तव ससुर वोला कि जानवर चराने–के लिए तो तू जाती–है और लाठी हम–से पूछती है।

प्रतापगढ ज़िले के पश्चिम क्षेत्र की वोली यत् किंचित्मात्रा मे पूर्व क्षेत्र की वोली से भिन्नता रखती है और यह रायवरेली की वोली के प्राय. निकट पहुँच जाती है। इस प्रदेश की भाषा–से सम्वन्वित दो नमूने दिये जा रहे है—'उडाऊ पूत' कथा का एक रूपान्तर तथा एक लोक–कथा। इसमे निम्नाकित विशिष्टताएँ ध्यान देने योग्य हैं—स्वर–ए के स्थान पर हम अधिकाशत–या ही पाते है, जैसे, 'एक' के लिए 'याक', 'देस' के लिए 'द्यास', द्याख लिहिस=(उसने) देख लिया, आदि। सज्ञाएँ अपना तिर्यक रूप–ए प्रत्यय–युक्त रखती है, जैसे कि, परदेसै=परदेस मे; लुच्चै–में=लुच्चेपन–मे, खेतै=खेत मे। सम्वन्व–परसर्ग का एक तिर्यक–रूप 'केरे' है; यथा, मनई–केरे=मनुष्य के, दयास–केरे=देस के, दयू–केरे अगँवा= ईश्वर के सामने, वाप–केरे–लगे=वाप के निकट।

सर्वनामों मे, ध्यान दीजिए–यू तोहार भाई=यह तुम्हारा भाई, वा–के–पाछे=उसके पीछे (यह पश्चिमी हिन्दी का रूप जान पड़ता है), वाहि पाइन–हैं (उसने) उसे पाया है।

क्रियाओ मे, ध्यान दीजिए–'रहे'=(वे) थे, इस प्रकार के रूप जैसे, कहेसि (साथ ही, कहिसि)=भूतकाल सकर्मक अन्य पुरुष एकवचन; तथा मध्यम

पुरुष बहुवचन के रूप जैसे, दीन्ह्या=तूने दिया एव किह्या=तूने किया।

पट्टी परगना मे ज़िले के उत्तरी क्षेत्र की भाषा पश्चिमी क्षेत्र की भाषा से पर्याप्त समानता रखती है। यह थोडा-बहुत सुलतानपुर तथा फैज़ाबाद के बोली-रूपो से मिश्रित हो गयी है। यहाँ इसके नमूने देना अनावश्यक है। इस प्रकार प्रतापगढ की हिन्दी निम्न सख्यक व्यक्तियो द्वारा बोली जाती है—

पूर्वी उपबोली		५,८७,५००
पश्चिमी उपबोली		
ज़िले का पश्चिमी भाग	५१,०००	
परगना पट्टी	२,७१,५००	
		३,२२,५००
		९,१०,०००

जिले से पूर्वी क्षेत्र की भाषा 'पूर्वी' लिख कर सूचित हुई है। यदि हम इस नाम को पश्चिमी भोजपुरी के लिए ही सीमित रखे तो यहाँ इसका प्रयोग गलत माना जायगा क्योंकि उपर्युक्त नमूनो से स्पष्ट है कि इसका भोजपुरी से ऐसा कोई सम्बन्ध नही है, बल्कि पश्चिम और उत्तर क्षेत्र की भाषाओ की तरह, यह स्पष्टत अवधी का एक रूप है।

(नं० १०)

भारतीय आर्य परिवार मध्यवर्ती शाखा

पूर्वी हिन्दी

अवधी बोली (जिला प्रतापगढ़ का पश्चिमी क्षेत्र)

नमूना—१

याक मनई—केरे दुइ बेटवा रहें। उन-माँ-ते छोटका बेटौना अपने बाप—तें कहिसि काका जदात—माँ—ते जौन हींसा हमार होत—होइ हमरे हवाले कै द्या। तौ बाप आपन धन उन-माँ बाँट दिहिस। वा—के कछुक दिना पाछे छोटका लरिकौना आपन संपत्ति बटोर लीन्हिस औ दूरि परदेसै कौनौं मुलुक—का चला गवा औ तहवाँ लुच्चै-माँ आपन सब धन उड़ाइ दीन्हिस। औ वहि—कै सब उड़ाई दीन्हें उपरान्त वहि द्यास—माँ

बडा काल परा औ ऊ कंगाल होइ लाग। तौ ऊ जाइ—के वहि द्यास—केरे याक रहीस—से मिला। तौन वहि—का खेतवन—माँ सुअरी चरावै वदे पठइस। औ ऊ अनन्द-से उहै छेकलवन ते जौन सुअरी खात-रही आपन पेट पलतै। मुला कोऊ वहि-का देतै न रहा। औ ऊ तौ समझा कि हमरे काका-केरे अनेकन मजूर भरी भॉत खात पीअत बाटैं औ हम उपवासन मरित हैं। अब -हिनै में उठिहौं औ अपने काका तीरे जाइ-कै कहिहौं दाऊ मैं दयू केरे औ तुम्हरे अगवॉ कसूर कीन्हें हौं औ तोहार लरिका कहावै जोग नाहीं रह्या। औ अब हमैं अपने याक मजूर-की तना राख ल्या। औ ऊ उठा औ आपन बाप-केरे लगे आवा। मुला लरिकवा जब दूरिन रहा वहि-कर बाप वहि-का द्याख लिहिस, मयान औ दौर-कै वहि-सैं गरे लगाइ मिला औ चुम्मिस। तौ लरिकौना कहेसि काका हम दयू-केरे औ ताँहरे-लगॉ कसूर-वन्द अही औ अब तोहार लरिका बाजै जोग्य नाहीं रहेन। बाप चकरन-ते बोला, बढ्याँ वस्त्र निकास लै आवौ औ लरिकवा-का पहिरावौ याक मुन्द्री हाथे-मॉ औंर जूंता ग्वाड़े-माँ पहिरावौ। जाहे-ते हम खायीं औ खुस्याली करीं। काहे-तैं कि हमार ई लरिकौना मरि गवा रहा अब जिआ अहै। खोआन रहा अवहीं फुन मिला-अहै। औ वैं अनन्द करैं लागे।

अवहीं वहि-कै जेठौना लरिका खेतै गवा रहै। औ जैसिन ऊ आवा घरे-के नीरे औ नाचवै औ गौनै-कै सबद सुनाई दीन्ह ऊ चकरवन-माँ-ते एक-का गुहराइस औ पूंछिस इह-कर कौन मतलव अहै। तौ चकरवा कहिसि तोहार छोटका भाई आवा अहै ताँहार बाप पहनई किहिन-हैं कि वाहि जिअत जागत पाइन-हैं। तव तौ ऊ रिस्यान औ भितराय न पैठत-रहा। कि वपौना आवा औ विन्ती किहिस। लरिकवा ऊतर दिहिस कि हमैं तौ जेह-का ताँहरी सेवा -माँ जानैं कतना वरिस वीत गवा औ कबहूँ तोहरे कहे केरे खिलाफ न चला। तूं कबहूँ याकौ हिलवान तालुक नाहीं दीन्ह्या कि अपने व्योहारिन-माँ चैन करित। मुला जवहीं तोहार ई लरिकवा आवा जौन तोहार सब धन कसबिन-मॉ उड़ाइ दिहिस तूं जाफत किह्या। तौ बाप बोला क बेटवा तूं तौ हमरे मिले सदीवैं रहत-अहा और जौन हमार अहै तवन तुम्हरै अहै। मुला हम-का वाजिब रहा कि खूब खुस्याली औ मौज करीं कि यू तोहार भाई गुजर गवा -रहा अब जिआ अहै, खोइ गा रहा औ फुन पावा है।

हिन्दी प्रतिरूप

एक मनुष्य—के दो लडके थे। उन—मे—से छोटे लडके—ने अपने पिता—से कहा, पिता जी! जायदाद—मे—से जो हिस्सा मेरा पडता—हो, मेरे अधिकार—मे कर दीजिए। तव पिता—ने अपना धन उन—मे बाँट दिया। उस—के कुछ दिन बाद छोटे लडके—ने अपनी सपत्ति एकत्र कर ली और दूर विदेश मे, किसी देश—को चला गया और वहाँ

लुच्चे–पन. मे अपना सभी धन बरबाद–कर–दिया। और उस–के सब उडा देने–के बाद, उस देश–मे बडा अकाल पडा और वह गरीब होने लगा। तब वह जाकर उसी देश–के एक रईस–से मिला। उस–ने उस–को खेतो–मे सुअर चराने–के लिए भेजा। और वह आनन्द–से उसी भूसी–से जो सुअर खाते–थे, अपना पेट पाला–करता लेकिन कोई उसे (कुछ–भी) नही देता था। और उस–ने सोचा कि हमारे पिता–के (यहाँ) अनेक मजदूर भली प्रकार खाते–पीते–हैं और हम उपवास–करके मर–रहे हैं। अभी ही मैं उठूंगा और अपने पिता–के पास जाकर कहूँगा। पिता–जी! मैं–ने–ईश्वर–के और तुम्हारे सामने अपराध किया–है और तुम्हारा लडका कहलाने योग्य नही रहा। और अब मुझे (आप) अपने एक मजदूर–की तरह रख लीजिए। और वह उठा, और अपने पिता–के निकट आया। लेकिन लडका जब दूर–ही था, उस–के पिता–ने उस–को देख लिया, (उसे) दया–आयी और दौड–कर उस–से गले लगा–कर मिला और (उसे) चूम–लिया। तब लडका–ने कहा (कि) पिता–जी! मैं ईश्वर–के और तुम्हारे सामने अपराधी हूँ और अब आपका लडका कहलाने योग्य नही रहा। पिता नौकरो–से बोले, अच्छे वस्त्र निकाल ले आओ और लडके–को पहिनाओ। एक अँगूठी हाथ–मे और जूता पैरो–मे पहिनाओ। इस प्रकार हम खायें और आनन्द मनाये, क्योकि हमारा यह लडका मर गया था, अब जिन्दा हुआ–है। खो–गया था अब फिर मिला–है। और वे आनन्द करने लगे।

अभी उस–का जेठा लडका खेत गया था और जैसे–ही वह आया घर–के निकट, और नाचने और गाने–का शब्द सुनायी दिया, उस–ने नौकरो–मे–से एक–को बुलाया और पूछा कि इस–का क्या मतलब है? तो नौकर–ने कहा कि आपका छोटा भाई आया–है, आपके पिता ने दावत दी–है, क्योकि उसे जीते–जागते पाया है। तब तो वह क्रोधित हुआ और (घर–के) भीतर न घुस–रहा–था कि पिता आया और (उसे) मनाया। लडके–ने उत्तर दिया कि मुझे तो, जिस–के आपकी सेवा–मे जाने कितने वर्ष बीत गये और कभी आप–के कहने–के विरुद्ध नही गया, आपने कभी एक–भी बकरी–का–बच्चा तक नही दिया (जिस–से) कि (मैं) अपने साथियो–मे आनन्द मनाता। लेकिन जब आपका यह लडका आया है, जिस–ने आप–का सब धन वेश्याओ–मे उडा–दिया–है, आप–ने उत्सव किया–है। तब पिता बोले कि बेटा तू तो मेरे निकट सदा–ही रहता–है और जो मेरा है, वह तुम्हारा–ही है। लेकिन हमारे–लिए उचित था कि खूब खुशी और आनन्द मनाये क्योकि यह तुम्हारा भाई मर गया–था अब जीवित हुआ–है, खो गया–था और फिर मिला–है।

(नं० ११)

भारतीय आर्य भाषा पूर्वी हिन्दी मध्यवर्ती शाखा
अवधी बोली (प्रतापगढ़ जिले का पश्चिमी क्षेत्र)

नमूना—२

याक घरे–माँ कथा[1] कही जात–रही। पण्डित जौन कथा कहत रहैं सगरे गाँव–का न्योतिन–रहैं। सुनवैयन–माँ याक अहिरौ आवत–रहै। ऊ कथवा सुनतीं बेरा र्‌वावा बहुत करै औ पंडितौ वहि–का प्रेमी जान–कै वहि–का नीकी तना बैठावैं और खूब खातिर करैं। याक दिनाँ पडितौ पूँछिन कि राउत तूँ र्‌वावत बहुत हौ तुम–का काउ समुझ परत–है। तौ अहिरवा औरौ सेंवाइ र्‌वावै लाग औ कहिस कि महाराज मोरे याक भैंस बिआन रही कुछ बगद गवा औ ऊ वहुतै बेराम ह्वइ–गै औ पड़ौना–का नेंकचाऊ न देत–रही। तौ पड़ौना दिना भर चिच्यान औ साँहीं जूनी मर–गा। तौन पडित वहै की नायीं तु–हूँ दिना–भै चुकरत–रहत–हौ। मैं–का डेर लागत–है कि कतहूँ तु–हूँ न ओकरी नाईं मर–जा।

हिन्दी प्रतिरूप

एक घर मे कथा हो–रही–थी। पडित– ने जो कथा कहते–थे, सब गाँव–को निमत्रण–दिया–था। सुनने–वालो–मे एक अहीर–भी आता–था। वह कथा सुनते समय रोया वहुत करता–था और पडित–भी उस–को प्रेमी जान–कर उस–को अच्छी तरह विठलाते और खूब खातिर करते–थे। एक दिन पडित–ने पूछा कि राजपुत्र! तुम रोते वहुत हो, तुम–को कुछ समझ–मे आता–है। तब अहीर और–भी अधिक रोने लगा और कहा कि महाराज! मेरे–यहाँ एक भैंस व्यानी–थी, थोड़ा समय वीता और वह वहुत–ही वीमार हो–गयी और (वह) वच्चे–को (=पड़वा) निकट न आने–देती–थी। तव पडवा दिन–भर चिल्लाता–रहा और संध्या समय मर गया। इसलिए पडित उसी–की तरह तू–भी दिन–भर चिल्लाता–रहता–है। मुझ–को डर लग–रहा है कि कहीं तू–भी न, उसी–की तरह मर जाए।

रायवरेली जिले की वोली प्रतापगढ के पश्चिमी क्षेत्र की वोली से पर्याप्त साम्य रखती है, इसलिए यहाँ इसका कोई नमूना देना सर्वथा अनावश्यक है। जो कुछ

---

१. ये धार्मिक कथायें दो–चार दिन चलती रहती हैं और कभी–कभी हफ्तो मे समाप्त होती हैं।

उल्लेखनीय है, वह यह कि एक बडे मुस्लिम–शहर–लखनऊ के निकट मे स्थित होने के कारण, उर्दू के वाक्याश तथा मुहावरे यहाँ की स्थानीय भाषा मे अच्छी तरह घुल-मिल गए हैं।

यदि स्थानीय अधिकारियों द्वारा भेजे गए नमूनो के आधार पर हम कोई निष्कर्ष निकालें तो कह सकते है कि उन्नाव ज़िले की बोली भी लखनऊ की उर्दू से प्रभावित है परन्तु उस सीमा तक नही। उक्त भाषा से आए हुए सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण उदाहरण, जो मुझे उन्नाव के नमूनो मे प्राप्त हुए हैं, सामान्यत प्रयुक्त स्थानीय रूप 'केर' अथवा 'क्यार' के स्थान पर यदा-कदा उर्दू–परसर्ग 'का' के प्रयोग का है।

उन्नाव की बोली लखनऊ ज़िले के दक्षिणी क्षेत्र की भाषा से पर्याप्त साम्य रखती है। महत्त्वपूर्ण अन्तर केवल इतना है कि शब्दान्त का–उ जो कि दक्षिणी लखनऊ के नमूनो मे अत्यधिक प्रचलित है, उन्नाव के नमूनो मे उपलब्ध नही है। गगा-नदी के पार कानपुर का ज़िला है और पश्चिम मे हरदोई ज़िला पडता है, जिन दोनो की बोली 'कनौजी' है; इसलिए उन्नाव के नमूनो मे हम यत्रतत्र कनौजी–रूपों के उदाहरण भी पा जाते हैं; यथा–'कहब' के स्थान पर 'कहिहौं' (=मैं कहूँगा)।

उन्नाव की बोली के पूरे नमूने देना स्थान का अपव्यय होगा। मै यहाँ केवल उनके अश–मात्र दूँगा—उडाऊ–पूत–कथा–रूपान्तर के प्रथम कुछ वाक्य तथा एक छोटी लोक–कथा।

दक्षिणी लखनऊ की तरह का यह ढग भी ध्यान देने योग्य है, जिसमे –ए के स्थान पर–या और–ओ के स्थान पर–वा स्थानापन्न होता है, जैसे—'एक' के लिए 'याक', 'सबैं' के लिए 'सब्याँ' (=सब), 'पेडन' के लिए 'प्याडन' (=पेड), 'केर' साथ ही 'क्यार' भी, 'छोट' के लिए 'छ्वाट' (=छोटा), 'थोर' के लिए 'थ्वार' (=थोडा)।

दक्षिणी लखनऊ की भाँति सज्ञाओ का तिर्यक प्रत्यय–ए है; जैसे—जने केर=मनुष्य का। सम्बन्ध कारकीय प्रत्यय 'केर' अथवा 'क्यार' है, यद्यपि यदा-कदा उर्दू का 'का' भी प्रयुक्त होता है। जहाँ तक सर्वनामो का सम्बन्ध है हम, 'महि का'=मुझ को, (यहाँ 'का' अवधी के अपने सम्प्रदान–प्रयोग मे है) 'यू'=यह, 'वोहि' 'उहि' अथवा 'उइ'=वह, (तिर्यक) रूपो पर ध्यान दे सकते है। क्रियाओ मे पश्चिमी अवधी के निजी प्रयोग 'रहै'=वह था, रहैं=वे थे, ध्यान देने योग्य हैं। दक्षिणी लखनऊ की ही भाँति 'दीन्ह' के स्थान पर 'दीन' प्रयोग मे आता है। कनौजी 'कहिहौं' का उल्लेख पहिले ही किया जा चुका है।

(नं०-१२)

भारतीय आर्य परिवार मध्यवर्ती शाखा

पूर्वी हिन्दी

अवधी बोली (जिला उन्नाव)

नमूना—१

याक जने-केर दुइ बेटवा-रहैं। वोहि-माँ-मते छोटकवा अपने बाप-ते कहिस कि मोरे बाप वसुधा-का मोर जउन होत-है बखरा सो महि-का दे देउ। तब वो उन-का धन बाँट दीन। और थोरेक दिनन-के पाछे छोटकवा लड़कवा सब जमा-जथा लै-दै-कै बहुत दूर देस चला गवा और अपन धन कुकर्म-माँ गवाँइ दिहिस। और जब सब्याँ गँवाइ चुका उइ देस-माँ झूरा पड़ा और वो कंगाल होइ लाग। तब उइ देस-के याक भले-मानुस-से मिलाप कीन्हिस। तब वो उहि का सुअरी चरावै के बरे अपने खेत पठइस। और उहि-का यह लालसा रहै कि उइ बकुला जौन सुअरी खाती-रहैं उहि-सन अपन पेट भरी। वहौ उहि-का कोऊ नाहीं दिहिस। तब उहि-का चेत आवा कि मोरे बाप-के बहुत-अस नौकरिहा जन हैं, कि जिन-का पेट भर रोटी मिलत-है मुदा मैं उपास करत हौं। अब मै अपने बाप-के तीर जाइ-कै कहिहौं कि मै गुसइयाँ की और तुम्हार चूक किहे-हौं और अब मै अस नाहीं हौं कि तोर पूत कहाऊँ महूँ-का अपने नौकरिहन-माँ गिनु।

हिन्दी प्रतिरूप

एक मनुष्य-के दो लडके थे। उन-मे-से छोटे-ने अपने पिता-से कहा कि मेरे पिता-जी धन-का मेरा जो (हिस्सा)[1] होता-है, वह मुझ-को दे दो। तब उस-ने उन-को धन बाँट दिया। और कुछ दिनो-के पीछे छोटा लड़का-सब धन ले-दे कर बहुत दूर परदेश-को चला गया और अपना धन कुकर्म-मे नष्ट कर-दिया। और जब सब नष्ट-कर-चुका, उस देश-मे अकाल पड़ा और वह कंगाल होने लगा। तब उस देश-के एक भले-आदमी-से मिला। तब उस-ने उस-को सुअर चराने-के लिए अपने खेत-को भेजा। और उस-को यह आशा थी कि वह भूसी जो सुअर खाते हैं; उस-से वह अपना पेट भरेगा। वह-भी उस-को किसी-ने नही दिया। तब उसको होश आया कि मेरे पिता-जी के (यहाँ) बहुत-से ऐसे नौकर हैं जिन-को पेट-भर रोटी मिलती-है, लेकिन मैं उपवास करता हूँ। अब मैं अपने पिता-के निकट जाकर कहूँगा कि "मैं ईश्वर-का और आप-का कसूरवार हूँ और अब मैं ऐसा नही हूँ कि आप-का पुत्र कहलाऊँ। मुझ-को-भी अपने नौकरो-मे गिनिए।"

---

१. बखरा=वोह्+कर। पर यहाँ 'हिस्सा' अर्थ में लिया गया है।

(नं०–१३)

भारतीय आर्य परिवार मध्यवर्त्ती शाखा

पूर्वी हिन्दी

अवधी बोली (जिला उन्नाव)

नमूना—२

याक वढई याक दिन याक जगल तन गा और प्याडन–ते याक अतनी छ्वाट बादी लकड़ी माँगिस जेह तन उहि–की कुल्हाडी–क्यार व्याँट वन जाइ । उहि–कर अपेच्छा रहै थ्वार सर्बा न मान लीन्हिन । मुदा जब वह व्याँट लगाइ चुका तब बड़े–बडे प्याडन–का अपनी कुल्हारि–ते काँटै लाग । और जब लाग सब जगल उहि तन कटै तो जितने रूख रहैं वो सब पछिताइ लाग कि यू ब्याधा जौन पडी तौन हमरी–ही कुवुधिता–ते पडी और अपनी बिपत–केर कारन आपै भयन ।

हिन्दी प्रतिरूप

एक वढई एक दिन जगल–की तरफ गया और पेडो–से एक इतनी छोटी–सी लकडी माँगी जिस–से उस–की कुल्हाडी–का वेंट वन जाए। उस–की माँग थी थोडी, सवो–ने मान ली। परन्तु जब वह वेंट लगा चुका तव वडे–वडे पेडो–को अपनी कुल्हाडी से काटने लगा। और जव लगा सव जगल उस–से कटने, तव जितने पेड थे, वे सव पछताने लगे कि यह विपत्ति जो पडी, वह हमारी–ही कुबुद्धि से पडी और अपनी विपत्ति का कारण हम–स्वय ही हुए।

यह पहले ही कहा जा चुका है कि हरदोई जिले की वोली 'कनौजी' है। इसके उत्तर-पूर्व मे सीतापुर एव खेरी के ज़िले है जिनकी भाषा, पूर्व के अपने निकटतम ज़िलो से अत्यधिक साम्य रखने वाली 'अवधी' है। जैसा कि अनुमान किया जा सकता है, इन दो जिलो की भाषा हरदोई की 'कनौजी' से यदा-कदा शव्द अथवा पद–रूप उधार लेती रहती है। इस प्रकार नीचे दिए नमूने मे 'हते'=थे, कनौजी है। ये, फिर भी, आगत शव्दो के एकाकी उदाहरण ही है और हमारे इस कथन पर कि सीतापुर एव खेरी की भाषा प्रमुख–रूप से अवधी है, कोई प्रभाव नही डालते। अतएव यहाँ स्थानीय भाषा के समूचे नमूने देना अनावश्यक ही है। सीतापुर से प्राप्त 'उडाऊ–पूत-कथा–रूपान्तर की प्रथम कुछ पक्तियो को उद्धृत करना ही यथेष्ट है।

(नं०१४)

भारतीय आर्य–परिवार मध्यवर्त्ती शाखा

पूर्वी हिन्दी

अवधी बोली (सीतापुर जिला)

याक मनई–के दुइ लरिका हते। उन–माँ–ते छ्वाटा लरिकवा अपने बाप–ते

कहिस वाप माल-माँ जौन हीँसा हमार होय तौन हम-का दै-देव। तव वोह उन-का हीँसा वाँट दिहिस। थोरे दिन वीते छ्वाट लरिकवा अपन असवाव इकट्ठा कै-कै दूरि देस चला गवा और हुँवाँ जाइ-के अपन माल वद-चलनी-माँ-उड़ाइ दिहिस।

हिन्दी प्रतिरूप

एक आदमी-के दो लड़के-थे। उन-मे-से छोटे लड़के-ने अपने वाप-से कहा, वाप! वन-मे जो हिस्सा हमारा हो, वह हम-को दे-दो। तव उस-ने उन-को हिस्से वाँट दिये। थोड़े दिनों वाद छोटा लड़का-अपना सामान इकट्ठा कर-के दूर देश को चला गया और वहाँ जा-कर (उस-ने) अपने धन-को कुकर्म-मे वर्बाद कर-दिया।

फतेहपुर

स्थानीय अधिकारियो द्वारा पहिले यह सूचित किया गया था कि फतेहपुर ज़िला कनौजी, तिरहारी तथा वसवाड़ी का सन्धि-स्थल है। परन्तु आगे के अनुसन्धानों से यह स्पष्ट हो जाता है कि इस ज़िले मे कनौजी नही वोली जाती। तिरहारी ज़िले के दक्षिणी भाग—जमुना नदी के किनारे पर स्थित गाँवों मे वोली जाती है। यह वोली वघेली का ही एक रूपान्तर है। शेष सम्पूर्ण ज़िले की भाषा, अवधी का वह रूपान्तर है जो स्थानीय व्यक्तियो द्वारा 'वैसवाड़ी' कहा जाता है और जिसे ४,८८,६०० व्यक्ति वोलते हैं। इसके ठीक पश्चिम मे कानपुर ज़िला है जिसकी प्रमुख भाषा, जैसा कि अन्यत्र दिखाया जाएगा, कनौजी है जो कि पड़ोस मे वोली जाने वाली अवधी मे वास्तविक रूप मे अत्यधिक प्रभावित है। इस स्थिति विशेष के कारण तथा पड़ोस में स्थित तिरहारी की उपस्थिति से, यदि निम्नांकित 'उड़ाऊ पूत कथा' के रूपान्तर मे कतिपय कनौजी तथा वघेली के रूप प्राप्त हो जाये तो हमे कोई आश्चर्य न होगा। यत्र-तत्र कुछ उर्दू-रूप भी देखे जा सकते हैं—यहाँ सम्वन्ध कारकीय परसर्ग 'का' का प्रयोग उल्लेखनीय है।

नीचे दिये हुए 'नमूने' का व्याकरण, निस्सन्देह, अवधी का ही है परन्तु शब्द-समूह उन पूर्ववर्त्ती नमूनों से पर्याप्त भिन्न है जिन्हे हम देखते आ रहे है। यह शब्द-सम्पत्ति तो अवध की नही, द्वाव की ही है। यह तथ्य 'नमूने' को पढने से ही प्रकट हो जाता है अतएव विस्तार से उदाहरण देने की आवश्यकता नहीं समझी गयी।

जहाँ तक प्राप्त नमूने के व्याकरण का प्रश्न है, हम पूर्व परिचित 'ए' के 'या' रूप मे परिवर्तन पर ध्यान दे सकते हैं; यथा—याकाँ=एक भी। हमे इसमे तिर्यक विभक्ति-ऐ अथवा-ए; यथा-घरैं=घर को, तथा दुवारे=दरवाजे को, भी मिल जाती है। इसे हम पश्चिम अवध के सन्दर्भ मे ऊपर देख चुके हैं।

सर्वनामों मे, हम वघेली का प्रभाव पाते है। उत्तम पुरुष सर्वनाम का तिर्यक

रूप म्वोहि अथवा मोहि है तथा सम्बन्ध वाचक का रूप है—म्वार, साथ ही मोर। 'तू' के लिए 'तैं' तथा इसका सम्बन्ध कारकीय रूप 'त्वार' अथवा 'त्वोर', साथ ही, 'तोर'। 'वह' के लिए 'वह' अथवा वा, इसका निर्यक रूप 'वहि' अथवा 'वइ'। 'ऐसा' के लिए रूप है—हम क्रियाओ मे हम इन रूपो पर ध्यान दे सकते हैं, जैसे—आइ=है, 'देत' के स्थान पर 'दैत'=देते हुए। कनौजी तथा बघेली रूप है—'जाइव' के स्थान पर 'जइहौं'=मैं जाऊँगा, तथा 'कहव' के स्थान पर 'कइहौं'=मैं कहूँगा।

(न० १५)

भारत-आर्य परिवार मध्यवर्त्ती शाखा

पूर्वी हिन्दी

अवधी बोली (जिला-फतेहपुर)

एक मँडई-के दुइ बेटवा रहैं। वहि-माँ लहुरवा दादा-से कहिसि दादा म्वोहि-का मोर हिसा जउन पावा चही माल सब मोर बाँट दे। तबै वह सब घर गिरिस्ती बाँट दिहिस। कुछ दिन-माँ छोटकौना बेटवा सब जमा लइ-कै परदेसै-माँ चला-गवा। हुँवा जाय सब माल उल्लुक-ढुल्लुक-कै-डाइस। जब सब उडाइ डाइस वह देस-माँ वहुत दुभुक परा। तबै वह कगाल होइ लाग। तब वही देस-माँ एक बड़े मँडई-के लगे गवा। तब वह वहि-का आपन सोरी चरावै-के बरे पठै दिहिस। वह-कै नेत-भै की जउन वोकला सोरी खाती-है मोंहू खाँव। अउर कोऊ वहि-का न दैत-रहै। तब चेत-कइ-कै कहत भा मोरे दादा-के बहुत जनन-की रोटी मिलत औ बच रहत-है औ मैं भूखन मरत-हौं। मैं अपने दादा-के लगे जइहौं वै-से कइहौं को दादा गोसइयाँ-से और तांइ-से पापी भयाँ। अब हम नहीं हौं की फिर तोर बेटवा बनौं। मोहि-का अपने जनन-माँ एक-के नइँ राख। तब उठि-कै अपने बाप-के लगे डहरा। दूरिन-से वहि-का वाप निहार-कै दया किहिस। धौर-कै वहि-का गरे-माँ छपटाय-लिहिस। बहुत पियार किहिस। बेटवा वहि-से कहिस की हे दादा, दइउ-से औ तोहि-से पाप किहेउँ अब हम नहीं हौं की तोर बेटवा कहा जाउँ। दादा अपने जनन-से कहिसि-की नीकि-नीकि कपरा अइँच लै आव, यहि-का पहिराय दे औ वहि-के हाँथे-माँ मुँदरी और गोड़न-माँ पनहीं पहिराय दे। औ हम खाई औ खुसी मनाई, काहे-से की मोर बेटवा मर-गा-रहै अब जो उठा, हेराय-गा-रहै अब आवा-है। तब वह खुसी करैं लाग।

औ वहि-का वडकउना बेटवा हार-माँ रहै। जबै घर-के लगे आवा, गावैं-नाचै-कै आवाज सुनिस। तबै एक अपने जन-से पूछिस की का होत-है। वह वहि-से कहिस की त्वार भाई आवा-है। त्वोर बाप बहुत महिमानी किहिस-है की वहि-का

नीक–सूंक पाइस। वा रिसाइ–कै घरै ना गवा। वहि–का दादा दुवारे निकरि–कै मनाइस। वह बाप–से कहिस की वहुत दिन–से मै तोर सेवा करत–हौं। तोर कहव कतौं नहीं टारेयां। म्वोहि–का कतौं याकौ वकुरुवा न दिहे की अपने साथिन–का खुसी करौं। अव जवै त्वार वेटवा आवा–है जउन जमा–जांठी पतुरियन–का खवाय डाइस–रहै तैं वहि–के वरे महिमानी किहे। वा वड़–से कहिस, हे वेटवा तैं मोरे लगे सव दिन रहत है। जउन म्वार आइ तउन त्वार आइ। फिर खुस भे औ खुस होवा चही काहे की त्वार भाई मर–गा–रहै तउन जिया है, हेराय गा–रहै अव आवा–है।

हिन्दी प्रतिरूप

एक मनुष्य–के दो लडके थे। उन–मे–से छोटे–ने पिता–से कहा, पिता–जी! मुझ–को मेरा हिस्सा जो (मुझ–को) मिलना चाहिए, धन मव (वह) मेरा वांट–कर दे–दो। तव उस–ने वह सव ज़मीन–ज़ायदाद वाँट दी। कुछ दिन मे छोटा लडका सव धन ले–कर परदेश–को चला गया। वहाँ जाकर सव धन नष्ट-भ्रष्ट–कर डाला। जव सव खा–डाला (तव) उस देश–मे वड़ा अकाल पडा। तव वह कगाल होने लगा। तव उसी देश–के एक वडे आदमी–के–यहाँ गया। तव उस–ने उस–को अपने सुअर चराने–के लिए, भेज दिया। उस–की इच्छा हुई कि जो भूसी सुअर खाते–है, मैं भी खाऊँ। और कोई उस–को (कुछ भी) नही देता–था। तव समझ आने–पर (उस–ने) कहा—मेरे पिता–जी के यहाँ वहुत मनुष्यो–को खाना मिलता–है और वच रहता है। और मैं (यहाँ) भूखो मर–रहा हूँ। मैं अपने पिता–के यहाँ जाऊँगा, उन–से कहूँगा कि पिता जी! (मैं–ने) ईश्वर के प्रति और आप–के प्रति अपराध किया–है। अव ऐसा नहीं हूँ कि फिर आप–का वेटा कहलाऊँ। मुझ–को अपने नौकरो–मे एक–की–तरह रख–लीजिए। तव उठ–कर अपने पिता–के यहाँ–को चला। दूर–से उस–के पिता–ने देख–कर दया–दिखलायी। दौड़–कर उस–को गले–से लगा लिया। वहुत प्यार किया। वेटे–ने उन–से कहा कि हे पिता जी! (मैंने) ईश्वर–के और आपके प्रति अपराध किया–है, अव ऐसा नही हूँ कि आपका वेटा कहलाऊँ। पिता–ने अपने नौकरों–से कहा कि अच्छे–अच्छे कपडे निकाल लाओ, इस–को पहिना दो और इस–के हाथ–मे अँगूठो और पैरो–मे जूते पहिना दो। और हम–लोग खाएँ और खुशी मनाएँ क्योंकि मेरा लडका मर–गया–था जो अव जी उठा–है, खो गया–था, अव आया है। तव वह आनन्द मनाने–लगा।

और उस–का वडा लडका खेत–मे था। जव वह घर–के निकट आया, (उसने) गाने–वजाने की आवाज सुनी। तव (उसने) अपने एक नौकर से पूछा कि क्या हो–रहा है। उस–ने उस–से कहा कि तेरा भाई आया–है। (इस–से)

तुम्हारे पिता–ने (उस–की) बहुत मेहमानी की–है क्योकि उसे राजी–खुशी पाया है। वह क्रोधित–होकर घर नही गया। उस–के पिता–ने दरवाजे–पर आकर (उसे) मनाया। उस–ने पिता–से कहा, कि बहुत दिनो से मैं आपकी सेवा कर–रहा हूँ। आप–का कहना कभी–नही टाला। मुझ–को (आप–ने) कभी एक–भी बकरी का बच्चा नही दिया जिस–से अपने साथियो को प्रसन्न करता। अब जब आपका (वह) बेटा आया–है जिसने (अपनी) धन–दौलत वेश्याओं–को खिला डाली है, आप–ने उस–के लिए दावत दी–है। उस–ने उस–से कहा, हे बेटे ! तू मेरे निकट सब दिन रहता–है, जो मेरा है, वह तेरा है। परन्तु खुशी हुई और खुशी होना चाहिए क्योंकि तुम्हारा भाई मर गया–था जो कि फिर जीवित हुआ है, खो गया–था अब फिर आया है।

इलाहाबाद जिला तीन भू–खण्डो मे विभक्त है। ये है—(१) जमुना–पार अर्थात् जमुना के दक्षिण मे स्थित। इसके अन्तर्गत गगा के दक्षिण का वह भाग भी आ जाता है जो दोनो नदियो के सगम के आगे पडता है। (२) गगा–पार अर्थात् गगा के उत्तर मे स्थित। (३) द्वावा अर्थात् दोनो नदियो के मध्य का भू–भाग।

जिले के दक्षिण–पूर्वी भाग को, 'बडा' परगना को तथा 'खैरागढ' परगना के एक हिस्से को छोडकर जहाँ की भाषा अवधी, बघेली और पश्चिमी भोजपुरी का एक मिश्रित रूप है, शेष सपूर्ण जिले मे स्थानीय विभेद रखती हुई अवधी ही बोली जाती है। यदि जिले के मध्य–भाग मे बोली जाने वाली भाषा को आदर्श–रूप मान ले तो बोली का यह रूप हम पूर्वी द्वावा मे, इलाहाबाद शहर समेत परगना 'छैल' मे तथा गगा-पार क्षेत्र मे इलाहाबाद शहर के दूसरी ओर परगना झूंसी मे, बोले जाते हुए पाते है। यह अवधी का ही एक सामान्य रूप है। इस तथ्य को 'उडाऊ–पूत–कथा' के प्रारम्भिक दो–चार वाक्यो से निर्मित निम्नाकित छोटे–से नमूने द्वारा आंका जा सकता है। एक बडे शहर इलाहाबाद के निकट स्थित होने के कारण यत्र-तत्र उर्दू रूप प्रवेश पा गये हैं जैसे सम्बन्ध कारकीय परसर्ग 'का' स्वच्छदता से प्रयुक्त होता है।

(न० १६)

भारत–आर्य परिवार — मध्यवर्त्ती शाखा

पूर्वी हिन्दी

अवधी बोली — (इलाहाबाद जिले का मध्य)

एक मनई–के दुइ बेटवा रहेन। छोटका बेटवा बाप–से कहेस ए बाप धन–का हिस्सा जवन हम–का चाही हम–का देह। तब धन उन–का बॉट देहेस। थोरे दिन बीते छोटका बेटवा सब बटोरि–के बडी दूर चला गवा। उहाँ आपन धन सब खराब कै

दिहिस और वह देस-मे काल पड़ गवा। तव वह भूखन मरै लाग।

हिन्दी प्रतिरूप

एक मनुष्य-के दो लडके थे। छोटे लड़के-ने वाप-से कहा—'ऐ पिता-जी ! धन-का हिस्सा जो हम-को चाहिए, हम-को दीजिए। तव (पिता-ने) धन उन-को वाँट दिया। थोड़े दिन वीतने-पर छोटा लडका (अपना) सव (धन) इकट्ठा-कर-के वडी दूर चला गया। वहाँ अपना धन सभी, नष्ट कर दिया और उस देश-में अकाल पड गया। तव वह भूखो मरने लगा।

गगा-पार के उत्तरी तथा पश्चिमी क्षेत्र मे अर्थात् सिकन्द्रा, मिर्जापुर चौहारी, नवावगज तथा सोराँव परगनो मे जो प्रतापगढ से मिले हुए हैं और द्वावा के पश्चिमी क्षेत्र मे अर्थात् कडा, करारी तथा अथरवन परगनो मे, यह वोली ऊपर दी हुई वोली से यत्किंचित्-मात्रा मे भिन्नता रखती है। यह उस रूप के अत्यधिक निकट है जिसे मैंने 'पश्चिमी भोजपुरी' कहा है (देखिए-पृष्ठ १४) और जिसे अन्यत्र 'वैसवाड़ी' कहा गया है। लेकिन यह स्थानीय व्यक्तियो द्वारा 'अवधी' नाम से ही जानी जाती है। नीचे दी हुई एक छोटी-सी लोक-कहानी इस भाषा का नमूना प्रस्तुत करती है। यहाँ पूर्वी 'रहेन' के साथ-साथ पश्चिमी अवधी के प्रतिनिधि-रूप 'रहैं' के प्रयोग पर ध्यान दीजिए।

(न०१७)

भारत-आर्य परिवार मध्यवर्त्ती शाखा

पूर्वी हिन्दी

अवधी वोली (इलाहावाद जिले का उत्तर तथा पश्चिमवर्त्ती क्षेत्र)

ऐसे ऐसे दुइ परोसिन मेहरारू रहैं। एक-के लरिका-वाला रहेन और एक-के ना रहैं। आँधी आई वड़े जोर। कहिन की चलौ वहिन आँव विनी। सो एक तौ आँव विनै लागीं जौनी-के लरिका रहैं। और जौनी-के लरिका ना रहैं। झाँड़ी-माँ कोहू-का लरिका उड़ि-कै आवा रहै परा रहै। तौ उइ गईं उठाय लिहिन। झारैं पाँछै लागीं लै गईं घरै सेवा करै लागीं। वियाह किहिन गौन लै आईं। वहि-के माथे घर-की गिरिस्ती छोंड़ि दिहिन और खाइ-का करै और खवावैं। जो कुछ वचै करोवन पाँछन सो वुढ़िया-का देइ। सो उइ दुवराइ लागीं। तौ लरिका पूछिन की हमारि अम्माँ काहे दुवराय लागीं। तौ उइ कहिन की खाइ-का तौ मैं सब कुछु देत-हौं जव चाहौ तव परतिग्याँ लै लेव मोरि। तौ एक दिन परघियाने तौ सेंदुर-टिकुली की डिविया दिखावैं की अम्मा और लै लेव। तौ उइ कहिन की भय्या अव तुम देव। मैं अघाय गयुँ। तौ वेटवा दौरि-कै देखिसि सेंदुरे-टिकुली-कै डिविया। तौ पकरि-कै झाँटी पीटै लाग। तौ उन-की

महतारी हाथ जोरिन की अब ना मारौ। आँधी-पानी ना आवत तौ बगियै ना जातिउँ। ऐसा पुत्र कहाँ पौतिउँ। कौरो को देत।

हिन्दी प्रतिरूप

इस प्रकार (कहानी प्रारभ होती है कि) दो पडोसी स्त्रियाँ थी। एक–के लड़के-वच्चे थे और दूसरे के नही थे। आँधी वडे जोरों–से आयी। (उन्होने एक–दूसरे–से) कहा कि चलो, बहिन! आम बीनें। इस प्रकार एक तो आम बीनने लगी, जिस–के लडके थे (=जो लडके–वाली थी)। और जिस–के लडके नही थे, झाडी–मे किसी–का लडका उड–कर आया था, पडा हुआ था, तो वह गयी (और उसे) उठा लिया, झाडने–पोछने लगी, घर ले गयी, (उस–की) सेवा करने लगी। विवाह किया, द्विरागमन (=चलाया) ले आयी। उस–के जिम्मे–पर घर–का सब–काम–काज छोड दिया और वह (=वहू) खाना बनाया करती (और) खिलाया करती। (वह) जो कुछ बचा–खुचा वचता, वह बुढिया को देती। इसलिए वह (=वुढिया) दुवली होने–लगी। तव लडके ने पूछा कि हमारी माँ क्यो दुवली होने–लगी। तव उस–ने कहा कि खाने–को तो मैं सव कुछ देती–हूँ जव चाहो तव मुझ–से कसम ले लो। तव एक दिन एकान्त मे (पति–को) विश्वास दिलाने के लिए) वह खाने के स्थान पर सेंदुर टिकुली की डिब्बी दिखाती हुई (बोली) कि माँ! और ले लो। तव उसने कहा कि भय्या (=किसी प्रिय के लिए सम्बोधन) अव तुम्ही प्रयोग करो, मैं अघा चुकी। तव लडके–ने दौड–कर देखा—सेंदुर और टिकुली की डिव्बी। तव पकडकर चोटी (वह) पीटने लगा। तव उसकी माता ने हाथ जोडा (और कहा) कि अब ना मारो। (यदि) आँधी–पानी न आता तो मैं वगिया न जाती और तव (तुम) ऐसा पुत्र कहाँ पाती। (और तव) भोजन कौन देता।

जमुना-पार तथा गगा-पार के पूर्व मे अर्थात् खैरागढ परगने (टप्पा चौरासी तथा समीपवर्त्ती क्षेत्र) के उत्तर मे और माह, किवाई तथा खरचना परगनो मे भाषा का रूप इलाहावाद जिले के मध्य मे बोली जाने वाली भाषा से किंचित्-मात्रा मे भिन्न है। यह रूप क्रमश वदलते हुए पूर्वी हिन्दी के उस रूप को प्राप्त कर लेता है जो कि हमे मिर्जापुर मे दिखायी देता है। हम 'रहै' 'रहैं' रूपो के प्रयोग पर ध्यान दे सकते है, ये रूप सभवत निकट–पूर्व मे वोली जाने वाली भोजपुरी से उधार ले लिये गये है। ये इस उदाहरण मे पश्चिमी अवधी के अपने रूप नही कहे जा सकते। वोली का यह रूप स्थानीय व्यक्तियो द्वारा 'पूर्वी' रूप मे जाना जाता है। परन्तु इसका पश्चिमी भोजपुरी से कोई सम्वन्ध नही जो वास्तव मे 'पूर्वी' है। यह रूप तो विशुद्ध अवधी है।

नीचे दिया हुआ अश एक स्थानीय लोक-कथा का नमूना है —

(न० १८)

भारत-आर्य परिवार मध्यवर्ती शाखा

पूर्वी हिन्दी

अवधी बोली (इलाहाबाद जिले का पूर्वी भाग)

ऐसे ऐसे एक राजा रहैं। सो राजा-के एक रानी रहीं। हँसैं तौ फूल गिरैं और रोवैं तो मोती झड़ैं। राजा-के एक लौंडी रही। रानी-का विदा कराइ-कै राजा-के मकान-को चली। बीच-माँ रानी पिआसी भईं। लौंडी कहेन की खाँड़ खाइ लेव। रानी खाँड़ खायेन पिआस ना बुतान। तव लौंडी कहिस की तुम आपन पोसाक जौन पहिरे-हा तौन हम-का उतार-कै आवै देउ । सो तुम हमार पहिर लेऊ पानी ले-आवऊ, तलाव-से। जो रानी तलाव-पर-गईं पानी पीने सो लौंडी छिप-के डोली-माँ बैठी कहारन-का हुमकी दै-दीन की चलो। कहारन डोला लै चलें। रानी बीच-माँ पानी पी-के आईं। तो रोवै लागीं। रोवत रहीं की एक मिस्त्री[1] मिला। कहेस क्यां बेटी तुम क्यो रोती-हो। तो बतावै लागीं की हम अपने माँ बाप-से विदा भयेन। सो हम-से लौंडी छल किहिस। मिस्त्री उन-का लेवाये लै-गा एक बरामन-के घर-माँ टिकाय दिहिस। लौंडी बाँदी उन-का लगाय दिहिस। जो खिजमत करै लागी। सो मालिन हार लावै लागी । औ हुआँ राजा-के इहाँ लौंडी-हूँ-का हार देवै जात-रहै। रानी तौ सूप-भर मोती देइँ और एक-ठो केवँल-गट्टा का फूल देइँ। और लौंडी एक डवल-का महीना दे ई। तौ एक वेर राजा के यहाँ पहुँचने-मे वेर हो गयी। मालिन-का हार नहीं लीना। तौ मालिन कहेस की एक मिस्त्री एक औरत लेवाइ लै आवा-है। और बेटी-के समान राखे है। सो उन-से हम सूप-भर मोती पाइति-है। तो ऊ नाहीं तेहा करतीं। एक डवल मिला औ ना मिला । तोहरे हाथ फूल वेचे-ले कौन फायदा। इन बातन-का राजा कतों पता पायेन व खोज किहेन। तो मालूम भा की यह लौंडी है। रानी बढ़ई के मकान-माँ है। तव राजा बढ़ई के इह गये औ रानी-का चेरौरी किहेन। तव अपने मकान-का लेवाइ लाये । जस उन-का दिन फिरा तस सब-का दिन फिरै।

हिन्दी प्रतिरूप

इस प्रकार (कहानी प्रारम्भ होती है कि) एक राजा थे। उस राजा के एक रानी थी। (जब वह) हँसती तो फूल गिरते और (जब) रोती तो मोती झडते। राजा-के एक दासी थी। (वह) रानी-को विदा करा-कर राजा-के मकान-को चली।

---

[1] मिस्त्री (मुसलमान) हिन्दुस्तानी वोलता है।

बीच–मे रानी–को प्यास लगी। दासी–ने कहा कि खाँड (=देशी शकर) खा लो। रानी–ने खाँड खायी। पर प्यास न बुझी। तव दासी–ने कहा कि तुम अपनी पोशाक जो पहिने–हुए हो, वह हम–को उतार–कर दे–दो। और तुम हमारी पहिन लो, और पानी ले आओ, तालाव–से। जव रानी तालाव पर पानी पीने गयी तव दासी छिप–कर डोली–मे वैठ गयी और कहारो–को 'हूँ' कह–कर चलने–का सकेत किया। कहार डोला ले–कर चले। रानी पानी पी–कर जव आयी तव रोने लगी। (जव) रो–ही रही थी तव एक मिस्त्री आया। (उसने) कहा, क्यो वेटी! तुम क्यो रोती हो? तव (वह) वतलाने लगी कि हम अपने मात–पिता से विदा हुई तव दासी–ने हमारे साथ छल किया। मिस्त्री उन–को लिवा–कर ले गया और एक ब्राह्मण के घर–मे टिका दिया। दासी उन–के लिए लगा दी जो सेवा करने लगी। और मालिन हार लाने लगी। वह राजा–के यहाँ–(उस) दासी–को भी हार देने जाती थी। रानी–तो सूपा–भर मोती देती और एक कमल–का फूल देती। पर दासी एक पैसा महीना–भर का देती। तव एक वार राजा–के यहाँ पहुँचने–मे उसे देर हो गयी। (उस दासी–ने) मालिन–का हार नही लिया। तव मालिन–ने कहा कि एक मिस्त्री एक औरत लिवा लाया है और लडकी के समान रखता है। उस–से हम सूपा–भर–मोती पाती हैं, वे इतना घमड नही करती। एक पैसा मिले या न मिले। तुम्हारे हाथ फूल वेंचने–से क्या लाभ? इन वातो का राजा–को कही पता चला तव उसने खोज की। तव मालूम हुआ कि यह दासी है। रानी वढई के मकान–मे है। तव राजा वढई के यहाँ गए और रानी से प्रार्थना–की। पश्चात् (उसे) अपने मकान को लिवा लाए। जिस प्रकार उन–के (=राजा–रानी के) दिन लौटे उसी प्रकार सभी के दिन लौटे।

इलाहावाद जिले के दक्षिण–पूर्व मे अर्थात् बडा परगने मे तथा परगना खैरागढ के अधिकाश भाग मे अर्थात् टप्पा चौरासी एव समीपस्थ क्षेत्र को छोडकर, इस समूचे क्षेत्र मे एक मिश्रित भाषा बोली जाती है जिसे स्थानीय व्यक्तियो द्वारा वघेली कहा गया है। वोली के प्राप्त नमूनो के परीक्षण से स्पष्ट हो जाता है कि इसका नाम 'वघेली' ठीक नही है। यह वास्तव मे अवधी ही है जो वघेलखण्ड की वघेली से, मध्य मिर्जापुर की पश्चिमी भोजपुरी से तथा पडोस मे स्थित इलाहावाद शहर मे प्रचलित हिन्दुस्तानी से मिश्रित है। इसमे सन्देह नही कि वघेली और अवधी मे, जैसा कि आगे देखा जाएगा, पर्याप्त साम्य है। इनको दो भिन्न वोलियो मे विभक्त करना अत्यधिक सूक्ष्म अध्ययन का परिणाम कहा जा सकता है, लेकिन विशिष्टता प्रदर्शित करने वाला 'तई' जो कि रीवा–वघेली का प्रतिनिधि शब्द है, प्राप्त नमूनो मे विल्कुल नही मिलता, इस कारण से मैं भाषा के इस रूप को 'विकृत अवधी' ही मानता हूँ।

नमूनो मे मिलने वाले भोजपुरी प्रभावो मे विशेष उल्लेखनीय इन रूपो का

मिलता है, जैसे, द्वितीय नमूने में, 'है' के अर्थ में शब्द 'बा', भविष्यत् काल अन्य-पुरुष विभक्ति–ई जैसे खाई=खाएगा तथा कर्म–सम्प्रदान के लिए यदा-कदा भोजपुरी परसर्ग–कें। हिन्दुस्तानी प्रयोगों को द्योतित करने वाले वाक्य इस प्रकार हैं—छेरी–का–बच्चा=बकरी का बच्चा, आनन्द–मानेंना हम–को चहीं–था=हमारे लिए आनन्द–मनाना उचित था। जहाँ तक बघेली का प्रश्न है, यह निश्चय कर पाना कठिन है कि अमुक कथन उसका है अथवा अवधी का।

इस मिश्रित बोली के दो नमूने दिये जा रहे हैं। एक, उड़ाऊ–पूत–कथा का रूपान्तर है तथा दूसरा, एक लोककथा का। पश्चिमी भोजपुरी तथा हिन्दुस्तानी से उधार लिए बोली–रूपों को छोड़ते हुए नीचे वे महत्त्वपूर्ण व्याकरणिक अनियमितताएँ दी जा रही हैं जिनकी ओर ध्यान देना अत्यन्त आवश्यक है।

शब्द 'एक' प्रथम नमूने में सर्वत्र 'ऐक' ही लिखा मिलता है। यह सप्रयोजन जान पड़ता है। अधिकरण-प्रत्यय म, मा अथवा माँ है। सार्वनामिक रूपों में हम वह देस–के=उस देश का, ऊँ–कर=उसका, तथा दूसरे–नमूने के प्राय. अन्त में वः उसे=उस तरह, पर ध्यान दे सकते हैं।

महत्त्वपूर्ण विशेषताएँ क्रियाओं में मिलती हैं जैसे 'हन'=मैं हूँ। क्रिया-विभक्तियों में 'इ' के स्थान पर 'ए' को प्राथमिकता दी गयी है। कुछ क्रियाओं में यह-ए पूर्ववर्ती अक्षर में भी दिखायी दे जाता है जैसे 'दिहिन' के लिए 'देहेस'=उसने दिया, लेहेस=उसने लिया, और साथ ही, 'किहिस' के लिए 'केहेस'=उसने कहा। 'देहेया' का अर्थ=उसने दिया और 'किहेया तथा किह्यहा'=तुमने बनाया है। उन क्रियाओं के धातु-स्वर को ह्रस्वीकृत करने की प्रवृत्ति है जिनकी धातुएँ–आ में अन्त होती हैं। इस प्रकार हम 'वह आया' के अर्थ में 'अवा' और 'आवा' दोनों रूप पाते हैं। इसी प्रकार 'जवै'=मैं जाऊँगा, 'पवा–है'=मैंने पाया है, 'गवइ–कों'=गाने को। वर्तमान कालिक कृदन्त–इत में अन्त होता है जैसे 'मरित–हैं'=मैं मर रहा हूँ तथा 'करित–हैं'=मैं कर रहा हूँ।

(न० १९)

भारत–आर्य परिवार मध्यवर्त्ती शाखा

पूर्वी हिन्दी

मिश्रित अवधी बोली (जिला इलाहाबाद का दक्षिण–पूर्वी भाग)

नमूना—१

ऐक मनाइ–के दुइ बेटवा रहे। ओह–म–से लहुरा बेटवा अपने बाप–मे केहेस की जौन हमार हिस्सा होए तौन बाँट देह। तब बाँट देहेस। और कुछ दिन बीते लहुरा

बेटवा सब लै–के परदेस चला और ऊ अपन माल कुराह चल–के खोय डारेस। और जब सब खोये चुका तब वह देस–मा बड़ा झूरा परा, और ऊ भूखन मरै लाग। तब वह देस–के ऐक मुखिया–के इहँ गा। ऊ अपने खेत–माँ सूअर ताकै पठैन। और ओ–कर गरज रही की जौन सूअर खात–है तौने–के बोकला–माँ आपन पेट भरी। तबौ केऊ ना देस। तब चेत–मा होयें–के कहा की हमरे बाप–के हिआँ बहुत मजूर रोटी पावत हैं। हम बिन दाना मरित है। अब हम अपने बाप–के लगे जबै और ओ–से कहब की ऐ बाप हम घमड कीन और बेजा कीन और अब हम अस कपूत हन की तोहार बेटवा कहवाए लायेक नहीं। हम–का अपने मजूरन–मा ऐक मजूर जानौ। तब अपने बाप–के लगे–गा। वह दूरै रहा तबै–से ओकरे बाप–के दरद लागी। दौड़–के छपटाये लेहेस, और बहुत छोह किहेस। तब बेटवा बाप–से केहेस की हम घमड कीन और बेजा कीन और हम अस नहीं कीन की तोहार बेटवा कहाई। तब बाप अपने चाकर–से केहेस की बहुत नीक ओढ़ना लै आवा और इन–के हाथ–मा मुंदरी और गोड़े–मा पनही पहिरायें दे। और खायें का देह और खुसी कर। काहे–से की हमार बेटवा हमरे लेखे मरि–गा–रहा अब जीआ है। हेरायें–गवा–रहे अब पवा–है। तब खुसी भई।

और उन–कर बरका बेटवा सेवरा–म–रहा। जब घर–के नीअर आवा तब गवै और नाचै–की बोली सुनेस। तब एक चकरहा–का बोलाै–के पूछेस की का होत–है। तब वह केहेस की तोहार भाई आवा है। तोहार पिता बडी मेहमानी किहेन–है की अच्छी तरह पाया। वह रिसाये के नाहीं चहेस की भीतर जायी। तब ओ–कर बाप आयें–के मनायेस। तब अपने पिता–से केहेस की देखी हम तोहार बरसन–से सेवा खुसामद करित–है। और कबहूं तोहरे मरजी–से बाहर नाहीं भयेन। तबौ हम–का कबौ ऐक छेरी–का बच्चा नाहीं देहेया की अपने सगी–के साथ आनन्द करित। और जब तोहार बेटवा अवा जौन तोहार माल पतुरिया–मा खर्च किहेस तुम ओ–कर खातिर बड़ी मेहमानी किहेया। तब ऊ केहेस की ए बेटवा तुम सब दिन हमरे नगीच हौ। और जौन कुछ हमरे है ऊ तोहार है। पर आनन्द मानना हम–को चही–था काहे–से की तोहार वह भाई मरा–रहा, जानौ जीआ है। और खोइ–गा–रहा तौन मिला–है।

हिन्दी प्रतिरूप

एक मनुष्य–के दो लडके थे। उस–मे–से छोटे लडके–ने अपने पिता–से कहा कि 'जो हमारा हिस्सा हो, वह बाँट दीजिए'। तब (पिता–ने) बाँट दिया। और कुछ दिन बीतने–पर छोटा लड़का सब ले–कर परदेश चला गया और उस–ने अपना धन कुमार्ग–मे चल–कर समाप्त–कर–डाला। और जब सब खो–चुका तब उस देश–मे बडा अकाल पडा और वह भूख–मे मरने–लगा। तब वह (उसी) देश–के एक मुखिया

—के यहाँ गया । उस-ने (उसे) अपने खेतों-मे सुअरों-को देखने-के लिए भेजा । और उस-की इच्छा रहती थी कि 'जो सुअर खाते-है, उसी-की भूसी-से अपना पेट भरे ।' तब भी कोई नही देता था । तब होश-मे आ-कर उस-ने कहा कि 'हमारे पिता-के यहाँ बहुत-से मजदूर रोटी पाते है (और) हम बिना भोजन-के मर-रहे हैं, अब मैं अपने पिता-के यहाँ जाऊँगा और उन-से कहूँगा कि "ओ ! पिता जी ! ! मैंने घमड किया और अपराध किया-है, और मै ऐसा कुपुत्र हू कि आपका लडका कहलाने योग्य नही । मुझ-को अपने मजदूरो-मे एक मजदूर जानो।" तब अपने पिता-के यहाँ गया । वह दूर ही था तभी-से उस-के पिता-को दया आयी । दौड़-कर छाती-से लगा लिया और बहुत प्यार किया । तब लडके-ने पिता-से कहा कि, 'मैं-ने घमड किया और अपराध किया है और मैने ऐसा नही किया कि आपका पुत्र कहलाऊँ ।" तब पिता-ने अपने नौकर-से कहा कि "बहुत अच्छा कपडा ले आओ। और इस-के हाथ-मे अँगूठी और पैरो-मे जूते पहिना-दो और खाने-को दो और खुशी मनाओ; क्योकि मेरा लडका मेरी समझ मे मर-गया था अब जिन्दा हुआ है; (वह) खो गया था अब (मैंने उसे) पाया-है ।" तब खुशी मनाई गई ।

और उस-का बडा लडका खेत-मे था । जब घर-के निकट आया तब गाने और नाचने-की आवाज सुनी, तब एक नौकर को बुला-कर पूछा कि 'क्या हो रहा-है ?' तब उस-ने कहा कि "तुम्हारा भाई आया है । तुम्हारे पिता-ने बडी मेहमानदारी की है क्योकि (उसे) अच्छी प्रकार पाया है।" वह क्रोधित हुआ (और) नही चाहता था कि (घर-के) अन्दर जाये । तब उस-के पिता-ने आकर (उसे) मनाया । तब अपने पिता-से कहा कि "हम तुम्हारी वर्षो-से सेवा कर रहे है और कभी तुम्हारी इच्छा के बाहर नही गए तब भी आप-ने मुझ-को कभी एक बकरी-का बच्चा भी नही दिया, जिस-से मैं अपने साथियो-के साथ-मिलकर आनन्द मनाता । और जब तुम्हारा (वह) बटा आया जिस-ने तुम्हारा धन वेश्याओं मे खर्च कर डाला है, तुम-ने-उस-के लिए बडी मेहमानदारी की है ।" तब उस-ने (=पिता ने) कहा कि "ऐ पुत्र ! तू हमेशा हमारे निकट है और जो-कुछ मेरे पास है, वह तुम्हारा है ।' पर आनन्द मनाना हमारा कर्तव्य था, क्योकि तुम्हारा वह भाई, जो मरा था, जीवित हुआ-है और खो-गया-था, वह मिला-है।"

(न० २०)

भारत-आर्य परिवार मध्यवर्त्ती शाखा

पूर्वी हिन्दी

मिश्रित अवधी बोली (जिला इलाहाबाद का दक्षिण-पूर्वी भाग)

नमूना—२

ऐसे ऐसे एक सीगठ वो बाघ रहै । दूनौ जने खेती किहेन काटेन मोजेन। सीगठ कहेन की तरे–का लेबे की ऊपर–का । बघऊ कहेन की हम तरे–का लेब। तब सीगठ कहेन की बाघ–राम हम तुमार असमगी करब । बरा भात फुलौरी सीगठ–राम बनाइ–कर धइ दिहेन। बाघ–राम खाइन। बाघ कहेसि की सीगठ–राम, अब हम तुमार असमगी करित–है। तब बाघ–राम डेंठुरा मेंठुरा चुरइ कर सीगठ–के आगे धइ दिहेन। सीगठ–वो बाघ–के बीच–मे एक अहीर सब बात सुनत–रहा। अहिरवा कहेसि की बाघ–की असमगी नाहीं बनि परी। सीगठ–राम–की असमगी बनि परी–है। बघऊ कहेन की हम तुम–का खाब, चबाब, हमार गोला किह्यह । तब अहिरऊ अपनी महतारी–से कहेन की हे माई। हम–का बाघ आजु धिरयें बा की तुम–का हम खाइ लेब। तब ऊँ–कर महतारी कहेस की दहजरा–के नाती कैसे खाई। तब अहिरवा-का ओ–कर महतारी कोठा–पर खाये–पियै–का दै–कर बैठाइ आई। तब बाघ आवा तौ डॉक कर कोन–पर–चला गवा। माचा समेत उठाइ–कर लइ चला। रास्ता–मे एक बरगद–का पेड मिला। अहिरऊ बरगद का डार धँ–कर लटकि रहा। तब बाघ अपनी डेरा–पर खाली–माचा लइ–कर चला गा । माचा पटक दिहेस। वह–मँ अहीर–राम त रहैं न। तब आपन मूंड कपार कूँचै लाग । और अहीर वहीं पेड–तर रहै लाग । वहाँ सुरा गाय रहत रहैं। उन–का दिन–भर चरावैं और उनही–कें दूध पीये। तवन बचै पेड़ पर साँप–के बिल–मे नाइ–देइ । बहुत दिन बीते एक सरप फन काढ़ि–कर बिल–से निकला। तब अहीर–से कहेसि माँग का माँगत–है । मोर बड़ी सेवा किहे। तब अहिरऊ कहेन की हमार देंह सोने–के होइ जाय। और दस–बारह गाँव–के राज देह। तब सँपऊ बर–दान दे–के चल गयेन। तब अहिरवा–के देह सोने–के होय गा।

एक दिन अहीर–राम नदी मे नहाए गे । एक बार टूटि गा। ओ–का दोना–मे कइ–कर नदी–मँ फेंकि दिहेन। ऊ बहत–बहत चला गा। राजा–के बाबी नहाने आई ऊ देखेस। तब दोना–मँ सोना के बार रहै। तब घर–मे आइ–कर कहेस की जे–कर बार सोना के है ऊ मनई कसत होई । ओ–ही–के साथ बियाह होई । और मूंड मूँड़–कर पड़ी। तब एक मेहरारू ओ–कर टहलुइन कहेस की हम ढूँढ़ लाउब। तब ऊ बरगद–के पेड तर ढूंढत–ढूंढ़त पहुँची और वहाँ रहै लागी । एक कोठिला माटी–के पेड तर बनाइस। तब आपन सीधा पिसान वहि–मैं धरेस । अहीर–राम–से एक दिन कहेस की बाबा मोर सीधा निकाल देहि। तब अहीर–राम कोठिला–मे घुसि गे। तब ऊ मेहरारू कोठिला ढँगराइ कर राजा–के इहाँ ले–आई और अहीर–राम के साथ बाबी–का बियाह होइ–गा। कुछ दिन बीते दान दहेज दें–कर राजा बाबी बिदा कइ दिहिन । तब अहीर–राम बाबी–के लइ–कर अपने घर आयेन। गाँव–वाले ओकरी महतारी–से कहेन

की तुमार बेटवा आवा। तव बुढ़िअऊ कहेन की हमरे बेटवा-के वाघ खायेन रहा। जव बेटवा अपनी महतारी-से भेंट किहेस और ओढ़ना कपड़ा लत्ता दिहेस। तव ओ-कर महतारी खुसी भई।

जैसे राज पाट अहिरऊ-का लौटा वैसे सव-का लौटै।

हिन्दी प्रतिरूप

इस इस प्रकार (कहानी प्रारम्भ होती है) एक गीदड और एक वाघ था। दोनो-ने (मिल-कर) खेती वोई, काटी और माँडी। गीदड-ने कहा कि 'निचौंही भूमि का (हिस्सा) = (कछार) लोगे अथवा उपरौंही-का (= वाँगर)' वाघ-ने कहा कि 'मैं निचौंही का लूँगा।' तव गीदड ने कहा कि 'वाघ (जी) मैं तुम्हारी दावत करूँगा।' वडा, भात, फुलौरी गीदड-ने वना-कर परोस-दिया। वाघ ने खाया। वाघ-ने कहा कि 'गीदड ! अव हम तुम्हारी दावत करते हैं। तव वाघ-ने कुछ जड़ें उवाल-कर गीदड़ के सामने रख दिया। गीदड और वाघ-के वीच-में-की, एक अहीर, सव वातें सुन-रहा-था। अहीर ने कहा कि 'वाघ-की दावत नही वन-पडी। गीदड की दावत अच्छी-वनी-थी।' वाघ-ने कहा कि 'हम तुम-को खा-डालेंगे, चवा-डालेंगे; (तुमने) हमारी वदनामी की।' तव अहीर-ने अपनी माता-से कहा कि 'ओ माँ! मुझ-को वाघ-ने आज धमकाया-है कि तुम-को मैं खा लूँगा।' तव उस की माता-ने कहा कि 'दाटीजार-का नाती कैसे खायगा। तव अहीर को उस-की माता-ने कोटा-पर खा-पिला-कर विठला-दिया। तव वाघ आया और उछल-कर (छज्जे-के) कोने-पर पहुँच गया। चारपाई-के साथ उठा-कर ले चला। रास्ते-मे एक वरगद-का पेड़ मिला। अहीर वरगद-की डाल पकड़-कर लटक-गया। तव वाघ अपने डेरे-पर खाली-चारपाई ले-कर पहुँचा। चारपाई पटक दी। उस-मे अहीर-भाई तो थे नही। तव अपना सिर-माथा धुनकने लगा। और अहीर उस पेड-के नीचे रहने लगा। वहाँ नील-गायें[1] रहती थी। उन-को दिन-भर चराता और उनका दूध पीता और जो वचता, पेड-मे-के साँप के- विल-मे उँडेल देता। वहुत दिन वाद एक साँप फन फैला-कर विल-से निकला। और अहीर-से कहा, 'माँग, क्या माँगता-है? (तू-ने) मेरी वडी सेवा-की-है।' तव अहीर-ने कहा कि 'मेरा शरीर सोने-का हो-जाए और दस-वारह गाँव-का राज्य दो।' तव साँप वरदान दे-कर चला गया। तव अहीर-का शरीर सोने-का हो-गया।

---

१. देवताओ की ये गायें पौराणिक हैं। ये, जो मालिक चाहता है, प्रदान करती हैं। यह शब्द यहाँ मात्र जंगली गाय का अर्थ देता है।

एक दिन अहीर–भाई नदी–मे नहाने गए। एक वाल टूट–गया। उस–को दोने–मे रख–कर नदी–मे फेंक दिया। वह बहता–वहता चला। राजा–की लडकी नहाने आई; उसने देखा। तव दोने मे सोने–का वाल था। तव (उस–ने) घर–मे आकर कहा कि 'जिस–का वाल सोने–का है, वह मनुष्य–कैसा होगा! उस–के साथ विवाह करूँगी।' और सिर मार–कर पीछे पडी। तब एक स्त्री (जो) उसकी नौकरानी थी, बोली कि 'मैं ढूँढ–कर लाऊँगी।' तव वह वरगद के पेड के नीचे ढूँढती पहुँची और वहाँ रहने लगी। एक कुठला[1] पेड–के नीचे वनाया। तव अपना आटा–दाल आदि उस–मे रख दिया। अहीर–भाई–से एक दिन कहा कि 'वावा! मेरी खाद्य–सामग्री निकाल दो।' तव अहीर भाई कुठिला–मे घुस गए। तव वह स्त्री–कुठिला को लुढका–कर राजा के यहाँ ले आई। और अहीर–भाई–के साथ लडकी–की शादी हो–गई। कुछ दिन वीतने–पर दान–दहेज दे–कर राजा–ने लडकी–को विदा कर दिया। तव अहीर–भाई लडकी–को ले–कर अपने घर आए। गाँव–वालो ने उस–की माता–से कहा कि तेरा वटा आया–है।' तव वुढिया–ने कहा कि 'मेरे वेटे–को वाघ–ने खा डाला।' तव लडके ने अपनी माँ–से भेंट की और ओढना, कपडा–लत्ता दिए, तव उसकी माँ खुश हुई।

जैसे राज-पाट अहीर–को मिला, वैसे सव–को मिले।

विहारी शीर्षक के अन्तर्गत यह पहिले ही निर्दिष्ट किया जा चुका है, देखिए—जिल्द ५, भाग–२ पृ० २६६, कि मिर्जापुर जिला जो इलाहावाद जिले के ठीक पूर्व मे स्थित है, तीन भू–खण्डों मे विभक्त है, अर्थात् गगा का उत्तरी भाग, मध्यवर्त्ती भू-भाग जो प्रमुख है और जो गगा के दक्षिण तथा सोन-नदी के उत्तर मे ठहरता है, तीसरा सोन–पार के नाम से जाना जाने वाला भाग, यह सोन-नदी के दक्षिण मे फैला है। इस प्रमुख केन्द्रवर्त्ती क्षेत्र की भाषा विहारी की पश्चिमी भोजपुरी बोली है। जैसे-जैसे हम पश्चिम की ओर वढते जाते हैं, यह क्रमश अवधी मे अन्तर्भक्त होती जाती है। गगा के उत्तरी भाग मे पडने वाले क्षेत्र–'टप्प कोन' का छोटा-सा हिस्सा, 'तलुक मझवा' तथा परगना 'करयात सिखर' जो कि बनारस जिले की सीमा से लगे हुए हैं, इसी बोली को अपनाये हुए है। शेष उत्तरवर्त्ती भाग मे अर्थात् 'भदोही' परगने मे जो महाराज वनारस के पारिवारिक अधिकार–क्षेत्र मे आता है, 'राजघराने' की बोली' बोली जाती है। ऐसा स्थानीय व्यक्तियो द्वारा सूचित किया गया है। इस भाषा के नमूनो का परीक्षण करने पर यह स्पष्ट हो गया है कि यह 'राजघराने की बोली' पूर्वी इलाहाबाद

---

१. कुठिला—एक गोलाकार मिट्टी का बर्तन जिसमे अन्न एकत्र किया जाता है।

मे तथा इसके ठीक उत्तर मे पड़ने वाले पश्चिमी जौनपुर–क्षेत्र मे बोली जाने वाली अवधी ही है ।

सोन-पार की भाषा बघेली है। यह भू–भाग आर्य–जातियो द्वारा बहुत बाद मे अधिकृत किया गया था। यहाँ के पूर्ववर्त्ती आदिवासियो ने अपनी-अपनी मातृभाषाओ को लगभग पूरी तौर से छोड़ दिया है । कुछ लोग अब भी कोरवारी बोलते हैं परन्तु कोल, अपने पडोसियो की तरह बघेली ही बोलते है । मिर्जापुर से जो भाषा 'कोल' नाम से उल्लिखित होकर आयी है, परीक्षा करने से वह, सोन-पार के अन्य निवासियो द्वारा बोली जाने वाली 'विकृत बघेली' ही निकली ।

ज़िला मिर्जापुर मे बोली जाने वाली भाषाओ के बोलने वालों की अनुमानित सख्या सशोधित करके नीचे दी जा रही है :—

पश्चिमी भोजपुरी	८,१०,०००
गगा के उत्तरी भाग की अवधी	२,५२,०००
सोन-पार की बघेली	४९,५००
हिन्दोस्तानी	४९,५००
कोरवारी	३३
अन्य भाषाएँ	४७५
योग	११,६१,५०८

गगा के उत्तरी भाग की बोली के समूचे नमूने देना अनावश्यक है। उडाऊ–पूत कथा के स्थानीय रूपान्तर की प्रथम कतिपय पक्तियाँ देना ही यहाँ पर्याप्त होगा। यही नमूना पश्चिमी जौनपुर की बोली के लिए भी उपयुक्त होगा। इसे स्थानीय व्यक्ति 'बनौधी' के नाम से जानते हैं।

(नं० २१)

भारत–आर्य परिवार **मध्यवर्त्ती शाखा**

पूर्वी अवधी

अवधी बोली **(मिर्जापुर जिले का उत्तरी भाग)**

एक जने–के दुइ बेटवा रहिन। लहुरका अपने बाप–से कहेसि कि, 'बाप हमार हिस्सा हमें बाँटि दे।' तब ओ–कर बाप आपन सब धन–दौलति अपने दूनो लरिकन–के बाँटि दिहेसि।

हिन्दी प्रतिरूप

एक मनुष्य के दो लड़के थे। छोटे–ने अपने पिता–से कहा कि–'पिता जी ! मेरा हिस्सा मुझे बाँट दो ।' तब उस–के पिता–ने अपनी सब धन–दौलत अपने दोनो लडको–को बाँट दी ।

भारत के अन्य स्थानों में प्रयुक्त स्वदेशीय अवधी

स्वस्थानीय निवासियो के अतिरिक्त अवधी उस क्षेत्र के मुसलमानो द्वारा विस्तार-से वोली जाती है, जिसमे बिहारी लोक-भाषा रूप मे गृहीत है। यह समवत लखनऊ के पूर्ववर्त्ती मुस्लिम–दरवार के प्रभाव का एक अवशेष-चिह्न है। इस वोली का प्रचलन गगा के उत्तर मे पूरव की ओर मुजफ्फरपुर ज़िले तक पाया जाता है। दरभगा मे यह प्रचलित नही जान पडती । गगा के दक्षिण मे इसका विस्तार पूरव मे गया जिले तक है ।

इस क्षेत्र के अववी-भापियो की सही कही जाने वाली सख्या दे पाना दुर्भाग्यवश असंभव ही है। नीचे दी हुई सख्या विभिन्न ज़िला–अधिकारियो द्वारा प्राप्त अनुमानित आँकडो पर आधारित है .—

प्रान्त	ज़िला	अववी बोलने वालो की अनुमानित सख्या	
बगाल के लोअर प्रान्त—			
	मुज़फ्फरपुर	२,०४,९५४	
	सारन	४०,०००	
	चम्पारन	५८,०००	
	गया	६४,५००	
	शाहाबाद	१,३७,०००	
		योग	५,०४,४५४
पश्चिमोत्तर प्रान्त—			
	वलिया	३०,३७०	
	गाज़ीपुर	१,११,०००	
	वनारस	१,२०,०००	
	मिर्ज़ापुर (मध्य)	३१,०००	
	आजमगढ	१,०७,०००	

गोरखपुर	१,१८१
वस्ती	×
योग	४,०१,३५१
कुल योग	१,१३,८१३

मुजफ्फरपुर ज़िले मे यह अवधी निम्नस्तरीय मुसलमानो द्वारा वोली जाती है। उनमे से अधिकाश जुलाहा अर्थात् कपडा बुनने वाली जाति के हैं। फलस्वरूप स्थानीय व्यक्तियो द्वारा यह 'जुलहा वोली' के रूप मे ही जानी जाती है। स्थानीय व्याख्या के अनुसार यह क्षेत्रीय मैथिली एव हिन्दोस्तानी का मिश्रित रूप है। नीचे दिए हुए नमूनो के परीक्षण से स्पष्ट हो जायगा कि यह विशुद्ध अवधी है जो किंचित मात्रा मे उपर्युक्त दोनो भाषाओ से प्रभावित है। यह भी ध्यान देने योग्य है कि एक 'जुलाहा वोली' और भी है, जो दरभगा ज़िले में वोली जाती है; पर यह विशुद्ध मैथिली है और मुज़फ्फरपुर मे इसी नाम से जानी जाने वाली वोली से सर्वथा भिन्न है।

सारन ज़िले मे अवधी निम्नस्तरीय व्यक्तियो द्वारा नही वोली जाती। वे स्थानीय भोजपुरी वोलते हैं। पर यह वहाँ मध्यमवर्गीय मुसलमानो द्वारा वोली जाती है और 'विहारी हिन्दी' के नाम से अभिहित की जाती है। इसके वोलने वालो की सभावित संख्या ४०,००० अनुमानित है।

चम्पारन ज़िले मे अवधी मध्यमवर्गीय मुसलमानो तथा टिकुलीहार,=टिकुली वनाने वाली जाति के लोगो द्वारा वोली जाती है। स्थानीय सूचना के अनुसार ये टिकुलीहार सख्या मे लगभग ८,००० हैं। मुसलमानो की संख्या में ५०,००० कूतता हूँ और इस प्रकार अवधी वोलने वालों की कुल सख्या ५८,००० अनुमानित है। टिकुलीहारो द्वारा वोली जाने वाली अवधी उस स्थान मे 'टिकुलीहारी' रूप मे जानी जाती है और मध्यमवर्गीय मुसलमानो द्वारा वोली जाने वाली अवधी 'शेखई' कहलाती है। स्थानीय व्याख्याकार इस तथ्य से नितान्त अनभिज्ञ हैं कि वे दोनो एक ही भाषा हैं।

अवधी के इन अन्यान्य रूपान्तरो के पूरे के पूरे नमूने देना कागज की वर्बादी ही कही जायगी। वस्तुत कोई भी नमूना प्रस्तुत करना शायद ही आवश्यक हो, यह तथ्य क्या इस वात का पर्याप्त प्रमाण नही है कि विहारी-क्षेत्र के सभी अशिक्षितो द्वारा यूरोपियनो से वात करते समय यह एक सामान्य माध्यम है जो विनम्रता के लिए अपना लिया गया है, ठीक उसी प्रकार जिस प्रकार ऐसी स्थिति मे उनके उच्चवर्गीय लोग उर्दू का प्रयोग

करते हैं। बिहारी नौकरो से बातचीत करते समय यूरोपियनों के कानो मे पडने वाले कहिस, दिहिस आदि प्रयोगो की बहुलता का कारण भी इसी तथ्य मे निहित है। जब नौकर इस प्रकार के प्रयोग व्यवहृत करते हैं तब साधारणत ऐसा समझ लिया जाता है कि वे अपनी गँवारू बोली का ही प्रयोग कर रहे हैं परन्तु सर्वदा ऐसा नही होता। जहाँ तक बिहारी हिन्दुओ का प्रश्न है, वे एक ऐसी भाषा को अपनाये हुए हैं जो उन्होंने अपने मुस्लिम-मित्रो से ग्रहण कर ली है और जिसे वे सभ्य समाज की हिन्दुस्तानी के रूप मे ही जानते हैं। यहाँ मुजफ्फरपुर की जुलाहा बोली तथा चम्पारन की शेखई बोली मे रूपान्तरित उडाऊ-पूत-कथा के प्रथम कुछ वाक्यो का उद्धरण ही पर्याप्त होगा—

(नं० २२)

भारत–आर्य परिवार मध्यवर्त्ती शाखा

पूर्वी हिन्दी

जुलाहा बोली (मुजफ्फरपुर जिला)

एक कोई आदमी–को दू लडिका रहा। ओह–मे–से छोटका बाप–से कहिस, 'हो बाबा, माल दौलत–मेँ–से जो हमरा हिस्सा–बखरा होय, सो हम–को दे द।' तब वह वह–को अपना धन बाँट दिहिस। बहुत दिन न गुजरा की छोटका लड़का सब कुछ जमा–कर–के दूर देस चला गवा। और वहाँ अवार–पन–में दिन गँवा–के अपना सरबस गँवा–डालिस। और जब वह अपना सब कुछ उडा दिहिस तब उस देस–मे भारी अकाल पड़ा और वह कगाल भ–गवा। और वह उस देस–के एक लमहर आदमी किहाँ जा–के रहने लगा। वह ओ–को खेत–में सूअर चराने–को भेजिस।

हिन्दी प्रतिरूप

किसी आदमी के दो लडके थे। उस–मे–से छोटे लडके–ने पिता–से कहा, 'ए पिता जी! धन–मे से जो मेरा हिस्सा हो, वह मुझ–को दे–दो। तब उस–ने उस–को अपना धन बाँट दिया। बहुत दिन नही बीते थे कि छोटा लडका सब कुछ इकट्ठा–करके दूर विदेश को चला गया। और वहाँ आवारा-पन मे दिन बर्बाद–कर के अपना सब–कुछ बर्बाद कर–दिया। और जब उस–ने अपना सब–कुछ उडा–डाला तब उस देश–मे बडा अकाल पडा और वह कगाल हो–गया। और वह उस देश–के एक बडे आदमी–के यहाँ जा–कर रहने लगा। उस–ने उस–को खेत–मे सुअर चराने–के लिए भेजा।

(न० २३)

शेखई (चम्पारन जिला)

ये–गो आदमी–का दू–गो बेटा रहे। छोटका अपने बाबा–से कहेस के, 'हमरा

हिस्सा हमरा दे-द।' तब उन-के पास जे धन रहे से उन-के दे-दियेन। थोरा दिन बाद ऊ सब धन ले-के पर-देसे चला-गवा। लुचई-में सब धन आपन खराब किहेस। जब धन सब खराब-क-दिहेस तब ओकरा दुख होवे लागेस। तब वह देसा-का यके आदमी किहाँ रह-गवा, जे अपना खेत-में सूअर चरावने-के भेजिस।

हिन्दी प्रतिरूप

एक आदमी के दो-ठौ लडके थे। छोटे लड़के-ने पिता-से कहा कि, 'मेरा हिस्सा मुझ-को दे-दो।' तब उन-के पास जो धन था वह उन-को दे-दिया। थोड़े दिन बाद वह (=छोटा) सब धन लेकर विदेश चला गया। आवारा पन-मे सब धन अपना बर्बाद कर दिया। जब धन सब बर्बाद कर-दिया तब उस-को कष्ट होने लगा। तब (वह) उस देश-के एक आदमी-के यहाँ रहने लगा, जिस-ने उस-को अपने खेत मे सुअर चराने-के लिए भेजा।

थारू अवधी

थारू व्यक्तियो द्वारा बोली जाने वाली भाषा का विस्तृत विवरण 'विहारी' शीर्षक के अन्तर्गत जिल्द ५, भाग २, पृष्ठ ३१३ तथा क्रमश, मे दिया जा चुका है। बहराइच से प्रारभ करके, पूर्व की ओर के थारू भोजपुरी का एक विकृत रूप प्रयोग मे लाते हैं। दूसरी ओर, खीरी के ३,००० थारू जो ज़िले के उत्तर तथा पश्चिम मे वसे हुए हैं, स्थानीय व्यक्तियो की रिपोर्ट के अनुसार 'विकृत गोरखाली' बोलते है। उक्त जिले से प्राप्त उनकी बोली के नमूने का परीक्षण यह स्पष्ट कर देता है कि यह भाषा, जो कनौजी से मिश्रित हो गयी है, और जिसमे जाने-अनजाने कुछ विकारी-रूप प्रवेश पा गये हैं, ऐसी एक स्थानीय अवधी के अतिरिक्त और कुछ नही है। यह नीचे दिये गये उडाऊ-पूत-कथा के स्थानीय रूपान्तर के प्रथम कुछ वाक्यो से स्पष्ट हो जायगा।

(नं० २४)

भारत-आर्य परिवार — मध्यवर्त्ती शाखा

पूर्वी हिन्दी

थारू अवधी — (खेरी जिला)

फलाने पधान-के दुइ लौड़ा रहें। ओ-माँ-से लहुरा लौड़ा दद्दा-से बोला, 'दद्दा रे! हमारा जो-कुछ हो माल का झाँडा बांट दे।' वोह अपनी जीत-में उन-को बांट दिया। बहुत दिन नाहिं भये कि लहुरा लौड़ा सब कुछ इकट्ठा कर-के दूर-के देस-

को चलो–गयो। और अपना माल लुचई–माँ हुवाँ उड़ाइ दई। और जब सब उड़ाइ दई तब उस देस–माँ अकाल परेओ। और वह उस देस–के फलाने बसिन्दा–के तीर गयो और वोह उसे अपने खेतन–माँ सूअर चरावने पठयेओ।

हिन्दी प्रतिरूप

किसी भले–आदमी–के दो लडके थे। उन–मे से छोटे लडके–ने पिता–से कहा 'पिता जी! मेरा जो–कुछ हो सपत्ति–मे हिस्सा, (वह) बाँट दो।' उस–ने अपने जीते जी ही उन–को (हिस्से) बाँट दिए। बहुत दिन नही हुए कि छोट लडका–सब कुछ इकट्ठा–कर–के दूर विदेश–को चला गया। और अपना धन बदचलनी मे वहाँ–पर उडा दिया। और जब सब उडा चुका तब उस देश–मे अकाल पडा। और वह उस देश–के किसी निवासी के यहाँ गया और उस–ने उसे अपने खेतो–मे सुअर चराने–के लिए भेजा।

बघेली

मध्यभारत की बघेलखण्ड एजेन्सी के अन्तर्गत रीवाँ नाम की एक बड़ी रियासत तथा कतिपय छोटी रियासतें नागौद, सोहावल, मैहर तथा कोठी आती हैं। इस एजेन्सी का क्षेत्रफल लगभग १२,००० वर्ग मील है। बुन्देलखण्ड एजेन्सी मे, १८९१ ई० से लेकर अब तक, स्थानान्तरित ५०,००० व्यक्तियो को मिलाकर इसकी जनसंख्या १७,८८,३३२ है। नागौद तथा मैहर के पश्चिमी भागो को छोड़कर इस सम्पूर्ण क्षेत्र की बोलचाल की भाषा विशुद्ध बघेली है। कैमूर पर्वत-श्रेणी के दूसरी ओर रीवाँ-राज्य के पूर्वी तथा दक्षिणी भागों मे रहने वाले आदिवासियो ने भी अपनी-अपनी भाषाओ को छोड दिया है और वे अब बघेली के एक विकृत रूप का प्रयोग करते हैं, जिसे स्थानीय व्यक्ति 'गोडी' 'अथवा 'गोडानी' के नाम से जानते हैं। इस बोली के प्राप्त नमूनो के परीक्षण से स्पष्ट हो जाता है कि यह परिनिष्ठित बघेली से यत्किंचित मात्रा मे ही भिन्न है, अतएव यहाँ इसके उदाहरण देना अनावश्यक है। उल्लेखनीय तथ्य केवल यह है कि क्रियाओ की भूतकालिक रचना बिहारी भाषाओ की तरह है। शब्द-सूची से यह स्पष्ट हो जाएगा।

बघेलखण्ड एजेन्सी से प्राप्त बघेली बोलने वालो की सख्या इस प्रकार है :—

परिनिष्ठित बघेली	११,८०,०००
गोडी	५,००,०००
योग	१६,८०,०००

शेष आबादी मे से लगभग ९०,००० व्यक्ति जो नागौद और मैहर के पश्चिम मे रहते हैं, 'बुन्देली'-मिश्रित 'बनाफरी' बोलते है और १८,३३२ व्यक्ति क्षेत्र के स्थानीय रूपान्तरो का प्रयोग न करके 'अन्य भाषाएँ' बोलते हैं, ऐसा सूचित किया गया है।

नीचे वे प्रमुख तथ्य दिये जा रहे हैं जिनकी ओर पाठक का ध्यान सलग्न नमूनो मे खीचा जा सकता है। ये नमूने बघेलखण्ड एव चाँदमकार की भाषाओं के प्रतिनिधि रूप मे स्वीकार किये जा सकते हैं। इस स्थान की उदाहृत भाषा तथा अवधी मे बहुत थोडा अन्तर है, यह स्पष्ट हो जायेगा।

पूर्वोपान्त्य अक्षर के ह्रस्वीकरण का नियम सर्वत्र व्यापक है, यथा—'चाकर=

नौकर, से, 'चकॅरन–से' नौकरो से। 'व' के 'व' मे परिवर्तन की भी एक प्रवृत्ति है, यथा–आवाज=शोर, आवा=आया, जबाब=उत्तर।

सज्ञाओ के कारक-प्रत्यय निम्न प्रकार हैं—सवन्ध, 'केर', पुल्लिग 'के', विकारी 'के', स्त्रीलिंग 'की' विकारी 'कैं', भी। कर्म 'क', 'का'। सप्रदान 'क', 'का', 'काहे'। अपादान से, ते। अधिकरण 'मा'।—अँहा युक्त, विशेषणो का एक दीर्घ रूप भी है, जैसे—अधिकॅहा=अधिक, निकॅहा=अच्छा।

जहाँ तक सर्वनामो का प्रश्न है, हमे 'मैं'=मैं, सम्बन्ध 'मोर', विकारी 'मोरे' अथवा 'मोहिं', 'तैं'=तू, सम्बन्ध 'तोर', 'तोहिं', 'अपॅने', आप=विकारी 'अपना'। अन्तिम का विकारी रूप नितान्त स्पष्ट कर देता है कि यह शब्द भोजपुरी से उधार लिया गया है। 'स्वय' के लिए 'आपन' शब्द है जिसका विकारी रूप 'अपॅना' नही 'अपॅने' है। 'यह' के लिए 'या' और 'वह' के लिए 'वा' रूप है। दूसरे का विकारी रूप 'ओंह' अथवा 'वो' हैं, यथा—सवन्व० वो–कर, कर्म–सप्र० 'वो–क' अथवा 'वो–का' अपादान 'वो–से'। 'वे' के लिए 'उइँ' है। सवन्धवाचक सर्वनाम 'जौन' है जिसका विकारी वहुवचन 'जिन' है और जिसका सह-सवन्धवाची रूप 'तौन' है।

जहाँ तक क्रियाओ का प्रश्न है, हमे 'आहेउँ'=मै हूँ, 'हये'=तू है, तथा 'आय' अथवा 'अइ' वह है, रूप मिलते हैं। समापिका क्रिया–रूपो के लिए हम 'मरत्यों=हैं' मैं मर रहा हूँ तथा 'करतेउँ–है'=मैं कर रहा हूँ, रूप पाते हैं। स्त्रीलिंग रूप 'होति–है' यह होता है, है। 'वह दे रहा था' के लिए 'देत–रहा–तैं' है। स्त्री–रूप 'लडाई रही–है'=झगडा चला आ रहा है। अवधी मे भविष्यत् उत्तम-पुरुष का निजी प्रत्यय–ब है, यथा 'कहब'=मैं कहूँगा, परन्तु इसके विपरीत बघेली के नमूनों मे 'ह' है जो कि हमे कनौजी मे भी मिलता है, यथा–जैहों=मैं जाऊँगा कहिहौं=मैं कहूँगा। भूतकाल का एक उदाहरण है—किह्यों–है=मैंने किया है। आदरसूचक आज्ञा का रूप, बिहारी की तरह=ई मे अन्त होने वाला है, यथा—देई आप देवें, करी=आप करे। क्रियार्थक सज्ञा–रूप व मे अन्त होता है, यह अवधी तथा बिहारी की भाँति है, और वे क्रिया–धातुएँ जो कि–आ मे अत होती है उनका विकारी रूप–मैं प्रत्यय–युक्त है, यह प्रवृत्ति भी बिहारी का अनुकरण करती है। उदाहरण इस प्रकार हैं—जाव=जाना, चरामैं–का=चराने के लिए तथा कहामैं–माफिक=कहलाने के योग्य।

बघेली वोली की निजी विशेषता–तैं है जो कि भोजपुरी के –स की तरह क्रियाओ के भूतकालिक रूपो मे जोडा जाता है। यह नमूनो मे अनेक वार प्रयुक्त हुआ है। उदाहरण इस प्रकार है—गे–तैं=वे गये थे, देत–रहा–तैं=वह दे रहा था,

रहा–तैं=वह था, मरि–गा–तैं=वह मर गया। कतिपय स्थानो मे यह हिन्दी 'था' का समानार्थी वन गया है, ठीक 'तो' अथवा 'ते' की तरह जो कि हमे अधिकाश पश्चिमी वोलियो मे मिलेंगे।

हम अन्यत्र देखचुके है कि वर्तमान कृदन्त से वने हुए काल लिंग–भेद रखते हैं। भूत कृदन्तो से वने हुए काल–रूपो की भी यही प्रवृत्ति है। इस प्रकार, हम दूसरे नमूने मे—'पट्टी–रही–गैं–है'=हिस्सा रह गया है'—रूप पाते हैं। यत्र–तत्र हम, सकर्मक क्रियाओ के भूतकालिक रूपो मे कर्मवाचीय गठन के अवशेष देख सकते हैं, लेकिन कर्तृवाचीय गठन ही अधिक प्रचलित है। कर्मवाचीय गठन का एक उदाहरण इस प्रकार है—अपॅना (कर्त्ता 'अपॅने' के स्थान पर विकारी रूप का प्रयोग), यथा—अच्छा भोजन कीन्हेंन–है=आपने अच्छी दावत दी है।

(न० २५)

भारत–आर्य परिवार   मध्यवर्त्ती शाखा

पूर्वी हिन्दी

वघेली वोली   (वघेलखण्ड एजेन्सी—रीवाँ)

नमूना—१

एक मनई–के दुइ लरिका रहैं। तौने–मा छोटकौना अपने वाप–से कहिस दादा धन–मा जौन मोर हीँसा होइ तौन मोहीँ दै देई। तव वा उन–का आपन धन वाँटि दिहिस। वहुत–दिन नहीँ गे–तैं कि छोटकौना लरिका सब एकट्ठा कै–कै परदेस चला–गा औंर उहाँ लुच्चई–मा दिन विताइ–कै आपन धन उड़ाइ दिहिस। जव वा सव कुछ उड़ाइ चुका तव ओंह देस–मा अकाल पड़ा औ वा कगाल होइ–गा औ वा ओंह देस–वालेन मा एक–के इहाँ जाइ–के रहैं लाग वा वो–का अपने खेत–मा सुअर चरायै–का पठइस औ वा उनहिन छेमिन–ते जिनक सुअर खात–रहैं–तैं आपन पेट भरैं चाहत रहा–तैं। औ ओ–का कोऊ कुछू नहीं देत रहा–तै। तव ओ–का चेत भा। औ वा कहिस कि मोरे वाप–के केतने मजूरन–का खाइ–से अधिकहा रोटी होति–है औ मैं भूँखन मरत्यां–हैं। मैं उठि–कै अपने वाप–के लघे जैहौं औ ओ–से कहिहौं कि वाप मै दइउ–के विरुद्ध औ अपना–के सौंहैं पाप किह्यों–है मैं फेर–के अपना–केर लरिका कहामैं माफिक नहीं आहेउँ अपने मजूरन–मा एक–के नाई मोहीं करी। तव वा उठि–कै अपने वाप–के लघे चला। पै वा दूरिन रहा–तैं कि वो–कर वाप वोही देखि–कै दाया कीन्हिस औ दौरि–कै वो–के गरे–मा लपटि–कै वो–का चूमिस। लरिका वो–से कहिस कि वाप मैं दइउ–के विरुद्ध औ अपना–के सौंहैं पाप किह्यों–है अव फेरि–कै अपना–केर लरिका कहामैं जोग नहीं आहेउँ। पै वाप अपने चकरन–से कहिस कि सव–से निकहा कपड़ा

निकास–कैं वो–का पहिरावा औ वो–के हाथ–मा मुंदरी औ गोड़े–मा पनहीं पहिरावा। औ हम खई औ खुसी करी। काहे से कि या मोर लरिका मरि–गा–तैं फेरि–कैं जिया–है। हेराइ–गा–तैं फेरि–कैं मिला–है।

जब उइँ आनन्द करैं लागें तब वो–कर जेठ लरिका खेत–मा रहा–तैं। औ जब वा आवत आवत घर–के लघे पहुँचा तब बाजा और नाच–केर आबाज सुनिस। औ वा अपने चकरन–मा एक–का अपने लघे बोलाइ–कैं पूंछिस कि या का होत–है। वा वो–से कहिस कि अपना–केर भाई आबा है औ अपना–के दाऊ निकहा खाइ–का खाइन–है, काहे–से कि वो–का नीक सूख पाइनि–है। पै वा रिस कीन्हिस औ भीतर न जाव चाहिस। यहँ–से वोकर बाप–बाहेर आइ–कैं वोही मनामैं लाग। वा बाप–का जबाब दिहिस कि देखौ मैं एतने बरिसन–से अपना–केर सेवा करतेउँ–है औ कब–हूँ अपना–केर हुकुम नहीं टारेउँ। औ अपना मोहीं कब–हूँ एक बोकरी भर नहीं दीन कि मैं अपने दोस्तन–के साथ आनन्द करतेउँ। पै अपना–केर या लरिका जौन पतुरियन–के साथ अपना–केर धन खाइ–गा–है जब–हिन आबा तब–हिन वो–के खातिर अपना अच्छा भोजन कीन्हेन–है। बाप वो–से कहिस की बेटा तैं सब दिन मोरे साथ हये औ जौन कुछ मोरे है तौन सब तोर आय। पै आनन्द करब औ खुस होब उचित रहा–तैं काहे–से कि या तोर–भाई मरि–गा–तैं फेरि–कैं जिया–है, हेराइ–गा–तैं फेरि–के मिला–है।

हिन्दी प्रतिरूप

एक मनुष्य के दो लडके थे। उन–मे छोटे–ने अपने पिता से कहा, 'पिता जी ! धन-मे जो मेरा हिस्सा हो, वह मुझे दे दे।' तब उन्हो–ने उन–को अपना धन बाँट दिया। बहुत दिन नही बीते–थे कि छोटा लडका–सब (धन) इकट्ठा कर–के विदेश–को चला गया और वहाँ आवारागर्दी–मे दिन बिता–कर अपना धन बरबाद–कर-दिया। जब उसने सब कुछ उडा–दिया तब उस देश–मे अकाल पडा। और वह कगाल हो गया। और वह उस देश–वालो–मे–से एक–के यहाँ जा–कर रहने–लगा। उस-ने उस–को अपने खेत–मे सुअर चराने–के लिए भेजा। और वह उसी भूसी–से जिसे सुअर खाते थे, अपना पेट भरना चाहता–था। और उस–को कोई कुछ–भी नही देता–था। तब उस–को होश आया। और उस–ने कहा कि, "मेरे पिता–के (यहाँ) कितने मजदूरो–के खाने–से अधिक रोटी होती–है, और मैं भूखो मर–रहा–हूँ। मै उठ–कर अपने पिता–के निकट जाऊँगा और उन–से कहूँगा कि पिता जी ! मैंने ईश्वर के विरुद्ध और आपके सामने पाप किया–है। मैं अब आप–का लडका कहलाने योग्य नही हूँ। अपने मजदूरो–मे-से एक–की तरह मुझे मानिए।' तब वह उठ–कर अपने पिता–के निकट चला। पर

वह दूर-ही था कि उस-के पिता-को, उसे देख-कर, तरस आया और उन्होंने दौड़-कर उस-के गले-से लिपट-कर उसे चूमा। लडके-ने उस-से कहा कि, 'पिता जी! मैंने ईश्वर-के विरुद्ध और आप-के सामने अपराध किया है, अब फिर-से आपका पुत्र कहलाने योग्य नही हूँ।' पर पिता-ने अपने नौकरो से कहा कि, सब-से अच्छे कपड़े निकाल-कर उस-को पहनाओ, और उस-के हाथ मे अँगूठी और पैरो मे जूते पहिनाओ और हम-लोग खायें और खुशी मनाये, क्योकि यह मेरा लडका मर गया था फिर-से जीवित हुआ है; खो-गया-था, फिर-से मिला है।"

जिस समय वे आनन्द मनाने लगे-थे उस समय उसका जेठा लडका खेत-मे था। और जब वह आते-आते घर-के निकट पहुँचा तब गाने-बजाने की आवाज सुनाई दी। और उस-ने अपने नौकरो-मे-से एक को अपने निकट बुला-कर पूछा कि 'यह क्या हो-रहा है?' उस-ने उस-से कहा कि 'आप-का भाई आया-है और आप-के पिता-ने दी-है क्योकि उसे भला-चगा पाया है।' पर उस-ने (बडे लडके-ने) क्रोध किया और अच्छी दावत भीतर न जाना चाहा। तब उस-के पिता-ने बाहर आकर उसे मनाना शुरु-किया। उस-ने पिता-को उत्तर दिया कि 'देखिए मैं इतने वर्षो-से आपकी सेवा कर रहा हूँ और कभी आपकी आज्ञा नही टाली, फिर-भी आप-ने मुझे कभी एक बकरी-का-बच्चा भी नही दिया कि मैं अपने दोस्तो-के-साथ आनन्द-करता। पर आप-का यह लडका जिस-ने वेश्याओ-के-साथ अपना धन खा-डाला-है, (वह) जैसे-ही आया, वैसे-ही उस-के लिए आप-ने अच्छा भोजन बनवाया-है।' पिता-ने उस-से कहा कि 'बेटा! तू हमेशा मेरे साथ रहता-है और जो-कुछ मेरा है, वह सब तेरा है। पर आनन्द करना और खुश होना उचित था, क्यो कि यह तेरा भाई मर-गया-था, फिर-से जीवित हुआ-है, खो-गया था, फिर-से मिला है।'

(न० २६)

भारत-आर्य परिवार मध्यवर्त्ती शाखा

पूर्वी हिन्दी

बघेली बोली (बघेलखण्ड एजेन्सी-रीवाँ)

नमूना—२

हम पाँचन[1]- मा आपुस-मा जिमी-जाघा खातिर लड़ाई होइ-गै-तै। पहिले सब भाई साझे-मा रहे-हैं पुन निनार होइ-गे। पहिले बहुत लड़ाई रही-हे, पै

१. पाँचन शब्द, पाँच का विकारी बहुवचन रूप है जो कि यहाँ 'समूह' का द्योतक है—हम सब।

अब सब मुकदमा पट–पटाइ–गे। अब वैसन–मा कौनी लड़ाई नहीं आय। पै अब–हूँ पहिलेन–की लडाई–के मारे नीक–के बोल–चाल नहीं आइ। औ तब–हिन–से आपुस–का खाओ पियब छूट–है। जाघा काहे अर्जी दिहिन–रहै पै गमी परि–गै। तौने–ते न पहुँचे ता मुकदमा खारिज होइ–गा। पट्टी–मा पाँच छ जने पट्टीदार रहैं–हैं। उइँ मर–गे और उन–कर जाघा सरकार–मा जप्त होइ–गै। अब हमार दुइ जने भाई–कै पट्टी रहि–गै–है।

हिन्दी प्रतिरूप

हम पाँचों–मे आपस–मे जमीन–के कारण लडाई हो–गई–थी। पहिले सभी भाई साथ–मे रहते–थे, फिर अलग–हो–गये। परन्तु अब सब मुकदमे सुलझ गये और अब वैसे कोई झगडा नही है। पर अभी पहिले–की लडाई–के कारण अच्छी–तरह बोल–चाल नही है और तभी–से आपस–का खाना–पीना–भी छूटा–हुआ–है। जमीन–के लिए अर्ज़ी दी–थी पर (घर मे) निधन हो गया। इस कारण–से न पहुँच सके, तब मुकदमा खारिज–हो–गया। जमीन–मे पाँच–छै लोग हिस्सेदार–थे। वे मर गये और उन–की जमीन सरकार–मे जब्त हो गयी। अब हम–दो भाइयो–का हिस्सा रह–गया–है।

मिर्ज़ापुर ज़िले के सोन-पार वाले भू-प्रदेश की बोली का एक छोटा-सा नमूना देना ही यहाँ पर्याप्त होगा। इस बोली की एकमात्र विशेषता यह है कि यह कभी-कभी ज़िले के केन्द्र-भाग मे बोली जाने वाली 'पश्चिमी भोजपुरी' से शब्द तथा वाक्यांश उधार ले लेती है। जैसे नमूने मे का 'भइल' बघेली का नही पश्चिमी भोजपुरी का है। इसी प्रकार भविष्यत् 'जाब'=मैं जाऊँगा, 'कहब'=मैं कहूँगा, पश्चिमी भोजपुरी से उधार लिये गये हैं, और इस प्रकार उक्त नमूना 'अवधी' का प्रतिभासित होने लगता है, क्योंकि अवधी मे भी भविष्यत् की रचना-ब से होती है।

(न० २७)

भारत आर्य–परिवार — मध्यवर्त्ती शाखा

पूर्वी हिन्दी

बघेली बोली — (मिर्जापुर जिले का सोन–पार–प्रदेश)

एक आदमी–के दो बेटा रहे। और छोटा बेटा बाप–से कहिस, 'दौआ, चीज–बतुस–में जवन मोर बखरा होय, बाँट दे।' तब वह आपन जिउका–का दोनो जन–के बाँट दिहिस। थोरे दिन भइल–होई की छोटा छोंड़ा सब जोर–बटोर–के ले–के दूर देस–में चल–गइस; और कुल–ही पूंजी गुंडई–मे उड़ाइ–दिहिस। और जब सब उड़ाइ–चुकल तब वोह देस–में बड़ा भारी अकाल पडिस। तब वह–का जरूरत भइस। तब वह

देस–के इक जन थान गइस। वह तव आपन खेत–मँ सूअर चरावें–के कइ–दिहिस। और भूसौ–से आपन पेट भरे–के राजी रहिस जवन सूअर खात–रहे। और ओह–का कोई नाहीं दिहिस। और जव ओ–कर जी ठिकाने भइस, तव कहिस, ‘हमरे दाऊ–के नोकर कितने हइहैं जिन–का रोटी भर–पेट मिलत–हइस और वच–रहत–हइस; और मैं भूखन मरत हूँ। आपन दाऊ–के पास चलल–जाव और कहव कि, “दाऊ, मोह–से वड़ा कसूर भगवान–के निअरे और तोर निअरे भइस। और मैं तोर वेटा कहवे लायक नाहीं वड़ियां। अपने नोकरन–की नाईं मोहूँ–के रख–ले।”

हिन्दी प्रतिरूप

एक आदमी के दो लडके थे। छोटे लडके–ने पिता–से कहा, ‘पिता जी, जायदाद-मे जो मेरा हिस्सा–हो, वाँट दीजिए।’ तव उस–ने अपनी जायदाद दोनो भाइयो–मे वाट दी। कुछ दिन हुए–होगे कि छोटा लडका सव (हिस्सा) इकट्ठा कर–के, ले–कर विदेश चला-गया और (उस–ने) कुल सम्पत्ति गुण्डा–गर्दी मे उडा दी। और जव सव उडा–चुका तव उस देश–मे वडा भारी अकाल पड़ा। तव उस-को (धन-की) आवश्यकता पडी। तव वह देश–के एक व्यक्ति–के यहाँ गया। उस–ने तव अपने खेतो–मे सुअर चराने के–लिए कह दिया और भूसी–से अपना पेट भरने–के लिये प्रसन्न था, जो सुअर खाया करते–थे परन्तु (वहभी) उसको किसी–ने नही दी। और जव उसे होश आया तव उसने कहा, ‘हमारे पिता–के यहाँ कितने नौकर है जिनको रोटी भरपेट मिलती-है और (फिर भी) वच रहती–है। और मैं (यहाँ) भूखो मर–रहा–हूँ। अपने पिता–के पास चलूँगा और कहूँगा कि पिता जी ! मुझसे वडा अपराव भगवान–के निकट और आप–के निकट हुआ-है। और मैं आप–का पुत्र कहलाने योग्य नही वना। अपने नौकरो–की तरह मुझे भी रख–लो।”

पश्चिम की विश्रृंखल बोलियाँ

बघेली के निकट पश्चिम मे बोली जाने वाली भाषा 'बुन्देली' है , लेकिन इन दोनो भाषाओं के मध्य मे अन्यान्य सीमावर्त्तिनी बोलियाँ है जो दोनो के मिश्रण से बनी हैं। ये बोलियाँ, अवधी, साथ ही साथ, बघेली—दोनो के पश्चिम मे ठहरती है, पर प्रथम की अपेक्षा ये द्वितीय के अधिक निकट है। इन मे भविष्यत् काल का-ब न मिलकर -ह मिलता है और कही-कही तो बघेली का निजी प्रत्यय-तै भी दिखायी दे जाता है। इन मे पूर्वी हिन्दी की एक विशेषता अत्यधिक स्पष्ट है—'ओ' के स्थान पर 'वा', 'ऐ' के स्थान पर 'य' तथा 'ए' के लिए 'या'। इस प्रवृत्ति की बहुतायत—जैसा कि पहले कहा जा चुका है, अवधी तथा बघेली, दोनो मे ही है, पर वहाँ भी यह इस सीमा तक प्रचलित नही है, जितनी इन पश्चिमी विश्रृंखल बोलियो मे है । यहाँ यह बात आगे के लिए भी कह दी गयी है। विश्रृखल बोलियो की चर्चा करते हुए इसके प्रत्येक प्रयोग की ओर ध्यान आकृष्ट करने का मैं प्रयत्न नही करूँगा।

तिर्हारी

यमुना नदी के दोनो किनारो अर्थात् तीरो—उत्तरी तीर पर फतेहपुर एव कानपुर तथा दक्षिणी तीर पर बाँदा, हमीरपुर एव जालौन—पर स्थित पाँचो ज़िलो की भाषा का नाम 'तिर्हारी' लिखकर भेजा गया है। जैसा कि नाम से स्पष्ट है, यह केवल नदी के तीर-तीर ही बोली जाती है । उपर्युक्त सभी ज़िलो से यह 'बुन्देली की बोली' लिखकर आयी है, परन्तु यह तो एक त्रुटिपूर्ण कथन है । वस्तुत तथ्य तो यह है कि यह किसी भी एक बोली का नाम नही है अपितु स्थान-भेद के अनुसार यह तीन नितान्त भिन्न बोलियो का प्रतिनिधित्व करता है। जालौन मे, तिरहारी कही जाने वाली बोली विशुद्ध बुन्देली है। कानपुर मे, यह अवधी से थोडी मात्रा मे मिश्रित कनौजी है , जब कि फतेहपुर, बाँदा तथा हमीरपुर मे, यह बुन्देली-मिश्रित बघेली है । और यह मिश्रण जैसे-जैसे हम पश्चिम की ओर बढते जायेगे, अधिक होता जायगा। इस नाम का विशुद्ध प्रतिलेखन 'तिरहारी' होना चाहिये परन्तु मैं अधिक प्रचलित एव सुविधापूर्ण होने के कारण 'तिर्हारी' लिख रहा हूँ ।[1]

जालौन के तिर्हारी का विवरण हम बुन्देली-अध्ययन के साथ प्रस्तुत करेंगे और

---

१. यहाँ लेखक रोमन लिपि की सुविधा की दृष्टि से ऐसा कर रहा है। अनु०

कानपुर की तिर्‌हारी 'कनौजी' शीर्षक के अन्तर्गत मिल सकेगी। यहाँ हम केवल इसके उन अन्य रूपो की चर्चा करेंगे जो शेष तीनो जिलो मे मिल रहे है।

वघेली तिर्‌हारी वोलने वालो की प्राप्त सख्या निम्न प्रकार है :—

फतेहपुर	१,९७,७००
वाँदा	२५,०००
हमीरपुर	३,०००
योग	२२५,७००

हम वाँदा-तिर्‌हारी से प्रारभ कर रहे हैं। नमूना उडाऊ पूत-कथा का एक रूपान्तर है। प्रथम वाक्य मे ही हमे वर्तिनी की उस विशेषता का एक उदाहरण मिल रहा है जिसकी चर्चा अभी-अभी की जा चुकी है, देखिए—गदेल (=पुत्र) के लिए, गद्याल शब्द मे। क्रिया-रूप-रचना अवधी की ही भाँति है और उसी प्रकार सज्ञा-रूप-रचना भी; केवल एक प्रमुख तथ्य को छोड कर, वह यह, कि भूतकाल की सकर्मक क्रियाओ का अभिकर्त्ता पश्चिमी तथा वुन्देली परसर्ग 'ने' के साथ प्रयुक्त होता है। यह उन क्रियाओ के साथ भी सभव है जिनकी रूप-रचना अवधी-व्याकरण की तरह है अर्थात् आजकल भी, जिनमे कर्मवाचीय नही अपितु कर्तृवाचीय गठन का प्रचलन सामान्य है। जैसे कि नमूने के तृतीय वाक्य मे—मडै-ने वाँटि दिहिस—मनुष्य ने वाँट दिया, शाब्दिक रूप मे—मनुष्य के द्वारा वाँटा गया। इसी प्रकार वहुत-से अन्य स्थानो मे भी। यदा-कदा, जैसे कि वापैं, वपवैं, मे—अभिकर्ता-कारक का रूप 'ने' प्रत्यय को न लेकर विकारी कारक की विभक्ति-ऐं अथवा-ऐं को ही लेकर प्रयुक्त हुआ है। यह प्रवृत्ति स्थान-विशेष की प्राचीन प्राकृत वोली का एक सुंदर अवशेष-चिह्न है।

(न० २८)

भारत–आर्य परिवार — मध्यवर्त्ती शाखा

पूर्वी हिन्दी

वघेली (तिरहारी विशृंखलित) वोली — (वाँदा जिला)

कौनेऊँ मड़ई—के दुइ गद्याल रहैं। उन अपने वाप—तन कहिन कि अरे मोरे वाप तैं हमरे हीसिन—का माल—टाल हमैं वाँटि दे। तव मड़ै—ने आपन सव लैया—पुँजिया द्वानौं गद्यालन—का वाँटि दिहिस। कुछ दिन वीते छोटे गद्याले आपन सव माल—टाल जमा किहिस। औ लै—कै वड़ी दूरी विदेसै निकरि गवा। हुन आपन सव रुपया पैसा गुंडई—माँ उडाय डारिस। जवै सव लैया पुंजिया लाय गै तव उई देसवा—माँ वड़ा भारी काल पडा। तव उही रोज रोज—कै खरिच खरावा—कै दिक्कत होनि लाग। तव वो

वहि देसवा–के एक रहीस महाजन–के लगे गवा। औ जाय वहि–तैं भेंट भलाई किहिसि। वहीं वहीं आपने ख्यातन–माँ सुवरन–के चरावैं–के बरे पठवाइस। वो वही भूसी खाय निवाह करतै जिहौ सूवर खात–रहैं। पै कौनेउँ मड़े–ने वही वही न खाँय दिहिस। जव वही होस भा तब अपने मन–माँ कहिसि कि दिख–ले मोरे बाप–के बहुत–से नौकरिहन–का इतना मिलत–है कि उइ अच्छी तहन प्याट–भर खाति हैं औ कुछ बचाय ल्यात–हैं। हाय बाप रे मैं भूखन–मरत–हौं। अब हिन–ते अपने बाप–के–लगे जै–हौं और वहि–ते कहिहौं कि ओ मोरे काका मैं नरायन–के उलटे औ तोरे सौंघे अपराध किह्यूँ। औ मैं यहि लायक नहीं आह्यूँ कि त्वार गद्याल बाजौं। मोहीं अपने और मजूरन की तरह राखि ल्याव। यहि–के पाछे वो उठा औ अपने बपवा–के लगे आवा। पै अबे वो अपने बपवा–के लगे न पहुँचा–रहै कि वहि–के बापैं दूरी–तैं दीखिस औ मारे म्वाह–के दौरा औ बिटौना–के गरे–माँ छिपट–गा। और वही चूमिस। गद्याले कहिसि कि ओ मोरे काका मैं नरायन–के उलटे औ तोरी आँखिन–के सौंघे अपराध किह्यूँ औ यहि लायक नहिं आह्यूँ कि त्वार बेटवा कहाउँ। पै बपवै अपने नौकरिहन–का हुकुम दिहिस कि सव–ते नीक उडिना लाय यही पहिरावो औ यहि–की अँगुरी–में मुंदरी पहिराओ औ गोडेन–माँ पनहीं पहिराओ। औ मोहीं खाँय औ खुसी करैं द्यव। कहे–ते–कि यो म्वार गद्याल फिर–कै जिया–है यो हिराय गा–रहै तौन पुनि कै मिला–है। औ उइ वापौ बिटवा खुसी करैं लाग।

यहि जून वहि–कर बड़कौना गद्याल ख्यात–माँ रहै। जब वह पुनि घर–के लगे आवा तबै वहि–के कानेन–माँ नाचैं गावैं—कै आवाज परी। वही नौकरन–ते याक–का बुलाइस औ पूंछेसि कि यहि–कर का कारन है। नौकर वैं कहीं कि त्वार छुटकौना भैवा आवा–है। औ तोरे बपवै उहि–के अच्छी तहन लौटि आवैं–के कारन सव–का न्यूत किहिसि–है। वडकौना भैवा यही वात–पर रिसहाय उठा औ घरवा–के भीतरै नाहीं जात–रहै। तब वहि–कर बपवा वहिरे आवा औ वहुत मनाइस औ फुसलाइस। औ वड़कौना विटवै कहेसि कि देखि–ले इतने दिनन मैं तोरि टहल किह्यूँ औ तोरे हुकुम–के बाहिर कब्बैं नहीं हो त्यूं तैं मोहीं कतौं इतनिओ मदत नहीं दिहे कि मैं अपने साथिन–के सँघै खुसी करत्यूँ। पै जैसे या त्वार छुटकौना बिटवा आवा जिहीं त्वार सब माल–टाल गुंडई–माँ लाय डारिस, तैं न्यूत किहे। बपवै कही ओ मोरे बिटवा तैं सब दिन मोरे साथ रहा आव औ सब जौन म्वार है मानौं त्वारै आय। यहै उचित रहै कि हम न्यूत करन औ खुस ह्वान काहे कि यो त्वार भाई आय। मरि–कै जिया–है। हिराय–गा–रहै तौन पुनि कै मिला–है।

हिन्दी प्रतिरूप

किसी आदमी–के दो लडके थे। उन्होने अपने पिता–से कहा कि, ओ मेरे पिता!

तू हमारे हिस्सो–की जायदाद हम–को वाँट दे । तव (उस) आदमी–ने अपनी सव जायदाद दोनो लडको–को वाँट दी। कुछ दिन वीतने–पर छोटे लडके–ने अपनी सव जायदाद जमा–की और लेकर वहुत दूर देश–को चला–गया। वहाँ अपना सव रुपिया–पैसा गुडा–गर्दी मे उड़ा डाला। जव सव रुपया–पैसा फुँक गया तव उस देश मे वडा भारी अकाल पडा। तव उसे दिन–प्रतिदिन के खरच की भी परेशानी होने–लगी। तव वह उस देश के एक वनी–मानी आदमी के यहाँ गया और जाकर उस-से मुलाकात–की। उस–ने उस-को अपने खेतो–मे सुअरो–को चराने–के लिए भेजा। वह उसी भूसी–को खाकर निर्वाह करता जिसे सुअर खाया करते–थे ; पर किसी आदमी–ने उसे वह–भी खाने–को नही दिया। जव उसे ध्यान आया तव (उस–ने) अपने मन–में सोचा कि, देखो–तो! मेरे पिता के वहुत–से नौकरो–को इतना मिलता है कि वे अच्छी तरह पेट–भर खाते–है और कुछ वचा लेते–हैं। खेद है! ओ पिता! मैं भूखो मरता–हूँ। अव यहाँ–से अपने पिता–के यहाँ जाऊँगा और उस–से कहूँगा कि, ओ! मेरे पिता जी!! मैंने ईश्वर के विपरीत और तुम्हारे सामने अपराध किया है ; और–मैं इस योग्य नही हूँ कि तुम्हारा पुत्र कहलाऊँ। मुझे अपने अन्य नौकरो–की तरह रख–लो।'' ऐसा सोचकर, वह उठा और अपने पिता–के यहाँ आया। पर अभी वह अपने पिता–के यहाँ न पहुँच–पाया–था कि उसके पिता–ने (उसे) दूर–से देखा और मोह–वश दौडा और लडके–के गले–से लग–गया और उसे चूमा। लडके–ने कहा कि, 'ओ मेरे पिता! मैं-ने ईश्वर के विरुद्ध और तुम्हारी आँखो–के सामने अपराव किया–है और इस योग्य नही हूँ कि तुम्हारा पुत्र कहलाऊँ।' पर पिता–ने अपने नौकरो को आज्ञा–दी कि सव–से अच्छे कपडे लाकर इसे पहिनाओ। और इस–की अँगुली–मे अँगूठी पहिनाओ, और पैरो–मे जूते पहिनाओ। और मुझे खाने और खुशी मनाने दो, क्योंकि यह मेरा पुत्र फिर–से जिन्दा हुआ–है, यह जो खो–गया–था, फिर–से मिला–है।' और वे वाप–वेटा आनन्द मनाने लगे।

इस समय उस–का वडा लडका खेत–मे था। जव वह घर–के निकट आया, तव उस–के कानो–मे नाचने–गाने–की आवाज पड़ी। उस–ने नौकरो–मे–से एक–को वुलाया और पूँछा कि 'इस–का क्या कारण है ?' नौकर–ने उस–से कहा कि, तुम्हारा छोटा भाई आया–है, और तुम्हारे पिता–ने उसकी–अच्छी–प्रकार लौट आने–के कारण सव-को दावत की है।' वडा भाई इस वात पर गुस्सा–हो–गया और घर-के भीतर न जा रहा–था। तव उस–का पिता वाहर आया और वहुत मनाया और फुसलाया। और वडे लड़के–ने कहा कि, देखो–तो! इतने दिनो मैंने आपकी सेवा–की और आपकी आज्ञा के वाहर कभी भी नही गया, आप-ने मुझे कभी इतनी सहायता नही दी कि मैं अपने साथियो-के साथ आनन्द मनाता। पर, जैसे ही, यह, तुम्हारा छोटा लडका आया जिसने आपकी सव

जायदाद गुडा—गर्दी—मे फूँक डाली, आपने दावत दी।' पिता—ने कहा, "मेरे पुत्र! तू सदैव मेरे साथ रह और सब जो मेरा है, तेरा—ही है। यह—ही उचित था कि न्योता देते और खुश होते क्योकि यह तुम्हारा भाई है, मर-कर जिन्दा हुआ—है, खो—गया—था अब फिर मिला—है।"

फतेहपुर ज़िला यमुना नदी के उत्तरी किनारे पर स्थित है। यहाँ बोली जाने वाली तिरहारी बाँदा-तिरहारी से पर्याप्त साम्य रखती है। उल्लेखनीय अन्तर केवल इतना है कि भूतकालिक सकर्मक क्रियाओ के साथ अभिकर्त्ता कारक (Agentive Case) का प्रयोग—ने परसर्ग—युक्त नही होता। यहाँ भी हम—हविष्यत् पाते है। वर्तनी की बहुचर्चित विशेषता का एक उदाहरण हम नमूने के दूसरे वाक्य मे से उद्धृत कर सकते हैं, जैसे 'कहेसि' के स्थान पर 'कह्यसि'=उसने कहा। आवश्यक नही है कि इस बोली का समूचा नमूना यहाँ दिया जाय। उडाऊ पूत कथा का एक अश-मात्र पर्याप्त होगा। विकारी रूप 'परद्यासै' पर ध्यान दीजिए।

(न० २९)

भारत—आर्य परिवार **मध्यवर्त्ती शाखा**

पूर्वी हिन्दी

बघेली (विश्रृंखल तिरहारी) बोली **(जिला फतेहपुर)**

याक मणई—के दुइ बेटवा रहैं। उन—माँ लहुरवा बेटवा अपने बाप—ते कह्यसि, जौन स्वार हीसा होय तौन बाँटि द्याव। औ थोरे दिनन—माँ लहुरवा बेटवा आपनि सब जमा बटुरियाय—कै दूरी परद्यासै चला गवा औ ह्वाँ आपन सब जमा कुचाल—माँ बहाय दिहिसि। औ जबै सब चुकि गा वहि द्यास—माँ बड़ा दुर—दिन परा औ जम्मै कुगाल होइ चला। तबै वा द्यास—के याक भागमान के ह्याँ रहै—लाग। तब वह अपने स्यातन-माँ स्वार ताकै पठइस औ वह चाहत—रहै कि उन वोकलन—ते जो स्वार खात—हैं आपन पेट भरै। वहौ न कोऊ द्यात—रहै। तब चेति—कै कहिसि कि मोरे बाप—के ह्याँ मँजूरन-का बहुत रोटी है औ मै भूखन मरत—हौं। अब मैं अपने वाप—के ह्याँ जैहौं औ वहि-ते कैहौं कि दादा, मैं दयू—का औ त्वार अपराध किह्यौं अब मै यहि लायक नहीं अहिउँ कि त्वार लरिका होउँ। जस और मँजूर हैं तस म—हूँ—का राखु।

हिन्दी प्रतिरूप

एक मनुष्य—के दो लडके थे। उन-मे-से छोटे लडके-ने अपने पिता-से कहा, (कि) 'जो मेरा हिस्सा हो वह बाँट दो'। और थोडे दिनो—मे छोटा लडका अपनी सब जायदाद एकत्र करके दूर विदेश—मे चला गया और वहाँ अपना सब धन बुरी आदतो मे नष्ट—कर-

दिया। और जब सब समाप्त हो—गया, उस देश—मे बडा अकाल पडा और वह बिल्कुल कगाल हो—गया । तभी वह (उस) देश—के एक धनी—के यहाँ रहने लगा । तब उस—ने (उसे) अपने खेतो -मे सुअर चराने—के लिए भेजा । और वह चाहता—था कि उस भूसी—से, जो सुअर खाते हैं, अपना पेट भरे। वह—भी कोई न देता—था। तब होश—आने पर कहा कि, 'मेरे पिता—के यहाँ नौकरो—को बहुत रोटी (=खाना) मिलती—है। और मैं भूखो मर—रहा हूँ। अब मैं अपने पिता—के यहाँ जाऊँगा और उस-से कहूँगा कि,"पिता जी! मैंने ईश्वर—का और तुम्हारा अपराध किया-है। अब मैं इस योग्य नही हूँ कि तुम्हारा लडका कहलाऊँ। जैसे अन्य नौकर हैं, वैसे मुझ—को भी रख-लीजिए।"

हमीरपुर जिला, बाँदा जिला के पश्चिम, साथ ही, यमुना नदी के दक्षिण मे स्थित है। यहाँ की तिरहारी, जैसा कि अनुमान किया जा सकता है, अन्य दो जिलो की अपेक्षा जिसके नमूने अभी ऊपर दिये जा चुके हैं, बुन्देली से अत्यधिक मिश्रित है। यही कारण है कि हम यहाँ बघेली की वह भूतकालिक क्रिया-पद-रचना ही नही पाते जिसमे अभिकर्त्ता (Agentive Case) परसर्ग—ने के साथ प्रयुक्त होता है; बल्कि ऐसे स्थानो पर तो हमे बुन्देली की यथारूप क्रिया-पद-रचना मिल जाती है। वस्तुत हमीरपुर मे, क्रिया वक्ता की मन स्थिति के आधार पर बघेली अथवा बुन्देली का रूप ग्रहण कर लेती है। निम्नांकित नमूने के दूसरे वाक्य मे बघेली-रूप का उदाहरण इस प्रकार है—छुटँकवा-ने कहिस=छोटे ने कहा। दूसरी ओर, हम बुन्देली के भी निम्न रूप पाते हैं—यथा—वह-ने बाँट दीन=उसने बाँट दिया, चलो=वह गया, तथा जिन्ह-ने पठओ=जिन्होंने भेजा ।

नमूने के रूप मे 'उडाऊ पूत-कथा' के कतिपय वाक्य पर्याप्त होगे —

(नं० ३०)

भारत—आर्य परिवार — मध्यवर्त्ती शाखा

पूर्वी हिन्दी

बघेली (तिरहारी विश्रृंखल) बोली (जिला हमीरपुर)

उइ मनई—के दुइ लाला रहैं। उई—माँ—ते छुटका—ने दादा—से कहिस कि बापू धन—माँ—से जो मोर होइ सो मुँह—का दै दवा । वह—ने वह—का आपन धन बाँट दीन। बहुत दिन न गैं—रहैं कि लहुरवा लाला बहुत कुछ जोर—कै परदेस चलो—गा । हुवाँ लुच्चपन—माँ दिन खोय दीन्हिस, आपन धन उड़ाइ दीन्हिस। जब सब कुछ उड़—गा तब उई देस—माँ बड़ा अकाल परो । तब वा कंगाल हुइ—गा । वा जा—कै उई देस—के रहइयन—माँ—से एक—के घरै रहैं लगा जिह—ने वहै अपने खितवन—माँ सुवर चरावै—

का पठओ। और उन छीहाँ–से जिन्है सुवर खात–रहैं आपन पेट भरैं चाहिस । और कोऊ नहीं वह–का कुछ देत–आइ।

हिन्दी प्रतिरूप

उस मनुष्य-के दो लडके थे। उन-मे-से छोटे-ने पिता-से कहा कि पिता जी! घन-मे-से जो मेरा (हिस्सा) हो वह मुझ-को दे-दीजिए। उसने उस-को अपना घन वाँट दिया। वहुत दिन नही वीते थे कि छोटा लडका वहुत कुछ इकट्ठा कर-के विदेश चला गया। वहाँ गुडा-गर्दी-मे दिन व्यतीत-किए (और) अपना घन नष्ट-कर-दिया। जब सब कुछ नष्ट हो-गया, उस देश मे वडा अकाल पडा। तव वह कगाल हो-गया। वह जा-कर उस देश-के रहने वालो-मे-से एक-के घर रहने लगा जिसने उसे अपने खेतों में सुअर चराने-के लिए भेजा। और (वह) उन छिलको-से जिन्हे सुअर खाते-थे, अपना पेट भरना चाहता था। और कोई-भी उसे कुछ नही देता-था।

बाँदा ज़िले की बोलियाँ तथा हमीरपुर की बनाफरी

'इम्पीरियल गजेटियर ऑव इण्डिया' के अनुसार बाँदा तथा हमीरपुर के ज़िले 'बुन्देलखण्ड' नामक भू-प्रदेश के अन्तर्गत आते है। इन दोनों ज़िलो मे बोली जाने वाली भाषा-इकाइयाँ आज तक की बहुप्रचलित धारणा के अनुसार 'एक ही भाषा के विविध रूपान्तर हैं जिन्हे 'बुन्देलखण्डी' अथवा 'बुन्देली' कहा जाता है। इस सर्वेक्षण के लिए भी ये बोलियाँ स्थानीय अधिकारियो द्वारा इसी रूप मे उल्लिखित होकर आयी हैं और 'ज़िला गजेटियर' मे इसी नाम से इनका विवरण दिया गया है।[1] बाँदा से प्राप्त नमूनों के परीक्षण से भी स्पष्ट हो जाता है कि जिले मे बोली जाने वाली प्रत्येक बोली स्थानीय तिरहारी की तरह निस्सन्देह बघेली का ही एक रूपान्तर है जो बुन्देली के बोलचाल के रूपो से मिश्रित है। यह बात कालिंजर के निकट ज़िले के दक्षिण पश्चिम मे बोली जाने वाली बोली पर भी लागू होती है, इसे भी उस स्थान मे सामान्यत 'बुन्देलखण्डी' के रूप मे ही जाना जाता है। ऐसी ही स्थिति बनाफरी बोली की भी है जो हमीरपुर जिले के दक्षिण-पूर्व मे बोली जाती है।

पहिला नमूना जो मैं यहाँ दे रहा हूँ, 'उडाऊपूत कथा' का एक रूपान्तर है। यह कालिंजर के निकट २,३६,२०० व्यक्तियो द्वारा बोली जाने वाली तथाकथित बुन्देली का है। इस पर नजर फेकने से ही स्पष्ट हो जाएगा कि यह बुन्देली नही अपितु पूर्वी हिन्दी है। कहिस, दिहिस, कीन्हिस तथा और भी बहुत-से शब्द बुन्देली के नही है। वे विशुद्ध पूर्वी हिन्दी के हैं। इतना ही नही, यह बोली, तिरहारी से भी कही अधिक बघेली है। यहाँ न केवल–हूँ भविष्यत् है बल्कि बघेली का प्रतिनिधि क्रिया-प्रत्यय –तैं भी मिलता है यथा—मर–गा–तैं = (वह) मर गया है, तथा चलत–आवत–तैं = (वह) आ रहा था। यहाँ यह प्रत्यय स्पष्टत हिन्दी 'था' का समानार्थी है और यह तथ्य जैसा कि अन्यत्र कहा जा चुका है, यदा-कदा बघेली मे भी देखा जा सकता है और इस प्रकार यह हमे अपने बीच तथा इसी अर्थ मे प्रयुक्त बुन्देली–तो, –ते (वहु०) दोनों का परस्पर-सम्बन्ध प्रकट करता है।

---

१. ज़िला गजेटियर' के पृष्ठ १०४ में तथाकथित बांदा की बुन्देली की एक शब्द-सूची तथा कुछ व्याकरणिक रूप मिल जायेंगे।

नमूने मे, तिरहारी की तरह अनेक बुन्देली-रूप बिखरे पडे है, जैसे कि—ओह्-ने पऽवा = (उसने) भेजा, उठो = (वह) उठा, लरॅका-ने वहि-से कहा = लडके-ने उस-से कहा, वाप-ने निउता कीन-है = पिता-ने न्यौता किया-है; आओ = (वह) आया। यह ध्यान देने योग्य है कि जब-ने युक्त अभिकर्त्ता कारक प्रयोग मे आता है तव पूर्वी हिन्दी का-इस विभक्ति वाला भूतकालिक रूप नियमतः प्रयोग मे नही आता।

(न० ३१)

भारत-आर्य परिवार मध्यवर्त्ती शाखा

पूर्वी हिन्दी

बघेली (तथाकथित बुन्देली) बोली जिला बाँदा

एक मडई-के दुइ लरका रहैं। छ्वाट लरका अपने वाप-से कहिस कि वाप तैं मोरे हीसा-का माल मुंहीं दे दे। तव व आपन माल उन दुनहुन लरकन-का बाँट दिहिस। बहुत दिन-माँ छ्वाट लरका आपन बहुत धन पूंजी इकट्ठा कीन्हिस औ बहुत दूरी दूसरे मुलुक-माँ चलो-गा औ ह्वाँ आपन बहुत धन फैल-सूपी-माँ उडाइस। औ जब वा आपन वहुत धन खरिच कर डारिस तव वा देस-माँ बड़ा अकाल परा औ वा माँगै लाग। औ वा-देस-के एक रहीस-के पास जाय-कै टिका। ओह्-ने वह-का खेतन-माँ सुअरी चरावैं-का पठवा। जित्ते सूअर चरत-रहैं उन-हिन-से वा चाहत-रहै कि उन-के छिलका-से म-हूँ आपन पेट भर लेओ-करौं। पै कोऊ मड़ई वही कुछ न द्यात-रहै। और जबै वह-का आपन सुरता आई तबै कहिस कि मोरे वाप-के कितन्यौ चाकर अस हैं जौन प्याट भर खात-हैं अउ मै भूखिन मरत-हौं। मै अपने वाप-के पास जैहौं अउ वह-से कहिहौं कि बाप मैं परमेसुर-कौ-वे-मरजी-के किहे-हौं अउ अव मैं तोरे साम्हूँ रहैं लायक निआहूँ कि त्वार लरका कहाउँ। मुंह-का आपन नउकर कर-ले। वा उठो अउ अपने बाप-के ह्याँ-का चल दिहिस। जब वा अपने घर-के थोरी दूर पहुँचा तव वह-का बाप मिला अउ दया कर-कै दौर-कै वह-का अपने गरे-माँ लगाय लिहिस और वह-का एचकारिस। तव लरका-ने वहि-से कहा कि बाप मैं परमेसुर-के वे-मरजी पाप कोन्ह्याँ-हैं और तोरे साम्हूँ अब मै या तरन-का निआहूँ कि त्वार लरका कहाउँ। पै वह-के बाप-ने अपने नौकर-से कहा कि नीक नीक ओढना लै आव औ यह-का पहिराव और येह-के हाथ-माँ मुंदरी पहिराय दे और येह-के पाँव-माँ जूता पहिराय-दे। चला खई पी और खुसी मनई काहे-से कि म्वार लरका मरगा-तै औ खोय-गा-तै तौन अव फिर मिला-है औ फिर जी उठा-है तव सव जने खुसी करैं लाग।

वही बीच-माँ वह-का बडा लरका खेतन-से चला आवत-तै। वोह्-ने गावैं-

बजावैं कै अवाज सुनी औ एक नौकर का बुलाय-कै पूंछिस कि का हुइ रहा-है। नौकर कहा कि त्वार भाई आवा-है और तोरे बाप-ने निउता कीन-है काहे कि वा अच्छौ तरन-से आय-गा-है। बड़ा लरका या सुन-कै रिसान कि मैं घरे न जैहौं। तब वह-का बाप घर-से निकर आवा और वह-कै खुसामत किहिस। तब वा अपने बाप-से जवाब दीन्हिस कि देख मैं बरिस दिन-से तोर सेवा करत-रह्यों और तोर कहा मानत रह्यों। इतन्यौ पर तैं मुंह-का एक छेरी-का बच्चा तक न दिहे कि मैं वह-का लै-कै अपने साथिन-के साथ खुसी मनौत्यों। पै जबै-से या तोर लरका आओ जेहि-ने तोरे बहुत माल-का पतुरियन-से खवाय लीन्हिस तैं वहि-के खातिर निउता कीन्हे-हा। तब बाप-ने वहि-से कहा कि बेटा तैं तो मोरे साथ हर-दम रहत-हा। जो-कुछ मोरे पास है सब तोर आय। हम-का या उचित रहै कि हम सब जने खुसी मनावन औ आनन्द करन काहे कि तोर भाई मर-गा-तै तौन जी उठा और खोय-गा-तै तौन मिल-गा।

हिन्दी प्रतिरूप

एक मनुष्य-के दो लडके थे। छोटे लड़के-ने अपने पिता-से कहा कि, 'पिता जी! आप-मेरे हिस्से-का धन मुझे दे-दीजिए।' तब उस-ने अपना धन उन दोनो लडकों-को बाँट दिया। बहुत दिनों-बाद छोटे लडके-ने बहुत-सा धन-माल इकट्ठा किया और (वह) बहुत दूर देश-मे चला गया और वहाँ अपना बहुत-सा धन लुच्चेपन-मे उडा-दिया। और जब उस-ने अपना बहुत धन खर्च कर डाला, तब उस देश-मे बडा अकाल पडा और वह (भीख) माँगने लगा। और उस देश-के एक भले आदमी के पास जा-कर ठहरा। उस-ने उन-को खेतो-मे सुअर चराने-के लिए भेजा। जितने सूअर चरते-थे उन्हीं-से वह चाहता-था कि 'उन-के भूसे से मैं-भी अपना पेट भर-लिया-करूं।' पर कोई उसे कुछ नही देता-था। और जब उस-को अपना होश आया तब कहा कि 'मेरे पिता-के यहाँ कितने नौकर ऐसे है जो पेट-भर खाते-है और मैं भूखो मरता-हूँ। मैं अपने पिता-के पास जाऊँगा और उन-से कहूँगा कि "पिता जी! मैं-ने ईश्वर-की मर्जी-के-खिलाफ किया-है और अब मैं आप-के सामने रहने-लायक नही हूँ कि तुम्हारा लडका कहलाऊं। मुझ-को अपना नौकर रख-लीजिए।" वह उठा और अपने पिता-के यहाँ-को चल दिया। जब वह अपने घर-से थोड़ा दूर पहुँचा तब उस-का पिता मिला और दया कर-के दौड-कर उस-को अपने गले-से लगा-लिया और उस-को चूमा। तब लडके-ने उस-से कहा कि, 'पिता जी! मैं-ने ईश्वर-की मर्जी-के-खिलाफ अपराध किया-है और तुम्हारे सामने; अब मैं इस लायक-का नहीं-हूँ कि तुम्हारा पुत्र कहलाऊं।' पर उस-के पिता-ने अपने नौकर-से

कहा कि, "अच्छे-अच्छे कपडे लाओ और इस–को पहिनाओ और इस–के हाथ–मे अँगूठी पहिना–दो, और इस–के पैर–मे जूते पहिना–दो। चलो, खाये, पियें और खुशी मनायें क्योंकि मेरा लडका मर–गया–था और खो–गया–था, वह अव फिर मिला–है और फिर जी, उठा–है।" तव सव लोग खुशी मनाने लगे।

उसी बीच–मे उस–का वडा लडका खेतो–से चला–आ–रहा–था। उस–ने गाने–वजाने–की आवाज सुनी और एक नौकर–को बुलाकर पूछा कि 'क्या हो–रहा–है।' नौकर–ने कहा कि 'तुम्हारा भाई आया–है और तुम्हारे पिता–ने दावत दी–है क्योकि वह अच्छी तरह–से आ–गया–है। बडा लड़का यह सुन–कर गुस्सा–हुआ कि 'मैं घर न जाऊँगा'। तव उस–का पिता घर–से निकल आया और उस–की खुशामद की। तव उस–ने अपने पिता–को उत्तर–दिया कि 'देखिए, मैं सालो–से आप–की सेवा कर–रहा हूँ और आपका कहना मानता–रहा–हूँ, इतने पर भी आप–ने मुझ–को एक वकरी–का वच्चा तक नही दिया जिस–से–कि मैं उस–को लेकर अपने साथियो–के साथ खुशी मनाता, पर जभी–से यह तुम्हारा लडका आया जिस–ने तुम्हारे बहुत–से धन–को वेश्याओ–से खिला–लिया, आप–ने उस–के लिए दावत दी–है।' तब पिता–ने उस–से कहा, कि 'बेटा! तू तो मेरे साथ हमेशा रहता है; जो कुछ मेरे पास है, सव तेरा ही (है)। हम–को यह उचित था कि हम सव लोग प्रसन्न हो और आनन्द मनायें क्योकि तुम्हारा भाई मर–गया–था वह जीवित–हो–उठा–है, और खो–गया–था, वह मिल–गया।

(न० ३२)

भारत–आर्य परिवार मध्यवर्ती शाखा

पूर्वी हिन्दी

बघेली (तथाकथित बुन्देली) बोली (जिला बाँदा)

नमूना—२

आठ नौ दिन भये मोर भाई बसगोपाल वा घर–की मिहरिया पिराग नहाय चली–गयी रहै। मैं घर–माँ अकेल रहू। परों बुध–के दिना दुपहर–का मैं चारा लेन हार चला–गवा–रहू। दुआरा–माँ रामसहाय अपने साला–को जेह–की उमिर

---

१ जैसा कि साधारणत. समझा जाता है, 'दुआरा' घर का दरवाजा नही है। गाँव वालो की भाषा मे 'दुआरा' घर का वह कमरा है जो मुख्य प्रवेश-द्वार के सन्निकट होता है। कुछ लोग उसे 'ओसारा' और कुछ 'बरामदा' कहते हैं।

आठ या नौ बरस-की हुई बैठार-गवा-रहू। थोड़ी-देर-माँ जब मैं चारा ले-कै घर आइउ तौ लड़का दुआरे माँ ना रहै। कासी बाम्हन मोरे भीतर-से निकरत-चला-आवत-रहै। मैं बोझ चारा-का नावैं-का-कीन तौ कासी भाग-गा। मैं हल्ला कीन कि 'कासी मोरे भीतर-से निकर-कै भागा-जात-है।' मुड़वा चमार व बब्बू कायथ घर-से निकसत कासी-का दीख-हइन। और बहुत आदमी जमा-हुय-गये। जब मैं भीतर घर-के गइउ दीख-तैं अरवा-माँ दस रुपइया और आठ आना, जौन धरे-रहे, ना मिलैं। तब जाना की कासी रुपइया चुराय-लै-गवा। जब मैं हार गवा-रह तब दुआरे-की साकर लगाय-गवा-रहू। साकर खोल-कै कासी भीतर घर-के घुसा औ रुपइया चुराये-है। काल साँझी-बिरियाँ मोर भाई पिराग-से आवा। तब आज रपट-का आवा-हूँ। मोर दावा रुपइया चुराने-का कासी-पर ऐ। तहकीकात चाहत-हूँ। जो लिखाया सुना; मोर बयान है।

हिन्दी प्रतिरूप

आठ-नौ दिन हुए, मेरा भाई बगगोपाल तथा घर-की स्त्री प्रयाग नहाने-के लिए चली गयी थी। मैं घर-मे अकेला था। परसो बुध-के दिन दोपहर-को मैं चारा लेने-के-लिए खेतों को चला गया-था. बरामदे-मे रामसहाय अपने साले-को, जिस-की उम्र आठ या नौ साल-की होगी, बिठला-गया-था। थोडी देर-मे जब मैं चारा ले-कर घर आया तब लडका बरामदे-मे न था। काशी ब्राह्मण मेरे (घर-के) भीतर-से निकलता-चला-आ-रहा था। मैं बोझ चारे-का (बैलो-को) डालने-लगा तो काशी भाग-गया। मैं-ने शोर-किया कि, 'काशी मेरे भीतर-से निकल-कर भागा-जा-रहा है।' मुडवा चमार और बब्बू कायस्थ-ने घर-से निकलते (हुए) काशी-को देखा है। और बहुत आदमी एकत्र-हो गए। जब मैं भीतर घर-के गया, देखा (कि) आले-मे दस रुपया और आठ आना, जो रखे-थे, न मिले। तब जाना कि काशी रुपया चुरा-ले-गया। जब मैं खेतो-को गया-था तब दरवाजे की साँकल लगा-गया-था, साँकल खोल-कर काशी भीतर घर-के घुसा-है और (उस-ने) रुपया चुराये-हैं। कल संध्या समय मेरा भाई प्रयाग-से आया, तब आज (मैं) रिपोर्ट के लिए आया-हूँ। मेरा दावा रुपया चुराने-का काशी-पर है, तहकीकात चाहता हूँ। (मैं-ने) जो (अपना) लिखाया-हुआ सुना-है, (वह) मेरा बयान है।

गहोरा

यमुना नदी-के दक्षिणी किनारे के भू-प्रदेश को छोडते हुए, बाँदा ज़िले के

पूर्वी हिस्सो मे, अधिक से अधिक बागैन नदी तक बोली जाने वाली भाषा 'गहोरा' कहलाती है। केवल शब्द-सम्पत्ति को छोडकर (यथा ड्यारा=धन) जिसमे वुन्देलीपन अधिक है, यह तिरहारी से पर्याप्त समानता रखती है। उडाऊ-पूत-कथा-रूपान्तर के अतिपय वाक्य ही नमूने के लिए पर्याप्त होगे। करण-कारक रूप 'भूखेन=भूख से' ध्यान देने योग्य है। इसके बोलने वालो की सख्या २,४३,४०० बतलाई गई है। इसकी दो उपबोलियाँ जिन्हे 'पाथा' 'अन्तर्गथा' के नाम से अभिहित किया गया है, क्रमश ज़िले के दक्षिण-पूर्व तथा दक्षिण-मध्य भाग मे बोली जाती है।

(नं० ३३)

भारत-आर्य परिवार मध्यवर्ती शाखा

पूर्वी हिन्दी

बघेली (विशृखल गहोरा) बोली (ज़िला बाँदा)

कौनौ मड़ई-के दुइ लरिका रहैं। उइँ लरिका बाप-से कहिन कि अरे बाप तैं हमरे हीसा कै जजाति हम-का बाँट दे। तबै बाप आपन जजाति दोनहुँन लरिकन-का बाँट दिहिस। औ थोरे दिनन-माँ चुनकउना बेटौना सब ड्यारा बाँटुर-कै लिहिस औ बहुत दूरी परद्यास-का निकरि गा औ हुआँ आपन सब रुपिया कुकरम-माँ खरिच-कै डाइस। औ सब रुपिया वहि-का खरिच होइ गा औ वा मुलुक-माँ बहुत बड़ा दुर-दिन पड़ा औ वहि-का रोजीना-के खरिच-कै तगई होयँ लाग। तबै वा मुलुक-के एक रहय्या-से जाय-कै मिला जौन वहि-का अपने ख्यातन-माँ सुअरिन चरावँ-का पठवाय दिहिस। अब वह लरिका वहू बूसी-का खाय-कै दिन काटँ लाग जेहि-का सुअरी खाती-हे। पै कोऊ मड़ई वहौ न दीन। जबै वहि-कर अकिल ठिकाने भै तबै वा अपने मन-मा कहँ लाग कि द्याखौ तौ मोरे बाप-के बहुतेरे नौकरिहन-का यत्ता मिलत-हे कि उइँ नीकी तरन खात-हैं औ कुछु बचाय ल्यात-हैं। हाय मैं भूखेन मरत-हौं। अब चलि-कै अपने बाप-के लगे जइहौं औ वहि-से कइहौं कि अरे बाप मैं दइउ-के खिलाफ औ तोरे आगे अपराध किह्यौं औ मै या लाइक नइआहूँ कि त्वार बेटवा बाजौं। मोहिं-का अपने अउर मजूरन-की नाई राखि-ले।

हिन्दी प्रतिरूप

किसी मनुष्य-के दो लडके थे। उन लडको-ने पिता-से कहा कि ये पिता जी! आप हमारे हिस्से का धन हम-को बाँट दो। तब पिता-ने अपना धन दोनो लडकों को बाँट दिया। और थोडे दिनो-मे छोटे लडके-ने सब धन इकट्ठा-कर लिया और बहुत दूर परदेश-को निकल-गया। और वहाँ अपना सब धन कुकर्म-मे खर्च-कर-डाला।

और सब रुपया उस–का खर्च–हो–गया, और उस–देश–मे बहुत बड़ा अकाल पड़ा। और उस–को रोज–के खर्च–के लिए परेशानी होने लगी। तब उस देश–के एक रहने-वाले–से जा–कर मिला, जिस–ने उस–को अपने खेतों–मे सुअर चराने के लिए भेज–दिया। अब वह लडका उसी भूसी–को खा–कर दिन काटने लगा जिस–को सुअर खाते–थे। पर किसी आदमी–ने वह भी नही दिया। जब उस–की अक्ल ठिकाने आयी तब वह अपने मन–मे सोचने लगा कि, 'देखो तो! मेरे पिता–के बहुत–से नौकरो–को इतना मिलता–है कि वे अच्छी तरह खाते–है और कुछ बचा–लेते हैं। खेद है! मैं भूखो मरता–हूँ। अब चल–कर अपने पिता–के निकट जाऊँगा और उस–से कहूँगा कि, "ओ पिता जी! मैंने ईश्वर–के विरुद्ध और आप–के सामने अपराध किया–है और मैं इस योग्य नही हूँ कि आपका पुत्र कहलाऊँ। मुझ–को अपने दूसरे नौकरो–की तरह रख–लो।"

जूड़र

यह बाँदा जिले की दूसरी बोली है जो कि केन तथा बागैन नदियो के मध्य १,१४,५०० व्यक्तियो द्वारा बोली जाती है। जिले के उत्तर-पश्चिम किनारे पर बोली जाने वाली 'कुण्ड्री' (हमीरपुर की भी एक बुन्देली 'कुण्ड्री' है) दक्षिण-पश्चिम मे 'बग्रावल' तथा मध्य-भाग मे बोली जाने वाली 'अघर' इसकी उपबोलियाँ है। यह 'गहोरा' तथा तिरहारी' से भी कही अधिक बुन्देली–रूपो का मिश्रण किये हुए है, पर इतना अधिक नहीं जितना कि कालिंजर के आसपास बोली जाने वाली तथाकथित बुन्देली। नमूने के दूसरे वाक्य मे बुन्देली का एक उदाहरण है, यथा–जिन्हन–ने कहो=जिन्होंने कहा, जब कि उसके आगे के वाक्य मे हमे बघेली–दीन्हेसि=(उनने) दिया, मिलता है। हम बघेली–प्रत्यय–तैं यथा गा–तैं=(वह) गया था, भी पाते हैं। जैसा कि ऊपर कहा जा चुका है, यहाँ यह प्रत्यय हिन्दी 'था' तथा बुन्देली 'तो' का समानार्थी है। एक स्थान पर—रहैया–ने पठै दीन्हेसि=रहने-वाले ने भेज–दिया, हम अभिकर्त्ता–प्रत्यय का प्रयोग बघेली भूतकालिक क्रिया के साथ पाते है। नमूना उड़ाऊ–पूत–कथा के कुछ वाक्यो का है।

(नं० ३४)

भारत–आर्य परिवार मध्यवर्ती शाखा

पूर्वी हिन्दी

बघेली (जूडर विश्रृंखल) बोली (जिला बाँदा)

को नेउ मँड़ई–के दुइ बेटवा रहैं। जिन्हन–ने अपने बाप–से कहो कि अरे बाप

मोरे हींसा–का ड्यारा मोहीं दे–दे। तब बाप आपन ड्यारा लड़कन–का बाँटि दीन्हेसि। थोड़े दिनन–मा छ्वाट बेटवा अपने हींसा–का सब ड्यारा डाँड़ी बाँटुर कर–के बहुत दूरी परदेसै निकरि–गा । वहाँ जाय–कै सब आपन ड्यारा पतुरियाबाजी–माँ उड़ाय डारेसि। जब सब वहि–का रुपया उठि–गा और जौने द्यासै गा–तैं ह्वाँ बडा भारी अकाल परि–गा और वहि–का रोज–के खाँय खरिच–कैं तगई होइ लागि तब वा वा द्यास–के एक रहैया–के ह्याँ गा। वा रहैया–ने अपने खेतन–माँ सोरी चरावैं–का पठै दीन्हेसि। तब वा लरिका वा बूसी–का खाय–कै दिन–काटै लाग जौनि सोरी खाती–रहैं। फिर कुछ दिनन–माँ वहि–का कोऊ वा बूसि–उ न देइँ लाग।

हिन्दी प्रतिरूप

किसी मनुष्य–के दो बेटे थे। जिन्होंने अपने पिता–से कहा कि, ए पिता जी! हमारे हिस्से–का धन हम–को दे–दो। तब पिता–ने अपना धन लड़कों–को बाँट दिया। थोडे दिन मे छोटा लडका अपने हिस्से–का सब धन–दौलत इकट्ठा–करके बहुत दूर विदेश निकल–गया। वहाँ जा–कर सब अपना धन रडीबाजी–मे उडा डाला। जब उसका सब रुपया समाप्त–हो–गया और जिस देश–मे गया–था, वहाँ बडा भारी अकाल पड–गया और उस–को रोज–के खाने के (और) खर्च–के लिए परेशानी होने-लगी तब वह उस देश–के एक वासिन्दे–के यहाँ गया। उस रहने–वाले–ने अपने खेतो मे सुअर चराने–के लिए भेज दिया। तब वह लडका उस भूसी–को खा–कर दिन काटने लगा जो सुअर खाते थे। फिर कुछ दिनो–मे उस–को कोई वह भूसी–भी न देता था।

बनाफरी

बनाफर एक राजपूत कबीला है जो कि वर्तमान समय मे महोबा शहर के चारों ओर बसा हुआ है। प्रख्यात् नायक आल्हा और ऊदल जिनके साहसिक अभियान एक महत्त्वपूर्ण महाकाव्य के विषय बन गए है और जो हिन्दुस्तान (आज का हिन्दी–प्रदेश –अनुवादक) के अधिकाश भू-भाग मे गाये जाते हैं, बनाफर थे तथा ये इस नगर के राजा परमाल अर्थात् परमर्दि की सेवा मे थे । हमीरपुर ज़िले के दक्षिण-पूर्व मे तथा बुन्देलखण्ड एजेन्सी के उत्तर मे ये बहुत बडी सख्या मे हैं। इसीलिए इस भू-प्रदेश मे बोली जाने वाली भाषा 'बनाफरी' अथवा 'बनफरी' कहलाती है। हमीरपुर से प्राप्त हुए बनाफरी के नमूने, बाँदा की बोलियो से साम्य रखने वाली पूर्वी हिन्दी के एक रूप मे हैं। अन्तर केवल इतना ही है कि इनमे बुन्देली का प्रभाव कुछ अधिक मात्रा मे परिलक्षित होता है। हमीरपुर ज़िले के शेष भाग की भाषा बुन्देली है। बनाफरी बघेलखण्ड एजेन्सी के पश्चिमी भाग मे भी बोली जाती है, परन्तु यहाँ और बुन्देलखण्ड एजेन्सी

के उत्तर में, यह अब बुन्देली से प्रभावित पूर्वी हिन्दी नहीं, अपितु पूर्वी हिन्दी से प्रभावित बुन्देली है।

बनाफरी बुन्देलखण्ड एजेन्सी में चरखारी के चन्दला परगना, छतरपुर के लौरी परगना, पन्ना के धरमपुर परगना, नक्सर्रा निवाई की जागीर, गौरिहार एवं बेरी तथा अजयगढ़ एवं बावनी रियासतों में बोली जाती है। बघेलखण्ड एजेन्सी की नागौद एवं मैहर रियासतों के पश्चिमी क्षेत्रों में बोली जाती है। इन दोनों रियासतों के शेष भागों की भाषा विशुद्ध बघेली है।

बुन्देली का एक व्याकरण मेजर जौन द्वारा 'जर्नल ऑफ दी एशियाटिक सोसायटी ऑव बंगाल' में प्रकाशित किया गया था जिसमें उन्होंने स्पष्ट रूप से कहा है कि बनाफरी बुन्देली का एक विकृत रूप है।

यह नितान्त अनावश्यक होगा कि हमीरपुरी बनाफरी का समूचा नमूना दिया जाय। यह गहोरा से केवल इस बात में भिन्न है कि इसमें बुन्देली का प्रभाव अपेक्षाकृत सबल है। जिले से प्राप्त उडाऊपूत कथा के प्रथम कुछ वाक्यों को देना ही यहाँ पर्याप्त होगा। यह देखा जा सकता है कि क्रिया-पदरचना में बघेली तथा बुन्देली रूप एक दूसरे का स्थान ले लेते हैं। एक स्थान पर हम बघेली का एक अनियमित रूप पाते हैं, यथा—'कहेसि' के लिए 'कहेसु'=(उसने) कहा। इस शब्द के पहिले कर्ता-छूटँवा-ने' अभिकर्ता कारक में प्रयुक्त हुआ है। इसी प्रकार, 'दीन्हेंसि' के पूर्व प्रयुक्त 'वह' का अनुवाद मूलरूप 'वा' के स्थान पर विकारी रूप 'उइ' रूप में किया गया है। और भी, 'वन' के लिए हम 'वनु' पाते हैं। बुन्देली के अन्य उदाहरण थोडा-बहुत विकृत होकर इस प्रकार आये हैं—तेहि-ने पठँवा=उस-ने भेजा, चाहँते-तो=(वह) चाहता था, दात-न-ते=(वे) नहीं दे रहे थे।

बनाफरी बोलने वालों की संख्या परिगणित होकर इस प्रकार प्राप्त हुई है.—

हमीरपुर,	(पूर्वी हिन्दी)	५,०००
बुन्देलखण्ड एजेन्सी,	(बुन्देली)	२,४५,४००
बघेलखण्ड एजेन्सी	(बुन्देली)	९०,०००
	योग	३४०,४००

बुन्देली-बनाफरी के उदाहरणों पर बुन्देली-बोली का विवरण देते समय विचार करेंगे।

---

१. ज० ए०, सो० ब० जिल्द १२, १८४३ पृष्ठ १०८६ तथा आगे।

(नं० ३५)

भारत–आर्य परिवार मध्यवर्त्ती शाखा

पूर्वी हिन्दी

बघेली (विश्रृंखल बनाफरी) बोली (जिला हमीरपुर)

फलनवाँ मडई–के दुई लरिका हैं। वह–माँ–ते छुटवा–ने नाना–से कहेसु कि जमा–माँ–ते म्वार हीसा दइ देइ। तव उइँ आपन जमा वाँट दीनेंसि। बहुत दिन नहीं गै–अहीं कि छ्वाट लरिका बहुत यकठया करि–के परद्यासे चला–गा–हन लुच्चाँव–माँ परि–गा। बहुत दिन लगाइस अउ आपन धनु बहाइ दीनेंसि। जब वा सब कुछ खोय चुको तव उइँ द्यास–माँ याकन–के घर–माँ रहैं लाग। तेंहि–ने–वह–का अपने ख्यातन–माँ सुअरी चरावैं–का पठवा। अउ वा छेंहिन–तें ज्यह–का सुवरी खात–रहैं आपन प्याट भरैं चाहत–तो। अउ वहि–का कोऊ कुछ द्यात न–ते।

हिन्दी प्रतिरूप

किसी मनुष्य–के दो लडके थे। उस–मे–से छोटे–ने पिता–से कहा कि धन–मे–से मेरा हिस्सा दे दो। तव उसने अपना धन वाँट दिया। वहुत दिन नही बीते–थे कि छोटा लडका इकट्ठा कर–के परदेश चला–गया-था। वहाँ लुच्चेपन–मे पड गया। वहुत दिन विताये और अपना धन वहा दिया। जव वह सव कुछ खो चुका तव उस देश–मे वडा अकाल पडा और वह कगाल हो गया। वह वहाँ जा–कर उस देश–मे एक–के घर–मे रहने लगा। उस–ने उस–को अपने खेतो–मे सुअर चराने–के लिए भजा। और वह छिलके–से जिस–को सुअर खाते–थे, अपना भेट भरना चाहता था और उस–को कोई कुछ देता–नही–था।

गोंडवानी या मण्डलाहा

वर्तमान मध्यप्रदेश के चार राज्यो मे से, जिन्हे प्राचीन काल मे 'गोडवाना' के नाम से अभिहित किया गया था, एक गढ–मँडला भी था जिसका आदि–स्थान वर्तमान माँडला जिला था। सोलहवी शताव्दी मे सग्राम सा (शाह) ने जो कि गढा–मँडला की गोंड–परम्परा मे अडतालिसवें राजा थे, मॉडला–पार्वत्य–प्रदेश से लेकर वावन गढो अर्थात् ज़िलो तक अपना राज्य फैलाया जिसके अन्तर्गत आजकल के विन्ध्य पठार के भोपाल, सागर तथा दमोह, नर्मदा घाटी के होशगावाद, नरसिहपुर तथा जवलपुर और सतपुडा–पहाडियो के माँडला तथा सिवनी ज़िले आते है।[1] आजकल

१. देखिए—मध्यप्रदेश (Central Provinces) गजेटियर पृष्ठ ७३।

मांडला की जनसख्या मे गौड तथा बैंगा अधिकाश-रूप मे हैं। १८९१ की जनसख्या-रिपोर्ट के अनुसार ज़िले की सम्पूर्ण आबादी ३,३९,३७३ है लेकिन इनमे-से केवल ८९,१८७ ही गोडी भाषा बोलते है। अनुमान किया गया है कि गोड़ो की इतनी ही सख्या अन्य क्षेत्रीय व्यक्तियो द्वारा बोली जाने वाली सामान्य आर्य-भाषा का प्रयोग करती है। अनुमानत १,००० घूमन्तू लभाना जो कि अपनी बोली बोलते हैं तथा लगभग १८६ विदेशी जिनकी अपनी भाषाएँ हैं, को छोडकर मॉडला ज़िले की शेष २,४९,००० जनसख्या एक-ही आर्य-भाषा का प्रयोग करती है जो कुछ लोगो द्वारा मडलाहा (विशुद्ध उच्चारण 'मँडलाहा') कही जाती है। परन्तु स्थानीय व्यक्तियों द्वारा यह गोडवानी (विशुद्ध उच्चारण गोडवानी) के नाम से जानी जाती है।

गोडवानी पूर्वी हिन्दी का एक रूप है। यह उसकी (=पूर्वी हिन्दी) अन्य बोलियो की अपेक्षा बघेली के अधिक निकट है। यह (=बघेली) सुदूर उत्तरी अवधी से दो महत्त्वपूर्ण विशेषताओ मे भिन्नता रखती है। एक तो, क्रियाओं के भूतकालिक रूपो मे-तै प्रत्यय का बहुलता से प्रयोग है, और दूसरा, भविष्यत् उत्तम पुरुष एक वचन का द्योतक-ह है, अवधी का 'ब' नही। इन दो विशेषताओं मे-से मांडला की बोली मे प्रथम का अभाव तथा दूसरे की उपस्थिति है, जिसे निम्नांकित दो नमूनों मे देखा जा सकता है।

मॉंडला के निकट-पूर्व मे बिलासपुर का ज़िला है, जिसकी स्थानीय बोली छत्तीसगढी है। जैसा कि आशा की जानी चाहिए, गोडवानी मे छत्तीसगढी का सम्यक् मिश्रण है, यद्यपि छत्तीसगडी की महत्त्वपूर्ण प्रवृत्तियो यथा-बहु०-प्रत्यय-मन-का इसमे नितान्त अभाव है।

इसमे ठीक-पश्चिम मे बोली जाने वाली बुन्देली के भी कतिपय तत्त्व उपलब्ध हैं।

नीचे वे प्रमुख तथ्य प्रस्तुत किए जा रहे हैं जो आगे के नमूनो मे देखे जा सकते हैं—

कर्म-सम्प्र० का प्रत्यय 'के' है किन्तु साथ ही छत्तीसगढी का-ला भी मिलता है। अधिकरण-प्रत्यय 'मे' है जो वस्तुत बुन्देली का है, पूर्वी हिन्दी का नही। सम्बन्ध का 'केर' है जिसका न तो कोई स्त्रीलिंग रूप ही है और न विकारी ही।-अन् वाले करणकारक के अतिरिक्त जिसे हम अन्य पूर्वी हिन्दी की [illegible] एक-ओं वाला करण भी पाते है, जैसे—मूखों=मूख से।

सर्वनामो मे, तोय्=तुम, ई-कर्=इसका, दोनो ऊ-कर् एव ओ-कर=उसका, तथा एक सम्बन्ध बहुवचन के विकारी रूप मे प्रयोग जैसे उन्-कर्-मैं-से=उन-मे-से पर ध्यान दिया जा सकता है। 'अपने लिए' के लिए 'अपन्' और 'आपन'

दोनो चलते है। इन सम्बन्धकारको मे से कोई भी अपना कोई विकारी रूप रखता नहीं दिखायी देता। 'क्या' के लिए 'का' है जिसका विकारी 'काहिन्' है। 'कोई' के लिए 'कोई' अथवा 'कोही' है।

क्रिया-रूपो मे हम निम्नाकितो पर ध्यान दे सकते हैं —

'हूँ'=(मैं) हू, 'हो'=(तुम) हो, 'है'=(वह) है। ये तीनो बुन्देली रूप हैं। वर्तमान काल का एक उदाहरण 'डारथूँ'=(मैं) डरा हुआ हूँ, है जो छत्तीसगढी का है। भविष्यत् मे; हम बघेली का विशिष्ट 'जाहूँ'=(मैं) जाऊँगा, यदा-कदा 'कहूँ'=(मैं) कहूँगा तथा अन्य रूप पाते हैं। भूतकाल मे, टारों=(मैंने) टाला, करे(=तुमने))बनाया, दीइस=(उसने) दिया तथा अन्य। करें-हां=(मैंने) किया है, पूर्ण (वर्तमान) है। भूतकालिक कृदन्त छत्तीसगढी की तरह-ऐं मे अन्त होता है, इस प्रकार करें=किए तथा गयें=गए । क्रियार्थक सज्ञा के दोनो—मूल तथा विकारी रूप-अन मे अन्त होते हैं, यथा, कहन लगिस=(वह) कहने लगा, "खान-से ज्यादा=खाने से अधिक (मात्रा मे)। यह भी छत्तीसगढी ही है। पूर्वकालिक कृत् प्रत्यय 'के' है,। कभी-कभी 'केर' भी मिलता है, जैसे, सुन-केर=सुनकर, देख-केर=देखकर, मे। यह इस तथ्य का एक सुन्दर उदाहरण है कि समस्त भारतीय आधुनिक आर्य भाषाओ मे पूर्वकालिक कृत्-प्रत्यय सम्बन्ध कारकीय प्रत्ययो मे से किसी एक से सदैव सम्बन्धित मिलता है।

(नं० ३६)

भारत-आर्य परिवार — मध्यवर्त्ती शाखा

पूर्वी हिन्दी

बघेली (गोडवानी) बोली — (ज़िला मांडला)

नमूना—१

कोई आदमी-केर दो लरका रहे। उन-कर-में-से नान लरका अपन दादा-से कहिस हे दादा सम्पत-में-से जो मोर हिसा हो मो-ला दो। तब ऊ अपन सम्पत उन-के बाँट दे-दीइस। बहुत दिन नहीं बीतिस कि लहुरा बेटा सब कुछ जमा-कर-कें दूर मुलुक चल दीइस और वुहाँ लुचाई-में दिन काटने-से अपन सब सम्पत उड़ाय-डालिस। जब ऊ जो कुछ रहे सब खर्च कर चुकिस तब ऊ मुलुक-में बड़ा अकाल परिस औ ऊ गरीब हो-गइस। और ऊ उस मुलुक-केर बसेरी मधे एक-के ढिगा जाय-कें रहन लगिसि जोन ओ-ला अपन खेत-मे सुवँर वो सोंगरा चरावन भेजिस। और ऊ जोन सोंगरा खात-रहे ऊ छिलटा-से अपन पेट भरन चाहत-रहे। और कोई ओ-ला कुछ नहीं देत-रहे। तब ओ-ला चेत भइस औ ऊ कहन लगिस कि हमारे दादा-केर

कितनो वनिहार-केर खान-से ज्यादा रोटी होवत है और हम भूखा मरत-हूँ। हम उठ-के अपन दादा-के ढिगा जाहूँ और ओ-ला कहूँ हे दादा हम स्वर्ग-केर विरुद्ध और तुम्हार आगू पाप करे-हों। हम फिर तुम्हार लरका कहवन-केर लैंक नहीं हूँ। मो-ला आपन वनिहार मघे एक-केर बरावर कर-दे। तव ऊ आपन दादा-केर ढिगा जान लगिस। जव ऊ दूर-ही रहिस। तव ऊ-कर दादा ओ-ला देख-के माया करिस और दौड़-कर-के ऊ-कर गाल-मे चिपट कर-के चूमिस। लरका ओ-ला कहिस हे दादा हम स्वर्ग-केर विरुद्ध और तुम्हार आगू पाप करे-हाँ और फिर तुम्हार लरका कहावन-केर लैंक नहीं हाँ। तब ओ-कर दादा आपन वनिहार-से कहिस सब-से अच्छा कपड़ा निकार-के पहिरा दो और ऊ-कर हाथ-में मुद्री और पैर-में पनही पहिरा देओ और हम सव खाय पीई और खुसी करी कि ई हमार लरका मरिस-रहै फिर जीइस हेराय गइस-रहै फिर मिलिस॥

ऊ-कर जेठ लरका खेत-में रहिस । और जव ऊ आवत-मे घर-के नजीक पहुँचिस तव वाजा गाजा और नाच-केर गुल सुनिस । और ऊ आपन वरसियार मघे एक झन-के आपन ढिगा वुलाय-के बूझिस ई का है । ऊ ओ-ला कहिस तुम्हार भाई आइस-है। और तुम्हार दादा अच्छा-से अच्छा नेवता करिस ई-कर-लाने की ओ-ला साजो पाइस। पर ऊ गुस्सा भइस और भीतर जान नहीं चाहिस। ई-कर-लाने ऊ-कर दादा वाहर आय-के ओ-ला मनावन लगिस। ऊ आपन दादा-ला जवाव-दीइस की देख हम इतना वरस-से तुम्हार सेवा करत-रहों और कर्धा तुम्हार हुकुम नहीं टारों और तोय मो-ला कधो एक-ठौ-भी छेरी-केर पीला नहीं दियो कि हम आपन सग-केर संग खुशी करते। पर ई तुम्हार लरका जोन कसविन-केर संग तुम्हार धन खाइस जव-भी ऊ आइस तव-ही उमदा नेवता करे। दादा ओ-ला कहिस हे वेटा तोय सव दिन हमार संग हो और जो कुछ हमार है सो तुम्हार है। पर खुसी और आनन्द होय-के जरूर रहै-की तुम्हार भाई मरिस-रहै फिर जीइस भुलाय गये-रहै फिर मिलिस-है।

हिन्दी प्रतिरूप

किसी आदमी-के दो लडके थे। उन-मे-से छोटे लडके-ने अपने पिता-से कहा, 'ओ पिता जी ! सम्पत्ति-मे-से जो मेरा हिस्सा हो, मुझ-को दो।' तव उस-ने अपनी सम्पत्ति उन-को वाँट दी। वहुत दिन नहीं वीते कि छोटा लडका सव कुछ जमा-कर-के दूर देश-को चल दिया और वहाँ लुच्चेपन-मे दिन काटते-हुए अपनी सव सम्पत्ति नष्ट-कर-दी। जव उस-ने जो कुछ था सव खर्च-कर-डाला तव उस देश-मे वड़ा अकाल पड़ा और वह गरीव हो-गया। और वह उस देश-के रहने-वालों मे-

से एक-के निकट जा-कर रहने-लगा जिस-ने उस। को अपने खेत। मे सुअर और सुअरनी चराने (-के लिए) भेजा। और वह जिसे सुअर खाते-थे उस भूसी-से अपना पेट भरना चाहता था। और कोई उसे कुछ नहीं देता था। तव उसे होश आया और वह कहने लगा कि 'हमारे पिता-के (यहाँ) कितने मजदूरो-के खाने-से अविक रोटी होती-है और हम भूखो मरते-है मैं उठ-कर अपने पिता-के निकट जाऊँगा और उन-से कहूँगा, "ओ पिता! मैं-ने स्वर्ग-के विरुद्ध और आप-के समक्ष पाप किया-है। मैं फिर (से) आपका लडका कहलाने-के योग्य नही हूँ। मुझ-को अपने मजदूरो-मे-से एक-के वरावर वना-लो"। तव वह अपने पिता-के निकट जाने लगा जव वह दूर-ही था तव उस-के पिता-ने उस-को देख-के दया की और दौड-कर-के उस-के गाल-को चिपट-कर-के चूमा। लडका-ने उस-से कहा, 'ओ पिता! मैं-ने स्वर्ग-के विरुद्ध और आपके समक्ष पाप किया-है और (अव) फिर आप-का लडका कहलाने योग्य नही हूँ।' तव उस-के पिता-ने अपने मजदूर-से कहा 'सव-से अच्छा कपडा निकाल-कर (इसे) पहिना-दो। और उस-के हाथ-मे अँगूठी और पैर-मे जूते पहिना-दो और हम सव खाये, पियें और खुशी मनायें (क्यो) कि यह हमारा लडका मर-गया-था, फिर जीवित-हुआ है, खो-गया-था, फिर मिला-है।'

उस-का बडा लडका खेत-मे था और जव वह आते-हुए घर-के निकट पहुँचा तव वाजों-का और नाच-का शोर सुना। और उस-ने अपने मजदूरो-मे-से एक-को अपने निकट वुला-कर पूछा, 'यह क्या है?' उस-ने उस-से कहा है, 'तुम्हारा भाई-आया-है और तुम्हारे पिता-ने अच्छी-से-अच्छी दावत दी-है। इस-के-लिए कि उस-को अच्छा पाया-है।' पर वह गुस्सा हुआ और भीतर जाना नही चाहता था। इस-लिए उस-का पिता बाहर आ-कर उस-को मनाने लगा। उस-ने अपने पिता-को उत्तर दिया कि, 'देखो! मैं इतने वर्षो-से आप-की सेवा कर रहा-हूँ और कभी आप-की आज्ञा नही टाली और आप-ने मुझ-को कभी एक-भी वकरी-का वच्चा (भी) नही दिया कि मैं अपने साथियो-के साथ खुशी मनाता, पर यह आपका लडका जो वेश्याओ के साथ आप-का धन खा-डाला, 'जभी वह आया तभी (आपने) अच्छी दावत दी।' पिता-ने उस-से कहा, 'ओ वेटे! तुम सव दिनो-से हमारे साथ हो, और जो कुछ हमारा है, वह तुम्हारा है। पर खुशी और आनन्द होने-को जरूर चाहिए-था क्योकि तुम्हारा भाई मरा-हुआ-था फिर जीवित-हुआ-है, खो-गया-था, फिर मिला-है।'

(न० ३७)

भारत–आर्य परिवार मध्यवर्त्ती शाखा

पूर्वी हिन्दी

बघेली (गोंडवानी) बोली (ज़िला माँडला)

नमूना—२

कोई देश–में कोही बैपारी एक भारी तालुका–केर मालिक बन–कर ओ–में सुख–चैन–से रहत–रहै। ओ–कर तीन–ठुन मीत रहैं। ओ–में–से दुइ झन–ला खूब मोह करत–रहै और दुइ झन–से तीसर मीत ओ–कर–से खूब मोह राखत रहै। और ओ ओ–ला तनक मोह करत–रहै। और ऐसन होत–रहै कि आँगू जब ओ–कर दुइ मीत बैपारी–केर भलाई और माया–में मगन होत–रहै तब तीसर मीत फिकर–मे हुइ–के ऐसन बूझे कि मोर–से बैपारी काहिन काज गुस्सा भइस–है।

पछारी ऐसन भइस कि बैपारी कोनां बात–मे राजा–के ढिगा कसूर–में झुक गइस। तब राजा ओ–ला बोलाइस कि बैपारी मोर ढिगा आय–के ओ बात–केर जुबाब देय। ऐसन बात राजा–केर बैपारी सुन–कर खूब डराइस और सोचन लगिस कि असना दुख सकट–में कसना करूँ। मो–से बड़ा चूक भइस–है कैसे राजा–के आगू मंतक रहै–ला परही और भगे–ला जुगत निह बनय। और राजा धरमी और न्याय–छनइया हो ही। तो मो–ला यह चूक–में बिना दुख सजा दये निह मानही। एक जुगत है जो मोर मीत हैं उनी–ला सग लै–जहूँ उन मोर न्याव–के बीच–माँ बोलहीं। और राजा–से कहहीं कि राजा महराज अब–की चूक–ला समोख–ले। और मोला दुख सोच–से बचाहीं। तो कौन जाने राजा ओ–कर सुन लेय और मो–ला सजा झप दवावे।

तब बैपारी अपन मीत–ला बोलाइस और ओ–ला ये हाल बताइस और हाथ जोरिस बिनती करिस कि भाई राजा कहाँ मोर संग चल और मोर तरफ–से राजा–से बिनती कर–के मोर जीव–ला बचाय–ले। तब वह ओ–ला कहिस कि भाई यह तोर असल जुगत है। मैं राजा–के ढिगा तोर–सग निह जाऊँ। मैं कौन मुँह लय–के जाहूँ औ राजा–ला बिनती करहूँ। राजा मोर ऊपर गुस्सा निह करही। कसूर–चूक–में तुही झुके–हस अकले तु–हीं जा मैं निह जाऊँ॥

बैपारी यह गोठ सुन–के ज्यादा दुख–में बैहा–धाई हुय–के बिचारन लगिस हाय हाय मैं कसना करूँ मैं दूसर मीत–ला बोलाहूँ। ओ–कर भरोसा है वह मोर सग राजा कहाँ चलही। तब दूसर मीत–ला बोलाइस और ओ–कर दूसर मीत आइस और ओ–ला सब हाल बताइस। तब वा ओ–ला कहिस अच्छा है। मैं चलहूँ। मीत–केर गोठ बैपारी सुन–केर खुशी भइस और उन दोनो झन एकई सग उठ–के रेंग दीइन।

जब गाँव–के फटका ढिगा पहुँचिन तब बैपारी–केर संगी मीत ओ–ला कहन लगिस कि भाई अब मैं डरायूं राजा–के आगू मैं काहिन बताहूँ। कहूँ राजा मोर गोठ सुन–के मो–ला गुस्सा होय। कहूँ मो–ला सजा दवावे। मैं घर–ला मुर–के जाहूँ। तोर सग निह जाऊँ। ऐसन बताय–के भग दीइस।

बैपारी जब असना देखिस तो अपन ऊपर साँस लेन लगिस और आह मारन लगिस कि हाय हाय जिन–ला मैं मीत जानत–रहों और खुशी और आनन्द–के दिन–में मो–से बड़ा प्रीत राखत–रहे अब दुख–में मो–ला छोड़ दीइन। भगन देव असना छलीन–ला। मोर एक मीत और है। ओ–ला बोलाये–ला मुस्किल है काहे–से कि ओ–ला मैं नीच जानत–रहों। ते–कर लये वह मोर सहांव निह होही। मो–ला और कोई जुगत तो सूझ निह परै। मैं ओ–कर ढिगा जाहूँ। कहूँ मो–ला वह उदास और रोवत देख–केर ओ–कर मन घुट जाय और दया करय मोर बिनती–ला सुन लेय। तब ओ–कर ढिगा बैपारी गइस और सरमाय–के व आँखन में आँसू भर–के कहिस ए प्यारे भाई दया कर–के मोर चूक–ला समोख ले। मोर असना हाल है। दया कर–के आव और राजा–से मोर पुकार कर–के मो–ला बचाय–ले। ओ–कर तीसर मीत दुख–केर बात सुन–के कहिस कि भाई तोर आये–से मो–ला बहुत खुशी भइस। मोर और तोर आँगू–के बात–ला जान–दे कोई बात–ला झय घोख। मैं सब दिन तोर ऊपर माया करत–रहों अब मो–ला जहाँ लाग बन परही वहाँ लग तोर भलाई करहूँ। राजा मोर चिन्हार है। सो वे दोई झन राजा ढिगा रेंग दीइन। और ओह राजा–से पुकार–करिस। ओ–कर पुकार–ला राजा सुन लीइस। और बैपारी–ला अपन ढिगा बोलाइस। और सजा–केर बदली–माँ ओ–ला माया करिस।

हिन्दी प्रतिरूप

किसी देश–मे एक व्यापारी एक बडे तालुका––(=बड़ी जमीदारी) का मालिक बन–कर उस–मे सुख–चैन–से रहता–था। उस–के तीन (–ठौं) मित्र थे। उन–मे–से दो जनें खूब प्रेम करते–थे। और दोनो–जनों–से (=की अपेक्षा) तीसरा मित्र उस–से अधिक प्रेम करता–था। और वह (=व्यापारी) उस–को थोड़ा प्रेम करता–था। और ऐसा होता–था कि पहिले जब (कभी) उस–के दो मित्र व्यापारी–की भलाई और प्रेम–मे मग्न होते–थे तब तीसरा मित्र फिक्र–मे हो–कर ऐसा सोचता–था कि मुझ–से व्यापारी किस कारण गुस्सा हो–गया–है।

बाद–मे ऐसा हुआ कि व्यापारी किसी बात–मे राजा–के यहाँ अपराध–मे फँस–गया। तब राजा–ने उस–को बुलाया कि व्यापारी मेरे–पास आ–कर उस बात–का उत्तर–दे। यह बात राजा–की व्यापारी सुन–कर खूब डरा और सोचने लगा कि ऐसे

दुख–सकट–मे क्या करूँ। मुझ–से वडी भूल हो–गयी–है; कैसे, राजा–के सामने चुप रहने–को (=रहते) वनेगा और भागने–की युक्ति नही वनती। और (यदि) राजा धर्मी और न्यायी होगा तो मुझ–को इस भूल–मे विना कष्ट (और) सजा दिए नही मानेगा। एक युक्ति है, जो मेरे मित्र है, उन्ही–को सग ले–जाऊँगा वे मेरे न्याय–के बीच–मे वोलेंगे और राजा–से कहेगे कि राजाधिराज! इस–बार–की भूल–को क्षमा करें और मुझ–को कष्ट (एव) शोक–से वचायेगे। तो कौन जाने कि राजा उन–की सुन–ले और मेरी सजा ढाँक–कर दवा–दे (=माफ कर–दे)।

तव व्यापारी–ने अपने मित्र-को वुलाया और उस–को यह हाल वतलाया और हाथ जोडा, विनती की कि "भाई! राजा–के यहाँ मेरे साथ चलो और मेरी तरफ–से राजा–से विनती कर–के मेरे जीवन–को वचा–लो।" तव उस–ने उस–से कहा कि 'भाई! यह तेरी असली युक्ति है, पर मैं राजा–के निकट तेरे साथ नही जाऊँगा। मैं कौन मुँह ले–कर जाऊँगा और राजा–से विनती करूँगा। राजा मेरे ऊपर गुस्सा नही करेगा? अपराध–भूल–मे तुम्ही फँसे–हो, अकेले तुम–ही जाओ; मैं नही जाऊँगा।"

व्यापारी यह वात सुन–कर ज्यादा दुख–मे पागल–की तरह हो–कर विचारन लगा। 'हाय! हाय!! मैं क्या करूँ! मैं दूसरे मित्र–को वुलाऊँगा। उस–का भरोसा है। वह मेरे साथ राजा–के यहाँ चलेगा।' तव दूसरे मित्र–को वुलाया और उस–का दूसरा मित्र आया और उस–को सव हाल वतलाया। तव उस–ने उस–से कहा, 'अच्छा है, मैं चलूँगा'। मित्र–की वात व्यापारी सुन–कर खुश हुआ और वे दोनो जने एक–ही साथ उठ–कर चल–दिये। जव गाँव–के फाटक–के निकट पहुँचे तव व्यापारी–का साथी मित्र उस–से कहने लगा कि "भाई! अव मैं डर–रहा–हूँ। राजा–के आगे मैं कैसे वात करूँगा। कही राजा मेरी वात सुन–कर मुझ–पर गुस्सा हो–जाये; कही मुझ–को सजा दे–दे। मैं घर–को लौट–कर जाऊँगा। तुम्हारे साथ नही जाऊँगा।" ऐसा कह–कर भाग–गया।

व्यापारी–ने जव ऐसा देखा तो अपनी ऊर्ध्व–श्वास लेने लगा और आह मारने लगा कि 'हाय! हाय!! जिन–को मैं मित्र जानता था और (जो) खुशी और आनन्द के दिनो–मे मुझ–से वडा प्रेम रखते–थे (उन्हो–ने) अव दुख–मे मुझ–को छोड़ दिया। भागने दो, ऐसे छलियो–को। मेरा एक मित्र और है। उस–को वुलाने–को (=वुलाना) मुश्किल है क्योंकि उस–को मैं नीच जानता–था। इसलिए वह मेरा सहायक नही होगा। मुझ–को और कोई युक्ति तो सूझ नही पड़ती। मैं उस–के पास जाऊँगा। कही मुझ–को वह उदास और रोते देख–कर उस–का मन पिघल जाये और दया कर–के मेरी विनती–को सुन–ले।' तव उस–के पास व्यापारी गया और शर्मा–कर वा आँखो–मे आँसू भर–कर कहा, "ए! प्यारे भाई!! दया कर–के मेरी भूल–

को माफ–कर–दे। मेरा ऐसा हाल है। दया कर–के आओ और राजा–से मेरी प्रार्थना कर–के मुझ–को बचा–लो।" उस–के तीसरे मित्र–ने दुख–की बात सुन–कर कहा कि "भाई! तेरे आने–से मुझ–को बडी खुशी हुई। मेरी और तेरी पिछली बातो–को जाने–दे। किसी बात–को मत सोच। मैं सब दिन तेरे ऊपर प्रेम करता–रहा–हूँ। अब मुझ–से जहाँ–तक बन पडेगा तहाँ–तक मेरी भलाई करूँगा। राजा मेरा परिचित है।" इस प्रकार वे दोनो जने राजा–के पास चल दिए। और उस–ने राजा–से विनती की। उस–की विनती–को राजा–ने सुन लिया और व्यापारी–को अपने निकट बुलाया। और सजा–के बदले उस–को प्यार किया।

जबलपुर ज़िले मे बघेली बोलने वालो की सख्या ६,९५,१०० बतलायी गयी है। परन्तु यह बोली अपने विशुद्ध रूप में तो केवल ज़िले के उत्तर–पूर्व मे ही बोली जाती है। शेष भाग मे यह पन्ना, दमोह तथा नरसिंहपुर की बुन्देली के सन्निकट होती जाती है। ज़िले मे कोल लोग एक बडी सख्या मे है परन्तु उन्होने अपनी भाषा छोड दी है और अब वे अपने पडोसियो की ही सामान्य बघेली बोलते है। उपर्युक्त आँकडो मे वे सम्मिलित कर लिये गये है। बघेलखण्ड एजेन्सी मे भी हमे यही वस्तु–स्थिति मिली है। जबलपुर से प्राप्त 'उडाऊ–पूत–कथा'–नमूना की प्रथम कुछ पक्तियाँ देना ही यहाँ पर्याप्त होगा। यह नमूना विशुद्ध बघेली क्षेत्र का नही है फलस्वरूप यह बुन्देली से अत्यधिक मिश्रित है। उस भाषा के उदाहरण-स्वरूप हम निम्न प्रयोगो को उद्धृत कर सकते हैं–भे=(वे) हुए, रहैं=(वे) थे, तथा–ओ अन्त वाले भूतकालिक रूप यथा—'चुको'=(उस–ने) पूरा किया तथा 'परो'=(वह) गिरा। दूसरी ओर, 'रहो–तै=(वह) था' मे बघेली के विशिष्ट प्रयोग 'तै' को भी नोट कीजिए। हम यहाँ–इस वाला पुर्वी हिन्दी का भूतकाल भी पाते है यथा–दीन्हिस, जिसे दीन्हिसि भी लिखते है, इसका अन्तिम–इ अति क्षीण रूप मे उच्चरित होता है। कुछ शब्दो जैसे—चरामैं=चराने के लिए, मे 'व' के स्थान पर 'म' के प्रयोग की ओर भी ध्यान आकर्षित किया जा सकता है। सेन्ट्रल प्रोविन्सिज़ गजेटियर, पृष्ठ १७५, के अनुसार, इस स्थानीय बोली की प्रमुख विशेषताएँ इस प्रकार है—लगभग सभी ह्रस्व स्वरो का लोप और ष के स्थान पर ख एव श के स्थान पर स का प्रयोग। अन्तिम दो तो फिर भी पूर्वी हिन्दी की सभी बोलियो मे मिलती है।

(नं० ३८)

भारत–आर्य परिवार मध्यवर्ती शाखा

पूर्वी हिन्दी

बुन्देली–मिश्रित बघेली बोली (ज़िला जबलपुर)

कौनौ मनई–के दो लड़िका रहैं। उन–माँ–से छोटका लड़िका बाप–से कहिस

की बाप धन–माँ जौन हमार हीँसा होय सो हम–का दै राखा। तव वा धन ओ–ही वॉट दीन्हिसि। बहुत दिन नहीँ भे कि छोटका लड़िका सब कुछ जोर–के दूरी देस–माँ चला गा औ वहाँ लुच्चपन–माँ दिन बिताई–के आपन धन उड़ाय दीन्हिस। जब वा सब उड़ाय चुको तव वा देस–माँ वडा अकाल परो औ वा कंगाल होइ–गा। औ वा जाइके वा देस–वालेन–के यहाँ–से एक–के यहाँ रहैं लाग और जौन ओ ही अपने खेत–माँ सुमर चरामै–का पठवाइस। और जौन फलियन–का सुमर खाइन–रहैं तौने–माँ आपन पेट भरै–का चाहत रहो–तै। और ओही कोऊ कुछ ना देत रहै।

हिन्दी प्रतिरूप

किसी मनुष्य–के दो लडके थे। उन–मे–से छोटे लडके–ने पिता–से कहा, कि 'पिता! धन–मे जो हमारा हिस्सा होये वह हम–को दे–दो।' तव वह धन उस–को वाँट दिया। वहुत दिन नही हुए कि छोटा लडका सव कुछ जोड–कर दूर देश–मे चला गया और वहाँ लुच्चेपन–मे दिन बिता–कर अपना धन उडा दिया। जव वह सव उडा चुका तव उस देश–मे वडा अकाल पडा और वह कगाल हो–गया। और वह जा–कर उन देश–वालो–मे–से एक–के यहाँ रहने लगा और जिस–ने उस–को अपने खेत–मे सुअर चराने–के लिए भिजवाया। और जिन फलियो–को (=भूसी) सुअर खाते–थे उन्ही–से अपना पेट भरने–को चाहता–था और उस–को कोई कुछ न देता–था।

दक्षिण की विश्रृंखल बोलियाँ

मरारी पोंवारी, कुम्भारी तथा ओझी

इनमे से प्रथम तीन जन–जातीय (Tribal) बोलियाँ है जो बालाघाट तथा भन्दरा मे बोली जाती हैं। पडोस मे बोली जाने वाली अन्य भाषाओ से मिश्रित ये बोलियाँ बघेली के मात्र-विश्रृखलित-रूप है। ये दोनो ज़िले छत्तीसगढी,बघेली बुन्देली तथा मराठी बोलियो के सन्धि-स्थल है, यदि हम केवल आर्य–भाषाओ की ही गणना करते हैं और द्राविड भाषाओ को छोड देते हैं जो इसी भू–प्रदेश मे फैली हैं। ऊपर दी हुई तीनो बोलियाँ विशुद्ध बघेली के अन्तर्गत आती है। इसी भू-खण्ड मे हम गोंडी–विकृत छत्तीसगढी का एक रूप–बैगानी, मराठी-विकृत बुन्देली का एक रूप-लोधी, तथा गोवारी बोली पाते हैं जो कि कुछ स्थानो मे बुन्देली है और कुछ मे मराठी। ओझी, बघेली का एक विकृत रूप है जो एक द्राविड जन–जाति ओझाओ द्वारा छिंदवाडा ज़िले मे बोली जाती है। नमूनो का अध्ययन करते समय इन सब पर सम्यक् विचार किया जायगा। हम इन बोलियो को एक क्रम से लेंगे। ये सभी 'बोलियाँ' न होकर 'जारगन' (Jargons) ही अधिक हैं। इसलिए इनके समूचे नमूने आवश्यक नही है।

मरारी मरार-लोगो द्वारा व्यवहार मे आने वाली बोली है। यह बागवानी करने वाली जाति है जो वैसे तो लगभग सम्पूर्ण मध्यप्रदेश मे बहुसख्यक रूप मे मिलती है किन्तु बालाघाट मे यह सर्वाधिक सख्या मे जान पडती है। इनकी उत्पत्ति के स्रोत दो माने जाते है—बरार तथा उत्तरी भारत। बालाघाट मे रहने वाले लोग उत्तर भारत से आये हुए जान पडते हैं, यह उनकी बोली मे पायी गई विचित्र अनियमितताओ से स्पष्ट हो जाता है क्योंकि ये अनियमितताएँ गगा–द्वाब की भाषाओ की ओर सकेत करती हैं। 'बोली' के रूप मे 'मरारी' का उल्लेख केवल उसी ज़िले से प्राप्त हुआ है और वहाँ यह ५२,७०० व्यक्तियो द्वारा बोली जाने वाली बतलायी गयी है। यह सलेतकरी की पूर्वी तहसीलो को तथा रायगढ को, जहाँ की प्रमुख भाषा छत्तीसगढी का खल्टाही–रूप है, छोडकर ज़िले के सम्पूर्ण भागो मे पायी जाती है। जहाँ तक क्रिया-पद-रचना का प्रश्न है, यह भी माँडला मे बोली जाने वाली बघेली की तरह पूर्वी हिन्दी का ही एक रूप है। दूसरी ओर, इसके सज्ञापद, पूर्वांचलीय मध्य–द्वाब की कनौजी का ध्यान दिलाते हैं। इस प्रकार, इसकी सज्ञाओ तथा विशेषणो का कर्त्ता-

कारकीय रूप-ओ मे अन्त होने वाला है, जैसे छोटो (=छोटा), मोरो (=मेरा) और इसमे बाँदा की तरह पूर्वी हिन्दी का भूतकालिक अन्य पुरुष एकवचन प्रत्यय-इस भी प्रयुक्त होता है जिसका कर्त्ता पश्चिमी हिन्दी के प्रतिनिधि-प्रयोग-ने से युक्त होता है,जैसे-टुरा-ने कहिस (=लडके-ने कहा), उस-ने कहिस (=उसने कहा) मो-ला का-ला संभवत. मराठी अथवा छत्तीसगढी से आया है। 'अपरो' मे उच्चरित र, मराठी ल के उच्चारण का स्पष्ट प्रयत्न जान पडता है।

वालाघाट ज़िले मे सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण भाषा मराठी है। इस विशिष्ट स्थानीय वोली को 'मरहेटी' रूप मे जाना जाता है और यह निम्नवर्गीय व्यक्तियो द्वारा मऊ, परसवारा, सरेखा, भीमलाट तथा रायगढ—उत्तरी परगनो और सलेतकरी एव चौरिया-पूर्वी परगनो को छोडकर शेष सम्पूर्ण जिले मे वोली जाती है। ज़िले के पूर्व मे अवस्थित अन्तिम तीन परगनो की भाषा छत्तीसगढी का खल्टाही रूप है। पश्चिमोत्तरी मऊ, परासर तथा सरेखा परगनो की आर्य भाषाये मरारी, पोवारी और लोधी हैं । ये तीनो भाषाएँ सम्पूर्ण मराठी-क्षेत्र तथा पोवारी इसके अतिरिक्त भीमलाट मे भी वोली जाती है। जैसा कि ऊपर कहा जा चुका है, प्रथम दो वघेली के और तृतीय वुन्देली के रूपान्तर है। द्राविड़-परिवार की गोंडी भी लगभग सम्पूर्ण ज़िले मेवोली जाती है। गोलारी,एक द्राविड-भाषा तथा वैंगानी-छत्तीसगढी का एक विकृत रूप भी अन्यान्य विछिन्न स्थानो मे वोली जाती है । 'लभानी भी ज़िले के उत्तर तथा पूर्व मे वोली जाती है । इन अन्यान्य भाषाओ एव वोलियो के आँकडे निम्न प्रकार है—

भाषा	वोली	वोली-योग	भाषा-योग
पूर्वी हिन्दी	खल्टाही	८८,३००	
	वैंगानी	१,०००	
	मरारी	५२,७००	
	पोवारी	४१,३००	
			१८३,३००
वुन्देली	लोधी		१८,६००
लभानी			५९०
मराठी	मरहेटी		९८,७००
द्राविड भाषाएँ			७७,७००
उर्दू तथा अन्य			४,४४१
		योग	३८३,३३१

उड़ाऊ पूत–कथा के मरारी–रूपान्तर के प्रथम कुछ वाक्य बोली के नमूने के रूप मे नीचे दिए जा रहे हैं —

(न० ३९)

भारतीय आर्य परिवार मध्यवर्त्ती शाखा

पूर्वी हिन्दी

बघेली (मरारी विश्रृंखल) बोली (जिला बालाघाट)

एक आदमी–के दो टुरा रहे ओ–को–से–मे छोटो टुरा–ने अपने दाऊ–से कहिस हे दाऊ धन–मँ–से जो मोरो हीसा है वो मो–ला दे–दे। तब उस–ने उन–ला अपनो धन बाँट देइस। खुब दिन नहीं भइस की छोटो टुरा सब कछु जमा कर–के दूर देस–ला चले गइस अउर वहाँ लुचपन–में दिन बीताइस और अपनो धन–ला खाय डारिस। जब वह सब–ला खाय डारिस तब वा देस–मा माहागो भइस और वह भिकारी भै गइस। और वह जा–के वा मुलुक–के रहने–वारे–मँ–से एक–के याहा रहन लगिस जौन्ह–ने ओ–ला अपरो खेत–में डुकर चरावें–ला पटोइस। और वा उन फोकला–से जे–ला डुकर खात रहे अपरो पेट भरत–रहे। और ओ–ला कछु कोई नहीं देत–रहे।

हिन्दी प्रतिरूप

एक आदमी–के दो लडके थे। उन–मे–से छोटे लडके–ने अपने पिता–से कहा —हे पिता (जी)! धन–में–से जो मेरा हिस्सा है, वह मुझे दे–दो। तव उस–ने उन–को अपना धन वाँट दिया। वहुत दिन नही हुए कि छोटा लडका सव धन एकत्र कर–के दूर–देश को चला गया और वहाँ लुच्चेपन मे दिन विता–डाले और अपना धन वरबाद–कर डाला। जव उस–ने सव खा–डाला तव उस देश–मे अकाल पडा और वह भिखारी हो गया। और वह जा–कर उस देश–के रहने–वालो–मे–से एक–के यहाँ रहने–लगा जिस–ने उस–को अपने खेत–मे सुअर चराने–को भेजा। और वह उस भूसी–से जिस–को सुअर खाते–थे, अपना पेट भरता–था और उस–को कोई कुछ नही देता था।

पँवारी पँवारो की भाषा है, जो एक खेतिहर जति के हैं। ये लोग अपना उत्पत्ति–सम्वन्ध मालवा के परमार राजपूतो से जोडते है और यहाँ से ही इस जाति के लोग उत्तरी भारत मे फैले हैं। कालान्तर मे इन्होने वे विस्तीर्ण उपनिवेश कायम

किए जिन्हे हम आजकल वेन गगा की घाटी मे पाते है। इस जाति का पैतृक घर धार है जो कि मध्यभारत मे है। यद्यपि पँवार मध्यप्रदेश के सभी भागो मे पाये जाते हैं पर पँवारी बोली का स्पष्ट उल्लेखन केवल छिंदवाड़ा, वालाघाट तथा भडारा जिलो से ही प्राप्त हुआ है। वाद की जाँच ने पता चला कि यह सूचना भी आवश्यकता से अधिक भ्रान्तिपूर्ण है क्योकि जैसा कि अव कहा जा रहा है, छिंदवाडा के पँवारो की अपनी कोई बोली नही है। भडारा एव वालाघाट के पँवारो की सख्या, १८९१ की जनसख्या रिपोर्ट के अनुसार नीचे दी जा रही है :—

वालाघाट	४३,५६४
भडारा	७०,०४०

इन ज़िलो से प्राप्त पँवारी वोलने वालो की सख्या ऊपर दी हुई सख्या से अत्यधिक कम है। देखिए—

वालाघाट	४१,३००
भडारा	१,७००
योग	४३,०००

पँवारी, मरारी की भाँति उचितत. एक वोली नही कही जा सकती। निस्सन्देह यह एक 'जारगन' (Jargon) है जिसका आधार माँडला की वघेली है। यह मराठी तथा जाति के मूल-स्थान 'पश्चिमी राजपूताना' से चले आते हुए बोली-रूपो से पूर्णत. मिश्रित है। उदाहरण के लिए नमूनो मे पाए जाने वाले शब्द जैसे, देइस=(उसने) दिया, लेइस=(उसने) लिया वघेली के हैं, लेकिन, कोन्ही=कोई, होता=(वे) थे, आपरो अथवा अपरो=अपना तथा कारक-चिह्न-ला मराठी के विकृत रूप हैं; तथा से=है और कर-खन (=करके) मे का 'खन' पश्चिमी राजपूताना से आए हैं। वघेली के भूतकाल के साथ 'ने' का प्रयोग ध्यान देने योग्य है। हमने मरारी के सन्दर्भ मे भी इसकी चर्चा की है। यहाँ दो छोटे नमूने दिये जा रहे हैं—एक वालाघाट से तथा दूसरा भडारा से।

(नं० ४०)

भारत-आर्य परिवार मध्यवर्त्ती शाखा

पूर्वी हिन्दी

वघेली (पँवारी विश्रृखल) वोली (वालाघाट जिला)

कोन्ही मानुस-का दुइ वेटा होता। ओ-मा-ल्हे लाहनी-ने अपरे वाप-ला कहिस हे वावा सम्पत्ति-मा-ल्हे जो मोरो हिस्सा से ऊ दे-देव। मग वो-ने उन-ला

आपरो धन बाँट देइस। जुग रोज नहीं भया, नाहनो बेटा सब येकु–जिया कर–खन दूर देस–ला चली गयो। वहाँ जाय–खन लुचपना–माँ सब सम्पत्ति खोय देइस। जब वो सब उडाय देइस मग उन देस–में अकाल पडेव। अखिन ऊ गरीब भै गयो। अखिन ऊ जाय–खन वने देस–के रहनार–मा–ल्हे एक घरे रहन लगेव। जे–ने ओ–ला आपलो खेत–माँ डूकर चरावन–ला पहुँचाइस। अखिन ऊ उन खोलपा–मा–ल्हे जे–ला डूकर खात होतो, आपन पेट भरत चाहोत होतो अखिन कोन्ही नही ओ–ला काही देत होतो।

हिन्दी प्रतिरूप

किसी मनुष्य–के दो लडके थे। उस–मे–से छोटे–ने अपने पिता–से कहा—हे पिता (जी)! सम्पत्ति–में–से जो मेरा हिस्सा है, वह दे–दो। तब उस–ने उन–को अपना धन बाँट दिया। अधिक दिन नही हुये, छोटा लडका सब (धन) एक–स्थान (–पर) कर–के दूर देश को चला गया। वहाँ जा–कर लुच्चेपन–मे सब सम्पत्ति खो दी। जब उस–ने सब उडा डाला तब उस देश–मे अकाल पडा और वह गरीब हो गया और वह जा–कर उसी देश–के रहने–वालो–में–से एक–के घर–मे रहने लगा जिस–ने उस–को अपने खेत–मे सुअर चराने–को पहुँचाया (=भेजा)। और वह उस भूसी–मे–से जिस–को सुअर खाते–थे, अपना पेट भरना चाहता–था और कोई नही उस–को कुछ देता–था।

(न० ४१)

भारत–आर्य परिवार — मध्यवर्त्ती शाखा

पूर्वी हिन्दी

बघेली (पँवारी विशृंखल) बोली (जिला भडारा)

एक मानुस–ला दुई बेटा होता। ओ–को नहानो बेटा बाबा–ला कहोत–होतो, बाबा, मोरो माल–मत्तो–का हिसा–मोरो तोउ–दो। मग आपरो माल–मत्ता बाट देइस। मग धाकटो बेटा माल–मत्तो जमा कर–फन दूर देस–को निकल गयो। आनिक अपरो मन–ले बरतावा कर–लेइस, सरबो सपत उडाय देइस। वोतई जमा खरच डाइस। ओन मुलुख–मो बडा दुकार पड्यो–होतो ओम वात–सो लगी जा–से वो–ला। ओ–को वाद ओन मुलुख–को एक मानुस–के जवर रह्यो। ओन डूकर चरावन अपरे खेत–म धाडिस। ओ–ने डुकरन फोल खाइस। उच फोल खाय–के अपरो पेट भरू अस ओन दिल–म अपर सोचीस। आनिक कोइन ओ–ला काही नही देइस।

हिन्दी प्रतिरूप

एक मनुष्य–के दो लडके थे। उस–के छोटे लडके–ने पिता–से कहा, पिता (जी)! मेरे धन–का हिस्सा मुझ–को तोड–कर (=बाँट–कर) दो। तब (उस–ने) अपना धन बाँट दिया। तब छोटा लडका धन जमा–कर–के दूर–देश–को निकल गया। और अपने मन–चाहे कार्य कर–लिये; (और) अपनी सब सम्पत्ति उडा डाली। वहाँ (सभी) धन खर्च–कर डाला। उस देश–मे बडा अकाल पडा, उस बात–से भुखमरी आ–गयी उस–को। उस–के बाद (वह) उसी देश–के एक मनुष्य–के यहाँ रहा। उस–ने सुअर चराने–के लिए (उस–को) अपने खेत–मे भेजा। उस–ने सुअरो–की भूसी खायी। 'उसी भूसी–को खा–कर अपना पेट भरूँ' ऐसा उस–ने दिल–मे अपने सोचा। और किसी–ने उस–को कुछ नही दिया।

सन् १८९१ की जनसख्या–रिपोर्ट के अनुसार 'कुम्भार' अथवा 'कुम्हार' अर्थात् 'घडा बनाने वाली जाति' के व्यक्तियो की सख्या मध्यप्रदेश मे १,०२,६८२ तथा बरार मे २२,४६५ है । इनमे से केवल छिंदवाडा, चाँदा, भडारा तथा बुल्दाना के ही कुम्हार एक भिन्न जातीय-बोली बोलने वालो के रूप मे उल्लिखित हुए हैं। इनमे से प्रथम दो ज़िलो के तथा बुल्दाना के कुम्हार बुन्देली, मराठी अथवा तेलुगु के विकृत रूपो का प्रयोग करते हैं। भडारा के २,७५० मे के केवल ३० कुम्हारो के सम्बन्ध मे उल्लेख है कि वे मराठी के ही एक रूप का प्रयोग करते हैं परन्तु नमूनो का परीक्षण बतलाता है कि भडारा कुम्हारी, मरारी तथा पँवारी की ही तरह, निस्सन्देह बघेली का ही एक रूपान्तर है, यद्यपि यह मराठी से अत्यधिक रूप मे प्रभावित है। जैसा कि अभी दो बोलियो के सम्बन्ध मे कहा जा चुका है, इसमे भी अभिकर्त्ता (Agentive) कारक के परसर्ग 'ने' का प्रयोग बघेली क्रियाओ के भूतकालिक रूपो के साथ हुआ है।

इस 'जारगन' (Jargon) का एक छोटा-सा नमूना देना ही यहाँ पर्याप्त होगा—

(नं० ४२)

भारत–आर्य परिवार — मध्यवर्त्ती शाखा

पूर्वी हिन्दी

बघेली (कुम्भारी विशृंखल) बोली — (ज़िला भडारा)

एक माणुस–ला दो पोऱ्या रहे। न्हान्हो पोऱ्या कहते, बाबा, आधो हिस्सा मो–ला दे। वो–ने पोऱ्या–ला जमा बाढ देइस। थोडे दिन रहिस न्हानो पोऱ्या सब जमा कर–के दूर देस चेल गइस । ओ–ने वाँहाँ जा–के सब पैसा खो देइंस। जब ओ–ने सब पैसा खो–देइस तब मँहँगो गिरिस। कर–के तगी ओ–के उपर पडिस।

तब एक बडो अदमी-के जगा जा-के रहिस। तब ओ-ने ओ-ला डुकर चराण-ला खेत-मे पोहचाइस। वा डुकर फोलका खात रहिस। तब ओ-के मन-मे आइस या फोलका खा-के मे-बी रहूँ। जब ओ-ला कोई-ने खान-ला नै देई।

हिन्दी प्रतिरूप

एक मनुष्य-के दो लडके थे। छोटा लडका कहता-है, पिता (जी), आधा हिस्सा मुझ-को दे-दो। उस-ने लडको-को धन बाँट दिया। कुछ दिन रहे (=बीते), छोटा लडका सब (धन) इकट्ठा कर-के दूर-देश-को चला गया। उस-ने वहाँ जा-कर सब पैसा खर्च-कर-दिया। जब उस-ने सब पैसा बरबाद-कर-दिया तब महँगाई (=अकाल) आ-पडी। इसलिए परेशानी उस-के ऊपर पडी। तब (वह) एक बडे आदमी-के यहाँ जा-कर रहा। तब उस-ने उस-को सुअर चराने-के लिए खेत-मे भेजा। वे सुअर भूसा खाते-थे तब उस-के मन-मे आया (कि) यह भूसी खा-कर मैं भी रहूँ। तब (भी) उस-को किसी-ने खाने-को नही दिया।

ओझा द्राविडीय गोडो की एक उपजाति है। सन् १८९१ की जनसख्या रिपोर्ट के अनुसार कुल ओझाओ मे के ५,४५९ मध्यप्रदेश मे रहते है। ये गोडो के भाट है और दो वर्गों मे विभक्त है—प्रथम, गायको, नृत्यको तथा भिक्षुको के रूप मे अभिनय करते हैं और दूसरे, चिडीमार तथा जाल डालने वाले है। सभवत. उनमे से अधिकाश सामान्य गोडी ही बोलते है। लेकिन छिंदवाडा से लगभग १०० के सम्बन्ध मे उल्लेख है कि वे 'ओझी' बोली बोलते हैं। यह वहाँ भी गोडी की एक बोली के रूप मे परिगणित है। फिर भी, नीचे दिए हुए छोटे-से नमूने के एक उद्धरण से स्पष्ट हो जायगा कि यह बघेली पर आधारित एक विकृत जारगन (Jargon) है। छिंदवाडा जिले मे ओझाओ की पूर्ण सख्या ४८६ है।

(न० ४३)

भारत-आर्य परिवार मध्यवर्त्ती शाखा

पूर्वी हिन्दी

बघेली (ओझी विश्रृंखल) बोली (छिंदवाडा जिला)

एक आदमी-के दुइ डोका रहके छोटवे अपन बाप-से गुटयाइस, बाप मोर हिस्सा मो-खे दे-दे। बाप-ने हिस्सा दे-दीस और थोड़े दिना-के बाद अपना हिस्सा इकठा कर-लीस दूर-देस-को जात लगिस और सब बयको-के खातर उड़ाय दीस।

और जव सव तयिया-पूंज खाय लीस वुह मुल्क-में वड़ा काल पड़-गइस। और वोह टूट गयी। और वुह भले आदमी-के निजके जायन वही मुलक-के और उस सुवर चराने खेता भेजिस। और हम-को छिलपा मिलतिस तो हम बड़े खुशी होतिस खाय-के जो सुवर खात-हैं।

हिन्दी प्रतिरूप

एक आदमी-के दो लडके थे। छोटे-ने अपने पिता-से कहा, पिता (जी)! मेरा हिस्सा मुझ-को दे-दो। पिता-ने हिस्सा दे-दिया। और (उस-ने) थोड़े दिनों-के वाद अपना हिस्सा इकट्ठा-कर-लिया, (और वह) दूर-देश-को चला-गया और सव (धन) पतुरियो-के प्रयोजन-मे उडा-डाला। और जव सव पूंजी खा-ली(तव) उस देश-मे वडा अकाल आ-पडा और वह टूट-गया (=कगाल हो गया)। और वह भले आदमी-के पास गया उसी देश-के। और उस-ने सुअर चराने-को खेतो-मे भेजा। 'और मुझ-को भूसी (यदि) मिलती तो मैं वडा खुशी होता (वह भूसी) खा-कर जो सुअर खाते हैं।'

छत्तीसगढ़ी

छत्तीसगढी का रूप जो रायपुर मे प्रचलित है, वह ऊपर स्पष्ट किया जा चुका है।

(न० ४४)

भारत–आर्य परिवार मध्यवर्ती शाखा

पूर्वी हिन्दी

छत्तीसगढ़ी अथवा लरिया (जिला रायपुर)

कोनो आदमी–के दू छोकरा रहिस –है। वो–माँ–के सब–से छोटे–हर अपन बाप–से कहिस के जोन मोर हिस्सा होय वो–ला दे–दे। तब वो–हर अपन जयदाद–ला बाँट दिहिस। थोरेक दिन–के पिछे छोटे छोकरा–हर अपन सब जयदाद–ला जोर–के दुरिह्या देस चले गइस और उहाँ अपन सब जयदाद–ला फूंकि दिहिस। जब सब फुंका गय तव उहाँ अकाल पड़िस और वो–हर गरीब भय गय। तब वो–हर वो गाँव–के एक वसुन्धरा–के घर रहे लगिस जोन–हर वो–ला अपन खेत–माँ सुंअरा चरायें–बर भेजत रहिस–है। और वो–हर वो भूंसा–ला जे–ला घेंटा–मन खात–रहिस अपन पेट भरे–ला चाहत–रहिस। और तोनो–ला कोनो नहीं देत–रहिस। तब वो–ला चेत आइस और कहिस के मोर ददा–के कतकोन नोकर–ला फेके–के पुर्ती खाय–बर मिलत–है और मैं भूखन मरत–हौं। मैं उठ–के अपन ददा–के नजीक जाहौं और वो–कर–से कइहौं के ददा मैं स्वरग–के उलटा और तोर आगु–माँ पाप करे–हौं। मैं तोर लइका कहायें–के जोग नहीं आँव। मोला अपन नोकर–माँ–के एक जान। और वो–हर उठ–के अपन ददा–के पास चले लगिस। वो–हर थोरेक दुरिह्या गये–रहिस–है के वो–कर ददा–हर वो–ला देख–के दया करिस और दौर–के वो–कर–से मिल–के चूमिस। तव छोकरा–हर कहिस के ददा मैं सरग–के उलटा और तोर आगु–माँ पाप करे–हौं और मैं तोर लइका कहाये–के जोग नहीं आँव। तव वो–कर ददा–हर अपन नोकर–ला कहिस के सुन्दर कपडा निकाल और वो–ला पहिनाव और वो–कर हाथ–माँ मुंदरी और पाँव–माँ पनही पहिराव और हम–सव खाई और खुसी करी। काहे–वर के मोर लइका मर–गये–रहिस–है जी गये। गँमाय गये–रहिस–है मिल गये। और वो–सब आनन्द करे लगिन।

वो-कर वड़े लइका-हर खेत-माँ रहिस। और जव वो-हर घर-के नजीक आये लगिस बाजा-गाजा-के सवद सुनिस। और वो-हर अपन नोकरन-माँ-के एक-ला बलाये-के पुछिस के ये का होत-है। तव वो-हर वो-कर-से कहिस के तोर भाई आइस-है और तोर ददा-हर सुन्दर जेवनार रचे-है काहे-वर के वो-ला छेम कुसल पाइस-है। तव वो-हर गुस्सा करिस और भितर जाये नहीं चाहिस। तव वो-कर ददा-हर बाहिर-माँ आ-के वो-ला मनाये लगिस। तव वो-हर अपन वाप-ला कहिस के देख मैं अतेक दिन-से सेवा करत-हौं और कभू तोर हुकुम-ला नहीं टारेंव और तैं हर मो-ला छेरिका-के पिला-तक-ले नहीं दिये के मैं अपने सगी-के सग खुसी करतेंव। पर ये तोर लइका जोन पतुरिया-के सग तोर सव माल-वसुत-ला खाय-के वैठे-हे, जैसने वो-हर आइस-है तैसने तैं-हर वो-कर खातिर सुन्दर जेवनार करे-हस। वो-कर ददा-हर कहिस-के तैं-हर सब दिन-ले मोर सग हस और जोन कुछ मोर है सो सव तोर है। पर तो-ला अनन्द करे चाही और खुसी मनाये चाही काहे-वर के ये तोर भाई मर गये-रहिस-है फेर जीइस-है । गँमाय गये-रहिस-है फेर मिलिस-है ।

हिन्दी प्रतिरूप

किसी आदमी-के दो लडके थे। उन-में-के छोटे-ने अपने पिता-से कहा कि 'जो मेरा हिस्सा हो उस-को (मुझे) दे-दो। तव उस-ने अपनी जायदाद-को वाँट दिया। थोडे दिनो-के वाद छोटा लडका अपनी सव जायदाद-को इकट्ठा कर-के दूर-देश-को चला-गया और वहाँ अपनी सव जायदाद फूंक दी। जव सव वरवाद-हो-गया तब वहाँ अकाल पडा और वह गरीव हो-गया। तव वह उसी गाँव-के एक वासिन्दा-(=रहने-वाले) के घर रहने-लगा, जो उस-को, अपने खेतो-मे सुअर चराने-के लिए भेजा-करता-था। और वह उस भूसे-को, जिसे सुअर-के-वच्चे खाते-थे, अपना पेट भरने-के लिए चाहता-था। और वह-भी कोई नही देता-था। तव उसे होश आया और (उस-ने) कहा कि 'मेरे पिता-के कितने-ही नौकरो-को फेंके-हुए-मे-से पर्याप्त खाने-भर-को मिलता-है, और मैं भूखो मरता-हूँ। मैं उठ-कर अपने पिता-के निकट जाऊँगा और उस-से कहूँगा कि "दादा! मैं-ने स्वर्ग-के विपरीत और तुम्हारी उपस्थिति-मे पाप किया-है। मैं तुम्हारा लडका कहलाने-के योग्य नही हूँ। मुझे अपने नौकरो-मे-से एक जानो।" और वह उठ-कर अपने पिता-के पास चला गया। वह थोडी दूर गया-था कि उस-के पिता-ने उस-को देख-कर दया की और दौड-कर उस-से मिल-कर (उसे) चूमा। तब लडके-ने कहा कि, 'दादा! मैं-ने स्वर्ग-के विपरीत और तुम्हारी उपस्थिति-मे पाप किया-है और मैं तुम्हारा लडका कहलाने-के योग्य नही हूँ।' तव उस-के पिता-ने अपने नौकर-से कहा, कि 'सुन्दर कपडा

निकालो और उस–को पहिनाओ। और उस–के हाथ–मे अँगूठी और पैर–मे जूते पहिनाओ। और हम–सब खायें और आनन्द मनायें क्योकि मेरा लडका मर गया–था, जी गया–है; खो गया–था, मिल गया–है।' और वे–सब आनन्द करने लगे।

उस–का वडा लडका खेत–मे था। और जब वह घर–के नजदीक आने लगा, (उस–ने) बाजे–गाजो का शब्द सुना। और उस–ने अपने नौकरो–मे–से एक–को बुला–कर पूछा, 'यह क्या हो–रहा–है!' तब उस–ने उस–से कहा, 'तुम्हारा भाई आया–है, और तुम्हारे पिता–ने सुन्दर दावत तैयार–करायी–है क्योकि उस–को क्षेम–कुशल–से पाया–है।' तव उस–ने गुस्सा की और भीतर नही जाना चाहा। तव उस–का पिता वाहर आ–कर उस–को मनाने लगा। तब उस–ने अपने पिता–से कहा, कि 'देखिए! मैं इतने दिनो–से सेवा करता–हूँ और (मैं–ने) कभी तुम्हारा हुक्म नही टाला और तुम–ने मुझ–को वकरी–का वच्चा–तक–भी नही दिया कि मैं अपने साथियो–के साथ खुशी मनाता पर तुम्हारा यह लडका जो वेश्याओ–के साथ तुम्हारी सब धन–दौलत खो–बैठा–है, जैसे–ही वह आया–है, तैसे–ही तुम–ने उस–के खातिर सुन्दर दावत दी–है।' उस–के पिता–ने कहा, 'तू सभी दिनो–से (=सदैव से) मेरे साथ है और जो–कुछ मेरा है, वह सव तेरा है। पर तुझ–को आनन्द करना चाहिए और प्रसन्न–होना चाहिए क्योकि यह तेरा भाई मर–गया–था, फिर जी–उठा–है, खो गया–था, फिर मिला–है।'

बिलासपुर जिले की भाषा भी विशुद्ध छत्तीसगढी है, यह नीचे दिए हुए दो नमूनो से स्पष्ट हो जाएगा। प्रथम, उडाऊ–पूत–कथा का एक रूपान्तर है और दूसरा, एक लोक–कहानी है कि मछुये के लडके ने एक साहूकार को कैसे ठगा।

यहाँ यह उल्लेखनीय है कि 'बिलासपुर मे गोडो की सख्या १,५९,५०२ वतलायी गयी है जिनमे से केवल ८,४५० के आसपास गोडी वोलते है। शेष सभी छत्तीसगढी वोलते है और इन्हे विलासपुर जिले की छत्तीसगढी मे सम्मिलित कर लिया गया है। इनकी जनबोली कतिपय आदिभाषीय शव्दो के प्रयोग के कारण अपने आर्य–भाषा–भाषी भाइयो की वोली से यत्किंचित अन्तर रखती है किन्तु यह अन्तर इतना नही है कि इस जनवोली को एक स्वतत्र वोली के रूप मे वर्गीकृत किया जा सके।

(न० ४५)

भारत–आर्य परिवार पूर्वी हिन्दी मध्यवर्त्ती शाखा

छत्तीसगढ़ी अथवा लरिया (जिला विलासपुर)

नमूना–१

कोनो मनखे–के दुइ वेटवा रहिन। उन–माँ–ले छोटका–हर अपन ददा–ले कहिस ददा मालमत्ता–के जौन हीँसा मोर वाँटा–माँ परत–होही तौन मो–का दे–दे।

औ वो-हर अपन मालमत्ता उन-का बाँट दिहिस। औ बहुँत दिन नहीं बीने पाइस के छोटका बेटवा अपन सब धन सकेल-के दूर देस-माँ निकर-गय । औ उहाँ अपन धन-का नाँच्-रंग-माँ उड़ा दिहिस। औ जब जम्माँ-ला फूंक-डारिस तब वो देस-माँ बड़ दुकाल परिस। औ वो-हर भूँखन मरे-लागिस। तब वो चल-के वो देस-के कोनो मंडल के इहाँ जा-के रहिस। औ वो-हर वो-का खेत-माँ सुँवरा चराये-बर पठोइस। औ जौन भूँसा-का सुँवरा खात-रहिन तौन-का खाय-के पेट भरे-के वो-कर मन भय-गय तबो-ले वो-ला कोनो कुछु नहीं देत रहिस। औ जब वो-कर चेत चघिस वो-हर कहिस के मोर ददा-के ऐसन कतको भुतिहार नौकर हवें जिन-कर-मेर खा-पी-के बाँच-जात-हवै औ मैं इहाँ भूखन मरत-हौं। मैं चल-के अपन ददा-मेर जाहौं औ वो-ला कहिहौं ददा मैं भगवान-के औ तोर कसूर करे-हौं औ अब मैं तोर बेटवा कहाये जोग नहीं रह्यौं। औ मो-का तैं अपन एक भुतिहार साँही राख-ले। औ वो-हर चलिस औ अपन ददा-मेर आइस। औ जब वो-कर ददा वो-ला दुरिहा-ले आवत देखिस वो-का मया आइस औ दौर-के वो-का पोटार-लिहिस औ वो-कर चूंमा लिहिस। औ बेटवा वो-का कहिस ददा मैं भगवान-के औ तोर कसूर कर-डार्यों औ तोर बेटवा कहाये जोग नहीं रह्यौं। पर ददा-हर अपन कमिया-मन-का कहिस बने-सुग्घर कपड़ा लावा औ वो-का पहिरावा औ वो-कर हाँथ-माँ मुंदरी औ पाँव-माँ पनही पहिरावा औ अपन खाई औ खुसी मनाई। का-बर-के ये मोर बेटवा मर-गय-रहिस औ फेर जी-उठिस वो गमाय-गय-रहिस वो-ला पाय-घाल्यौं। औ उन-मन खुसी मनाये लागिन।

अतका-माँ वो-कर बड़का बेटवा जौन खेत-माँ रहिस तौन जब घर-के लकठा-माँ पहुँचिस तो वो-हर नाँचा औ बाजा सुनिस। वो-हर एक नौकर-का बलाय-के पूँछिस, ये काये होत-हवै। औ वो-हर वो-का कहिस तोर भाई आइस-हवै औ तोर ददा वो-कर खातिर नेवता करिस-हवै का-बर के वो-हर वो-का नंगत नंगत पाइस। अतका सुन-के वो रिसाय-गइस औ घर-माँ नहीं आवत-रहिस। तो वो-कर ददा बाहिर आय-के वो-ला मनाइस। वो-हर अपन ददा-का जबाब दिहिस देख मैं अतेक बछर-ले तोर नौकरी बजाये-हौं औ तोर कहे बाहिर कब-हूँ नहीं भयौं। तबो-ले तैं मो-ला एक पठरु घलाये नहीं दिये जे-माँ अपन सगी-मन संग मंजा करत्यौं। औ जैसने ये तोर बेटवा आइस जौन-हर तोर जिंदगी-का पतुरिया-मन-ला खवाय दिहिस वैसने तैं वो-कर खातिर नेवता-हकारी करे। तब वो-हर वो-का कहिस बाबू तैं तो मोर संग सब-दिन रहत-हस औ जौन कुछु मोर हवै तौन तोरेच अय। ये उचित रहिस के हम-मन खुसी मनाई औ आनन्द करी का-बर के ये तोर भाई मर-गय-रहिस तौन पुन जी-उठिस औ गमाय-गय-रहिस तौन मिलिस।

हिन्दी प्रतिरूप

किसी मनुष्य–के दो लडके थे। उन–में–से छोटे–ने अपने पिता–से कहा, 'पिता (जी)! धन–का जो हिस्सा मेरे भाग–मे पडता–हो, वह मुझ–को दे–दो।' और उस–ने अपना धन उन–को बाँट दिया। और बहुत दिन नही बीतने–पाये कि छोटा लडका अपना सब धन इकट्ठा–कर दूर–देश–को निकल गया। और वहाँ अपने धन–को नाँच–रग–मे उडा दिया। और जब सभी फूँक डाला तब उस देश–मे वडा अकाल पडा और वह भूखो मरने लगा। तब वह चल–कर उस देश–के किसी धनी (व्यक्ति)–के यहाँ जा–कर रहा। और उस–ने उस–को खेत–मे सुअर चराने–के लिए भेजा। और जिस भूसे–को सुअर खाते–थे, उसी–को खा–कर पेट भरने–का उस–का मन हो–गया। तव–भी उस–को कोई कुछ नही देता–था। और जब उसे चेत हुआ, उस–ने कहा, कि 'मेरे पिता–के–यहाँ ऐसे कितने–ही वैतनिक नौकर है जिन–के पास खा–पी–कर–भी (कुछ) बच–जाया–करता–है। और मैं यहाँ भूखो मरता–हूँ। मैं चल–कर अपने पिता–के पास जाऊँगा और उन–से कहूँगा, "पिता (जी)! मैं–ने भगवान–का और तुम्हारा अपराध किया–है और अब मैं तुम्हारा लडका कहलाने योग्य नही रहा। और मुझ–को तू (=आप) अपने एक वैतनिक नौकर–की तरह रख–ले।" और वह चला और अपने पिता–के–यहाँ आया। और जब उस–के पिता–ने उस–को दूर–से–ही आता देखा (तो) उस–को दया आयी और दौड–कर उस–को लिपटा–लिया, और उसको चूमा लिया। और लडके–ने उस–से कहा, 'पिता (जी)! मैं–ने भगवान–का और तुम्हारा अपराध कर–डाला–है और तुम्हारा लडका कहलाने योग्य नही रहा।' पर पिता–ने अपने नौकरो–से कहा, 'अच्छे सुन्दर कपडे लाओ और उस–को पहिनाओ। और उस–के हाथ–मे अँगूठी और पैर–मे जूते पहिनाओ। और हम–लोग खायें और खुशी मनायें क्योकि यह मेरा लडका मर–गया–था, और फिर जी–उठा है, वह खो–गया–था, उस–को पा–लिया–है।' और वे खुशी मनाने लगे।

इतने–मे उस–का वडा लडका जो खेत–मे था, वह जब घर–के निकट पहुँचा तो उस–ने नाचना और वजाना सुना। उस–ने एक नौकर–को वुला–कर पूछा, 'यह क्या हो–रहा–है?' और उस–ने उस–को कहा, 'तुम्हारा भाई आया–है, और तुम्हारे पिता–ने उस–के खातिर दावत दी–है क्योकि उन्होने उस–को भला–चगा पाया–है।' इतना सुन–कर वह गुस्सा हो–गया और घर–मे नही आ–रहा–था। तव उस–के पिता–ने वाहर आ–कर उस–को मनाया। उस–ने अपने पिता–को जवाव दिया, 'देखिए, मैं इतने वर्षो–से तुम्हारी सेवा करता–आ–रहा–हूँ और तुम्हारे कहने के वाहर कभी नही गया (=हुआ) तव–भी तुम–ने मुझ–को एक वकरी–का–बच्चा

भी नही दिया जिस–से (मैं) अपने साथियो–के साथ आनन्द–मना–लेता। और जैसे–ही यह तुम्हारा लडका आया जिस–ने तुम्हारी जीविका–को वेश्याओ–को खिला–डाला वैसे–ही तुम–ने उस–के लिए दावत–का निमन्त्रण–दिया–है।' तब उस–ने (=पिता–ने) उस–को कहा—'बेटे! तू तो मेरे साथ सब–दिनो–से रह–रहा–है, और जो कुछ मेरा है, वह तेरा–ही है। यह उचित था कि हम–लोग प्रसन्न होवें और आनन्द–मनाये क्योंकि यह तुम्हारा भाई मर–गया–था, वह फिर–से जी–उठा–है, और खो–गया–था, वह (फिर) मिला–है।'

(न० ४६)

भारत–आर्य–परिवार मध्यवर्त्ती शाखा

पूर्वी हिन्दी

छत्तीसगढी अथवा लरिया (ज़िला विलासपुर)

नमूना—२

एक–ठन गाँव–माँ केवट औ केंवटिन रहिस। ते–कर एक–ठन लइका रहिस। केंवट–हर महाजन–के रुपिया लागत–रहिस। तब एक दिन साव रुपिया माँगे–बर आइस। तब सियान–मन घर–माँ न रहँय। लइका घर राखत बैठे–रहय। साव–हर पूँछिस कस–रे बाबू तोर दाई–ददा–मन कहाँ गये–हैं। बोतेक–माँ टूरा–हर कहिस के मोर दाई गये है एक–के दू करे–बर। औ ददा–हर काटा–माँ काटा रूँधे–बर गये है। तब साव–हर कथय के कैसे गोठियान–हस रे टूरा। तब टूरा कथय मैं तो ठीका गोठियाथौं। ओतेक–माँ टूरा–के औ साव–के लराई भय–गय। साव–हर कहिस के तैं जौन बात–ला गोठियाये–हस तौन बात–ला सिरतोन कर दे। नहीं करबे तो तो–ला साहेब–के कचहरी–माँ ले–जावो। तब तो–ला सजा हो–जाही। टूरा–हर कहिस मोर दाई–ददा–मन जतका तोर रुपिया लागत–हैं ते–ला तैं छाँड देबे तब मैं ये–कर भेद–ला बताहौं। ओतेक–माँ साव–हर कहिस के भेद–ला नहीं बताबे तौ तो–ला कैद करवा–देहौं। तब टूरा–हर कहिस हौ महराज चल। साहेब–लँग चलो। केवट–के टूरा औ साव दूनो–झन साहेब–लँग गइन। साहेब–लँग साव–हर फिरयाद करिस के महराज मैं आज बिहनिया केवट–के घर गयौं तब केवट औ केंवटिन घर–माँ नहीं रहिन। वो–कर लइका रहिस। तब मैं वो–ला पूँछेंव के कस–रे बाबू तोर दाई–ददा–मन कहाँ गये–हैं। तब ये टूरा–हर कथय के मोर दाई गये–है एक–के दुई करे–बर औ ददा गये–है काटा–माँ काटा रूँधे–बर। तब ये–कर औ मोर लराई भय–गय। ये–कर मोर हार–जीत लगे–है। ये–कर नियाव–ला कर–दे ये–हर जैसन गोठियात–हवै। साहेब–हर टूरा–ले पूँछिस के कस–रे टूरा ये–कर भेद–ला बतैबे। टूरा कहिस

हौ महराज साव–हर सबो रुपिया–ला छाँड देही ना महराज। वोतेक–माँ साहेब–हर साव–ला पूँछिस के ये–कर भेद–ला टूरा–हर बताय–देही तो सबो रुपिया–ला छाँड देबे–नीं। साव कहिस हौ महराज। औ नहीं बताही तौ सजा हो–जाही न महराज। साहेब कहिस अच्छा तुम–मन चुपे–चाप ठाढे–रहा । साहेब टूरा–ला पूँछिस कस–रे टूरा तैं कैसे कैसे साव–ला गोठियाये । टूरा कहिस मैं ऐसन गोठियायौं के साव पूँछिस के कस–रे बाबू तोर दाई–ददा कहाँ गये हैं । तब मैं कह्यौं के मोर दाई गये–है एक–के दुई करे–बर औ ददा गये–है काटा–माँ काटा रूँधे–बर। सुना महराज मोर दाई गये–है चना दरे–बर। तब एक–ठन–के दू दार होत–है। ये–कर भेद इया अय महराज। दूसर बात ऐसन अय के मोर ददा–हर भाटा–बारी–माँ काटा रूँधें–बर गये–रहिस। तब महराज भाटा–माँ काटा होत–है । तब मैं कह्यौं काटा–माँ काटा रूँधे गये–है। इया साव–हर लराई लरिस मोर–लँग। साव–हर ओतेक–माँ बड़बडाये लागिस। साहेब कहिस चुप रहो साव। तैं तो हार–गये। इया टूरा–हर जीत–गइस। टूरा–हर सिरतोन बात–ला बताइस–है। रुपिया–ला छाँड़ दे।

हिन्दी प्रतिरूप

किसी गाँव–मे केवट और केवटिन रहती–थी। उन–के एक लडका था। केवट महाजन–के रुपये चाहता–था। तब साहूकार एक दिन रुपिया माँगने–के लिए आया। तव सयाने– (=जेठे) लोग घर–में नही थे। लडका घर–की रखवाली–करता–हुआ बैठा–था । साहूकार–ने पूछा, 'क्यो–रे लडके! तेरे माँ–बाप कहाँ गये–है?' उतने–पर लडके–ने कहा कि 'मेरी माँ गयी है, एक–के दो करने–के लिए। और पिता काँटे–मे काँटे रूँधने–के लिए गये है।' तव साहु–ने कहा 'कि कैसी वात–करता–है रे लडके'। तब लडके–ने कहा, 'मैं तो ठीक कहता–हूँ।' इतने–पर लडके–की और साहु–की लडाई हो–गयी। साहु–ने कहा कि तू–ने जिस बात–को कहा–है, उस बात–को सही कर–दे। (यदि) नही करेगा तो तुझ–को साहब–की कचेहरी–मे ले–जाऊँगा । तव तुझ–को सजा हो–जायगी ।' लडके–ने कहा मेरे माता–पिता जितना तेरा रुपिया चाहते–है, उस–को (यदि) तू छोड–दे तो मैं इस–के भेद–को वतलाऊँगा। इतने–पर साहु–ने कहा, (यदि तू) भेद–को नही वतायेगा तो तुझ–को कैद करवा–दूँगा।' तव लडके–ने कहा, 'हाँ, महाराज, चलो । साहव–के–पास चलें।' केवट–का लड़का और साहु दोनो–जने साहव–के पास गये। साहव–के पास साहूकार–ने फरियाद की कि 'महाराज! मैं आज सवेरे केवट–के घर गया–था तव केवट और केवटिन घर–मे नही थे। उन–का लडका था। तव मैं–ने उस–से पूछा कि 'क्या–रे! लड़के!! तेरे माँ–वाप कहाँ गए–है?' तव इस लडके–ने कहा कि

मेरी माँ गई–है––एक–के दो करने–के–लिए और पिता गए–है––काँटे–मे काटे रुँधने-के लिए। तव इस–की और मेरी लडाई हो–गयी। इस–की और मेरी हार–जीत (–की वाजी) लगी–है। इस न्याय–को कर–दो, 'यह जैसा कह–रहा है'।" साहव-ने लडके–से पूछा, कि "क्यो–रे लडके! इस भेद–को वतायेगा?" लडके–ने कहा, 'हाँ महाराज। साहु सभी रुपिया–को छोड देगा, ना महाराज'? इतने–पर साहव-ने साहु–से पूछा कि 'इस–के भेद–को (यदि) लडका वतला–देगा तो सभी रुपिया-को छोड देगा ना?' साहु–ने कहा, 'हाँ महाराज! और नही वतायेगा तो सजा हो-जायगी न महाराज?' साहव–ने कहा, 'अच्छा, तुम–लोग चुपचाप खडे–हो।' साहव–ने लडके–से पूछा, 'क्यो–रे लडके! तू–ने किस–प्रकार–की साहु–से वात-की।' लडके–ने कहा, (कि) "मैं–ने इस–प्रकार वात–की, कि 'साहु–ने पूछा कि क्यो–रे लडके! तेरे माँ–वाप कहाँ–गये है' तव मैं–ने कहा कि मेरी माँ गई–है–एक के दो करने–के–लिए और पिता गए–है–काँटे–मे काँटे रुँधने–के लिए। सुना, महाराज! मेरी माँ गयी–है–चना दरने–के लिए। तव एक–के दो दल होते–है। इस–का भेद यह है महाराज! दूसरी वात ऐसी है कि मेरे पिता भाँटा–की वाडी–मे काँटे रुँधने–के लिए गये है। तव महाराज! भाँटे–मे काँटे होने–है। तव मैं–ने कहा, कि काँटे–मे काँटे रुँधने गये हैं। इस साहू–ने लडाई लडी मुझ–से।" साहु इतने–पर वडवडाने लगा। साहव–ने कहा, "चुप रहो, साहु'। तू तो हार–गया। यह लडका जीत–गया। लडके–ने सही वातो–को कहा–है। रुपयो को छोड दो।"

विलासपुर तथा रायपुर के ठीक दक्षिण एव पश्चिम मे स्थित सामन्तीय रियासतो जैसे कवर्धा, छुइखदन, खैरागढ, नन्दगाँव एव कनकेर–मे वोली जाने वाली आर्यभाषा छत्तीसगढ़ी का ठीक वही रूप है जो उक्त दोनो जिलो मे मिल रहा है, और इसीलिए उस वोली मे जो इनकी व्यक्तिगत सम्पत्ति है, उडाऊ–पूत–कथा का रुपान्तर देना अनावश्यक होगा। यहाँ विलासपुर के पश्चिम मे स्थित कवर्धा तथा रायपुर के पश्चिम मे स्थित खैरागढ की वोलियो की सक्षिप्त मूल पक्तियाँ देना ही पर्याप्त होगा।

कवर्धा की स्थानीय वोली मे अकित नीचे दिया हुआ नमूना एक गवाह की गवाही है। वर्तमान निश्चयार्थ के सकोचित रूपो को वरीयता देना वोली की एकमात्र विशिष्टता है जिसकी ओर ध्यान दिया जाना चाहिए। इस प्रकार, 'पोसत–हौं' के स्थान पर 'पोसँत्यौं' (मैं) पालता हूँ। यह सकोचन 'रहत–है' के लिए 'रथै' मे अन्तिम सीमा तक पहुँच जाता है।

(न० ४७)

भारत–आर्य परिवार मध्यवर्त्ती शाखा

पूर्वी हिन्दी

छत्तीसगढी अथवा लरिया (रियासत कवर्धा)

हम अपन ददा–के चार बेटा हन। ओ–माँ–ले मै सब–ले बडे हौं। मोर दू भाई मोर सग–माँ रहत–हवँ और एक भाई मडमड़ा गाँव–माँ रथै। मै अपन दू भाई–ला बनी–बूती कर–के पोसथौं। ओ–माँ–के एक–हर डपड़ा बजाथे। मोर कोतवाली भुइयाँ मोर पास हवै। ते–ला जोत बो–के अपन पेट भरथन। एसों मै थोड–कुन कोदो बोए–हवौं। पानी नहीं बरसिस तौन पा–के बिरवा सुखा गइस। एसों मैं अपन दुन्नों भाई–मन–ला खेती–माँ लगाहूँ का–बर के मोर भुइयाँ पड़ती पड़ गईस–है। मैं अकेल्ला नहीं जोत सकेउँ और मोर पास बाज घला नहीं रहिस। कुल जम्मा मोर पास दू बैला हवैं। एसां एक बैला रुपया मिलही तों बिसाहूँ। दू बैला–माँ भुइयाँ बरावर नहीं जोत सकौं। मोर दाई मोर दूसर भाई–के सग–माँ मड़मडा–माँ रहत–हवै कभू–कभू मोर पास आ जाथे। फिर अपन गाँव चले जाथे। मोर गाँव–ले ओ–कर गाँव एक कोस पडथे।

हिन्दी प्रतिरूप

हम अपने पिता–के चार बेटे है। न–मे–से मैं सब–से वडा हूँ। मेरे दो भाई मेरे सग–मे रहते हैं। और एक भाई मडमडा गाँव–मे रहता–है। मैं अपने दो भाइयो–को खेत–मे–मजदूरी कर–के पालता–हूँ। उस–मे–का एक (–भाई) ढपला (=ढोल की तरह का वाद्य) वजाता–है। मेरी 'कोतवाली' की भूमि मेरे पास है। उस–को जोत–बो–कर अपना पेट भरते–है। इस–वर्ष मैं–ने थोडा–सा कोदो बोया–है। पानी नही वरसा, इस (–स्थिति) को पा–कर पौधे सूख गये। इस–वर्ष मैं अपने दोनो भाइयो–को खेती–मे लगाऊँगा क्यो–कि मेरी भूमि 'परती' पड गयी है। मैं अकेला नही जोत सका और मेरे पास वीज भी नही था। कुल मिला–कर मेरे पास दो वैल है। इस–वर्ष एक वैल, रुपया मिलेगा, तो खरीदूँगा। दो वैलो–से भूमि ठीक–प्रकार नही जोत सकता–हूँ। मेरी माँ मेरे दूसरे भाई–के साथ–मे मडमडा–मे रहती–है, कभी कभी मेरे पास आ जाती–है। (और) फिर अपने गाँव चली जाती–है। मेरे गाँव–से उस–का गाँव एक कोस पडता–है।

नीचे का नमूना खैरागढ़ मे बोली जाने वाली वोली का है जो एक अभियुक्त का फौजदारी अदालत मे दिया हुआ एक वयान है। यहाँ अधिकरण-कारक की रचना के लिए 'माँ' के स्थान पर 'मैं' के प्रयोग मे, हम पडोसी भडारा जिले की वोली के प्रभाव

को परिलक्षित कर सकते हैं। एकमात्र अन्य विशिष्टता जिसकी ओर ध्यान दिया जाना चाहिए—कर्म-सम्प्रदान कारकीय परसर्ग-'का' तथा सम्बन्धकारकीय चिह्न 'कर' में के -'क' के महाप्राणीकरण की प्रवृत्ति का मिलना। इस प्रकार, हम 'गाय-का' के स्थान पर 'गाय-खा' (=गाय को) 'ओ-का' के स्थान पर 'ओ-खा' (=इस को) तथा 'ओखेरे घर-में' (=उस के घर-मे) प्रयोग पाते हैं।

(नं० ४८)

भारत-आर्य परिवार मध्यवर्त्ती शाखा

पूर्वी हिन्दी

छत्तीसगढ़ी अथवा लरिया (रियासत खैरागढ़)

मैं बैला-ला जबरदस्ती नइ लेंव। जुलफिकार हुसैन-हर तिजिया-के गाय-ला ५।-) मैं लेइस। फेर दूसर दिन गाय-ला फेरे-वर कहिस। अउर येहू घलाव कहिस के एक रुपिया-ला फेर देबे तो गाय-खा लेहौं। फेर तिजिया-हर एक रुपिया मोर-से माँगिस। मैं बनियाँ-मन-के आगू एक रुपिया तिजिया-ला दियेंव। तिजिया कबूले-रहिस के पदरा दिन-में रुपिया दे-देहौं। कहूँ नइ दियेंव तो मोर बैला गहना है। ओ-खा तैं लै लेबे। बैला नइ लाइस। बैला-ला तिजिया अपन घर-में राखिस। जुलफिकार हुसैन-हर तिजिया-के तरफ-ले एक चिट्ठी लिख दिये रहिस है जे-ला पेस करे-हौं। पंदरा दिन हो-गय तिजिया रुपिया नइ देइस। अउर बैला-ला मोर घर-मे साँवत गोंड़ अउर मझला सिरदार-के साम्हूँ सौंप देइस। बैला ७) रुपिया के रहिस-हय। जब बैला मो-ला सौंप देइस तो मैं ओ-ला बाँध लिरेंवँ। तिजिया मोर आगू रुपिया ले-के नइ आइस। कोतवाल रुपया ले-के आइस। मैं घर-मैं नइ रहेंवँ। कोतवाल रुपिया ले-के फिर गइस। जुलफिकार हुसैन घलाव रुपिया ले-के मोर पास कभूँ नइ आइस अउर न मो-ला रुपिया देइस। तिजिया-हर जब बैला-ला गहना राखिस तो बैला ओखरे घर में रहिस-है। मैं बैला-ला नइ देखेंवँ। मोर ऊपर-सराब-के मुकदमा-मे पचास रुपिया जरिमाना होये रहिस-है तहसीलदार के इहाँ-ले।

हिन्दी प्रतिरूप

मैं-ने बैल-को जबरदस्ती नहीं लिया। जुलफिकार हुसेन-ने तिजिया-की गाय-को पाँच-रुपिया पाँच आना-मे लिया। फिर दूसरे दिन गाय-को लौटाने-के लिए कहा और यह भी कहा कि 'एक रुपिया लौटा देगा तो गाय-को ले-लूँगा।' फिर तिजिया-ने एक रुपिया मुझ-से माँगा। मैं-ने बनियो-के

आगे एक रुपिया तिजिया–को दिया। तिजिया–ने कबूला–था (=वादा–किया–था) कि 'पन्द्रह दिन–मे रुपिया दे–दूँगा, कही, नही दिया तो मेरा बैल गहने–पर है। उस–को तू ले–लेना।' बैल नही लाई। बैल–को तिजिया–ने अपने घर–में रखा। जुलफिकार हुसेन–ने तिजिया–की तरफ–से एक चिट्ठी लिख–दी–रही, उस–को (मैं–ने कचेहरी–में) पेश किया–है। पन्द्रह दिन हो–गए, तिजिया–ने रुपये नही दिये। और बैल–को मेरे घर–मे सॉवत गोड और मँझले सरदार–के सामने सौप दिया। बैल सात रुपिया–का रहा–होगा। जब बैल मुझ–को सौप दिया तो मैं–ने उस–को बॉध लिया। तिजिया मेरे आगे रुपिया लेकर नही आयी। कोतवाल रुपिया लेकर आया। मैं घर–मे नही था। कोतवाल रुपया ले–कर लौट गया। जुलफिकार–हुसैन भी रुपया ले–कर मेरे पास कभी नही आया और न मुझ–को रुपया दिया। तिजिया–ने जब बैल–को गहने रखा तब बैल उस–के घर–मे था। मैं–ने बैल–को नही देखा–था। मेरे–ऊपर शराब–के मुकदमे–मे पचास रुपया जुर्माना हुए–थे, तहसीलदार–के यहाँ–से।

खल्टाही

छत्तीसगढी ८८,३०० व्यक्तियो द्वारा बालाघाट जिले के पूर्वी भाग तथा चौरिया, सलेतकरी, भीमलाट एव रायगढ परगनो मे भी बोली जाती है। सर्वेक्षण की प्रारम्भिक अनगढ सूचियो मे खल्टाही पहिले अस्थायी-रूप से बघेली के एक रूपान्तर के रूप मे प्रविष्ट कर दी गयी थी। परन्तु सलग्न नमूने पर दृष्टिपात करने से स्पष्ट हो जायगा कि यह निकटत शुद्ध छत्तीसगढी ही है। इसका स्थानीय नाम 'खल्टाही' विशुद्ध 'खलटाही' है—अर्थात् 'खलोटी', बालाघाट मे प्रचलित बिलासपुर ज़िले के एक नाम की–भाषा।'

नमूने मे कतिपय स्थानीय विशिष्टताएँ प्रत्यक्ष हैं, जिनमे से विशेष उल्लेखनीय नीचे दी जा रही है। 'वह' शब्द के लिए कभी 'ओ' और कभी 'वो' लिखा गया है। यह सभवत मात्र अनिश्चित वर्तनी के कारण है। इसका विकारी–रूप एक बार 'वे' रूप मे मिलता है। अधिकरण का परसर्ग कभी 'मा' (जैसा कि बघेली मे है) और कभी 'मे' मिलता है। वर्तमानकालिक कृदन्त का विशिष्ट व्यजन 'त्' नही 'थ्' है। इस प्रकार, 'खाथे'=(वे) खाते, यह 'खात–हे' का सकोचन नही है, जैसा कि हम छत्तीसगढी मे प्रचलित इसी प्रकार के सकोचन की बहुलता के आधार पर सोच सकते हैं। यह वस्तुत हिन्दुस्तानी 'खाते' से मेल खाता है। दूसरा उदाहरण, वर्तमान निश्चयार्थ का है—करँथे–हौं=(मैं) करता हूँ। उपरिचर्चित सकोचन का विशुद्ध उदाहरण है—'रहत–हस=(तू) है' के स्थान पर 'रथस'। इक्के-दुक्के–विशिष्ट प्रयोग इस प्रकार हैं—करे–होवोगा=(मैं–ने) किया है तथा 'रहिस=(वह) था' के स्थान पर 'रहिसे'।

(नं० ४९)

भारत–आर्य परिवार　　　　　　　　　　　　　　　　मध्यवर्त्ती शाखा

पूर्वी हिन्दी

छत्तीसगढ़ी अथवा लरिया (खल्टाही) बोली　　　(जिला बालाघाट)

कोने मनखे–के दू झन बेटा रहिस। वो–मा–ले छोटे बेटा–हर ददा–से कहिस अगा ददा जोन हमार धन है ओ–मा–ले मोर बाटा–ला दे। तब ओ–हर अपन धन–ला बाट देइस। गजब दिन नहीं भइस के नान्हे बेटा–हर सबो–ला धर–के आन राज चल दइस और ओ ठोर–में जाय–के अपन धन छिनाल–पना–में मेट डारिस। जब सबो सिराय–गये तब ओ राज–में दुकाल पड़िस औ वो गरीब हो–गइस। औ वो जा–के वे राज–के एक–के घर–मे रहन लगिस। तौन–हर बोलिस अपन खेत–में सूरा चराय–वर भेजिस। औ वो–हर कोढ़ा भुसा–से जोन–ला सुअर खाथे अपन खान लगिस और कोनो–हर कुछ नहीं देवे। तब वो–ला सुरता आइस औ वो–हर कहिस मोर ददा–के घर–मे कतको वनिहार भुतियार–ला खाय–बर गजब मिलथे औ मैं भूख–से मरत–हौं। मैं उठ–के अपन ददा–के पास जाहूँ। औ वो–कर–से कहूँ के ददा मैं–हर संसार भर–ले खराव काम वो तोर आगू चँडाली करें–होवोगा कि जे–मा मैं तोर बेटा कहे–के लाइक नहीं हौं। मो–ला अपन वनिहार भुतिहार–में मो–हो–ला एक झन दाखिल समझ–ले। तब वो–हर उठ–कर अपन ददा–के पास चलें–लगिस। तब–ले ओ–हर दुर–हेच रहे तब ओ–कर ददा–हर देख–कर मया करिस अउर दउर–कर ओ–कर गर–ला पोटार–लेइस अउर चूमा–लेइस। बेटा–हर ददा–ला कहिस कि ददा मैं–हर दुनिया–के वाहिर तोर आगू पाप किरे–हौं औ तोर बेटा कहाये–के लाइक नइयों। तब ददा–हर एक झन नोकरन–से कहिस के सब–ले अछा कपड़ा हेर–के वो–ला पहिना–दे औ वो–कर हाय–में मुंदरी औ गोड़–में पनही पहिना–दे औ हम खावो पीवो मजा करवो। का–बर ये मोर बेटा–हर मोर–ले मरे दाखिल निकल–गये–रहिसे तौन–हर आज जीहिस औ गवा–गये–रहिसे तौन–हर मिलिस। तब वो–मन मजा–करे लगिन।

ओ–कर वड़े बेटा–हर खेत–में रहिस। औ जब वो–हर घर–के तीर पोहचिस तब वाजा औ नाचा–ला सुनिस। औ वो–हर अपन नोकर–मन–ले एक झन–ला अपन तीर वलाय–के पूछिस ये का है। ओ–हर वो–कर–से कहिस तोर भाई आये–है, औ तोर ददा–हर अछा भात खाये–वर वनाय–है का–वर के वो–ला अछा मोटा ताजा पाइस। तब वो–हर रिस करिस औ भीतर डाहर जाये–वर मन नहीं करिस। तव ओ–कर ददा–हर वाहिर आइस औ वो–ला मनाये लगिस। ओ–हर ददा–ला जवाब देइस कि मैं–हर अतेक वरस–ले तोर हाथ पाँव करथे–हों औ कभू तोर जुवान–

ला नहीँ टारँव औ तैं–हर मो–ला कब–हूँ एक भेड़ा नहीँ दये के मैं अपन सगी–मन सग मजा करतेँव। तोन तोर यह बेटा किसबिनो–के सग तोर धन–ला खाइस है जैसने आइस तैसने तैं–हर अच्छा भात खाये–बर बनाय–है । ददा–हर कहिस तैं–हर मोर–सग मैं हमेशा रथस। जोन मोर है तोन सब तोर है। तोन खातिर मजा करना औ खुसी करना ठवका रहिस का–बर कि ये तोर भाई मरे–रहिस तोन–हर जीइस–है। गवाय गये–रहिस–है तोन–हर मिलिस–है।

हिन्दी प्रतिरूप

किसी मनुष्य–के दो बेटे थे। उन–मे–से छोटे बेटे–ने पिता–से कहा, 'ओ पिता! जो हमारा धन है, उस–मे–से मेरे हिस्से–को दे–दो।' तब उस–ने अपने धन-को बाँट दिया। बहुत दिन नही हुए कि छोटा बेटा सभी–को ले–कर दूसरे राज्य–को चल दिया। और उस स्थान–मे जा–कर अपना धन छिनाल–पन–मे मिटा–डाला। जब सब खर्च–हो–गया तब उस राज्य–मे अकाल पडा और वह गरीब हो–गया। और वह जा–कर उस राज्य–के एक–के घर–मे रहने लगा। वह (–आदमी) बोला—'अपने खेत–में सुअर चराने–के लिए भेजा। और वह घास–फूस–को जिस–को सुअर खाते–है, स्वय खाने लगा, और कोई कुछ नही देता। तब उस–को होश आया और उस–ने कहा, "मेरे पिता–के घर–मे कितने मजदूर–नौकरो–को खाने–के लिए बहुत मिलता–है और मैं भूख–से मर–रहा हूँ। मैं उठ–कर अपने पिता–के पास जाऊँगा और उस–से कहूँगा कि 'पिता! मैं–ने ससार भर–से खराब काम और तुम्हारे आगे अधर्म किया–है, जिस–से कि मैं तुम्हारा बेटा कहलाने–के लायक नही हूँ। अपने मजदूर–नौकरो–मे मुझ–को–भी एक–आदमी आया–हुआ समझ–लो।," तब वह उठ–कर अपने पिता–के पास चल दिया। जब वह दूर–ही था तब उस–के पिता–ने देख–कर दया–की और दौड–कर उस–के गले–से लग–गया और (उस–का) चूमा लिया। बेटे–ने पिता–से कहा, कि 'पिता! मैं–ने दुनिया के खिलाफ तुम्हारे आगे पाप किया है, और तुम्हारा बेटा कहलाने–के लायक नही हूँ।' तब पिता–ने एक–को नौकरो–मे–से कहा, कि 'सब–से अच्छा कपडा निकाल–कर उस–को पहिना–दो, और उसके हाथ–मे अँगूठी और पैर–मे जूते पहिना–दो। और हम खायेगे–पियेगे, मजा–करेंगे।-क्योंकि यह मेरा बेटा मेरे–लिए मरने–के समान हो–गया–था, वह आज जीवित–हुआ है, और खो–गया–था, वह मिला–है।' तब वे–लोग आनन्द मनाने लगे।

उस–का बडा बेटा खेत–मे था और जब वह घर–के निकट पहुँचा तब बाजे और नाचने–को सुना। और उस–ने अपने नौकरो–मे–से एक जने–को अपने निकट बुला–कर पूछा, 'यह क्या है।' उस–ने उस–से कहा, 'तुम्हारा भाई आया–है और तुम्हारे पिता–ने अच्छी रसोई खाने–के लिए बनवायी है। क्योकि उस–को अच्छा

मोटा–ताजा पाया–है।' तब उस–ने गुस्सा की और अन्दर–की ओर जाने–के लिए मन नही किया। तब उस–का पिता बाहर आया और उस–को मनाने लगा। उस–ने पिता–को जवाब दिया, कि 'मैं–ने इतने वर्षों–से तुम्हारे हाथ–पैर (=सेवा) किये–है और कभी तुम्हारे शब्द (=आज्ञा) नही टाले। और तुम–ने मुझ–को कभी–भी एक भेंड–का–बच्चा–भी नही दिया कि मैं अपने साथियो–के साथ आनन्द मनाता। वह, तुम्हारे इस बेटे–ने वेश्याओ–के साथ तुम्हारे धन–को खा–उडाया–है, जैसे–ही आया–है, तैसे–ही तुम–ने उस–की खातिर अच्छा (खाना) खाने–के लिए बनवाया–है।' पिता–ने उस–से कहा, 'ओ बेटे! तू मेरे साथ–मे हमेशा रहता–है। जो मेरा है, वह सब तेरा है। उस–की खातिर आनन्द लेना और खुशी मनाना ठीक–ही था, क्योकि यह तेरा भाई मर–गया–था, वह जीवित–हुआ–है, खो–गया–था, वह मिला–है।'

सरगुजिया

विशुद्ध छत्तीसगढ़ी का मूल-स्थान समीपस्थ सामन्तीय रियासतो-सहित रायपुर एव बिलासपुर के ज़िले हैं। जैसे ही हम उत्तर की ओर बढते है, यह क्रमश. उत्तरोत्तर छोटानागपुर मे बोली जाने वाली भोजपुरी मे समाविष्ट होती जाती है और जहाँ नगपुरिया के रूप मे जानी जाती है। कोरिया, सरगुजा एव उदयपुर की रियासतो मे तथा जशपुर के पश्चिमार्ध मे एक विशुद्ध उपबोली प्राप्त होती है जो प्रमुखत छत्तीसगढी पर आधारित है पर नगपुरिया की अन्यान्य विशिष्टताएँ ग्रहण किये हुए है। यह निर्दिष्ट बोली जशपुर के पूर्वार्ध मे बोली जाती है और वहाँ से यह राँची पठार मे पूर्व तथा पूर्वोत्तर-अभिमुखी हो जाती है। कोरिया एव सरगुजा के लोगो के पास अपनी स्थानीय बोली के लिए कोई नाम नही है परन्तु जशपुर मे जो एक द्वैभाषिक, यथार्थत. त्रैभाषिक (क्योकि इसमे उडिया भी बोली जाती है) रियासत है, नगपुरिया से इसका वैभिन्न्य प्रदर्शित करने के लिए एक नाम की आवश्यकता पड गयी है और यह यहाँ 'सरगुजिया' कही जाती है। इसलिए उक्त बोली के लिए यह नाम ग्रहण किया जा सकता है। शब्दार्थ है सरगुजा अथवा सरगूजा की भाषा। वस्तुत यह उन तीनो रियासतो मे सर्वाधिक विस्तृत एव महत्त्वपूर्ण है जिनमे बोली मिल रही है।

सरगुजिया बोली के दो नमूने यहाँ दिये जा रहे है। ये जशपुर रियासत के मैनेजर बाबू मन्मथनाथ चटर्जी द्वारा तैयार किये गये है। प्रथम, उडाऊपूत-कथा का एक रूपान्तर है और दूसरा, लोक–कहानी का एक अश। नीचे वे प्रमुख तथ्य प्रस्तुत है, जिनमे यह बोली परिनिष्ठित छत्तीसगढी से भिन्नता रखती है। यह भी देखा जायगा कि साथ ही साथ यह उन सभी बातो मे नगपुरिया से समानता रखती है।

१ **उच्चारण**—यहाँ वही प्रवृत्ति है जो कि हम नगपुरिया के सदर्भ मे परिलक्षित कर चुके है—अन्तिम अथवा बलाघातहीन ह्रस्व इ को पूर्ववर्ती अक्षर में उच्चरित करना। इसके अनेक उदाहरण उपलब्ध है। 'मनिसे' (=एक आदमी) के स्थान पर 'मइनँसे' 'बाँटि' (=बाँट कर) के लिए 'बाँइट', 'कूदि' (=कूद कर) के स्थान पर 'कुइद', इतना ही नही, 'कइर-आहौ' (=मैंने किया-है) में 'करे' के लिए भी 'कइर', ये उद्धरण पर्याप्त होगें । 'निश्चयार्थ वर्तमानकाल' के सकोचन की वही प्रवृत्ति जो कि परिनिष्ठित छत्तीसगढी मे व्याप्त है, यहाँ भी है; यथा, 'राखँथँ) =रखते-है, में, और 'कहत-हे' (=कहता-है) के स्थान पर 'कथे' शब्द मे तो यह चरम सीमा तक पहुँच जाती है ।

२ **सज्ञाएँ**—हम कर्म-सम्प्रदान के चिह्न के लिए 'का' के स्थान पर 'के' पाते है, जैसे कि 'ओ-के' उस-को, मे। सम्बन्ध कारकीय चिह्न 'कें' के स्थान पर यदा-कदा नगपुरिया का 'कर' मिलता है, यथा-मइनँसे-कर=मनुष्य-का, मुलुक-कर=देश-का ।

अविकरण-परसर्ग 'माँ' मे, अनुनासिक अक्सर छोड दिया जाता है। इस प्रकार हमे 'मा' मिलता है। हम भोजपुरी का-ए वाला अधिकरण भी पाते है जो समभाव करण-कारकीय एव अधिकरण कारकीय अर्थ मे प्रयुक्त होता है, जैसे, भूखे= भूख-से, घरे=घर-मे, पिठे=पीठ पर ।

३ **सर्वनाम**—'हम' के लिए 'हामे-मन' है जिसके प्रथम अक्षर मे दीर्घ-'आ' है। इसी प्रकार, 'स्वय' के लिए उसी अक्षर मे उसी प्रकार के दीर्घकरण के साथ 'आपन' शब्द है।

४ **क्रियाएँ**—प्रथम अक्षर के दीर्घकरण की वही प्रवृत्ति सहायक क्रिया मे भी देखी गयी है जिसका वर्तमान काल आद्य 'आ' के दीर्घीकरण के अतिरिक्त नगपुरिया से ज्यो का त्यो ले लिया गया है, जैसे, आहौं=(मैं) हूँ, आहे=(वह) है, आहैं= (वे) है। समापिका क्रिया सामान्यत परिनिष्ठित छत्तीसगढी की तरह रूप-रचना रखती है, पर इक्के-दुक्के नगपुरिया रूप भी हैं, जैसे, करँलों=(मैं-ने) किया, 'होयें-ला'=होता है, के स्थान पर 'होयेंल' तथा करेंक-लागिन=करने-लगे ।

(नं० ५०)

भारत-आर्य परिवार **मध्यवर्त्ती शाखा**

पूर्वी हिन्दी

छत्तीसगढ़ी अथवा लरिया (सरगुजिआ) बोली (जशपुर रियासत)

नमूना—१

(बाबू मन्मथनाथ चटर्जी, १८९८)

झने मइनसे-कर दू-गोट बेटा रहिन। छोट बेटा-हर आपन बाप-हर-ला कहिस कि ए दाऊ माल-जाल-मन-ला जे मोर बाँटा होथे से मो-ला दे। तेखन ओ ओ-मन मघे आपन जिना-ला बाँडट दिहिस। ढेर-दिन नहि भै-रहिस कि छोट बेटा-हर सगरो-ला ढुराइस आर ढेर दुरिहा मुलुक-दन चले-गइस। आर तिहाँ सगरो धन-खुर्जी-ला लुचइ-मा खोय डारिस। आर जब सगरो-ला सिराय-चुकिस ओ मुलुक-मा बडा अकाल होइस आर ओ-के दुख होप्रक लागिस। आर ओ गइस आर ओ मुलुक-कर झने मइनसे संग जोराय भइस आर ओ ओ-ला घेंटा चराप्रक-ले डाँडे भेजिस। आर ओ जे बुसा-ला घेंटा खात-रहिन ते-ला पातिस तो खुसी-से आपन पेट-ला भरतिस। मुदा ओ-हो कोनो-हर ओ-ला निच्च दिहिन। आर ओ-के जब सुरता भइस तब कहिस मोर दाऊ-ठन एतेक घँगरा आहैं आर ते-मन खाप्रक-ले-हों पूरे पावत-आहैं आर मैं भूखे मरत-आहौं। मैं उम्हूँ आर दाऊ-ठन जाहूँ आर ओ-ला कहहूँ ए दाऊ मैं भगवान-घर आर तोरोच-ठन कसूर कइर-आहौं आर आव मैं तोर बेटा हौं ए नियर कहे-कर जोग नखौं-तो कमिया मघे झनेक नियर मो-हों-ला राख। आर ओ उठिस आर दाऊ-हर-ठन आइस। मगर ओ ढेर-ताने रहिस तैसनेच दाऊ-हर ओ-ला देखिस आर ओ-ला मया लागिस। आर ओ कुइद गइस आर ओ कर घेंटु-ला पोटारिस आर ओ-ला चूमिस। आर बेटा-हर ओ-ला कहिस ए दाऊ मैं भगवान-घर आर तोरोच-ठन कसूर कइर-आहौं आर आव मैं तोर बेटा हौं इसन कहेक-कर लाप्रक नखौं। मगर बाप-हर आपन घँगरा-मन-ला कहिस निमार-के बेस लुगा-ला लाना आर ए-ला पिंधावा आर हाथ इ-कर-माँ मुंदरी पिंधावा आर गोड़ उ-कर-माँ जूता आर लगे हामे-मन खाहूँ आर खुसी करहूँ। काहे-कि ए मोर बेटा मरे-रहिस ते-फेर जी-आहे भूले-रहिस ते मिलिस आर ओ-मन खुसी करेक लागिन।

तेखन ओ-कर बड़े बेटा-हर डाँड़े रहिस। आर ओ आवो-करिस आर घर-जहाँ पहुँचिस कि बाजा-नाच-ला सुनिस। आर ओ घँगरा मघे एक झन-ला बलाइस आर पूछिस ए का होत-आहे। तब ओ ओ-ला कहिस तोर भाई आइस-आहे। आर तोर दाऊ ओ-ला बेसे-बेस पाइस ओहेच खातिर भोज देइस-आहे। आर ओ-हर जँगाइस आर घरे निच्च ढूकत-रहिस ते-माहाँ बाप-हर ओ-कर बहिरे-आइस आर ओ-ला मनावेक लागिस। आर ओ आपन बाप-ला कहि-सुनाइस देख-ना एतेक बछर मैं तोर नोकरी करलों आर तोर हुकुम-ला कइहो नही उठाप्र-हौं मुदा तैं मोला कइहो गोटेक छेरी छौआ-हों नही देइ-हस कि मैं मोर इआर-मन-सैं खुसी करतौं। मगर तोर ए बेटा हर-आवो करिस जे तोर जिनाला कसबी-मन-ला खियाय सिराइस ते-

कर लागिन तैं भोज देइ–हस। आर ओ ओ–ला कहिस ए बेटा तैं सबेच दिन मोर संगे रहयस आर जे कुछ मोर आहै से तोरेच आहे। हामे मन–ला चाहवे करित रहिस कि खुसी करतैं आर खुस होतैं ए–खातिर कि ए तोर भाई मरे–रहिस ते फेर जी–आहै आर भूल रहिस ते मिलिस–आहै।

हिन्दी प्रतिरूप

किसी मनुष्य–के दो बेटे थे। छोटे बेटे–ने अपने पिता–से कहा कि 'ओ पिता (जी)! माल–टाल–मे–से जो मेरा हिस्सा होता–है, वह मुझ–को दे दो।' तब उस–ने उन–के मध्य–मे अपने धन–को बाँट–कर दे–दिया। अधिक दिन नहीं हुये–थे कि छोटे लडके–ने सभी–को इकट्ठा किया और बहुत दूर देश–को चला–गया। और वहाँ सभी धन–दौलत–को लुच्चेपन–मे खो–डाला। और जब सभी–को खर्च–कर–चुका, उस देश–में बडा अकाल हुआ (=पडा)। और उस–को दुख (=कष्ट) होने लगा। और वह गया और उस देश–के किसी मनुष्य–के साथ जुड (=मिल)–कर रहा, और उस–ने उस–को सुअर चराने–के लिए खेत–मे भेजा। और उस–ने जिस भूसे–को सुअर खाते–थे, उस–को (यदि) पाया तो खुशी–से अपने पेट–को भरा। लेकिन वह–भी किसी–ने उस–को नहीं दिया। और उस–को जब ध्यान आया, तब कहा, "मेरे पिता–के–पास कितने नौकर है, और वे खाने–से–भी अधिक पाते–हैं, और मैं भूखो मरता–हूँ। मैं उठूंगा और पिता–के पास जाऊँगा और उस–से कहूँगा, 'ओ पिता! मैं–ने भगवान–के–घर और तुम्हारे प्रति–भी अपराध किया–है, और अब मैं तुम्हारा बेटा हूँ, इस प्रकार कहने–के योग्य नही हूँ। इसलिये नौकरों–में–से एक–की तरह मुझ–को–भी रख–लो।' और वह उठा और पिता–के पास आया। लेकिन वह अधिक दूर था तब–ही पिता–ने उस–को देखा और उस–पर दया लगी। और वह दौड–कर गया और उस–के गले–से चिपट–गया और उस–को चूमा। और लड़के–ने उस–से कहा, 'ओ पिता! मैं–ने भगवान–के–घर–और तुम्हारे–प्रति–भी अपराव किया है, और अव मैं तुम्हारा बेटा हूँ, इस–प्रकार कहने–के लायक नही–हूँ।' लेकिन बाप–ने अपने नौकरो–से कहा, 'चुन–कर अच्छे कपडो–को लाओ और इस–को पहिनाओ, और हाथ–मे इस–के अँगूठी पहिनाओ, और पैर–मे इस–के जूता, और आओ, हम–लोग खायेंगे और खुशी मनायेंगे। क्योकि यह मेरा बेटा मरा–हुआ–था, वह फिर जी–उठा–है; खोया–था, वह मिला–है।' और वे–लोग खुशी मनाने लगे।

तब उस–का बडा बेटा खेत–मे था। और वह आया–किया, और घर–जहाँ (था) पहुँचा कि (उस–ने) नाचना–बजाना सुना। और उस–ने नौकरो–मे–से एक जने–को बुलाया और पूछा, 'यह क्या हो–रहा–है!' तब उस–ने उस–से कहा,

'तेरा भाई आया है और तुम्हारे पिता–ने उस–को अच्छी–हालत मे पाया–है, उस–ही-के लिए दावत दी–है।' और वह गुस्सा–हुआ और घर–मे नही घुस–रहा–था। उसी-मे (=उसी समय) पिता उस–का बाहर आया और उस–को मनाने लगा। और उस–ने अपने पिता–को कह सुनाया, 'देखिए–ना, इतने वर्षो मैं–ने तुम्हारी सेवा की और तुम्हारे हुक्म–को कभी–भी नही टाला–है लेकिन तुम–ने मुझ–को कभी–भी एक–भी बकरी–का–बच्चा–भी नही दिया–है कि मैं अपने यार–लोगों–के–साथ खुशी मनाता। लेकिन तुम्हारा यह बेटा आया–किया, जिस–ने तुम्हारे धन–को वेश्याओं–को खिला–कर नष्ट–कर दिया, उस–के लिए तुम–ने दावत दी–है।' और उस–ने उस–से कहा, 'ए बेटा! तू सब–ही दिन मेरे सग रहा–है, और जो कुछ मेरा है, वह तुम्हारा–ही है। हम–को औचित्य करना–था कि खुशी मनाते और खुश होते; इसलिए कि यह तुम्हारा भाई मरा–था, वह फिर जिया–है, और खोया–था, वह मिला–है।

(न० ५१)

भारत–आर्य परिवार मध्यवर्त्ती शाखा

पूर्वी हिन्दी

छत्तीसगढ़ी अथवा लरिया (सरगुजिआ) बोली (रियासत जशपुर)

नमूना—२

(बाबू मन्मथनाथ चटर्जी, १८९८)

गोटेक सहर रहिस। तिहाँ रजा रहिन। पहारे बाघ रहिस। मइनसे–ला घरत–रहिस आर खात–रहिस। राजा कहिन चला मारो। तब गइन हाँका करे–बर। लागिन तो बन–ला हाँके। मारे ढोल ढाँक बजा गजा कर मारे ठेकान नी रहिस। बाघ चलिस पराय। डगरे बनिया जात–रहिस। ते–ला कहिस, कि ए भाई मो–ला बचाव। बनिया कहिस का नियर बचाहूँ। बघवा कहिस टाट–हें मो–ला साज आर चल। बनिया डराइस आर तिसने करिस। बघवा–ला साज लेहिस बरदा पिठे लाहिस आर चलिस। जब जाते जात दुरिहा गइन बन बघवा कथे बनिया–ला। ए बनिया ए बनिया मो–ला निकलाव। बनिया निकालिस तो। तब बघवा कथे अब तो–ला धरहूँ। का–बर धरबे भाई मैं तो तो–ला बचायों। बघवा कहे निच्च मानों घरबेच करहूँ। बनिया कहिस चल पंच–ठन। बघवा कहिस कहाँ जावे चल। तहँने ऊ–मन पीपर–तरी गइन कहिन ए पीपर देवता नेकी–ओ–में बदी हो–ये। पीपर कहिन होथे कि। का नियर होथे। कहिन कि मैं तो रूख जात चुपे रहयों। आयें। एक घरी बैठयें। तहँने मो–के छोप राखयें। आर जायें। तब बघवा कहिस का रे बनिया अब तो–ला खाँव कि तो बरदा–

ला खाँव। बनिया कहिस चल गौ बराम्हन हवे ते निसाफ करही। कहही होले तैं मो-ला खाबे। तहँने गइन गौ-ठन। खपकन-माहाँ, बुढ़िया गाय खपक रहिस। ते-ला बनिया कहिस ए गौ माता नेकी-ओ करत बदी होयेल । गाय कहिस का कहाँ होयेल जुन। मैं दूध देत-रहेंन जवान रहेंन ते-घानि मुआर मोर चरात-रहिस। बेर-बुड़ता घरे ढुकात रहिस । देखत-ताकत रहिस। अब बुढिया भैं गय्न मो-ला नही पूछे। मरयाँ। बघवा कहिस का रे बनिया कह तो-ला खाँव कि तोर बरदा-ला खाँव।

हिन्दी प्रतिरूप

एक शहर था। वहाँ एक-राजा रहते-थे। पहाड-मे बाघ रहता-था। मनुष्यो-को पकडा-करता-था और खाया-करता-था । राजा-ने कहा, 'चलो, मारें।' तव (वे) गए हाँका करने-के लिए । लगे वे वन-को हाँकने। मारे ढोल ढपले-के, बाजे गाजे-के मारे ठिकाना नही था। बाघ चला भाग-कर। रास्ते-मे एक-बनिया जा-रहा-था। उस-से कहा, कि 'ए भाई ! मुझ-को बचाओ।' बनिया-ने कहा, 'किस तरह बचाऊँ?' वाघ-ने कहा, 'बोरे-मे मुझ-को रख-ले और चल।' बनिया डरा और वैसा-ही किया । बाघ-को रख-लिया (और) बैल-की पीठ-पर लादा और चल-दिया । जब चलते-चलते दूर पहुँचे तब बाघ-ने कहा बनिये-से। 'ए बनिया ! ए बनिया ! मुझ-को निकाल।' बनिये-ने निकाला तो। तब बाघ-ने कहा 'अब तुझ-को पकडूँगा ।' 'किस-लिए पकडेगा, भाई ! मैं-ने तो तुझ-को बचाया-है।' बाघ कहता-है, 'नही मानता-हूँ, पकडना-ही करूँगा।' बनिये-ने कहा, 'चल पचो-के-यहाँ।' बाघ-ने कहा, 'कहाँ जाएगा, चल।' तब वे-लोग पीपल (-के-पेड') के नीचे गये, (और) कहा, 'ए पीपल देवता ! नेकी-भी-मे बदी होती है?' पीपल-ने कहा 'होती क्यो-नही ।' 'किस तरह होती-है?' (बाघ-ने); कहा कि "मैं तो 'वृक्ष-की जाति' चुप रहता-हूँ । (लोग) आते-हैं। एक घडी बैठते हैं (=आराम करते है)। तब मेरे (-अगो)-को काट रखते-है और चले-जाते-हैं।" तब बाघ-ने कहा, 'क्यो रे बनिया ! अब तुझ-को खाऊँ कि तेरे बैल-को खाऊँ ।' बनिये-ने कहा, 'चल' गौ ब्राह्मण होती-है, वह इन्साफ करेगी, कहेगी यदि (वह), (तो) तू मुझ-को खा-लेना।' तब गए गौ-के-पास। कीचड-मे बूढी गाय फँसी-थी । उस-से बनिये-ने कहा, 'गौ माता ! नेकी-भी करते बदी होती-है?' गाय-ने कहा, "क्या कहूँ, होती-है जरूर। मैं दूध देती-थी, जवान थी, उस-समय मालिक मेरा खिलाता-था। (सूरज)-डूबते-समय घर-मे (मुझे) घुसाते थे। देखते-भालते थे। अब बूढी हो गई हूँ, मुझ-को नही पूछता-है। मरती-हूँ।" बाघ-ने कहा, "क्यो-रे बनिया ! कह, तुझ-को खाऊँ कि तेरे बैल-को?"

नोट—यह कहानी नगपुरिया वोली के नमूने के लिए भी दी गयी है। जैसा कि वहाँ कहा गया है, कथा आकस्मिक रूप में समाप्त हो जाती है। यह कथा पुरानी है और समस्त उत्तर भारत में प्रचलित है । साहूकार तत्पश्चात् सडक से प्रतिवेदन करता है। सडक उत्तर देती है कि वह यात्रा को सुगम वनाती है और वदले मे मनुष्य उसे पद-दलित करते हैं और गाडी के पहियो के नीचे कुचलते हैं। अत मे, मनष्य गीदड से प्रार्थना करता है। गीदड मूर्ख होने का वहाना करता है और जो कुछ हुआ है, उसे समझ सकने मे अपने को असमर्थ वतलाता है । तव वह यह विश्वास करने से इनकार करता है कि चीता किसी भी प्रकार इस वोरे मे वद हो सकता है। चीता वोरे के अन्दर यह दिखलाने को जाता है, कि वह इस प्रकार था और तव साहूकार उसे (चीता को) उसके अदर वाँध देता है और प्रसन्नतापूर्वक अपना रास्ता लेता है।

सद्री कोरवा

छोटा नागपुर अथवा छत्तीसगढ़ी प्रदेश मे जव कोई आदिवासी कवीला अपनी परम्परागत वोली छोड़ता है और आर्य-पडोसियो की कोई बोली अपनाता है, तव उसके द्वारा प्रयुक्त विश्रृखल वोली को 'सदरी' अथवा 'सद्री' कहा जाता है। 'कोरवा' एक ऐसा कवीला है, जिसका मुख्य आवास जशपुर रियासत मे है, परन्तु यह सरगुजा, पलमऊ, मिर्जापुर के सोनपार-क्षेत्र मे तथा विलासपुर एव रायगढ के उत्तरवर्त्ती क्षेत्र मे भी मिल रहा है । उनमे से लगभग ४,०००, जशपुर में खेतिहर-रूप मे वस गए है और जो वोली वोलते हैं, उसे 'सद्री कोरवा' कहा जाता है, यह 'सरगुजिया' से पर्याप्त साम्य रखती है। उन लोगो की भाषा की एकमात्र असामान्य विशिष्टता, जिसकी ओर ध्यान आकर्षित किया जाना चाहिए; क्योंकि यह आदिवासियो द्वारा प्रयुक्त दूसरी अन्यान्य विश्रृखलित वोलियो मे भी मिल रही है, यह है कि भूतकाल की रचना-'नें' को लेकर होती है, जैसे, आइसॅने=वह आया, होइसॅने=वह हुआ।

सद्री कोरवा के दो नमूने दिए जा रहे हैं। प्रथम, उड़ाऊ-पूत-कथा का एक रूपान्तर है और दूसरा, एक गवाह की गवाही । दोनों ही जशपुर रियासत के मैनेजर, वावू मथुरा नाथ चटर्जी द्वारा प्राप्त हुए है ।

(नं० ५२)

भारत-आर्य परिवार मध्यवर्त्ती शाखा

पूर्वी हिन्दी

छत्तीसगढी अथवा लरिया (सद्री कोरवा वोली) (रियासत जशपुर)

नमूना—१

(बाबू मथुरानाथ चटर्जी, १८९८)

गोटेक अबदिन-कर दू-गोट सौआ रहिन । सोट सौआ-हर बुढ़ा-हर-के कहिस ए आवा सब धान-पान डाँगर-गरू जे आहे से-कर बाँटा मो-के दे। तो थोर दिन पासू सोट गोसियाँ ढेर जबर लका मुलुक-हे गइस आरु धान-पान-सब-के सान-सित्तिर रन्न-भन्न कइर-डारिस। तो सब-के सिराइस त-ले पासे ओ मुलुक-हे जबर भूख होइस तो ओ-के सटपटी लागिस। तो ओ जाय-कर-केहेन ओहे राइज कर गोटेक अबदिन-सगे मेसा-होइस। तो ओ ओ-के सुकरी सराए्क डाँड-बाट पठाइस। आरु सोकोर मन जे-के सुकरी खात-रहिन ओहो खाय खोजोत—रहिस तो नी भेंटिस। तो ओ सेत पारिस आरु कहे लागिस मोर बुढ़ा-कर एतेक घाँगड़ आहैं आरु सोब कोनो के अघाए्क-हों-ले जस्ति मिलथे आरु मैं ए-ठन खाए्क बेगर मरथों। मैं उठ-केहेन बुढ़ा-ठन जाहूँ आरु ओ-के गोठिआहूँ ए आवा भगवान-ठन आरु तोर-ठन मैं गुनहा करलों से आब का-नियर तोर सौआ कहावों। मो-के घाँगड़ राख। त-ले ओ उठ-कर-केहेन आपन बुढ़ा-ठन आए्-लागिस। आरु जबर ताने रहिस कि बुढ़ा ओ-कर लखिस आरु ओ-के मया लागिस आरु धाँय गइस त-ले ढँटु-के पोटारिस आरु चुमा लिहिस। त-ले सोंड़ेआ-हर बुढ़ा-से कहिस ए आवा भगवान-ठन आरु तोरो-ठन मैं गुनहा करलों आब का-नियर तोर सौआ कहावों। त-ले बुढ़ा घाँगड़ मन-के कहिस बेस लुगा बहिरावाह आरु ए-के पिंघावाह आरु हाँथ-मे गोटेक मुन्दरी देवाह आरु गोड़-मन-मे पन्ही आरु लेगे सब कोनो खावों पिअबो आरु खेलबों। मोर सौआ सिराय रहिस ते जी उठिस हेंडाय रहिस ते भेंटाइस। त-ले ओ-मन रीझ-रंग करेक लागिन।

से-पहरा बड़े गोसियाँ खेते रहिस। त-ले ओ घर-ठन आइस आरु माँदर बाजत रहिस आरु खेलत रहिन से सुनिस। त-ले एक झन घाँगर-के हाँकाइस आरु काँही काँही करत-रहिन से-के पूछिस। तो ओ-हर ओ-के कहिस तोर सोटका आइसने। से बेसे-बेस आइस ते-कर लगिन बुढ़ा तोर खिआन पिआन करिस। त-ले ओ-हर-के रीस लागिस। आरु बुढा-हर बाहिरे आइस आरु ओ-के हथ-जोरी बिन्ती करिस। त-ले ओ-हर बुढ़ा आपन-के कहिस ने-ना एतेक बछर-से मैं तोर-ठन कमाथों आरु कइहो तोर बात-के टाइर नखों तेउ-ले तैं मो-के गोटेक पठरु-हों नहीं देइ-आहस कि मैं आपन इआर गोइ-से खान-पिआन करतों। आरु ए सौआ तोर जे तोर धान-पान-गरु-डाँगर-के आन-तान-मैं हेंड् आय सिराइस से आबो-करिस कि तैं ओ-कर लेगिन खान पिआन करे-हस। आरु ओ ओ-के कहिस ऐ बेटा तैं सब दिन मोरे सगे आहस आरु मोर जे कोनो जे कोनो आहे से तोरे आहे। सगरो कोनो-के चाहत

रहिस कि खेलरेंन आरु रीझ करतेंन ए लगिन कि भाई तोर सिराय रहिस ते फेर बाँचिस बँड़ाय रहिस ते पवाइस।

हिन्दी प्रतिरूप

एक आदमी-के दो (ठौ) लडके थे। छोटे लडके-ने पिता-से कहा, 'ओ पिता! सब धान-आदि ढोर-डगर (=धन-दौलत) जो कुछ है उस-का हिस्सा मुझ-को दे-दो। तब थोडे दिन बाद छोटा लडका बहुत अधिक दूर (=लका) देश-को चला-गया और धन-दौलत सब-को इधर-उधर बरबाद कर-डाला। जब सब-को खोया, तब-के-बाद उस देश-मे बडा अकाल पडा (=हुआ)। तब उस-को कष्ट हुआ। तब वह जा-कर (कहीं) उसी राज्य-के किसी आदमी-के सग मिल-कर-रहा। तब उस-ने उस-को सुअर चराने-के लिए खेतो-की ओर भेजा। और भूसी जिस-को सुअर खाते-थे, उस-को-भी खाने-के लिए खोजता-था, लेकिन (वह-भी) नही मिली। तब उसे होश आया और कहने लगा, "मेरे पिता-के इतने नौकर है और सब किसी-को अघाने-से-भी अधिक मिलता-है और मैं इस-स्थान-पर खाने-के बिना मरता-हूँ। मैं उठ-कर बूढे-के-पास जाऊँगा और उस-से कहूँगा, 'ओ पिता! भगवान-के-यहाँ और तेरे यहाँ मैंने अपराध (=गुनाह) किया-है। इसलिए अब किस-प्रकार तुम्हारा बेटा कहलाऊँ। मुझ-को एक-नौकर रख-लो।" तब वह उठ-कर (कहीं) अपने-पिता-के-पास आने लगा और अधिक दूर था कि पिता-ने उस-को देखा और उस-पर दया आई और (वह) दौड-कर गया। तब गले-से लगाया और चूमा लिया। तब लडके-ने बूढे-से कहा, "ओ पिता! भगवान-के निकट और तुम्हारे-निकट मैं-ने अपराध किया-है, अब किस प्रकार तुम्हारा लडका कहलाऊँगा।' तब बूढे-ने नौकरो-से कहा, 'अच्छे कपडे बाहर-लाओ (=निकालो) और इस-को पहिनाओ, और हाथ-मे एक अँगूठी दो, और पैरो-मे जूते; और आओ सब-कोई खाये, पिये और खेले। मेरा लडका मरा-था, वह जी उठा-है, खोया-था, वह मिला-है।' तब वे-लोग आनन्द करने-लगे।

उस-पहर बडा वाला (लडका) खेत-मे था। तब वह घर-के-पास आया और ढोल बज-रहा-था और (लोग) खेल-रहे-थे, वह-सब सुना। तब एक (जने) नौकर-को बुलाया और 'क्या, क्या (वे) कर-रहे-है, उस-से पूछा। तब उस-ने उस-से कहा, 'तेरा छोटा (भाई) आया-है। वह सुरक्षित आया-है। उस-के-लिए पिता-ने तेरे, खाना पीना किया-है।' तब उस-को गुस्सा लगा। और बूढा बाहर आया और उस-की हाथ-जोड-कर विनती की। तब उस-ने पिता-से स्वय-ही कहा, 'देखिए, ना, इतने वर्षों-से मैं तुम्हारे-यहाँ सेवा-करता-हूँ और कभी-

भी तुम्हारी बात–को टाला नहीं–है। तब–भी तुम–ने मुझ–को एक बकरी–का–बच्चा भी नही दिया है कि मैं अपने यार–दोस्तो–से खाना पीना करता। और यह लडका तुम्हारा, जिस–ने तुम्हारी धन–दौलत–को इस–उस–मे बिखेर–कर खतम–कर–दी–है, उस–ने आना–किया–है कि तुम–ने उस–के लिए खाना–पीना किया–है।' और उस–ने (=पिता–ने) उस–से कहा, 'ओ बेटे! तू सब–दिन (=हमेशा) मेरे सग–मे है और मेरा जो–कुछ जो–कुछ है, वह तेरा ही है। सभी–किसी–की चाहना–थी कि खेलते और खुशी मनाते, इस–लिए कि भाई तेरा मरा–था, वह फिर बच–गया–है, खो–गया–था, वह पाया–गया–है।

(न० ५३)

भारत–आर्य परिवार — मध्यवर्त्ती शाखा

पूर्वी हिन्दी

छत्तीसगढ़ी अथवा लरिया (सद्री कोरवा बोली) (रियासत जशपुर)

नमूना—२

(बाबू मथुरानाथ चटर्जी, १८९८)

मोर नाँव हीरा। बुआ–हर तो मइर–सिराइस। नाँव रहिस देव–साए। जात कोरवा। डीहे रहांन। बीमड़ा–हें घर आहै। जनम–के तो बाप–माए जानहीं। कोरी–एक बसर तो होइस–होई। खेती बारी कर–के जीयों।

तीन दिन होइसने भाइ मोर खेते जाइ–रहिस । नाँव रहिस पूल–साए। भतहा हाँथे साँप साविस। मैं देखें। खर–ला काटोत रहिस। गोहराइस एना मो–ला तो साँप साविस। मैं कहें करम तो फाटिस ना। एहे दुइयो अँगरी–कर सध–में सावे–रहिस। लहू जात–रहिस। साँप–के तो नी भेटेन। तहँने घरे आएन। गुनी मती कराए देखेंन। नी बाँचिस। सुगा–बेरा साएब–रहिस। बिहान होत–होत मइर–गइस। त–ले थाना गएन दरोगा–ला सुनाएन। सिपई आइस देखिस कहिस कि मुरदा–ला गाडा–तोपा–करा। एतरेने तो जानांन महराज।

हिन्दी प्रतिरूप

मेरा नाम हीरा (है)। पिता तो मर (–समाप्त)–हो–गये–हैं। नाम था देवशाह। जाति कोरवा (हूँ)। गाँव–में रहने–वाला–हूँ । 'बीमडा'–मे घर है। जन्म–को तो बाप–माँ–ही जानेंगे। बीस–एक वर्ष तो हुए–होंगे–ही। खेती–बाडी कर–के जीता–हूँ।

तीन दिन हुए, भाई मेरा खेत–को गया–था। नाम था पूल–शाह। भात–

खाने-वाले (=दाँये) हाथ-मे साँप-ने काट-खाया। मैं-ने देखा। घास-को काट-रहा-था। (उस-ने) चिल्लाया, 'ओ! मुझ-को तो साँप-ने काटा-है।' मैं-ने कहा, 'भाग्य तो फट (=फूट)-गया--है ना।' इन्ही दोनो अँगुलियो-की सवि-मे काटा था। खून जा-रहा-था। (मैं) साँप-को तो नही मिला (=मुझे साँप नही दिखाई दिया)। तभी घर-मे आया। गुनियो-से (झाड-फूँक) कराया, देखा। नही बचा। सन्ध्या-वेला-मे काटा-था। सवेरा होते-होते मर-गया। तब थाने गया, दरोगा-को सुनाया (=सूचित किया)। सिपाही आया, (उस-ने) देखा, कहा कि मुर्दे-को गाड-दो। इतना-ही तो जानता हूँ, महाराज!

बैगा बोलियाँ

बैगा–लोगो का निम्न विवरण मध्यप्रदेश की १८९१ की जनगणना पर प्रस्तुत रोबर्ट्‌सन की रिपोर्ट पृष्ठ सख्या १७९ तथा आगे से लिया गया है। अतिरिक्त सूचना के लिए उनके द्वारा निर्दिष्ट कृतियो को तथा 'दि रिपोर्ट ऑव दि एथ्नोलोजीकल कमेटी ऑव दि जबलपुर एक्जीबीशन ऑव १८६६–६७' (The Report of the Ethnological committee of the Jubbulpore Exhibition 1966–67) के पृष्ठ सख्या ४४ एव ८८ को, शेरिंग-कृत 'हिन्दू ट्राइब्ज़ एन्ड कास्ट्स–२' (Hindu Tribes and Castes ii) के पृष्ठ १२९, १३० को, मध्यप्रदेश के 'गजेटियर' के पृष्ठ २७८ तथा आगे, को; और श्री क्रुक के 'ट्राइब्ज एन्ड कास्ट्स ऑव दी नॉर्थ-वेस्टर्न प्रोविन्सिज़ एन्ड अवध' (Tribes and Castes of the North Western Provinces and Oudh) के शीर्षक 'भुइयार' को, आधार बनाया जा सकता है। 'भुइयार' एक आदिवासी कबीला है जो मिर्जापुर ज़िले के सोनपार क्षेत्र मे बसा हुआ है। यह 'बैगा' के नाम से भी जाना जाता है, क्योकि बहुत बडी सख्या मे आदिवासी स्थानीय पुरोहित इसी जाति से व्युत्पन्न है।

यथार्थत 'बैगा' शब्द आदिवासियो के एक वर्ण-समुदाय के लिए प्रयुक्त किया गया है जो प्रमुखत मॉडला एव बालाघाट–पठारो के अत्यधिक दुर्गम क्षेत्रो मे पाया जाता है और कुछ कम मात्रा मे उक्त ज़िलो की सीमावर्त्तिनी छत्तीसगढी-पर्वत-श्रेणियो के बीच मिल रहा है। विशेषरूप से छत्तीसगढ-प्रदेश के जगली–क्षेत्रो मे बैगाओ से सम्बद्ध अथवा एक–ही–जैसे अन्य कबीले जैसे 'बिझवार, बिंझिया तथा नाहर भिन्न-भिन्न नामो से जनसख्या–रिपोर्ट मे उल्लिखित हैं। ब्रिटिश ज़िलो की जाति–तालिका मे ये सब बैगा–कबीले की प्रशाखाओ के रूप मे प्रविष्ट किये गये हैं किन्तु सामन्तीयो की तालिका मे जहाँ ये प्रशाखाएँ अन्तर्विभक्त नही की गयी है, गौण कबीले भिन्न-भिन्न कोष्ठको मे दिखलाये गये हैं । एक नाम और भी है—भुमिआ, जो अधिकाश स्थानो में 'बैगा' का समानार्थी है, परन्तु इस शब्द का प्रयोग कुछ हद तक अनिश्चितता लिए हुए है और इसमें अन्य कबीलो के सदस्यो को भी सम्मिलित किए जाने की सभावना है इसलिए इसे अलग रखना ही अधिक उपयुक्त समझा गया है। कबीलो का नामकरण कुछ हद तक सभ्रमकारी है, किन्तु निम्नाकित लेखा यह बतलाने मे मदद करेगा कि परिगणना के समय किस नाम तथा किस स्थान से वे अभिलिखित हुए हैं।

तथाकथित वैंगा जवलपुर, मॉडला, सिवनी एव वालाघाट के सतपुडा-क्षेत्रो, कवर्घा तथा छत्तीसगढ के उत्तरवर्त्ती पर्वतीय प्रदेश से लिखकर आये हैं। उनकी उत्पत्ति, रीति–रिवाज एव धार्मिक विश्वासो के सम्बन्ध मे एक अत्यधिक पूर्ण लेखा कर्नल ब्लूमफील्ड की, सन् १८८५ मे नागपुर से प्रकाशित, 'नोट्स औन दि वैगाज ऑव दि सेन्ट्रल प्रोविन्सिज' (Notes on the Baigas of the Central Provinces) मे प्रस्तुत किया गया है । फोरसिथ ने भी मॉडला के पूर्व मे स्थित माइकेल पर्वत–श्रेणियो के वैंगा–लोगो का एक अत्युत्तम विवरण अपनी पुस्तक 'दि हाइलैंड्स ऑव सेन्ट्रल इण्डिया' (The Highlands of Central India) मे दिया है, जिसमे से मैं निम्नलिखित अश उद्धृत कर रहा हूँ —

"पर्वत श्रेणियो का बैंगा अब भी प्राय अविकसित स्थिति मे है। वे अत्यन्त काले तथा ऊँची–पूरी, दुबली-पतली परन्तु अत्यधिक मजबूत एव लचकदार गठन वाले हैं और इनमे हब्शियो (Negretto) के-से लक्षण इस तरह की कोई दूसरी जगली जातियो की तुलना मे अपेक्षाकृत थोडी मात्रा मे पाये जाते है। केवल एक पट्टी को छोडकर सभी प्रकार के वस्त्रो से रहित, या, जव-कभी पूरी पोशाक मे है तव, अधिक से अधिक उस पट्टी के अतिरिक्त सीने पर लम्बवत् पडी हुई एक मोटे सूती कपडे की चद्दर से युक्त, लम्बे, घुँघराले और कोयला-जैसे काले वालो वाला, तथा धनुप-वाण एव कधे पर वँधी हुई एक पैनी, छोटी कुल्हाडी को धारण किये हुये वैंगा पर्वतीय आदिवासियो का एक अप्रतिम आदर्श-रूप जान पडता है । वह, एक चील की तरह पहाडी की किसी चोटी पर, या पगडडियो से पैठनीय घाटियो के वहुत ऊपर किसी चट्टान की कगार पर वाँस की लचीली डालियो से अपने सुघड वास-स्थान का वनाने के लिए पर्वतीय–क्षेत्र की 'ध्या' को उपाडने के अतिरिक्त वह किसी प्रकार की जुताई-गुडाई से घृणा करता है, और अनवरत परिश्रम द्वारा भोज्य वनस्पति पदार्थों से जीवन-निर्वाह करता है। साहस से भरपूर, एक-दूसरे पर भरोसा रखने वाले वे जगल के किसी जानवर पर, जिसमे चीता भी सम्मिलित है, हमला करने के लिए नही हिचकिचाते। यद्यपि इस प्रकार निर्जनता मे रह रहा है, पर फिर भी, मॉडला वैंगा आवश्यकता से अधिक सकोची-वृत्ति वाला नही है और उस समय जब कि अजनवियो की कतार की कतार उसके पास से गुजर जायेगी, वह अनुद्विग्न-रूप से अपनी 'ध्या' काटता रहेगा, ऐसी स्थिति मे एक वन्य गोड या कोरकू सव–कुछ छोड गया होता और जगल मे भाग गया होता। उनकी सच्चाई और ईमानदारी दोप की सीमा तक पहुँच जाती है, परिणामत वे साहूकारो द्वारा अपने लेन-देन मे भयकर-रूप से ठगे जाते हैं। वे अव भी पितृसत्तात्मक स्वशासन अपनाये हुये हैं और वह इतना पूर्ण है कि उनके लगभग सभी झगडे विना किसी अपील के अग्रजो द्वारा सुलझा दिये जाते है, यद्यपि

सम्वलपुर	छत्तीसगढ़-रियासतें	उड़िया-रियासतें	प्रदेशीय योग
८	९	१०	११
	६७०		८,३२७
	७४		७,७६८
			३,३४७
	१३५		२,०३७
	२७६		८,४४७*
	९५८		६,०८५
	२,११३		३६,०११
४५,२५८	१२	२४,८७०	८९,१८०
			२१४
८३३		५८४	१,४१७
३७	४४२	२५६	९९४
५	४०		१२,०७७†

इसमें सन्देह नही कि इनको हमारी इस विदेशी प्रणाली के अन्तर्गत कोई वैधानिक सत्ता प्राप्त नही है। गभीर अपराधो की सुनवायी इन लोगो के बीच लगभग नही होती।"

'मॉडला के बैगाओ के तीन प्रमुख वर्ग है जो कई 'गोत्स' मे उपविभक्त हैं। वे है—बिझवार, मुण्डिआ तथा भरोतिया। इनमे से प्रथम और अन्तिम बालाघाट मे मिल रहे हैं किन्तु कर्नल ब्लूमफील्ड मॉडला के मुडिआओ का सम्बन्ध बालाघाट मे पाये जाने वाले कबीलो मे से किसी से भी जोड सकने मे असमर्थ हुए है। बालाघाट मे मुडिआओ का स्थान 'नरोतिया' या 'नाहर' लोगो ने ले लिया है। बिझवार उपवर्गो मे सबसे ऊँचे है। कबीले तथा गोडो के पुरोहित प्रधानत उनमे से ही होते है और वे किसी दूसरे कबीले से अलग रहते है। कहने को तो वे अक्सर उसी गाँव मे रहते हैं, जिसमे गोड रहते है किन्तु बैगा लोगो की आबादी साधारणत कुछ दूरी लिये हुये प्राय एक ऊँची पहाडी की सबसे ऊँची चोटी पर होती है, मानो कि वे गोड-गाँव की ऊपर से निगरानी करते हो। तो भी बालाघाट मे, बिझवार अत्यन्त सभ्य कबीलो मे से है और मऊ घाटियो के गाँवो मे कई-एक खेत जोतने वाले कृषको के रूप मे बहुत पहले से बसते आ रहे है। जनसख्या-रिपोर्ट मे बालाघाट के ८४ प्रतिशत बिझवारो ने अपना धर्म 'हिन्दू' लिखवाया है जब कि दूसरे कबीले वालो ने बहुत ही सीमित रूप मे ऐसा किया है। दूसरी ओर मॉडला के लगभग सभी ९३ प्रतिशत बिझवार धर्म के सम्बन्ध मे अनीश्वरवादी दिखलाये गये है। खाने-पीने के मामले मे बिझवार असाधारण है। वे बैगाओ के दूसरे कबीलो या बाहर वालो के साथ नही खाते। मुडिआ सिर से पहिचाने जा सकते हैं क्योकि वे बालो के एक गुच्छे को छोडकर पूरा सिर मुँडाये रखते हैं। दूसरी ओर, बिझवार लम्बे बाल रखते है। बालाघाट मे 'भरोतिया' और 'नरोतिया' दोनो ही जब कभी उचित समझते है, अपने बालो को कटवा देते हैं। अपने खाने के सम्बन्ध मे भी वे विशेष निराले नही हैं। वे गाय-मास, का, जो वर्जित है, छोडकर लगभग सभी कुछ खा लेगे। बालाघाट जिले के सभी कबीलो मे 'भरोतिया' सबसे अधिक जगली हैं।

जैसा कि आगे देखा जायगा, बैगा-लोग छत्तीसगढी पर आधारित एक जारगन (Jargon) का प्रयोग करते है जो अपने असली रूप से स्थान-स्थान पर अन्तर रखती है। इसीलिए, १८९१ की जनसख्या-रिपोर्ट मे जब विभिन्न घराने के ३६,०६० से भी अधिक बैगा गिने गए थे, केवल ७,९७४ व्यक्तियो ने ही लिखवाया है कि वे अपने वास-स्थान की परिनिष्ठित आर्य-भाषा से पर्याप्त भिन्न बोलियाँ, जो अलग से 'बैगानी' कहलाने की अधिकारिणी है, बोलते हैं। इस नाम के अन्तर्गत दूसरी बोलियाँ भी सम्मिलित कर ली गयी हैं। वे सब इस प्रकार है —

असली वैगानी	२,६१६
विझवारी	४,४४७
भुमिआई	४४
भुजिआ	८६७
योग	७,९७४

ये लोग प्रत्येक जिले मे नीचे दी हुई सख्या के अनुसार वँटे हुए हैं। यहाँ के वे आँकडे उपलब्ध नही हैं जिनसे अलग से बोलियो की सख्या ज्ञात होती।

मॉडला	१,५९०
होशगावाद	६
वालाघाट	९४४
रायपुर	३,७८२
विलासपुर	३१०
सम्वलपुर	१,०२७

सामन्तीय रियासतें—

कवर्धा	१०८
सारनगढ	५५
पटना	१५२
	३१५
योग	७,९७४

इस सर्वेक्षण के लिए स्वतत्र रूप से तयार किये गये प्राप्ति प्रपत्र वैगा कवीलो द्वारा प्रयुक्त विभिन्न भाषा—रूपो को अपनाने वालो की अनुमानित सख्या इस प्रकार दे रहे है .—

	बालाघाट	रायपुर	बिलासपुर	सबलपुर	कवर्धा	रायगढ	सारनगढ	पटना	योग
असली बैंगानी	१,०००	३,८००	३००	१,०००	१,०००				७,१००
बिझवारी	.	३,०००	..	.	.	१००	६,४१२	१५०	९,६६२
योग	१,०००	६,८००	३००	१,०००	१,०००	१००	६,४१२	१५०	१६,७६२

इन दोनो कबीलो के वे व्यक्ति इस तालिका मे सम्मिलित नही हैं, जो कि, जहाँ पर रह रहे है, वहाँ की, सामान्य आर्य बोलियो को अपनाने वालो के रूप मे गिने गये हो।

मैं अब इन बोलियो को एक-एक करके प्रस्तुत करूँगा।

बैगानी

जैसा ऊपर स्पष्ट किया जा चुका है, यह लिखित रूप से सूचित किया गया है कि बैगानी एक मान्यता-प्राप्त बोली के रूप मे बालाघाट, रायपुर, बिलासपुर, सम्बलपुर तथा कवर्धा-रियासत के लगभग ७,१०० व्यक्तियो द्वारा बोली जाती है। यह छत्तीसगढी का एक विकृत रूप है परन्तु यह दूसरी भाषाओ की जिनमे एक ओर गोंडी तथा दूसरी ओर बुन्देली सम्मिलित हैं, ग्रहण की हुई शब्दावलि तथा मुहावरो से खूब मिश्रित हो गयी है। गोंडी से यह उसके शब्द-भडार का एक हिस्सा ही उधार ले लेती है और बुन्देली का, सबसे अधिक ध्यान देने योग्य प्रयोग जो इसने अपनाया है, वह है—भूतकाल की सकर्मक क्रिया के साथ अभिकर्त्ता (Agentive) कारक के चिह्न 'ने' का समयानुसार प्रयोग। यद्यपि इस प्रकार यह एक मिश्रित जारगन (Jargon) है, परन्तु इसका मूलाधार स्पष्टत छत्तीसगढी है।

विशिष्ट ढग से अपनाने के सम्बन्ध मे एक दूसरा महत्त्वपूर्ण तथ्य है। गोंडी मे क्रिया के प्रथम पुरुष, एकवचन का विभक्ति-प्रत्यय इस बात मे अन्य द्राविड भाषाओ से समानता रखता हुआ, 'ना' अथवा 'न' मे अन्त होने वाला होता है। बैगानी इस 'ना' या 'न' को उधार लेती है और किसी भी क्रिया के सभी पुरुष-रूपो मे बिना किसी भेद-भाव के जोडती जाती है। इसी प्रकार गोंडी-सज्ञाओ के बहुत-से कारक 'न' ध्वनि-युक्त विभक्ति-प्रत्यय मे अन्त होते हैं और इन्हे बैगानी ने ऐसा जान पडता है कि यहाँ-वहाँ, जहाँ भी मन चाहा, उधार ले लिया है। यह प्रवृत्ति गोंडी के सम्बन्धकारकीय विभक्ति-प्रत्यय 'ना' मे विशेष रूप से ध्यान देने योग्य है। परिणाम यह होता है कि एक बैगा की भाषा भर्त्ती के रूप मे बारम्बार प्रयुक्त होने के कारण, अक्षर 'ना' से भर जाती है। यही अक्षर अभिकर्त्ता कारक (Agentive) की रचना के लिए बुन्देली 'ने' के स्थान पर कभी-कभी प्रयुक्त किया गया जान पडता है।

इस विशिष्टता के उदाहरण उनमे से चुनकर जो कि नमूने मे मिल रहे हैं, नीचे दिए जा रहे हैं।

अभिकर्त्ता कारक के प्रयोग के उदाहरण है—वह-ने पूछे = उस-ने पूछा, वो-ने कहिस = उस-ने कहा, मैं-ना नहँको डराऊँ = मैं नही डरा, बाबा-ना रँधँवाय-ना = पिता-ने पकवाया।

यह दिखलाने के लिए कि सज्ञाओ मे 'ना' विभक्ति-प्रत्यय किस प्रकार जोडा जाता है, निम्नाकित वाक्य उल्लेखनीय है —

हमार बाप-के यहा-ना बहुत-ओ खातूँ-ना वो-कर-ले जादा-ना

बनहिया-के लाने चुरँथे-ना = मेरे पिता-के घर-मे नौकरो के लिए जरूरत से ज्यादा खाना पकाया जाता है ।

क्रिया-रूपो के सम्बन्ध मे कतिपय उदाहरण ही पर्याप्त होगे—

वर्त० काल-मरँथ-ना = मर-रहा हूँ, हौ-ना = मैं हूँ, जाथे-ना = वह जाता है।

भवि० काल-जाहो-ना = मैं जाऊँगा, कहूँ-ना = मैं कहूँगा

भूतकाल-है-ना = वे थे, ले-गइस-ना = वह ले गया, और भी बहुत से।

अन्य-आज्ञार्थक, कर-ले-ना = बनाओ । पूर्वकालिक कृदन्त, लान-कर-ना = ला-कर।

नीचे दिया हुआ नमूना 'उडाऊ-पूत-कथा' का एक रूपान्तर है, जो बैंगानी मे है। क्योकि बोलने वाला आवश्यकतानुसार बिल्कुल बे-पढा था, इसलिए यह नही कहा जा सकता कि अनुवाद पूरी तौर से सफल रहा है । यत्र-तत्र ऐसे वाक्याश है जिनके अर्थ के सम्बन्ध मे मुझे सन्देह है। वे प्रश्न-सूचक चिह्न से अकित कर दिए गये है। यह नमूना बालाघाट से लिया गया है।

(न० ५४)

भारत-आर्य परिवार — मध्यवर्त्ती शाखा

पूर्वी हिन्दी

छत्तीसगढी या लरिया (विशृंखल बैंगानी) बोली (जिला बालाघाट)

नइना ओ उउका-के दोई छवा है-ना। वो मे-से नान छवा बाप-को कहिस, ये बाबा धन-मा मोर बाटा है तो दै दे। तब ओह वो-ला अपन धन बाट-डारे। बहुत दिन नइ होइस तें छुटका छवा सब-ला सकेल-कर ले-गइस-ना दूर। फिर वहा आपन लुचाई-से अपन धन-ला बिगाड दइस। सफा धन-ला अपन -कर खो दइस तब वो देस-मा बड़े अकाल पडे-है-ना अऊर वो बिल्कुल गरीब हो-गये-ना। अऊर वो वोह देस-मँ जाय-कर एक झन-ठन रहन। कसेजो बोला तैं आपन खेत-ला सुअरा चरावे-के पोंहचा-दये-ना। अऊर वो भूसा-ला सूअर खाये-ना आपन पेट भरन-ला लगिस-ना। अऊर वो-को कोही नहको देइ-ना। तब वो-ला सुरता अइस-ना अऊर वो फिर कहे हमार बाप-के यहाँ-ना बहुतो खातूं-ना वो-कर-ले जादा-ना बनहिया-के लाने चुरथे-ना अऊर भूखन मरय-ना। यहा-ले उठ-के मै बाबा कहाँ जाहो-ना। फिर वो-ला कहू-ना बाबा मै-ना भगवान-ला नहको डराऊँ अऊर तुमार आगूं पाप करो-ना। मैं तोर छवा कहोवे-ला नहीं हौ-ना मोहि-ला तोर बनिहार-मा एक कर-ले-ना। वो तब उठ-कर बाबा कहाँ जाथे-ना । पर वो बहुत दूर रहे वो-ला देख-

कर बावा–ला माया लाती–हैं—ना अऊर दउड़–कर वह–कर ढेट्ठु–मा लपा–कर वो–ला चूमा लेनिस–ना। छवा वो–ला कहिस बाबा मैं–ना भगवान–ला नहको डराऊँ अऊर तुमार आगूँ पाप–करो–ना। अऊर फेर मैं तोर बेटा कहोवे–के नहे हो–ना फिर आपन नौकर–ला बावा कहिस अच्छा फरिया लान–कर–ना वो–ला पेहरा–दे अऊर वो–कर अंठी–मा मुदी अऊर गोड़–मा पन्ही पेहरा–दे। अऊर हम खायबो अऊर अच्छा रहेंबो। है छवा मर–गये–रहे तो जी गये–भुलाये–गये–रहे फिर मिल गये। तब अच्छा रहन लागिसि–ना।

वो–कर बड़ा छवा खेत–मा रहे–ना। अऊर वोह घर नजीक–ना पोंहचिस फेर बाजा अऊर नाचनी–कर अवाज सुनिस–ना। अऊर वह–ने आपन चाकर–कर एक–ला आपन–से बुलाय–कर पूछें ये का है। लोवो–ने वो–ला कहिस भाई तोर आये–हैं अऊर तोर बाबा–ना अच्छा रोटी रँधवाय–ना काहे–के वो–ला अच्छा मिल–गये। फिर वो रिसाय गइस अऊर भीतर नाहको बैठन–पारे–ना। काहिन–कर वो–कर बाप आगन–मा निकर–कर वो–ला भुरयावैं। वोह आपन बात कर कहत लगे है देखो मैं इतक साल सेवा करयूँ और फिर तोर बात नहको टालें अऊर तैं–ने मो–ला गाड़र छेड़ी नाहको लैं देनिस मैं मोर जोहरिया–के संग मजा करतेंन–ना। फिर तो छवा किसबिन–के संग तोर धन–ला खाय डाइस जो आइस तो तैं–ने हो–कर लाये अच्छा खावें–ला दे–दीस। है–कर बाप–ना है–ला कहिस–है छवा सब दीन–हा हास अऊर जो मोर है तौन सब हौ तोर आय। फिर अच्छा–कर अऊर खुशी रह–कर ठीक रहे–ना–है। और है तोर भाई मर–गये–रहे–ना फिर जी–गये भुलाये गये–रहे फिर मिल–गये।

हिन्दी प्रतिरूप

किसी एक मनुष्य–के दो लडके थे। उन–मे–से छोटे लडके–ने पिता–से कहा, 'ओ पिता (जी) ! धन–मे मेरा हिस्सा है; वह दे–दो।' उस–ने उस–को अपना धन बाँट दिया। बहुत दिन नही हुए उस छोटे लडके–ने सब–को इकट्ठा कर ले–गया दूर। फिर वहाँ अपने लुच्चेपन–से अपने धन–को बरबाद–कर–दिया। सब धन अपना खो–डाला, तब उस देश–मे बडा अकाल पड–गया, और वह बिल्कुल गरीब हो–गया। और वह उसी देश–मे जा–कर एक जने–के–यहाँ रहा। उस–ने (?) कहा (?) उस–से (?), अपने खेतो को सुअर चराने–के लिए पहुँचा–दिया और वह (जिस) भूसे–को सुअर खाते थे, अपना पेट भरने लगा और उस–को कोई नही (कुछ–भी) देता था। तब उस–को याद आयी। और उस–ने फिर कहा, "मेरे पिता–के यहाँ बहुत–ही खाना है, उस–से ज्यादा–है, जो नौकरो–के लिए बनाया–जाता–है; और (मैं) भूखो मरता–हूँ। यहाँ–से उठ–कर मैं पिता–के

यहाँ जाऊँगा। फिर उस–से कहूँगा, 'पिता (जी) मैं भगवान–से नही डरा–हूँ और तुम्हारे सामने पाप किया–है। मैं तुम्हारा पुत्र कहलाने–(योग्य) नही–हूँ। मुझ–को अपने मज़दूरो–मे एक बना–लो।' वह तब उठ–कर पिता–के यहाँ जाता–है। पर वह बहुत दूर था, उस–को देख–कर पिता–को दया आ–गयी। और दौड–कर उस–के गले–मे लिपट–कर, उस–के चूमे लिये। लडके–ने उस–से कहा, 'पिता! मैं भगवान–को नही डरा–हूँ, और तुम्हारे सामने पाप किया–है, और फिर मैं तुम्हारा बेटा कहलाने (योग्य) नही हूँ।' फिर अपने नौकरो–से पिता–ने कहा, 'अच्छे कपडे ला–कर उस–को पहिना–दो। और उस–की अँगुली मे अँगूठी और पैर–मे जूते पहिना दो। और हम खायेंगे और अच्छी तरह रहेगे। यह लडका मर गया–था, वह जी–गया, खो गया–था, फिर मिल–गया–है।' तब वे अच्छी–तरह रहने लगे।

उस–का बडा लडका खेत–मे था। और वह घर–के नज़दीक पहुँचा। फिर बाजे और नाचने–की आवाज़ सुनी। और उस–ने अपने नौकरो–मे–से एक–को अपने–पास बुला–कर पूछा, 'यह क्या है?' उस–ने उस–से कहा, 'तुम्हारा भाई आया–है, और तुम्हारे पिता–ने अच्छा खाना बनवाया–है, क्यो–कि उस–को अच्छी-हालत–मे पाया–है।' फिर वह गुस्सा हो–गया, और भीतर नही बैठने–पाता–था (?) इस पर (?) उस–का पिता आँगन–मे निकल–कर उस–को फुसलाने–(लगा)। वह अपने पिता–से कहने–लगा, 'देखिए! मैं इतने सालो–से सेवा कर–रहा–हूँ और फिर तुम्हारी, बात (कभी–) नही टाली–है और तुम–ने मुझ–को एक–बकरी–का –बच्चा नही ले–दिया, (कि) मैं अपने जोडीदारो–के साथ आनन्द मनाता। फिर तुम्हारा लडका वैश्याओ–के साथ तुम्हारे धन–को खा–डाला–है, जब आया, तब तुम–ने उस–के लिए अच्छा खाना दिया।' उस–के पिता–ने उस–से कहा, 'पुत्र! सब दिनो तू है (?) और जो मेरा है, वह सब–ही तेरा है। फिर खुशी–मनाना ठीक था, और यह तुम्हारा भाई मर गया–था, फिर जी गया–है, खो गया–था, फिर मिल गया–है।'

उपर्युक्त नमूना बालाघाट के बैगाओ द्वारा बोली जाने वाली विकृत छत्तीसगढी का उदाहरण प्रस्तुत करता है। अन्यत्र यह पर्याप्त मात्रा मे भिन्न है। उदाहरण के लिए, बिलासपुर मे यह लगभग विशुद्ध छत्तीसगढी है। बोली के अन्य उदाहरण देना अनावश्यक है। कम-अधिक मात्रा मे विदेशी-तत्त्वो से मिश्रित होकर यह सभी जगह निरी छत्तीसगढी है।

विंझवारी अथवा विंझवाली

विंझवार ('विंझवाल' नाम से भी अभिहित किये जाते है) एव वैगाओ के बीच पाये जाने वाले सम्वन्धो का विवरण पहले दिया जा चुका है। असली वैगाओ की सवसे अधिक सख्या जवलपुर, माँडला, विलासपुर एव पश्चिमी छत्तीसगढ मे है, जव कि विंझवार विशेषरूप से पूर्वी छत्तीसगढ तथा इसकी उडिया–सामन्तीय–रियासतो मे पाये जाते है। दोनो ही कवीले छत्तीसगढी के एक विकृत रूपान्तर का प्रयोग करते है। लेकिन वैगानी का विकार गोडी के तथा पश्चिमी हिन्दी से सम्वद्ध विभिन्न भाषा-रूपो के प्रभाव के कारण है जवकि विंझवारी उडिया के प्रभाव से विकृत है। विंझवारी निम्नाकित ज़िलो एव रियासतो से परिचित वोली के रूप मे लिखकर आयी है —

रायपुर	३,०००
रायगढ	१००
सारगढ	६,४१२
पटना	१५०
योग	९,६६२

विंझवार छोटा नागपुर की सरगुजा एव गजपुर रियासतो मे भी पाये जाते है। पटना मे वे रियासत के पश्चिमोत्तर 'विंझवाल्टी' परगना तक ही सीमित है। अन्य स्थानो मे ये ऐसे विखरे हुए है कि मानचित्रो मे इनके लिए कोई विशिष्ट इलाके नही दिखलाये जा सकते।

नमूनो के रूप मे मैं 'उडाऊपूत कथा' का एक रूपान्तर सारनगढ से तथा एक 'लोक-कहानी' रायगढ से दे रहा हूँ। रायपुर से प्राप्त नमूना वडी मुश्किलो से मिल पाया था किन्तु अपूर्ण होने के कारण उसे छोड दिया गया है। सारनगढ का नमूना स्पष्टत उडिया का प्रभाव प्रदर्शित करता है। रायगढ-नमूना विशुद्ध छत्तीसगढी के अधिक निकट है और रायपुर से भेजे गये नमूने मे पायी जाने वाली भाषा से पर्याप्त साम्य रखता है। पटना मे वोली जाने वाली भाषा का रूप सारनगढ–नमूने की ही तरह उडिया से अधिक मिश्रित है।

यहाँ सारनगढ नमूने मे प्राप्त व्याकरणिक–रूपो का विश्लेषण अनावश्यक है। यह नमूना छत्तीसगढी एव उडिया का सवल मिश्रण है जिसमे प्रथम की प्रभविष्णुता है। यहाँ कतिपय प्रमुख विशिष्टताओ का उल्लेख ही पर्याप्त है। 'इ' के लिए प्राय 'ए' की स्थानापत्ति होती है। इस प्रकार हमे 'रहिस' के स्थान पर 'रहेस' (=वह था) एव

'दिहिस' के स्थान पर 'देहेस' (=उस–ने दिया), मिलता है। 'वह गया' कभी 'जायस', कभी 'जाइस', कभी 'जैस', कभी 'जेस' और कभी 'जेंइस' लिखा गया है। 'है' के लिए प्रयुक्त शब्द 'आहे' है, जैसा कि सद्री कोरवा मे है। शब्द 'अपन' का अभिप्राय 'हम' है जिसमे गुजराती–प्रयोग की तरह श्रोता भी सम्मिलित रहता है। इस शब्द का यह प्रयोग स्पष्टत पडोस मे स्थित मुण्डा एव द्राविड भाषाओ से आया है।

(नं० ५५)

भारत–आर्य परिवार मध्यवर्त्ती शाखा

पूर्वी हिन्दी

छत्तीसगढ़ी या लरिया (विशृंखल बिंझवारी) बोली रियासत सारनगढ़

नमूना—१

गुटे लोक–के दुइ–टा पीला रहेस। जे अ–कर सुरू बेटा तार बुआ–के कहिस बुआ धनदुगानीर बाटा जो मोर हिस्सा–के आहे मो–के दे। जे वह धनदुगानी ताहानर–में भाग–कर देहेस। और थोड़े दिन जायस पाछे छोटे बेटा जमा इकट्ठा सँकलिस और दूर देस पला–जैस और वहीं–ठन अरला–सरला–में ओ–कर माल–के खर्ची–पकाइस। और जेबे वोही–हर सबू खर्चे–पकाइस वहीं ठने नोचट दुकाल परेस। और वही तग होइ–जाइस। और वह जाइस और ओई देस–के गुटे भल–लुके–के ओधेस। और वह ओ–के ओ–कर खेते बर्हा चराइबा–के भेजिस। और वह जौन तसू वर्हा खात– रहिस वही तसू–के ओ–कर पेट खुसी–थी भरथीस। पर ओ–के कोन्हे नहीं देइस। और जेबे वह ओ–कर–थी आइस वह कहिस मोर बुआ–के केते–टा कमिया खायबा–पुरतो और बचाये–पुरती पीठा पात–है। और मुइ इना भूखें मरत–हूँ। मुइ उठीं और मोर बुआ–के पास–केना जाहीं और ओ–के कहीं बुआ मुइ महाप्रभू–के और तोर दोस करें और तोर पोर कहेबा लायक नोआ। तोर कमिया मीता मो–के राख। फेर वह उठेस औ बाप–के ठने आयस। पर जेबे निठार दूर वह रहेस ओ–कर बुआ ओ–के देखिस औ दया करिस औ दाडेस ओ ओकलें पकाइस औ चुम्बेस। और ओ–के ओ–कर बेटा कहेस बुआ मुइ महाप्रभु–के विरुद्ध और तोर लगा दोस करें और तोर बेटा कहेबा लायक नोआ। पर ओ–कर बुआ ताहार गोली–के कहेस गुटे अच्छा दगला आन–केना ओ–के पिन्हा–देस और हाथे गुटे मुदी पिन्हा–देस और गोडे सारे पन्हई पिन्हा देस। पच्छे खा–पी–केना आनद करहीं। काहे–के यह मोर बेटा मर–जाय–रहेस और फेर जियेस। वह पलाइ–जाय रहेस और फेर मिलेस। और ओ–मन आनद करीबा लागेस।

तेतकी बेला ओ–कर बड़का बेटा खेते रहेस और जब वह आयेस और घर–के

लगा पहुँचिस वह गायवा बजाबा सुनिस । और वह गुटे कमिया-के डाकेस और पचारेस ईं-टा काय-टा। और वह ओ-के कहेस ताहानर भाई आये-है और ताहानर बुआ मॉदी-वसा-केना खुआत-है काहे-के वह ओ-के भल खुसी आ-मिलिस-है। और वह रिस! होइ जेस और घर के नहीँ जँइस। पाछे ओ-कर बुआ बाहरे आइस और ओ-के समझाइस और वह ताहानर बुआ-के जवाबदेइस देख निठार दिन-ले तोर मुइ सेवा करत-हूँ। मुइ कभे तोर हुकुम-के नहीँ टालूँ पर कवे गुटे छेल-पोटे तुइ मो-के नहीँ देला जे मुइ मितान-सगे उसत करूँ। पर जेते बेले यह ताहार बेटा जो ताहार धन-दुगानी दारी-किसबी-कू दे-पकाइस आइस तुइ ओ-के मॉदी-वसा-केना खुआत-है। और वह ओ-के कहेस बेटा सदा-दिन मोर सगे तुइ आहेस और जेते धन मोर आहे सबू ताहानर आहे। ठीका रहिस जे अपन उसत करिबा-लागे और आनद करूँ काहे-के यह ताहार भाई मर-जाय-रहेस और फेर जिएस और पलाइ-जाय-रहेस और फेर मिलेस।

हिन्दी प्रतिरूप

किसी मनुष्य-के दो लडके थे। और उनमे-से छोटे लड़के-ने अपने पिता-को कहा, 'पिता ! धन-दौलत-के भाग-मे जो मेरा हिस्सा है, मुझ-को दे-दो।' और उस-ने धन-दौलत-को उन-मे बाँट-कर दे-दिया। और थोडे दिन गए पीछे छोटे बेटे-ने सब इकट्ठा सकेला और दूर देश-को चला-गया। और वहाँ उच्छृंखलता-मे अपने धन-को खर्च-कर-डाला। और जब उस-ने सब खर्च-कर-डाला, उस स्थान-मे भयकर अकाल पडा और वह कष्ट-मे हो-गया। और वह गया, और उस देश-के किसी भले-आदमी-के यहाँ-रहा। और उस-ने उस-को अपने खेतो-मे सुअर चराने-के-लिए भेजा। और वह जो भूसा सुअर खाते-थे, उसी भूसे-से-अपना पेट खुशी-से भर-लेता, पर उस-को किसी-ने नही दिया। और जब वह अपने-मे आया, उसने कहा, "मेरे पिता-के कितने नौकर खाने-भर-को और बचाने-भर-को रोटी पाते है, और मैं यहाँ भूखो मरता-हूँ। मैं उठूँगा और अपने पिता-के पास जाऊँगा और उन-से कहूँगा। "पिता ! मैं-ने ईश्वर-का और तुम्हारा अपराध किया-है और तुम्हारा लडका कहलाने योग्य नही-हूँ। अपने नौकरो-की तरह मुझ-को रख-लो।," और वह उठा और पिता-के पास आया। लेकिन जब वह काफी दूर था, उस-के पिता-ने उस-को देखा, और दया की, और दौडा, और गले मे लगा; और चूमा। और उस-से उस-के बेटे-ने कहा, 'पिता ! मैं-ने ईश्वर के विरुद्ध और तुम्हारे निकट अपराध किया-है, और तुम्हारा लड़का कह-लाने-के योग्य नही-हूँ।' लेकिन उस-के पिता-ने अपने नौकर-को कहा, 'एक अच्छी पोशाक ला-कर उस-को पहिनाओ, और हाथ-मे एक अँगूठी पहिनाओ, और पैर-मे

जूते पहना-दो । तब, खा-पी-कर (हम) आनन्द करेंगे, क्यो-कि यह मेरा बेटा मर-गया-था और फिर जिया-है, वह खो –गया-था, और फिर मिला-है ।' और उन्हो-ने आनन्द करना शुरू किया ।

उस-समय उस-का बडा लडका खेत-मे था । और जब वह आया और घर-के निकट पहुँचा, उस-ने गाना, बजाना सुना, और उस–ने एक नौकर-को बुलाया, और पूछा, 'यह क्या–है ?' और उस-ने उस-से कहा, 'तुम्हारा भाई आया-है, और तुम्हारे पिता-ने एक–दावत खिलायी-है, क्यो-कि उस-ने उस-को भला-चगा पाया-है ।' और वह गुस्सा हो-गया और घर-को नही गया । इसके-बाद उस-का पिता बाहर आया और उस-को समझाया, और उस-ने अपने पिता–को उत्तर दिया । 'देखो ! बहुत दिनो-से तुम्हारी, मैं सेवा करता-हूँ । मैं-ने कभी तुम्हारे हुक्म-को नही टाला , पर कभी एक बकरी-का-बच्चा तुम-ने मुझ-को नही दिया, कि मैं मित्रो-के-साथ आनन्द-करता, लेकिन, जिस-समय यह तुम्हारा बेटा जिस-ने तुम्हारी कमाई वैश्याओ-मे बरबाद-की-है, आया-है , तुम-ने उस-के लिए दावत खिलायी-है ।' और उस-ने उस-से कहा, 'बेटा ! सदैव-से- मेरे -साथ तू है , और जितना धन मेरा है, सब तुम्हारा है । उचित था कि हम-लोग खुशी मनाते और आनन्द करते, क्यो-कि यह तुम्हारा भाई मर-गया-था और फिर जिया-है, और खो-गया-था और फिर-मिला-है ।'

(न० ५६)

भारत–आर्य परिवार **मध्यवर्त्ती शाखा**

पूर्वी हिन्दी

छत्तीसगढी या लरिया (बिझवारी विभृखल) बोली रियासत रायगढ़

नमूना—२

एक एक देस–में एक राजा रहिस। ओ–कर प्रकैस बेटा रहिस। एक दिन राजा–हर अपन सब लैका–ला बलाय–के एक एक भाला दिहिस और कहिस के फेंको। तो सब–के भाला–हर नजदीक–में रहि–गय। और सब–ले छोटे–के–हर अतेक दूर–मे गइस के नहीं दीखिस। तहा–ले ओ–कर बाप–हर सब–ला पूछिस के तुम सब का–कर कमाई खात–हौ। तो सब कहिन के तोर कमाई खाइत–हन । सब–ले छोटे–हर कहिस के मैं अपन कमाई खात–हौं। तो ओ–कार सब गहना–गाठा–ला निकार–के एक धोती पहिना–के निकार दिहिस। वो चलत चलत एक गाँव–में गइस जहाँ ला ओ–कर भाला गिरे–रहिस । और उहाँ–के सब उड़िया–ला बलाय–के कहिसके ए जघा–ला खनो । तो सब खने लगिन। खनत–में एक कपाट दीखिस। तो ओ–ला

खोलिस। तो ओ–माँ हाथी–च हाथी भरे रहिस। फेर दूसर कपाट दीखिस। ओ–हू–ला खोलिस तो ऊँटे–च ऊँट दीखिस। फेर ओ–ला खोलिस तो गाये–च गाय। फेर ओ खोलिस तो बैला–च बैला। फेर खोलिस तो घोडे–च–घोडा। फेर खोलिस हीरे–च–हीरा। फेर खोलिस तो एक झुलना–में एक बेंदरी बैठे रहिस। और ओ–कर चारो तरफ खूब झीन चेरी बैठे रहिन। जब ओ राजा–के छोकरा–हर उहाँ गइस तो चेरी–मन कहिन के कुवारी–हाथ–के सूत में कुम्हार इहाँ–के कच्चा चुकी बाँध–के पानी निकाल–लाव। और ए–ला नहवाव तो ए–हर आदमी हो–जा है। तो राजा–के छोकरा–हर वैसने करिस। तो सुन्दर जवान छोकरी हो–गय। औ ओ–कर सग बिहाव कर–के अपन ददा–के पास हाँथी घोड़ा ऊँट गाय और हीरा ऊरा सब–ला ले–के आइस। और अपन ददा–ला कहिस के देख मैं अपन कमाई–के लाये हैं। तब–ले ओ–कर ददा ओ–ला अच्छा प्यार कर–के रखे लागिस।

हिन्दी प्रतिरूप

किसी एक देश-मे एक राजा थे। उस-के इक्कीस बेटे थे। एक दिन राजा-ने अपने सब लडको-को बुला-कर एक भाला दिया और कहा कि, 'फेको'। तो सब-के भाले नजदीक-मे रह-गए और सब-से छोटे-का इतने दूर-मे गया कि नही दिखायी-दिया। तब उस-के पिता-ने सब-से पूछा कि, 'तुम सब किस-की कमाई खाते-हो ?' तो सब-ने कहा कि 'तुम्हारी कमाई खाते-है।' सब-से छोटे-ने कहा कि, 'मैं अपनी कमाई खाता-हूँ।' तब उस-के सब गहनो-आदि-को उतार-कर एक धोती पहिना-कर निकाल-दिया। वह चलता चलता एक गाँव-मे गया, जहाँ उस-का भाला गिरा-था। और वहाँ-के सब उडियाओ-को बुला-कर कहा; कि 'इस जगह-को खोदो।' तब सब खोदने लगे। खोदते-मे एक दरवाजा दिखाई-दिया। तब (उस-ने) उस-को खोला। तो उस-मे हाथी-ही-हाथी भरे थे ? फिर दूसरा दरवाजा दिखाई-दिया ; उस-को-भी खोला। तो ऊँट-ही-ऊँट देखे। फिर उस-को खोला तो गाय-ही-गाय। फिर वह खोला तो बैल-ही-बैल। फिर खोला तो घोड़ा-ही-घोडा। फिर खोला तो हीरे-ही-हीरे। फिर खोला तो एक झूले-मे एक बँदरिया बैठी-थी। और उस-के चारो तरफ बहुत अधिक नौकरानियाँ बैठी-थी। जब वह, राजा–का लड़का वहाँ गया तो नौकरानियों-ने कहा कि, 'क्वाँरे-हाथ-के सूत-मे कुम्हार-के-यहाँ-के कच्चे घडे-को बाँध-कर पानी निकाल-लाओ और इस-को नहलाओ तो यह आदमी हो जायगी।' तब राजा-के लडके-ने वैसा-ही किया, तो एक-सुन्दर जवान लडकी हो-गयी। और उस-के साथ विवाह कर-के अपने पिता-के पास हाथी, घोडा, ऊँट, गाय और हीरा-आदि सब-को ले-कर आया, और अपने पिता-से कहा, कि 'देखिए! मैं अपनी कमाई-से लाया-हूँ।' तब-से उस-के पिता उस-को अच्छी-तरह प्यार-कर-के रखने लगे।

कलंगा और भुलिया

ये दो बोलियाँ आज-तक उडिया के रूपान्तर के रूप मे परिगणित हुई है। तो भी, तथ्यात्मक दृष्टि से आगे दिये हुये नमूनों के उद्धरण स्पष्ट कर देंगे कि वे यथार्थतः विकृत छत्तीसगढी है, और जो कुछ वे उडिया-भाषा से साझे मे रखती है, वह लिपि है और उन्होने उस-से यत्र-तत्र कुछ शब्द एव मुहावरे भी उधार ले लिये हैं। इसमे सन्देह नही कि इस तथ्य के कारण कि वे उडिया-लिपि मे लिखी जाती हैं, अशुद्ध-रूप मे वर्गीकृत हुई है।

१८९१ की जनसख्या-रिपोर्ट मे भुलिआ, 'उडिया' शीर्षक के अन्तर्गत रखी गयी है और ९,१०६ व्यक्तियो द्वारा बोली जाने वाली बतलायी गयी है, जब कि कलगा का नाम ही नही है।

वर्तमान सर्वेक्षण के लिए प्रदत्त वापिसी-पत्रो मे भुलिया, सोनपुर तथा पटना रियासतो मे तथा कलगा केवल अन्तिम मे, बोली जाने वाली बतलायी गयी है। आँकडे निम्न प्रकार है —

	सोनपुर	पटना	योग
कलगा		६००	६००
भुलिआ	३,५६०	१०,०००	१३,५६०
योग	३,५६०	१०,६००	१४,१६०

मै सामान्य उपायो से इन कबीलो एव व्यक्तियो के सम्बन्ध मे जो इन विशृखल बोलियो को बोलते है, कोई जानकारी नही प्राप्त कर सकता। दोनो मे से भुलिआ कलगा से कही अधिक स्वतत्रता के साथ उडिया से उधार लेती है। दोनो मे से कोई भी स्वतंत्र बोली कहलाने की क्षमता नही रखती क्योकि दोनो ही अशिक्षित व्यक्तियो द्वारा बोली जाने वाली मात्र विकृत जारगस (Jargons) हैं। यहाँ उनके विकृत व्याकरणिक रूपो के विश्लेषण का प्रयत्न अनावश्यक होगा। भुलिआ के सम्बन्ध मे इस तथ्य को ओर ध्यान आकर्षित कराना पर्याप्त होगा कि परसर्ग-रूपो मे 'क' के महाप्राणीकरण की प्रवृत्ति मिलती है। इस प्रकार कर्म-सम्प्रदान का परसर्ग 'के' नही 'खे' है और एक स्थान पर हमे 'उस के' के अर्थ मे 'उ-खर' मिलता है। सम्बन्ध-कारकीय 'के' के लिए और पूर्वकालिक कृदन्त के लिए हम साधारणत 'क' पाते है। उस असाधारण ढग पर भी ध्यान दीजिए जिस

मे बिना किसी अर्थ के केवल पूरक रूप मे शब्द 'ज' का प्रयोग बार-बार होता है
यह स्पष्टत. 'जो' अर्थी शब्द 'जे' का अपभ्रंश है।

सामने के पृष्ठो मे दो नमूने (क्रमश. १ और २) केवल इसलिए दिये ग
हैं कि इन दोनो भाषा-रूपान्तरो के वर्गीकरण का औचित्य सिद्ध किया जा स
और यह जाना जा सके कि ये छत्तीसगढी के विकारी रूप हैं। इनके देवनागरी रूपान्त
तथा हिन्दी प्रतिरूप उसके आगे के पृष्ठो मे (क्रमश· न० ५७ और न० ५८
देखिए।

ଏକ ଜନକେ ଦୁଇଠୁନ ବେଟା ରହନ୍ । ଉକର୍ ଛୋଟେ ବେଟା କହନ୍ ଆଗୋ ବୁଆ ମୋର ଭାଗ ଯନ ଅହେ ମକେ ଦେଦେ । ଅକର ବୁଆ ଦୁନୋ ବେଟାଲେ ସବ ଧନ ଭାଗ୍-କର ଦେଲସ । କତକ ଦିନ ପଛେ ଉଧାର୍-ମେ ଉକର ଛୋଟେ ବେଟା ଧନ ବଟରଲ୍ ଗଜନ ଲେକେ ଦୂରଆ ବାଠଲା ଲେକେ ଭଗବ ଚଲଣ ଛେଡାଏ ଗଇଲ୍ । ଓ ଗାଇଯମେ ଖୋଟେ ଧରମେ ଯାଏକେ ଶୋଭ ଗହନ୍ । ଉଇ ମୈନସିଲା ଘୁସବ୍ ଚସ୍ଥରଦବ ଖେତନା ପଠୋଲ୍ ଦେଇସ । ଓଲୁକ ଯହାଁ ଖାଏବର ନ ପାଇସ ଘୁସଗ ଖାଏଁ ଚୁଆଲ ଖାଏବର ମନ କଇସ୍ । ଫେର ମନମେ ବିଚାର କରସ ମର୍ ବୁଆ ସଙ୍ଗମେ ଗନକ୍ ଗୋଢ ହେଁ । ଭମନ ଖୋବ ଖାଏବର ପାଷ୍ଟଜ୍-ହେ ଆର ମଏଁ ଏକୁଲ ରହେବେ ଭୁଖନ ମରଥୀ । ମଏଁ ଯାହୁଁ ମର ବୁଅଲ କହିଁ ଏ ବୁଅ ମଏଁ ଇମର ମଗମେ ଆର୍ ମହାପୁଭ୍ ସଙ୍ଗମେ ପାପ କରେଁ । ତର ବେଟା କହେବେ ଯୋଏଗ ନହିଁ । ତର ଏକ ଠୋନ ଗୁଛ ବାଗିର୍ ମକେ ରାଖ । ତହିଁଲା ଉଜୁନ ଚଲେବେ ଉକର ବୁଅ ଭୁଲ ଗଇଯ । ଅକର ବୁଅ ଅକେ ଧୁରଥଲେ ଦେଖ୍କେ ମାୟା କରସ, ଧାଁଇ ଗଇସ୍ ଅକର୍ ଚେଷ୍ଟୁଲ ଧର ପକାଇସ୍ ଆର ଗାଲ ଚୁମିସ୍ । ଅକର ବେଟା ଅକର ବାପଲ କହନ୍ ଏ ବୁଅ ମଏଁ ତୋର ସଙ୍ଗମେ ଆଉ ମହାପୁଭୁ ସଙ୍ଗମେ ପାପ କରେଁ ଆଉ ତୋର ବେଟା କହେବେ ମେଁ ଯୋଏଗ୍ ନହିଁ । ଅକର ବାପ ଅକର ଗୋତନକଲ କହନ୍ ଅଛା ଧୁଇ ଆନଚେ ଅକେ ପିନ୍ଧ ଅକର୍ ଅଙ୍ଗଠୀ-ମେ ଏକ୍ଠୁନ୍ ମୁଦ ଦ୍, ଅକର ଗୋଡମେ ଏକ-ଠୁନ ପନାହ ଦ ପିନ୍ଧେବର ଆଛା କରକେ ଏକ-ଠୁନ ଆନନ୍ଦ କରବେ୍ ଖେଜୀ ଖାନ୍ କଁୟାଦ ଇଏ ମରଗଏ ରହନ୍ ହଁକେ ଅଇଷେ ଗଓଅଁ ଗଏ ରହନ୍ ପାଏନ ଚାହିଁଲେ ଉମନ ବଡେ ଉଷଚମଳ । ଡଡବୁ ଯାହାର ଉକର ବଡ଼କା ବେଟା ଖେତଲେ ଗଏ ରହନ୍ । ଓ ଘର କୁଲନ ଅଇସ୍ ଭ ବାଯା ଟମାଷା ହୋଚ ରହ ଶୁନସ୍ । ତାହିଁଲା ଉକର୍ ଏକ-ଠୁନ ଖୋଣଲ ପୁଛିସ୍ କା ଯାଵକ୍ କରଚ ହେଁ । ଓ କହନ୍ କ ତୋର ଭାଇ ଅଇଷେ ଓ ବଚେ ସ୍ୱବେ ଆଇସ୍ ସୋ ଓକର ଲାଗି ତୋର ବୁଅ ଭୋଜ ଦେଇ୍ ହେଁ । ତାହିଁ-ଲେ ଓ ରଷା ହୋଏଗିଏସ ଆର ଘରଲ ଯାଏ-କେ ମନ୍ ନ କରସ୍ । ଚାହିଁଲେ ଉକର୍ ବାପ ଆଘୁକେ ଅଲା ମନା ବୁଝା କରସ୍ । ଅକର ବେଟା କହନ୍ ଏତକ୍ ଦରୁଷଲେ ତୋର ସେବା କରକେ ରହେନ କଉଁ ତୋର ଗୋଏଠଲ ନାଇ ବାଟେ ଦେବେ ଯାଭ୍ କୁଟୁମ୍ବଲା କୁଲଏକେ ମର ଲାଗି ବୋକଗ ଛୁଟେ ଖଓଅଁଏ ନିଅସ । ଲୁଅହର କହନ୍ କ ମର ସଙ୍ଗ-ମେ ତୁଇ ସବୁ ଦିନ-ମେ ଅହନ୍ । ଯାହା ମୋର ସଙ୍ଗ-ମେ ଧନ ଆହେ ତୋର ରେ । ଏ ତର ଭାଇ ମର ଗଏ ରହନ୍ ହଁକେ ଅଇଷେ ଗଓଅଁ ଗଏ ରହନ୍ ଫେର ପାଏହଚ ଓକର ଲାଗି ହମ୍ ଡଲୁକ ଆନନ୍ଦ କରବେ ହେଏଁ ।

ଘନେକ୍ ମୁହେଁ ବେଠା ରହିବ । ଉନକ ଶାଚ ବେଶା ଭିତର ଜୁଅନେ ବଲଇ ଚ ଆଗୋ ବୁଅ ତୁମ୍ଭର ଘାନ୍ଧା ସଖରି ଅଚେ଼ ଆମଚେଖ ଗଣ କରଚ ବ । ଓ ଦୁଇ ଘନଚେଖ ଖ୍ୱଘ ଜରଚ ଚେଦଇସ୍ । ଦନାକେଚେ ଗଲ୍ମ ପନେ଼ ଉକର ଖାଜ ବେଠା ସବୁଯାକ ନେ ଗଇସ୍, ଆଉର ଲଠଗ୍ରଗଙ୍ଗ ଜଇଡ ସବୁ ଉଡ଼ାଇ ଚେଦଇସ । ଉବୁ ଉଲ ମୁଲକେ ମହରଣ ଷଡ଼ିସ ଯ ବଡା ଗୁଲଗୁଲ୍ ଝଲଯ । ଉନ ଗଇସ୍ ଯ ଗୁଚେଠ ଘରଟେଚେ ଝଲିଆ ରହିସ ଯ ଓ ଘୁଘୁସ ଚଖଇ ଜଇସ୍ । ଯ ବଛ ଖାଇବାକେ କାହି ପାଇସ ଯ ଉନ୍ନୁ ଘୁସୁଗ୍ଗ ଖାଏଦ ଖାଉଁ ବଲକ ମନେ କଉସ୍ । ପଛେ ମନେ କରସ୍ ଆମର ଘରେ କେତେ ହଲଥ ଖାଉଏବ ଅଣି ଯ ଛଠାନେ ଭୁଖେ ମରଥାଁ । ମୁ ଯାଥିଁ ଯ ଜଉ ବୁଆ ଖେ ବଲିଁ ଆଗୋ ବୁଆ ଅମି ତମର ଅଉର ମହାପୁରୁଷ ଦୋଷ କଇଏଁ ତୁମ୍ଭର ବେଠା ବଲକ ବସ୍ଥାନ କରବାର ନାହିଁ ଅସ୍, ତମର ହଲିଅ ମିଡା ଆମଚେଖ ଉଖ ରହ ବଲିଁ ଯାଥିଁ । ଉକର ଗୁଅ ବଡ଼ା ଦୂରେ ଦେଖକ ଉଚେଖ ଦୟା କରସ୍ ଦେଉ ଧାଇଁ ଖଇସ୍ ଯ ଉକର ମୁହେଁ ଚୁମା ଦେଇସ୍ ଉକର ବେଠା ବଲସ୍ ଚ ଆଗୋ ବୁଅ ମୁଇଁ ତମର ଆଉର ମହାପୁରୁଷ ଦୋଷ କଇଏଁ ତମର ବେଠା ବଲକ କାଖେ ନାହିଁ କହ । ଉକର ବୁଅ ଉକର ନଉକରମାନଚେକ ଜାକକ ବଲସ ତମି ନୁଗ୍ଗା ଯୁଗ ପଠା ଆନକ ଇଚେଖ ପିନ୍ଧାଥ, ଇକର ହାତେ ମୁଦ ପିନ୍ଧାଅ, ଇକର ଗୋଡ଼େ ଗୁଡବଲ ପିନ୍ଧାଥ । ବଲକ କହିସ୍, ଖାଅ ପିଅକ ଖୁସି ଚହେ । ଆମର ଇ ବେଠା ମର ଯାଇ ରହିସ୍ ଯ ଜିଇଁକ ଅଇସ୍ ଓ ହଜ ଯାଅ ରହିସ୍ ଯ ପାଏଁ । ଉନୁ ଖୋବ ଖଷଭ୍ ଝଇସ । ହାତକ ବେଲଖେ ଉଖର ବଡ ବେଠା ଖେଡେ ରହିସ୍ ଯ ଆଇସ୍ ଯ ଘରଖେ ଆଇଲା ବେଲଖେ ବଜା ଗଜା ବାଜନ-ଘଉସ୍ ଯ ଉକର ନଉକରି ଟେଖେ ଡାକଥ, ବଲସ କି, ଇଠା କାହିଁ ବଜା ଆମର ଘରେ ହାଯଥିଏ । ଓ ବଲସ ଚ ତମର ଭାଇ ଆଇଜ ଯ ତମର ବୁଆ ବଡ଼େ ଟେ ଭୋଜ ଦେଇଏନ । ଉଠ ସୁନସ୍ ଯ ରଶା ହଇକ ଘରଖେ ଜାଇ ଗଇସ । ଅବର ବୁଆ ବାହାରେ ଆଇକ ଉଚେଖ ବୁଝାଇସ୍ ଯ ଉକର ବେଠା ବଲସ ଚ ତୁମର ସବୁ ଦନ ମୁଇଁ ସେବାଶୁଶ୍ରୁଷା କରକ ଅହି କେବେହେଁ ମୋର ଲାଗି ଛେଲି ଛୁଡେ ମାରକ ଭୋଜ ବାକଖେ ଡାକକ ଭୋଜ କେ ନାହିଁ ଦେଇ । ତମର ଯନ ବେଠା ବାଛ ଇରକ ଟଙ୍କା ପଇସା ଉଡ଼ାଏ ଦେଇଯ ଓ ଅଇସ୍ ଯ ଇକର ଲାଗି ବେଳେ ଭୋଜ କରଖଅ । ଉକର ବୁଅ ବଲସ ଚ ଆରେ ବାବୁ ତୁଇ ଆମର ସଙ୍ଗେ ସବୁବେଲେ ଅହକ ଆମର ସବୁ ମାଲ ତ ତର; ଇଏ ଯନ ତର ଭାଇ ମର ରହିସ୍ ପେର ଜିଇଁଇସ୍ ହଜ ରହିସ ପାଏଁ ଇକର ଲାଗି ଅମି ଉଛବ କରଥିଁ ।

(न० ५७) (१)

भारत–आर्य परिवार मध्यवर्त्ती शाखा

पूर्वी हिन्दी

छत्तीसगढ़ी या लरिया (कलगा विशृंखल) बोली रियासत पटना

देवनागरी रूपान्तर

एक झन–के दु–ठुन बेटा रहिस। ओ–कर छोटे बेटा कहिस, 'आगो बुआ, मोर भाग जन आहे म–ला दे–दे।' अ–कर बुआ दुनो बेटा–ला सब भाग–करि –दे देइस। कतक दिन गइस उतार–में उ–कर छोटे बेटा धन दउलत शकन ले–के दुरिआ बाट–ला ले–के खराब चलण छेदाए–गइस। ओ राइज–मे गोटे घर–मे जाए–के गोति रहिस। उइ मैनसिला घुसरा चराइ–बर खेत–ला पठोइ–देइस। ओकुन जाहाँ खाए–वर नि पाइस, घुसरा खायें चुपा–ला खाए–वर मन–करिस। फेर मन–मे बिचार करिस, 'मर बुआ सग–मे गजब गोति हैं। उ–मन खोब खाए–बर पायत–हे, आर मएँ एकुल रहें–के भुखन मरथें। मएँ जाहूँ, मर बुआ–ला कहूँ, "ए बुआ मएँ तमर संग–मे आर महापुरु सग–मे पाप करें। तर बेटा कहें–के जोएग नहूँ। तर एक–ठोन गुति बागिर म–ला राख ?" ' तहूँ–ला उकुला कहें–के उ–कर बुआ कुला गइस। अ–कर बुआ अ–ला धुरिआ–ले देख–के मया करिस, धाँत गइस, अ–कर तेण्टु–ला धर–पकाइस अगर गाल चूमिस। अ–कर बेटा अ–कर बाप–ला कहिस, 'ए बुआ, मएँ तोर सग–मे आर महापुरु सग–मे पाप करें, आउ तोर बेटा हय–के मैं जोएग नहूँ।' अ–कर बाप अ–कर गोति–मान–ला कहिस, 'अच्छा–अच्छा धुति आन–के अ–ला पिन्ध; अ–कर आंगठि मे एक–ठुन मुदि द, अ–कर गोड़–मे एक–ठुन पनाहि द पिन्धे–बर। आछा कर–के एक–ठुन आनन्द–कर–के भोजी खान; क्योंकि इए मर–गए–रहिस, जिं–के आइसे; गओआँ गए–रहिस, पाएन।' ताहाँ–ले उ–मन बड़े उसत–मन।

तडकु–पाहार उ–कर बडका बेटा खेत–ला गए–रहिस। ओ घरें–कुल–ला आइस त बाजा तमास होत–रहि शुनिस। ताहाँ–ला उ–कर एक–ठुन गोति–ला पुछिस, 'का–जातिक करत–हे ?' ओ कहिस कि, 'तोर भाइ आइसे। ओ बने ह–के आइस जो ओ–कर लागि तोर बुआ भोज देत–हें।' ताहाँ–ले ओ रिसा होए–गिएस, आर घर–ला जाए–के मन–नि–करिस। ताहाँ–ले उ–कर बाप आय–के अ–ला मना–बुझा–करिस। अ–कर बेटा कहिस, 'अतक बछर–ले तोर सेवा कर–के रहेन, कभुं तोर गोएठ–ला नाइ काएट–दे–कें। जान–कुटुम्ब–ला बुलाए–के मर–लागि बोकरा गुटे खओयास–निअस।' बुआ–हर कहिस कि, 'मर संग–मे तुइ सबु दिन–मे आहस।

जाहा मोर सग–मे धन आहे, तोर रे। ए तर भाइ मर–गए–रहिस जिं–के आइसे; अओआँ–गए–रहिस, फेर पायहन; ओ–कर–लागि हम उछव–आनन्द कर–के होएँ।'

हिन्दी प्रतिरूप

एक मनुष्य-के दो लडके-थे। उस-के छोटे लडके-ने कहा, 'ओ पिता! मेरा हिस्सा जो है मुझ-को दे-दो।' उस-के पिता-ने दोनो वेटो-को सव धन हिस्सा-कर-दिया। कुछ दिन गए उतार-की-ओर, उस-के छोटे लडके-ने धन-दौलत सव ले-कर दूर रास्ते-मे ले-जा-कर, खराव कामो-मे नष्ट-कर-दिया। (वह) उस राज्य-के एक घर-मे जा-कर नौकर हुआ। उस मनुष्य-ने सुअर चराने-के लिए खेत-को भेज दिया। वहाँ जैसे-ही खाने-के लिए नही पाया, सुअर खाते-हैं (उस) भूसी-को खाने-के लिए मन-किया। फिर मन-मे विचार किया। 'मेरे पिता-के यहाँ वहुत नौकर है, वे खूव खाने-के लिए पाते-हैं और मैं यहाँ रह-कर भूखो-मे मरता-हूँ। मैं जाऊँगा, अपने पिता-से कहूँगा, "ओ पिता! मैं-ने तुम्हारी उपस्थिति मे और ईश्वर-के निकट-मे पाप किये-है। तुम्हारा लडका कहलाने-के योग्य नही-है। अपने एक नौकर-की तरह मुझ-को रख-लो।" तव इस-प्रकार कह-कर अपने पिता-के निकट गया। उस-के पिता-ने उस-को दूर-से देख-कर दया की, दौडते-हुये गया, उस-की गर्दन-को धर-पकडा (=गले-से-लगा) और गाल चूम-लिये। उस-के लडके-ने अपने पिता-से कहा, 'ओ पिता! मैं-ने तुम्हारे साथ-मे और ईश्वर-के साथ-मे पाप किये और तुम्हारा लडका होने-के मै योग्य नही-हूँ।' उस-के पिता-ने अपने नौकरो-से कहा, 'अच्छा-अच्छा कपडा ला-कर उस-को पहिनाओ, उस-की उँगली-मे एक-ठौ अँगूठी दो, उस-के पैरे-मे एक-ठौ (-जोडे) जूते दो पहिनने-के लिए। अच्छी-तरह कर-के एक-ठौ, आनन्द-मना-कर, दावत खायें; क्यो-कि यह मर-गया-था, जीवित-हो-कर आया-है, खो गया-था, (मैं-ने) पाया-है। उस-लिए वे वडे प्रसन्न (हुये)।

उस-समय उस-का वडा लडका खेत-पर गया-था। वह घर-की-ओर आया, तो वाजा तमाशा होते-हुए सुना। तव अपने एक नौकर से पूछा, 'किस-लिए किया-जा-रहा-है?' उस-ने कहा कि, 'तुम्हारा भाई आया-है। वह अच्छी-तरह होते-हुये आया-है, कि, उस-के लिए तुम्हारे पिता दावत दे-रहे-है।' उस-से वह गुस्सा हो-गया और घर-मे जाने-का मन-नही-किया। तव उस-के पिता-ने आ-कर उस-को समझाया-वुझाया। उस-के वेटे-ने कहा, '(मैं) इतने वर्षो-से तुम्हारी सेवा कर-के रहा, कभी तुम्हारी आज्ञाओ को नही काटा। जात-भाइयो-को वुला-कर मेरे-लिए वकरा एक खिलाया-नही (तुमने)।' पिता-ने कहा कि 'मेरे साथ-मे तू सव दिनो-से है। जो मेरे साथ-मे धन है, तेरी ही (है)। यह तुम्हारा भाई मर-गया-था, जी-कर आया-है, खो-गया-था, फिर पाया-है, उस-के-लिए हम उत्सव-आनन्द मनायें।'

(नं० ५८) (२)

भारत–आर्य परिवार मध्यवर्त्ती शाखा

पूर्वी हिन्दी

छत्तीसगढ़ी या लरिया (भुलिआ विश्रृंखल) बोली रियासत पटना

देवनागरी रूपान्तर

जनेक जुड़े बेटा रहिस। उनका शान बेटा उ–कर बुआ–के बलिस कि, 'आगो बुआ, तुम्भर जाहा सम्पत्ति आहे आम–खे भाग–कर–क द।' ओ दुइ जन–खे भाग–कर–क देइस । दिना–केते गला–पछे उ–कर शान बेटा सबुजा–क ले–गइस, आउर लन्ना–ढग कर–क सबु उडाइ–देइस । उनू उइ मुलके महरग पडिस ज वड़ा गुलगुला हइस । उन गइस ज गुटे घर टेने हलिआ रहिस ज ओ घुसुरा चराइ करिस। ज किछि खाइबा–के नाहि पाइस ज उनू 'घुसुरा–क खाप्रद खाउँ' बल–क मने–करिस। पछे मने–करिस, 'आमरा घरे केते हलिआ खातिप्रन, आमि–ज ई–ठाने भूखे मरथ्यँ। मु जायँ ज मर बुआ–खे बलुँ, 'आगो बुआ आमि तमर आउर महापुरु–क दोष करिएँ; तम्भर बेटा बलि–क बयान करिबार नाइँ आय; तमर, हलिआ मिता आम–खे रख–रह,'' बलुँ जायँ। उ–कर बुआ वड़ा धुरे देख–क उ–खे दया करिस, फेर धाइँ गइस, ज उ–कर मुँहे चुमा देइस। उ–कर बेटा बलिस कि 'आगो बुआ, मुँइतमर आउर महापुरु–क दोष करिएँ, तमर बेटा बलि–क का–खे 'नाहि कह।' उ–कर बुआ उ–कर नउकरि–मान–के डाक–क बलिस, 'नमि नुको घुति–पटा आनक ई–खे पिन्धाअ; ई–कर हाते मुदि पिन्धाअ; ई–कर गुड़े गुड–बला पिन्धाअ,' बल–क कहिस, 'खाअ–पिअ–क खुसि करय। आमर ई बेटा मर–जाइ–रहिस, ज जिं–क आइस; ओ हज–जाअ–रहिस, ज पाएँ।' उनु खोब उसत हइन।

हातक–बेल–खे उ–खर बड बेटा खेते रहिस ज आइस, ज घर–खे आइला–बेल–खे बजा–गजा वाजत–रिस, ज उन–क नउकरि–टे खे डाकिस, बलिस कि, इ–टा काहाँ वजा आमर घरे बाजथिए?' ओ बलिस कि, 'तमर भाइ आइन; ज तमर बुआ बडे–टे भोज देथिप्रन।' उ–टा सुनिस, ज रिसा हय–क घर–खे नाइ गइस। उ–कर बुआ बाहारे अइ–क उ–खे बुझाइस, ज उ–कर बेटा बलिस, कि, 'तुमर सबु दिन मुइ शेवा–चाकरि करि–क आहेँ; केभेँ मोर–लागि छेलि–गुटे मार–क लोक–वाक खे डाक–क भोज–टे नाहि देइ। तमर जन बेटा दारि कर–क टङ्का–पइसा उड़ाप्र–देइस, ओ आइस, ज उ–कर लागि केते भोज करथिअ।' उ–कर बुआ बलिस कि, 'आरे बाबू, तुइ आमर सगे सबु–बेले आहस। आमर सबु–जा–क त तर। ईए–जन तर भाइ मर–रिहिस, फेर जिंइस; हज रिहिस, पाएँ; उन–क लागि आमि उच्छब करथिअँ।'

जाहा मोर सग-मे धन आहे, तोर रे। ए तर भाइ मर-गए-रहिस जि-के आइसे; अओर्आं-गए-रहिस, फेर पायहन; ओ-कर-लागि हम उछव-आनन्द कर-के होएँ।'

हिन्दी प्रतिरूप

एक मनुष्य-के दो लडके-थे। उस-के छोटे लडके-ने कहा, 'ओ पिता! मेरा हिस्सा जो है मुझ-को दे-दो।' उस-के पिता-ने दोनो बेटो-को सब धन हिस्सा-कर-दिया। कुछ दिन गए उतार-की-ओर, उस-के छोटे लडके-ने धन-दौलत सब ले-कर दूर रास्ते-मे ले-जा-कर, खराब कामो-मे नष्ट-कर-दिया। (वह) उस राज्य-के एक घर-मे जा-कर नौकर हुआ। उस मनुष्य-ने सुअर चराने-के लिए खेत-को भेज दिया। वहाँ जैसे-ही खाने-के लिए नही पाया, सुअर खाते-है (उस) भूसी-को खाने-के लिए मन-किया। फिर मन-मे विचार किया। 'मेरे पिता-के यहाँ बहुत नौकर हैं, वे खूब खाने-के लिए पाते-है और मैं यहाँ रह-कर भूखो-से मरता-हूं। मैं जाऊँगा, अपने पिता-से कहूँगा, "ओ पिता! मैं-ने तुम्हारी उपस्थिति मे और ईश्वर-के निकट-मे पाप किये-है। तुम्हारा लडका कहलाने-के योग्य नही-है। अपने एक नौकर-की तरह मुझ-को रख-लो।" तब इस-प्रकार कह-कर अपने पिता-के निकट गया। उस-के पिता-ने उस-को दूर-से देख-कर दया की, दौडते-हुये गया, उस-को गर्दन-को धर-पकडा (=गले-से-लगा) और गाल चूम-लिये। उस-के लडके-ने अपने पिता-से कहा, 'ओ पिता! मैं-ने तुम्हारे साथ-मे और ईश्वर-के साथ-मे पाप किये और तुम्हारा लडका होने-के मैं योग्य नही-हूँ।' उस-के पिता-ने अपने नौकरो-से कहा, 'अच्छा-अच्छा कपडा ला-कर उस-को पहिनाओ, उस-की उँगली-मे एक-ठो अँगूठी दो, उस-के पैरे-मे एक-ठो (-जोडे) जूते दो पहिनने-के लिए। अच्छी-तरह कर-के एक-ठो, आनन्द-मना-कर, दावत खायें; क्यो-कि यह मर-गया-था, जीवित-हो-कर आया-है, खो गया-था, (मैं-ने) पाया-है। उस-लिए वे बडे प्रसन्न (हुये)।

उस-समय उस-का बडा लडका खेत-पर गया-था। वह घर-की-ओर आया, तो बाजा तमाशा होते-हुए सुना। तब अपने एक नौकर से पूछा, 'किस-लिए किया-जा-रहा-है?' उस-ने कहा कि, 'तुम्हारा भाई आया-है। वह अच्छी-तरह होते-हुये आया-है, कि, उस-के लिए तुम्हारे पिता दावत दे-रहे-है।' उस-से वह गुस्सा हो-गया और घर-मे जाने-का मन-नही-किया। तब उस-के पिता-ने आ-कर उस-को समझाया-बुझाया उस-के बेटे-ने कहा, '(मैं) इतने वर्षो-से तुम्हारी सेवा कर-के रहा, कभी तुम्हारी आज्ञाओ को नही काटा। जात-भाइयो-को बुला-कर मेरे-लिए बकरा एक खिलाये नही (तुमने)।' पिता-ने कहा कि 'मेरे साथ-मे तू सब दिनो-से है। जो मेरे साथ-धन है, तेरी ही (है)। यह तुम्हारा भाई मर-गया-था, जी-कर आया-है, खो-गया था, फिर पाया-है, उस-के-लिए हम उत्सव-आनन्द मनाये।'

पूर्वी हिन्दी
की
विविध बोलियों
में
शब्दों तथा वाक्यों
की
मानक सूची

हिन्दी प्रतिरूप

एक-जने-के दो बेटे थे। उस-का छोटा लडका अपने पिता-से बोला, कि, 'ओ पिता ! तुम्हारी जितनी सम्पत्ति है, मुझ-को हिस्सा-कर-के दो।' उस-ने दो जनों-के हिस्सों-मे कर-के दे-दिया। कुछ-दिनों-के गये-पीछे उस-का छोटा-लडका सब-को ले-गया, और दुष्ट-कार्य कर-के सब उडा दिया। तब उस-देश-मे अकाल पडा ओर बडी परेशानी हुई। वह गया और एक घर मे नौकर हुआ और वह सुअर चराया-करता-था। जब कुछ खाने-को नही पाया तब उस-ने 'सुअरो-का खाना खाऊँ' कहते-हुये मन-किया। इस-के-बाद मन-किया, 'हमारे घर-मे कितने नौकर खा-रहे-है, मैं-लेकिन इस-स्थान-पर भूख-से मर-रहा हूँ। मैं जा-रहा-हूँ और अपने पिता-से बोलूँ, "ओ पिता ! मैं-ने आपका और ईश्वर-का अपराध कया-है, 'तुम्हारा बेटा' बोल-कर बयान-करने-लायक नही हूँ, तुम नौकर-की तरह मुझ-को रख-लो," कह-कर जा-रहा-हूँ।' उस-के पिता-ने बडी दूर-से देख-कर उस-पर दया की, फिर दौड गया, और उस-के मुँह-मे चूमा दिया। उस-का बेटा बोला कि, 'ओ पिता ! मैं-ने तुम्हारा और ईश्वर-का अपराध किया-है, 'अपना बेटा' बोल-कर किसी-से नहीं कहो।' उस-का पिता अपने नौकरो-को बुला-कर बोला, 'तुम अच्छे कपडे ला-कर इस-को पहिनाओ, इस-के हाथ-मे अँगूठी पहिनाओ, इसके पैरो-मे जूते पहिनाओ' कह-कर कहा, 'खा-पी-कर खुशी करेंगे। हमारा यह लडका मर-गया-था और जी-कर आया-है, वह खो-गया-था और पाया-है (मैं-ने)।' वे खूब प्रसन्न हुये।

उस-बेला-मे उस-का बडा लडका खेत-मे था और आया, और घर-के निकट-आते-समय-पर गाना-बजाना हो-रहा-था और (उस-ने) अपने नौकर-एक-को बुलाया, बोला, कि, 'यह किस-लिए गाना-बजाना हमारे घर-मे हो-रहा-है ?' उस-ने कहा, कि 'तुम्हारा भाई आया-है, और तुम्हारे पिता-ने एक-बडा भोज दिया-है।" उस-को सुना और गुस्सा हो-कर घर-को नही गया। उस-के पिता-ने बाहर आ-कर उस-को समझाया; और उस-का बेटा बोला कि, 'तुम्हारी सब दिनो मैं सेवा-सुश्रुषा करता-हुआ हूँ, कभी मेरे-लिए एक-बकरी-का-बच्चा मार-कर लोग-बागो-को बुला-कर दावत-एक नही दी-है (तुम-ने)। तुम्हारा जो लडका अय्याशी कर-के रुपया-पैसा उडा-दिया, वह आया, और उस-के लिए कितनी-बडी दावत कर-रहे-हो।' उस-का पिता बोला, कि 'ओ बेटे ! तू हमारे साथ-मे सब-समय रहा-है। हमारा सब-जो-कुछ तो (है), तुम्हारा (है)। यह-जो तुम्हारा भाई मरा-था, फिर जिया-है, खोया-था, पाया-है (मैं-ने), उस-के लिए हम-लोग-उत्सव-करें।'

पूर्वी हिन्दी

की

विविध बोलियों

में

शब्दों तथा वाक्यों

की

मानक सूची